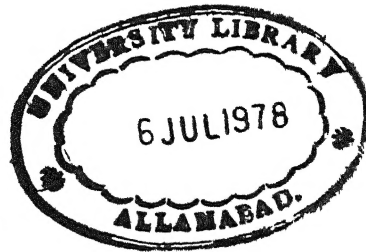
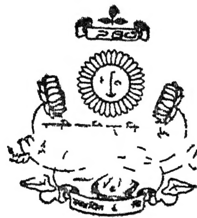
बालाबक्श राजपूत चारण पुस्तकमाला—१०

सभा शृंगार



संकलनकर्ता तथा संपादक
अगरचंद नाहटा



नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

मुद्रक : शंभुनाथ वाजपेयी, राष्ट्रभाषा मुद्रण, काशी

प्रथम सस्करण, ११०० प्रतियाँ, सवत् २०१६

मूल्य [illegible])

ग्रंथमाला का परिचय

जयपुर राज्य के अंतर्गत इणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट नृसिंहदासजी के पुत्र बारहट बालाबख्शजी को बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायँ जिसमें हिंदी साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १९२२ में ५०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

प्रकाशकीय वक्तव्य

नागरीप्रचारिणी सभा काशी की बारहट बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला ने अपने क्षेत्र मे जो सेवा की है उसका मूल्य हिंदी जगत् जानता है। इस ग्रथमाला के अतर्गत अब तक निम्नलिखित नव ग्रथ प्रकाशित हो चुके हैं।

१. बाँकीदास ग्रथावली भाग १ सपादक—श्री प० रामकर्ण जी
२. बीसलदेवरासो—सपादक—श्री सत्यजीवन वर्मा
३. शिखरवशोत्पत्ति—सपादक—श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा
४. बाँकीदास ग्रथावली भाग २—सपादक श्री रामनारायण दूगड़
५. ब्रजनिधि ग्रथावली—सपादक श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा
६ ढोलामारू रा दूहा—सपादक श्री रामसिंह जी
७ बाँकीदास ग्रथावली भाग ३—सपादक श्री मुरारिदान
८. रघुनाथ रूपक गीतारो—सपादक महताबचद खारैड
९. राजरूपक—सपादक श्री० रामकर्ण जी

इस ग्रथमाला का यह दसवाँ ग्रथ है।

यद्यपि आरभ मे इस पुस्तक का आयोजन सभा की बिड़ला ग्रथमाला के अंतर्गत किया गया था तो भी इस ग्रथमाला के अधिक उपयुक्त होने के कारण सभा ने इसका प्रकाशन इसी ग्रथमाला के अंतर्गत करना अधिक उपादेय समझा।

श्री अगरचद जी नाहटा की साहित्यसेवा से हिंदी जगत् परिचित है। उन्होने विशेष श्रम तथा धैर्यपूर्वक इस ग्रंथ का सपादन कर इस ग्रथमाला को श्रीमय करने का सद्प्रयत्न किया है। सभाशृंगार वर्णक ग्रथ है जो निम्नाकित दस विभागों में सकलित है :—

विभाग १—देश, नगर, वन, पशुपक्षी, जलाशय, नदी, समुद्र वर्णन।

विभाग २—राजा, राजपरिवार, मत्री, चक्रवर्ती, रावण, राजसभा, आस्थान मडप, गज, अश्व, शस्त्र, युद्ध आदि का वर्णन।

विभाग ३—स्त्री पुरुष वर्णन।
विभाग ४—प्रकृति वर्णन।
विभाग ५—कलाएँ और विद्याएँ।
विभाग ६—जातियाँ और धंधे।
विभाग ७—देव वेतालादि।
विभाग ८—जैन धर्म संबंधी।
विभाग ९—सामान्य नीति वर्णन।
विभाग १०—भोजनादि वर्णन।

इस वर्णक में न केवल भेद प्रभेदों एवं नामावलियों का विस्तारपूर्वक उपयोगी वर्णनमात्र है अपितु इसमें साहित्यिक सौंदर्य की अलंकृत शैली का भी यत्र-तत्र दर्शन होता है। साथ ही परिशिष्ट के रूप में 'रत्नकोष' और 'राजनीति निरूपण, नामक दो संस्कृत ग्रंथों को देकर संपादक ने इसकी उपयोगिता का विस्तार किया है। इस विशिष्ट उपयोगी वर्णक संग्रह के प्रकाशन में कुछ अनावश्यक विलंब अनेक कारणों से हुआ तो भी यह व्यवधान इसे इस रूप में प्रकाशित करने में कुछ अंशों तक सहायक भी सिद्ध हुआ है। आशा है इस उपयोगी ग्रंथ का आदर होगा।

सुधाकर पांडेय
प्रकाशन मंत्री

आषाढ़ १, २०१९

—०—

भूमिका

श्री अगरचन्द जी नाहटा विख्यात शोधकर्ता विद्वान् है। उनके द्वारा सपादित सभा-शृगार ग्रन्थ सास्कृतिक शब्दावली की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। सभा-शृगार के नाम से कई हस्तलिखित प्रतियों उपलब्ध होती है जिनका उल्लेख सपादक ने प्रति परिचय शीर्षक के अन्तर्गत किया है। श्री भोगीलाल साडेसरा ने स्व-सपादित वर्णक समुच्चय नामक ग्रन्थ मे सभा शृगार की एक प्रति का प्रकाशन किया है [1]। उसकी सामग्री का समावेश भी यहाँ हुआ है।

सभा-शृगार उस प्रकार का साहित्य है जिसे वर्णक-साहित्य का नाम दिया गया है और जो अभी कुछ ही वर्ष पूर्व से साहित्यको के दृष्टि-पथ मे विशेष रूप से आया है। इस साहित्य का सम्बन्ध किसी वस्तु के उस परिनिष्ठित वर्णन से है जिसे सार्वजनिक रीति से आदर्श वर्णन के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था। इस प्रकार के वर्णन कवि और कलाकार दोना के लिये सहायक होते हैं, एव श्रोता और वक्ता दोनो को इस प्रकार के वर्णनों मे वस्तु का ज्वलन्त चित्र प्राप्त हो जाता है। अतएव दोनों ही उसमें रुचि लेते हैं, जैसे किसी राजा और उसकी राजसभा का वर्णन अथवा सोलह शृगारों से सजी किसी रूपवती नायिका का वर्णन, अथवा वृक्ष, पुष्प, फल, सरोवर, पक्षी आदि की समृद्धि से रमणीय किसी उद्यान का वर्णन। इस प्रकार की वस्तुओ का वर्णन अनेक व्यक्ति अपनी अपनी रुचि के अनुसार भी कर सकते है जिनका एक दूसरे से भिन्न होना सभव है। किन्तु यदि कई वर्णनों की तुलना की जाय तो उनमे एक सदृश परिपाटी का विकास होता हुए दिखाई पड़ेगा। ऐसे ही पल्लवित वर्णनो को यदि एक आदर्श वर्णन के रूप में ढाल दिया जाय तो उसका वह परिनिष्ठित रूप कालान्तर मे रूढिगत बन जाता है। यही इस प्रकार के वर्णनो की पृष्ठभूमि है जिसका भारतीय साहित्य की सस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रश एव देशी भाषाओ की कृतियों मे प्राचीन काल स ही प्रमाण उपलब्ध होने लगता है।

इस प्रकार के वर्णन के लिए वर्णक शब्द प्राचीन जैन आगम शास्त्र मे पाया जाता है जिसे प्राकृत भाषा मे 'वण्णओ' कहा गया है। उदाहरण के लिए—

१—भोगीलाल जी साडेसरा, वर्णक-समुच्चय, भाग १ पृ० १०५-१५६, प्राचीन गुर्जर ग्रंथमाला, महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

तेण कालेण तेण समयेण राया होत्था (वरणओ)। धारिणी नाम देवी होत्था (वरणओ) । चम्पा नाम नयरी होत्था (वरणओ) इत्यादि ।[1] यहा कोष्ठक मे वरणओ लिख देने से राजा रानी या नगरी का जो आदर्श वर्णन प्रचलित था उसी को ग्रहण किया जाता था और ग्रन्थो की प्रतिलिपि करते समय उसे बार बार दोहराने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी । यह प्रथा कुछ उस प्रकार की थी जिसे वैदिक मन्त्रो का पाठ करते समय गलन्त कहा जाता था । ऋक् प्रातिशाख्य (१०।१६) के अनुसार ऐसे शब्दो या वाक्यो की सज्ञा जो कई बार दोहराए जॉय 'समय' थी । इस प्रकार के सगठित वर्णन या समय वाची शब्द पदपाठ मे छोड दिए जाते थे और एक गोल बिन्दु से उनका सकेत बना दिया जाता था जिसके कारण उन्हें गलन्त कहने लगे । किन्तु गलन्त पाठ मे उन सब शब्दों को यथावत् दोहराना आवश्यक होता था[2] । श्वेताम्बर जैन आगम अपने वर्णको के लिए प्रसिद्ध है। उन सबका एक अच्छा सग्रह अलग पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाए तो वह भी इस प्रकार के साहित्य की रोचक कडी सिद्ध होगी । देवर्धिगणि क्षमाश्रमण के निर्देशन मे जैन आगमो का जो सस्करण वलभी मे तैयार हुआ था और जो इस समय उपलब्ध है उसमे वर्णको का जो परिनिष्ठित रूप प्राप्त होता है वह कुछ तो अवश्य ही प्राचीन काल से मूल रूप मे आया होगा, किन्तु हमारा अनुमान है कि गुप्त कालीन सस्कृति के समृद्ध वर्णनो की छाप भी उस पर लगी होगी, जैसा सस्कृत त्रिपिटक साहित्य के सकलन के समय भी हुआ । सास्कृतिक शब्दावली के विभिन्न स्तरो की छानबीन की दृष्टि से इस प्रकार का अनुसधान उपयोगी हो सकता है ।

वर्णक के लिये ही वर्ण शब्द गुप्तकालीन सस्कृति मे प्रयुक्त होने लगा था । 'मूल सर्वास्तिवाद विनय पिटक' के अतर्गत प्रव्रज्यावस्तु नामक ग्रन्थ मे इस शब्द का प्रयोग हुआ है — मृष्टाभिधायी स माणवः तेन तथा तथा मध्य-देशस्य वर्णो भाषितो यथा ते माणवका· सर्व एव मध्यदेशगमनोत्सुका सवृत्ता.[3],-अर्थात् वह विद्यार्थी बडा मधुरभाषी था । उसने जैसे जैसे दक्षिणा-

---

१—न व वैद्य, ए नोट आन दी वर्णकाज (वर्णको पर एक टिप्पणी), आल इण्डिया ओरियण्टल कानफरेन्स, काशी अधिवेशन लेख सग्रह, भाग २, पृ० ४७२–४७३ ।

२—सी जी काशीकर, ऋग्वेद पाठ मे गलन्तों की समस्या, ओरियन्टल कानफरेन्स, नागपुर अधिवेशन लेख सग्रह, पृ० ३१ ।

३—मूल सर्वास्तिवाद विनय वस्तु, भाग ३ खण्ड ४, प्रव्रज्यावस्तु, पृष्ठ १३, गिलगित मैनुस्क्रिप्ट्स, कलकत्ता ।

पथ के छात्रो के सामने मध्यदेश का वर्णन सुनाया वैसे वैसे दक्षिण के वे सब छात्र मध्य देश चलने के लिए उत्कठित होते गए। वर्णक के अर्थ मे वर्ण शब्द का यह प्रयोग तेरहवी शती के सगीतरत्नाकर नामक ग्रथ मे भी पाया जाता है। उसमे 'वर्ण कवि' का उल्लेख है जिसका अर्थ टीकाकार कल्लिनाथ ने 'वर्णना कवि' किया है। शार्ङ्गदेव की सम्मति मे वस्तु कवि श्रेष्ठ और वर्ण कवि मध्यम माना जाता था (वरो वस्तुकविर्वर्णकविर्मध्यम उच्यते, सगीत रत्नाकर भाग १ पृ० २४५)। यह स्पष्ट है कि तेरहवी शती के आसपास के भारतीय साहित्य मे प्राय सभी क्षेत्रीय भाषाओं मे वर्ण कवियो की धूम थी। उसी का एक रूप अवहट्ट के सदेशरासक और विद्यापति की कीर्तिलता में प्राप्त होता है। दोनो के वर्णन वर्णक शैली के हैं, यद्यपि शब्दावली की दृष्टि से उनमे अपनी ताजगी भी पाई जाती है। कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठक्कुर (१४ वी शती का प्रथम भाग) कृत प्राचीन मैथिली भाषा के वर्णरत्नाकर नामक ग्रन्थ मे वर्ण शब्द वर्णन, वर्णना या वर्णक के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। श्री सुनीतिकुमार चटर्जी ने ज्योतिरीश्वर के ग्रन्थ का सम्पादन किया है। वह ग्रन्थ इस प्रकार के साहित्य मे शिरोमणि कहा जा सकता है। उसमें लगभग साढे ६ हजार शब्द है जो सास्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान है और मध्यकालीन भारतीय सस्कृति का, विशेषत. तुर्क युग मे राजा और प्रजा की रहन-सहन का भरापूरा चित्र उपस्थित करते हैं। उस ग्रन्थ की सामग्री पर आश्रित एक बडे शोध निबन्ध की आवश्यकता है। वस्तुत समग्र भारतीय वर्णक साहित्य की सामग्री को लक्ष्य मे रखते हुए यदि अनुसधान कार्य किया जाय तो कोश निर्माण और सास्कृतिक परिचय दोनो के लिये बहुत लाभ हो सकता है।

प्राचीनकाल से ही साहित्यकारो ने परिनिष्ठित वर्णको को अपना उपजीव्य बना लिया था, जैसा बाण कृत हर्षचरित और कादम्बरी से प्रकट होता है। जगल या बागबगीचों के वर्णन के लिये वृक्ष और पुष्प पक्षी आदि की लगभग एक सी ही घिसी-पिटी सूचियाँ काम में लाई जाती थीं। उद्यान-क्रीडा और सलिल-क्रीडा, घोडे और हाथियों के भेद और उनकी चालों के भेदो के वर्णन का भी एक परिनिष्ठित रूप प्राप्त होता है। पर अच्छे कवियो की उन्मुक्त कल्पना के लिये हमेशा ही मौलिकता का अवसर रहता था। हमारा अनुमान है कि अन्य भाषाओ का मध्यकालीन साहित्य भी वर्णक शैली से प्रभावित हुआ था। गुजराती भाषा के मामेरु काव्यो मे दान दहेज मे दिये जाने वाले वस्त्र और सामान की यथासभव विशद सूचिया समाविष्ट की गई। प्रेमानन्द कृत मामेरू मे इसकी छाप स्पष्ट है। जायसी के

पद्मावत काव्य मे अनेक वर्णन वर्णक शैली से प्रभावित है। उसमे घोडों और वस्त्रो की एव वृक्षो और पुष्पो की सूचियाँ वर्णक साहित्य की दृष्टि से रोचक है। और भी दो स्थानो पर पद्मावती के रूप वर्णन एव विवाह-खड मे नायक नायिका का विलास-वर्णन अथवा आरम्भ मे गढ और नगर वर्णन—इन पर यदि तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाय तो वर्णक शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडेगा।

यह प्रसन्नता की बात है कि वर्णक साहित्य क्रमश' अब सामने आ रहा है। भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओ मे वर्णक ग्रन्थो की रचना हुई होगी, यह तथ्य युग युग के भारतीय साहित्य की विकास परम्परा के अनुकूल ज्ञात होता है। अतएव यह आवश्यक है कि जहाँ तक सभव हो प्रत्येक भाषा के वर्णक साहित्य को वहाँ के विद्वान प्रकाश मे लाए। जैसा श्री सुनीति बाबू ने लिखा है, बगला भाषा मे राय बहादुर श्री दिनेशचन्द्र सेन को इस प्रकार का साहित्य कथा बाँचने वाले कथको से प्राप्त हुआ था। मध्यकालीन वर्णक साहित्य का सर्वोत्तम प्रकाशन अभी तक गुजराती भाषा मे हुआ है। श्री मुनि जिनविजय जी ने अपने प्राचीन गुजराती गद्य सन्दर्भ नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत पृथ्वीचन्द्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास (कर्ता श्री माणिक्यचन्द्र सूरि, वि० स० १४७८) का प्रकाशन किया था। यह भी एक विशिष्ट वर्णक ग्रन्थ है और वर्ण रत्नाकर के साथ तुलना करने से स्पष्ट विदित हो जाता है कि मध्यकालीन भारतीय साहित्य की सास्कृतिक पृष्ठ-भूमि कितनी दूर तक एक सदृश थी। जीवन की एक जैसी रहन सहन प्रत्येक प्रदेश मे छाई हुई थी। इसी ग्रन्थ मे ८४ हाटों की सूची सुरक्षित रह गई है। भारत की ९६ करोड ग्राम सख्या का उल्लेख भी इस ग्रन्थ में है जैसा स्कन्द पुराण के महेश्वर खण्ड के अन्तर्गत कुमारिका खण्ड मे भी उल्लेख आया है (षरणवत्येव कोट्य ग्रामा , ३।१६३९)। जिस समय यह सख्या लिखी गई उस समय भारतवर्ष मे भूमि एव अन्य स्रोतो से समस्त राष्ट्रीय आय का अनुमान ९६ करोड कार्षापण किया जाता था।

वर्णकों के सग्रह की दृष्टि से श्री साडेसरा द्वारा सपादित वर्णक समुच्चय, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमे लगभग १२ वर्णक मुद्रित है। आरम्भ मे विविध वर्णक नामक १०० पृष्ठ का १ वर्णक ग्रन्थ है जिसमे ये सूचियाँ महत्त्वपूर्ण है—राज लोक, पात्र लोक, राजवर्णन (पृष्ठ १३-१४), नगर वर्णन (पृष्ठ २१-२२), देश सूची (पृष्ठ २८-३७, इसमे भी ९६ करोड ग्राम का उल्लेख है), नगर प्रासाद वर्णन (पृष्ठ ३२), ३६ राजकुली (पृष्ठ ३३), वस्त्र सूची (पृष्ठ ३४-३५), जिसमें

१०० से अधिक वस्त्रो के नाम है), कलशान्त प्रासाद वर्णन (पृष्ठ ३६-४०), जिन मन्दिर (पृष्ठ ४८-७१), राजलोक, पौरलोक चक्रवाल (पृष्ठ ४६) वस्तु पाल तेजपाल विरुद (पृष्ठ ५५), आस्थान मडप वर्णन (पृष्ठ ७२), अश्व सूची (पृष्ठ ६२), समुद्र मे प्रवहण भग का वर्णन (पृष्ठ ६७, इस प्रकार का एक अत्यन्त विशद वर्णन नायाधम्मकहा, अध्याय ६ मे भी आया है)। इसी ग्रन्थ मे सभा शृगार का भी एक सस्करण ५० पृष्ठा मे प्रकाशित हुआ है जिसकी सामग्री नाहटा जी ने ले ली है। उसकी प्रतिलिपि सवत् १६७५ मे की गई थी। साडेसरा जी के तीसरे सग्रह वर्ण्य वस्तु वर्णन पद्धति मे भी देशो (पृष्ठ १६५) की सूची और उनकी ग्राम सख्या महत्त्वपूर्ण है जिसमे भारत के बाहर के महाभोट, सिहल, चीन, महाचीन देशा के नाम भी है। चोथे प्रकीर्ण वर्णक मे १८ करो के नाम रोचक है। (पृष्ठ १७०)। पाचवे सग्रह का नाम जिमणवार परिधान विधि है जिसमे ३६ प्रकार के लड्डू, अनेक मिष्ठान्न भोज्य सामग्री एव लगभग २०० वस्त्रो के नाम है (पृष्ठ १८०-१८१)। यह प्रति १६७५ सवत् (ई० १६१८) में जहाँगीर के काल मे लिखी गई थी। अतएव मुगल काल के आरम्भ मे जितने वस्त्र इस देश मे बनने लगे थे और जो बाहर से मगाए जाते थे उनकी बहुत ही बडी सूची उस सग्रह मे प्राप्त हो जाती है। यह सूची सभवत॰ किसी सम्राट के वस्त्र भण्डारी की सहायता से प्राप्त की गई होगी। साडेसरा जी ने अपने सग्रह के परिशिष्ट १ मे प्रयागदास नामक किसी लेखक के कपटाकुतूहल नामक ग्रन्थ का मुद्रण किया है जिसका एक नाम कपडा-बत्तीसी भी था। दूसरे परिशिष्ट का नाम क्रयाणक वस्त्र नामावली है जिसमे ३६० किराने की वस्तुओ के नाम, ६८ वस्त्रो के नाम और १४२ आभूषणो के नाम है। साडेसरा जी के वर्णक-समुच्चय के अन्त मे अकारादि सूची नही है। सभवत ग्र थ के दूसरे भाग मे वे उसे प्रस्तुत करेंगे। किन्तु उस ग्रन्थ मे सकलित सामग्री गुजराती भाषा तक सीमित न होकर हिन्दी के विद्वानो के भी बहुत काम की है।

नाहटा जी द्वारा सगृहीत सभा-शृगार मे ऐसी ही उपयोगी सामग्री का एकत्र सकलन हुआ है। इसके ? विभाग है। जो वर्ण्य विषय के अनुसार इस प्रकार है—

विभाग १—पृ १–२८ देश, नगर, वन, पशु-पक्षी, जलाशय, नदी, समुद्र वर्णन।

विभाग २–पृ० २६–८६–राजा, राजपरिवार, मन्त्री, चक्रवर्ती, रावण, राजसभा, आस्थानमडप, गज, अश्व, शस्त्र, युद्ध आदि का वर्णन।

विभाग ३—पृ० ८७–११४–स्त्री-पुरुष वर्णन।
विभाग ४—पृ० ११५–१३४–प्रकृति वर्णन।
विभाग ५—पृ० १३५–१४४–कलाएँ और विद्याएँ।
विभाग ६—पृ० १४५-१५२–जतियाँ और धंधे।
विभाग ७—पृ १५३–१७४–देव वेतालादि।
विभाग ८—पृ० १७५–२२२–जैन धर्मसंबन्धी।
विभाग ९—पृ २२३-२७२–सामान्य नीति वर्णन।
विभाग १०–भोजनादि वर्णन।

नाहटाजी ने इस संग्रह में जिस प्रकार से विषय का विभाग किया है वह उनका अपना है। वर्णन संग्रहों को यथावत् न छाप कर उनमें से एक जैसे विषयों का संकलन कर दिया है। इन विभागों का कुछ परिचय आवश्यक है।

पहले विभाग में जो विषय संकलित हैं उनमें देश नामों की चार सूचियाँ हैं (पृ०, ३-५)। पहली सूची में १५१ नाम है। पुराणों के भुवन कोशों की जनपद सूचियाँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से मूल सूची का संकलन पाणिनि काल में हुआ होगा। उसके बाद गुप्तकाल में उससे बड़ी एक दूसरी सूची तैयार हुई जो बृहत्संहिता और मार्कण्डेय पुराण में पाई जाती है। इस सूची के भी युगानुसार और संस्करण बनते रहे, जिनमें से एक गुर्जरप्रतिहार युग के महाकवि राजशेखर ने काव्यमीमांसा में उद्धृत की है। उसके बाद तुर्क युग की सूची पृथ्वीचन्द्रचरित में मिलती है। उस समय की सूची में ९८ देशों के नाम गिनाए जाते थे। वर्णरत्नाकर में भी यह सूची रही होगी किन्तु अब वह अंश खण्डित हो गया है। सभा-शृंगार की यह सूची मुगल काल में संगृहीत हुई होगी। इसमें नए और पुराने नामों की मिलावट है। पुराने नामों में शक, यवन, मुरुण्ड, हूण, रोमक, काम्बोज, काण्व आदि हैं। ताईक (संख्या १४४) नाम ताजिक देश के लिये हैं। भारत से बाहर के देशों की सूची पर-द्वीप नाम के अन्तर्गत अलग दी गई है, जिसमें हुर्मुज, मक्का, मदीना, पुर्तगाल, पीगु, रोम, अरब, बलख, बुखारा, चीन, महाचीन, फिरंग हबस आदि के नाम तो ठीक हैं, किन्तु दीव, घोघा, डाहल, मलवार, चीउल, मुल्तान, जम्मू, आबू और ढाका के नाम इस देश के ही हैं। १।६ के अन्तर्गत जो संख्याएँ हैं उन्हें देशों की उपज कहना ठीक नहीं। वे उसी प्रकार की ग्राम संख्याएं हैं जिनका उल्लेख ऊपर आ चुका है। सूची १।८, १।९ में नगरों के नाम हैं जिनमें कुछ नए और कुछ पुराने मिले हुए हैं। १।११ से १।२४ तक नगर वर्णन संबन्धी वर्णक महत

पूर्ण है। १।२१ और १।२२ में ८४ चौहट्टों की दो सूचियां महत्वपूर्ण हैं। इनकी एक सूची पृथ्वीचन्द्रचरित्र में भी प्राप्त हुई थी, जो नाहटा जी की पहली सूची से बहुत मिलती है। पृष्ठ १६ पर स्वयंवर मण्डप का वर्णन करते हुए पञ्चरंगी देवांशुक के बने हुए ऊलोच (शामियाने) के उल्लेख के अतिरिक्त तलियातोरण उठाने का भी वर्णन है। यह एक विशेष प्रकार का दोमंजला तोरण होता था जिसे स्थापत्य की परिभाषा में तलकतोरण कहते थे। पृथ्वीराज-रासो के लघु संस्करण में जिसका सम्पादन पंजाब के श्री वेणीप्रसाद शर्मा ने किया है इसी का बिगड़ा हुआ रूप तिलङ्गा तोरण हमें प्राप्त हुआ था। पृ० १८-२१ पर अटवी वर्णन नौ प्रकार से संगृहीत हैं। उसके बाद वृक्ष नामों की छः सूचियाँ हैं। इस प्रकार की सूचियाँ वन वर्णन के साथ संस्कृत साहित्य में भी प्रायः मिलती हैं। विशेषतः महाभारत और पुराणों में वृक्षावली की लम्बी सूचियों के द्वारा ही वन वर्णन करने की प्रथा थी। वृक्षों के प्राचीन नामों में सहकार कुषाण-गुप्त युग का शब्द था। मूल महाभारत के स्तर में उसे न होना चाहिए था। नन्दन वन के वर्णक की वृक्ष सूची में वह पड़ा हुआ है, जो इस बात का संकेत है कि वह परिनिष्ठित वर्णन गुप्तकाल में किसी समय जोड़ा गया। सरोवर वर्णन के भी तीन प्रकार दिए हैं (पृ० १२६)। इनमें शतपत्र, सहस्रपत्र के अतिरिक्त कमल के लिये लक्षपत्र हमें पहली ही बार प्राप्त हुआ है। नदी नामों के अन्त में लिखा है कि १४ लाख ५६ हजार नदियाँ लवण समुद्र में मिलती हैं। यद्यपि स्कन्द पुराण के नागर खण्ड में हमें उल्लेख मिला था कि केवल गङ्गा ही ६०० नदियों को लेकर समुद्र में मिलती है फिर भी प्रस्तुत संख्या अब तक की प्राप्त संख्याओं में सबसे बड़ी है[1]।

विभाग २ के अन्तर्गत राजा के वर्णन के लगभग १५ प्रकार दिए हैं। पहले वर्णन में गौड, भोट, पांचाल, कन्नड़, ढूँढाड़ (जयपुर), वावर (सौराष्ट्र) चोड़, दशउर (दशपुर मालवा), मेवाड़, कच्छ, अंग आदि देशों की समृद्धि या विभूति पर शासन करने का उल्लेख है। पृष्ठ ३६ पर अष्टादश द्वीप कीर्ति विख्यात एवं एकोनविंशति पत्तनों के नायक विशेषण मध्यकालीन प्रतापी चोल सम्राटों के विशाल सामुद्रिक राज्य और दिग्विजय से लिए किए गए अभिप्राय थे। पृष्ठ ४३ पर चक्रवर्ती के वर्णन में अनेक संख्याओं का उल्लेख है जिनमें ९६ कोटि ग्राम संख्या भी है जिनकी व्याख्या ऊपर आ चुकी है। रानी,

---

१—शतानि नव संगृह्य नदीनां परमेश्वरी। तथा गङ्गाभिधा या तु सैव प्राक् सागरं गता।

राजकुमार के वर्णन सामान्य कोटि के है। किन्तु राजसभा के छः वर्णन (पृष्ठ ५८–५६) महत्वपूर्ण सास्कृतिक सामग्री से भरे हुए है जिनकी व्याख्या विस्तार की अपेक्षा रखती है। सिगरणा (श्रीकरण का मुख्य मत्री जिसे आजकल की भाषा मे गृह मत्री कहेगे) और बेगरणा (व्ययकरण का अर्थमत्री) मध्यकालीन सचिवो के नाम थे। साहणिया या साहणी (अश्वसाधनिक) नामक अधिकारी था। राजसभा के पाँचवें वर्णन मे उसे महामसाणी (=महासाहणी=महासाधनिक) कहा गया है। इसी प्रसग मे थैयायत शब्द उल्लेखनीय है। नाहटाजी ने सूचित किया है कि राज दरबार मे ताम्बूल आदि देने वाला सम्मानित व्यक्ति थैयायत कहलाता था। श्रीपालचरित मे उसका उल्लेख है। पृष्ठ ६३–६४ पर तीन बार लोहे के महाकाय भोगल का उल्लेख है। हमारे लिए यह नया शब्द है और प्रतोली और कपाट के प्रसग मे इसका अर्थ परिघ या दृढ अर्गला होना चाहिए। गज वर्णन के ६ प्रकार और अश्व वर्णन के ७ प्रकार सगृहीत है। इनमे सप्ताङ्गप्रतिष्ठित विशेषण हाथी के लिये प्राचीन पाली और सस्कृत साहित्य मे भी आता है। अश्वो के नाम रग एव देशो के अनुसार रक्खे जाते थे जिसकी पर्याप्त नई सामग्री इन सूचियो मे है। पृष्ठ ७० पर सेराह, हलाह, उराह, आदि नाम अरबी फारसी परम्परा के थे। बोरिया या बोर घोडे का उल्लेख जायसी मे भी आया है। पृष्ठ ७३–८५ पर युद्ध वर्णन के ७ प्रकार मध्यकालीन वीरकाव्यो की रूढ शैली पर है।

विभाग ३ मे स्त्री पुरुषो का वर्णन है। इसमे सत् पुरुषो के गुणो की सूची एव सज्जन दुर्जन का परिचय रोचक है। इसी प्रकार पृष्ठ ६६ पर उत्तम स्त्रिया की गुण सूची भी सुन्दर है। पृष्ठ ११३–१४ पर मालवा, मेवात, मेवाड, दक्षिण और गुजरात की स्त्रियो के नामो की सूची पहली ही बार साहित्य मे देखने को मिलती है।

विभाग ४ मे प्रकृति वर्णन का सग्रह है जिसमे प्रभात, सध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय और छ ऋतुओ के वर्णना का सग्रह है। साहित्य मे वसन्त, वर्षा और शरद् के वर्णन तो प्राय मिलते है, पर ग्रीष्म के वर्णन कम पाए जाते है। बाण के हर्षचरित मे ग्रीष्म का बहुत ही उदात्त और मौलिक वर्णन पाया जाता है। यहाँ उन्हालो या उष्णकाल के तीन वर्णन है। जैसे बावन पल की तोल का सोने का गोला दहकता हो वैसे ही सूर्य तप रहा था—यह कल्पना नई है। बावन तोले माल गलाने का मुहावरा ही मध्यकाल मे चल गया था, जैसा ५२ तोले पाव रत्ती इस लोकोक्ति मे सुरक्षित है। पृष्ठ १२४ पर वर्षा के कारण पटशाल के टपकने का उल्लेख है। पटशाल पट्टशाला का रूप है जो राजप्रासाद के

आस्थान मडप या आस्थायिका के लिये होना चाहिए जहाँ पाट या सिंहासन रहता था। किसानो को कई बार कर्षणीलोक कहा गया है। इसी प्रकरण मे कलिकाल के भी कई वर्णन है। कलि वर्णन मध्यकालीन साहित्य का एक अभिप्राय ही बन गया था। प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी मे कई कलियुग चरित्र मिलते हैं। बान कवि ने सवत् १६७४ मे एक कलियुग चरित्र की रचना की थी। उससे २०० वर्ष पूर्व सवत् १४८६ मे हीरानन्द सूरि ने कलिकाल रास लिखा था। गोस्वामी जी ने उत्तरकाण्ड मे कलिधर्मों का बहुत अच्छा वर्णन किया है। वैसे तो गुप्तकाल से ही इस प्रकार के कलिचरितो की रचना होने लगी थी। विष्णुपुराण मे सर्वप्रथम कलिचरित का सन्निवेश हुआ है। लोकमाया बहुल, अल्प मगल, यही इन कलिमला का सार था। आउखा स्तोक, निवाणिजा लोक अर्थात् आयुर्बल थोडा हो गया और लोगो का व्यवसाय धन्धा जाता रहा यही कलि प्रभाव है। रामचरितमानस का कलिवर्णन उसी परम्परा मे है।

विभाग ५ मे कला और विद्याओ की सूचियाँ है। इस प्रकार की अन्य कई सूचियाँ सस्कृत साहित्य मे भी मिलती हैं। उनके साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिये ये सूचियाँ उपयोगी है। प्राचीनकाल की अनेक विदग्ध गोष्ठियो मे इन कलाओ की आराधना की जाती थी, जैसे वक्रोक्ति, काव्यशक्ति, काव्यकरण, वचनपाटव, वीणा, कथाकथन, अङ्कविचार, प्रश्न-पहेलिका, अन्ताक्षरिका आदि विषय मनोविनोद के साधन थे। पृष्ठ १४० पर ४७ राग रागिनियो की सूची है और पृष्ठ १४१ पर बाजों के नामो की दो बडी सूचियाँ है। पृष्ठ १४० पर बद्ध नाटक में ३२ अभिप्रायो द्वारा सपादित नाट्य विधि का उल्लेख है जो जैन-परम्परा मे प्रसिद्ध हो गई थी और जिसका विस्तृत वर्णन रायपसेनिय सूत्र में आया है। पृष्ठ १४३ पर लिपियो की ३ सूचियाँ है जिनमे कुछ नाम तो काल्पनिक और अनेक नाम वास्तविक जीवन से लिये गए है, जैसे नागरी लिपि, लाट लिपि, पारसी लिपि, हमीरी लिपि, (अमीर या तुर्की सुल्तानो की लिपि), मरहठी लिपि, चौडी (चोल देश की तमिल लिपि), कुकुणी, कान्हडी, सिंहली, कीरी (कीर या टक्क देश की टक्की लिपि)।

विभाग ६ मे जाति और धन्धो की उपयोगी सूचियाँ है। इनमे ३६ पौनि या नेगियों की नामावली भी है जिनका उल्लेख साहित्य मे आता है। अनेक पेशेवर जातियो के नाम रोचक है जैसे दोसी (दूष्य या वस्त्र का व्यवसाय करनेवाले), पारखि (रत्नो की परीक्षा करनेवाले), पटउलिया (पटोला बुननेवाले), भोई (सस्कृत भोगी, हाथियों के अधिकारी), वेगरिया (सस्कृत वैकटिक, रत्न तराश), परीयट (बरहठा या धोबी जिसे देशी नाममाला मे परीयट्ट कहा

गया है), सुई (संस्कृत-सौचिक या दर्जी), ताई (संस्कृत त्रायी या आरक्षक, रक्षा करनेवाला पुलिस अधिकारी) इत्यादि। एक सूची में ८४ प्रकार की वणिक जातियों के नाम हैं और दूसरी में ३४ प्रकार के ब्राह्मणों के। राजपूतों के ३६ कुलों की सूची वर्णरत्नाकर के समान यहाँ भी है। यह पुरानी सूची थी। कालान्तर में जब और भी जातियां राज्याधिकार सम्पन्न हुई तब एक दूसरी बड़ी सूची संकलित की गई जिसमें ७२ राजकुलों की गिनती थी। यह सूची भी वर्णरत्नाकर (पृष्ठ ६१) में है। ३६ कुलों की सूची के अन्त में कुली शब्द है, ७२ वाली के अन्त में नहीं। पहले अपने आपको सत् क्षत्रिय (वत्सराजकृत किरातार्जुनीय नाटक), सुक्षत्रिय (श्रीधरदासकृत सदुक्तिकर्णामृत, २६०) या शुद्ध क्षत्रिय (यः कोऽपिवा साहसी-लोके यस्यास्ति वा क्षत्रियतावदाता, पृथ्वीराज विजय, ६।२२४) मानते थे। राजतरंगिणी में भी ३६ क्षत्रिय कुलों का उल्लेख आया है (७।१६१७) जिससे ज्ञात होता है कि ३६ कुलों की कोई एक सूची बारहवीं शती से पहले अस्तित्व में आ चुकी थी। इन सूचियों की ऐतिहासिक परख से बहुत से तथ्य हाथ लगेंगे। पृष्ठ १५१ पर साहूकार के कई विरुदों में एक 'छत्रीस वेलाउल विख्यात' भी है जिसका तात्पर्य यह था कि बड़े साहूकारों की कोठियाँ या लेन देन के सूत्र ३६ वेलाउल या समुद्र तटवर्ती पत्तनों के साथ जुड़े रहते थे और उनके साथ उनके हुण्डी-परचे का भुगतान चलता रहता था।

संवत्सर मुद्रां कणहार विरुद भी किसी महत्वपूर्ण तथ्य का व्यंजक है। संभवतः नये वर्ष के आरम्भ में संवत्सर सूचक व्यापार मुद्रा या भाव-ताव का आरम्भ करने का श्रेय रखने वाले शिरोधार्य महाजन के लिये यह विरुद था। इसी प्रकार कड़ाह समुद्र विरुद भी ध्यान देने योग्य है। कटाह-द्वीप के पूर्वी समुद्र या द्वीपान्तर के साथ व्यापार करने का प्राचीन गुप्तकालीन संकेत इसमें बच गया था।

विभाग ७ में देवी देवता आदि का वर्णन है। पृष्ठ १६३ पर श्रेष्ठि के वर्णन में कहा गया है कि उसके यहाँ लक्ष्मी के निधान कलश रहते हैं और लाख धन के सूचक दीप जलते हैं एवं करोड़ की सूचक ध्वजाएँ फहराती हैं। श्रेष्ठिप्रवहणयात्रा के वर्णन में देशान्तर के योग्य भाण्ड या माल को देशान्तरोचित क्रियाणां कहा गया है और कूपदण्ड या मस्तूल के लिये कुआखंभ शब्द है।

विभाग ८ में जैन धर्म संबंधी वर्णकों का संग्रह है। समवसरण के वर्णन में रत्नमय पीठ, प्राकार, कौशीश, चार प्रतोली द्वार, देव प्रतीहार, सुवर्ण स्तम्भ

मणिमय कुम्भ, रत्नमय तोरण, बन्दनमाला, छत्र, पुतली, मगरमुख, ध्वजा, पीठ, सिंहासन, पादपीठ, आतपत्र छत्र, चँवर, भामण्डल, धर्मचक्र, देवदुन्दुभि, इन्द्र-ध्वज आदि पारिभाषिक शब्दावली ध्यान देने योग्य है। इसके बाद जिन-वाणी, जिनोपदेश, तपभावना, धर्म माहात्म्य, युगलिया सुखवर्णन, श्रावक आदि के वर्णक हैं। पृष्ठ २११-२१२ पर ८४ गच्छों के नामों की सूची है और अन्त में चतुर्दश स्वप्नों के वर्णन हैं। १४वें स्वप्न में निधूम अग्निशिखा को सदाज्वाला युक्त ऊर्ध्वमुखी धक-धक करता हुआ वैश्वानर कहा गया है। सर्वान्त में लक्ष्मी देवी और उनके पद्मसरोवर में खिले मुख्य कमल का बहुत ही भव्य वर्णन है।

विभाग ६ में सामान्य नीतिपरक वर्णकों का संग्रह है। यह समस्त प्रकरण अत्यन्त सुपाठ्य और बुद्धि की चतुराई से भरा हुआ है। द्रामड़ का संकेत शेरशाह-अकबरकालीन मुद्रा से है (कहाँ द्रम्य या दाम कहाँ रुपया)। पृष्ठ २५६ पर चंचल मन के वर्णक में उपमाओं की लड़ी पढ़ते हुए चित्त प्रसन्न हो जाता है—चञ्चल मन ऐसा है जैसे हाथी का चञ्चल कान, पीपल का पान, संध्या का बान, या दुहागिन (परित्यक्ता) का मान, मिट्टी का बाट, बादल की छाँह, कापुरुष की बाँह, तृणों की आग, दुर्जन का राग, पानी की तरंग और पतंग (लकड़ी) का रंग। पृष्ठ २५८—५६ पर विशिष्ट पदार्थों के वर्णक में वस्तुओं का उल्लेख ध्यान देने योग्य है—सोरठी गाय, मरहठी बेसर आबू तणउ देवड़ो (आबू के जैन मन्दिर), पाटण तणो सेवड़ो (पाटन के श्वेताम्बर यति), वाराणसीउ धूर्त। इसी प्रसंग में ३६० प्रकार के किरानों को उत्तम और ३६ नाणक को अच्छा कहा गया है। ३६० किरानों की सूची सांडे-सरा के वर्णक-समुच्चय के परिशिष्ट २ में सौभाग्य से बच गई है। ३६ नाणक या सिक्कों को श्रेष्ठ मानने का कारण संभवतः यह था कि ३६ दाम या ताँबे के पैसों का एक चाँदी का रुपया माना जाता था। विशेष पदार्थों में (२५६—२६०) निम्नलिखित ध्यान देने योग्य हैं :—

चतुराई गुजरात की, वासा हिन्दुस्तान का,
चूड़ा हाथी दाँत का, चौहट्टों की भीड़ दिल्ली की,

देवल आबू का, रूपा (चाँदी) जावर का इत्यादि। अपने वर्ग में विशिष्ट पदार्थों का उल्लेख करते हुए वस्त्रों में नेत्र वस्त्र की प्रशंसा की गई है। 'भला क्या' इस सूची में भी अनेक उल्लेख बढ़िया हैं, जैसे—कच्छ की घोड़ी भली, पाग खाँगी (टेढ़ी) भली, सेज चित्रशाली भली, कोरणी कोरी भली (अर्थात् नक्काशी या उकेरी चारों ओर गोल कोरी या उकेरी हुई नकाशी अच्छी समझनी चाहिए।

विभाग १० मे मगल, वर्द्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्र, अलकार, धातु-रत्न आदि के वर्णन है। पृष्ठ २८१ पर वर्द्धापनक के अन्तर्गत ही तलिया तोरण का उल्लेख है जो पृष्ठ १६ पर भी आया है। जैसा ऊपर कहा है यह सस्कृत तलक-तोरण का रूप था। पृष्ठ २८२ पर धात्रियो की सख्या पॉच कही गई है। दिव्यावदान आदि बौद्ध सस्कृत ग्रन्थो मे अकधात्री क्षीर धात्री, क्रीडा-धात्री और मल-धात्री ये चार नाम आते है। यहाँ अन्तिम के स्थान पर मजन-धात्री और मडन धात्री नाम आए हैं। बाल क्रीडा-वर्णन के मुख्य अभिप्राय सूर सागर के विशद वर्णनो की सक्षिप्त सूची के समान है। विवाह समय नामक वर्णक मे (पृ० २८३) घडे सहित धृत मोल लेने का उल्लेख है जो उस युग का स्मरण दिलाता है जब पचास साठ वर्ष पहले तक गाँवो मे घी गोल, घडे आदि मिट्टी के पात्रों में भरकर रक्खा जाता था। घाघरवालि से तात्पर्य बडे और बजने घुँघरुओ की उस माला से है जो घोडे, खच्चर आदि के गले मे डाली जाती थी और जिसे गढवाल मे आज भी घॉघर्यालो कहते है। भोजन के प्रसग मे रसोई के चार वर्णक सगृहीत हैं। लगभग २८ पृष्ठो मे यह सामग्री अत्यन्त विशद है और इसमे मध्यकालीन साहित्य मे प्रयुक्त भोजन सबधी शब्दो का एक पूरा भाडार ही मिलेगा। 'जिम महद्भूत गाडू तिम लाडू' (पृष्ठ २८३) उल्लेख ध्यान देने योग्य है। गाडू का अर्थ गडुवा या लोटा है जिसे यहाँ बडे लड्डू का उपमान कहा गया है। विद्यापति की कीर्तिलता में भी गाडू शब्द आया है (खणएक तुप भै रहइ गारि गाडू दे तबहीं, द्वितीय पल्लव, अर्थात् तुर्क के मुँह मे जब निवाला अटक जाता है तब वह गडुवे से पानी मुँह मे उँडेल लेता है)। महद्भुत या महाअद्भुत गाडू सम्भवत' उस प्रकार के लोटे को कहते थे जिसके पिटार पर दस अवतारा का अकन किया जाता था। सम्भवत' यहाँ उन बडे लड्डुओ का प्रसग है जिन्हे मगद के लड्डू कहते है। पकवानो मे खाजा नामक मिठाई की उपमा महल के छज्जे से दी गई है (पृष्ठ २८३, २८६)। इस मिठाई का चलन अब बन्द हो गया है किन्तु ज्ञात होता है कि मध्य युग मे फूले हुए बहुत बडे सतपुडे खाजे बनाए जाते थे। वस्तुत इस प्रकरण मे अनेक प्रकार के लड्डू, साँटे, फल, मेवा, चावल, मसाले, मिठाई आदि के नाम हैं जिनकी व्याख्या के लिये पूरे शोध निबन्ध की आवश्यकता होगी। वर्ण-रत्नाकर और वर्णक-समुच्चय की सामग्री के साथ तुलना करने से इन नामो पर प्रकाश पडने की सम्भावना है। इन शब्दो मे अपभ्रश युग की भाषा की परम्परा भी ध्यान देने योग्य है, जैसे पारिहेटि महिसिं तणउ दूधु (पृष्ठ २८४) इस वाक्य मे पारिहेटि बाखडी भैंस की सज्ञा थी जिसे हेमचन्द्र ने देशीनाममाला मे परिहट्टी कहा है (देशी०

६।७२)। पृष्ठ ३०३ पर लड्डुओं के दो वर्णक है और पृष्ठ ३०४ पर सूॅखडी या मिठाई के तीन वर्णको मे अनेक नाम भाषा के इतिहास की दृष्टि से रोचक है, जैसे इमरती के लिये पुराना नाम मुरकी था जो दो वर्णको मे पढा है और पद्मावत में भी प्रयुक्त हुआ है। भारतीय भोजन और पकवानों का इतिहास अभी नही लिखा गया यद्यपि वैदिक युग से लेकर आज तक का तत्सम्बन्धी सामग्री बहुत अधिक है। उदाहरण के लिये इन सूचियो मे बरसोला शब्द कईबार आया हे। यह एक प्रकार का खॉड का लड्डू होता था जो पानी मे डालते ही गल जाता था। नैषधचरित में इसे वर्षोपल कहा है। अब इसका चलन कम हो गया है। पृष्ठ ३१० पर फल-मेवो की सूची मे भी बिजोरा के साथ बरसोला नाम आया है। इससे ज्ञात होता है कि मिठाई के अतिरिक्त नीबू की तरह के किसी फल के लिये भी यह शब्द प्रयुक्त होने लगा था। सुगन्धित वस्तुओं की सूची मे मोगरेल, चॉपेल, जाचेल, केवडेल, करणेल, इन पॉचों शब्दो का अन्त का 'एल' प्रत्यय तैल-वाचक है। ये शब्द मोगरा चम्पा, जाही, केवडा और करना (एक प्रकार का श्वेत पुष्प) नामक फूलों से सुवासित तेलों के नाम थे।

पृ० ३११-३१४ पर वस्त्रो के पॉच वर्णक अत्यन्त रोचक हैं। इनमे पॉचवी सूची मे लगभग १४० वस्त्रों के नाम हैं जो ऊपर उल्लिखित वर्णकसमुच्चय की सूची के समान महत्त्वपूर्ण है। इन सूचियो में भैरव शब्द कई बार आया है जो आईन-अकबरी के अनुसार एक वस्त्र का नाम था। बीसलदेव रासो मे भैरव की चोली का वर्णन है, जो आइन से लगभग २०० वर्ष पुराना उल्लेख होना चाहिए। मसज्जर अरबी मुशज्जर का रूप है जिस पर शजर या पेड-पौधो की बूटियॉ बनी रहती थी। पोपटिया, जैसा नाम से प्रकट है, तोते की बूटी से छपे वस्त्र को कहते थे। नारी कुजर वस्त्र का नाम भी नारी कुजर भॉति की छपाई के कारण ही पडा था। कमलवन्ना (कमल के रग का), मूॅगवन्ना (मूॅगिया रग का), गगाजल, चक्रवटा (चक्र की छाप से छपा हुआ), सेत्रुजी (शत्रुजय, सौराष्ट्र का बना हुआ), पाम्हडी (स० पद्मपटी, कमल बूटी से छपा हुआ), हसवेडि (हसपटी), गजवेडि (गजपटी), प्रवालिआ (मूॅगिया लाल रग का वस्त्र), कोची (काच बिहार का बना हुआ), गौडीया (गौड, बगाल के वस्त्र सभवत. जिन्हे जायसी ने पडुआ के बने पडुवाए वस्त्र कहा है), सुनारगामी कपूरधूली, लोवडी (स० लोमपटी) पट्टकूल, मेघाडम्बर, खीरोदक, पैठाणी (पैठण या प्रतिष्ठान का बना हुआ) आदि नाम सस्कृत प्राकृत परम्परा के है जो मध्यकालीन सस्कृति मे सुविदित रहे होगे। आगे चलकर

महमूदी, मिरीबाफ, जरबाफ, तानबाफ, कमखाब, सूसी आदि मुसल्मानी युग के नाम भी पुरानी सूचियों मे जुडते रहे जैसा वर्णरत्नाकर, वर्णकसमुच्चय और सभाशृंगार में पाया जाता है। इनमे कई नामो की अब ठीक पहचान ज्ञात नहीं है।

इस ग्रन्थ के परिशिष्ट रूप में जो रत्नकोष और राजनीतिनिरूपण नामक दो संस्कृत ग्रन्थ मुद्रित किये गए हैं उनमे भी मध्यकालीन जीवन की बहुविध सामग्री का उल्लेख आया है। हमें प्रसन्नता है कि ग्रन्थ की उपादेयता बढाने के लिये श्री नाहटा जी ने उन्हें इस संग्रह मे संकलित कर लिया है क्योंकि जितनी भी इस प्रकार की बिखरी हुई सामग्री प्रकाश में लाई जा सके स्वागत के योग्य है।

इस प्रकार इस विशिष्ट वर्णन संग्रह का कुछ संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से इसकी विशेष छानबीन की आवश्यकता है। हिन्दी साहित्य मे यह एक नया क्षेत्र है। प्रयत्न करने पर इस प्रकार के और भी ग्रन्थ मिलने की संभावना है। हम श्री नाहटा जी के अनुगृहीत हैं कि उन्होने परिश्रम पूर्वक इस प्रकार के उपयोगी साहित्य की रक्षा की।

काशी विश्वविद्यालय
६-४-१९५९

वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रस्तावना

विश्व अनंत वस्तुओं का भंडार है जहाँ प्रतिपल अनेक प्रसंग बनते रहते हैं। उन वस्तुओं और घटनाओं को हम सभी देखते एवं जानते हैं पर उनका ठीक से वर्णन करना विरले ही व्यक्तियों के लिये संभव है। इसीलिये कहा गया है—'कहिबो सुनिबो देखिबो, चतुरन को कछु और'।

वस्तुओं और प्रसंगों को वर्णन करने की एक कला है। किसी बात का वर्णन करते समय उसका तादृश चित्र सा खड़ा कर देना तो बड़े महत्व की बात है ही पर उसे सुंदर शब्दों में दृष्टांतों और उपमाओं के साथ वर्णन करना यह उससे भी अधिक महत्व की बात है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से वर्णनकला की परंपरा पाई जाती है। प्राचीन जैन आगमों से तो यह भली भाँति सिद्ध है। वैसे तो सभी आगमों में जब भी नगर, राजा, वनखंड, उद्यान, चैत्य आदि का प्रसंग आया है, वहाँ उनका बड़े सुंदर ढंग से वर्णन किया गया है। पर उववाइ (औपपातिक) नामक उपांग सूत्र में तो वर्णनों का संग्रह विशेष रूप से पाया जाता है और अन्य आगमों में नगर, राजा आदि का वर्णन—'उववाइ सूत्र के जैसा जान लेना या कहना' इस प्रकार का मिलता है। इन वर्णनों में सांस्कृतिक सामग्री प्रचुर रूप से संगृहीत है जिसके संबंध में मैंने एक स्वतंत्र निबंध में दिशानिर्देश किया है और पटना से प्रकाशित 'साहित्य' नामक पत्र में 'जैन आगमों की वर्णन शैली' का संक्षिप्त परिचय भी प्रकाशित किया गया था।

वर्णनसंग्रह के दो महत्वपूर्ण ग्रंथ—जैन आगमों की वह परंपरा परवर्ती साहित्य में भी पाई जाती है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश काव्यों और कुछ गद्यग्रंथों में भी कवियों एवं विद्वानों ने विविध प्रसंगों में नगर, राजा रानी, ऋतु आदि का वर्णन किया है। प्राचीन राजस्थानी और गुजराती में वह परंपरा और भी विकसित रूप में पाई जाती है। मैथिली और महाराष्ट्री भाषा के भी 'वर्णरत्नाकर' एवं 'बैजनाथ कलानिधि' इस परंपरा की व्यापकता को सूचित करते हैं। इनमें से वर्णरत्नाकर को तो काफी प्रसिद्धि मिल चुकी है पर 'बैजनाथ कलानिधि' का विवरण अब से २३ वर्ष पूर्व पत्तनस्थ प्राच्य

जैन भडांगारीय ग्रंथसूची के पृष्ठ ७४ से ७६ में प्रकाशित होने पर भी इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की ओर अभी तक विद्वानों का ध्यान नहीं गया। इस ग्रंथ की ११५ पत्रों की एक प्रति संघवी पाड़े के जैन भंडार में है। ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित होने से इसका थोड़ा सा अंश पाटण भंडार सूची से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

आतां नगरवर्णन

आटालिया, ऊपरीया, मालीया, गजद्वारें, राजद्वारें, खडकीद्वारें, वाहलवाडे, चौकिया, मनोरम विलासमुरें।

प्रसिद्ध सिद्धांचे निवेश

बौद्धांचे विहारा, जिनांचीं जिनालयां, कनकशाला, टंकशाला, होमशाला, अध्ययनशाला, गीतनृत्य वाद्यशाला, जेमणशाला, चित्रशाला, धर्मशाला, मद्यशाला, हस्तिशाला, ब्रह्मशाला।

अनेक मठ मढिया

'करुआडें नडें चौकीया धवलहारें वसुआरें मालवधें कोवनि बद्धें कोठारें, कोटिआ, कड्डी, घोडौ डी, [क] लहंस, हुआले आवासणियां। सिपणहारी, उधूतपताकासहश्र (ख) प्रकटिते, उत्तंगगिरि शिखरसंकासें देवतायतनें, चतुष्पथें २ विचित्र चित्रित सभा मंडप। स्वर्णकलशालंप्रासादसहश्रु (ख़ु)। जैसे—गगन सरोवर कनककमलमुकुलीं अलंकृत, मयूर, पारावत, चकोर, राजहंस। तेयां चित्रां प्रासादांवरि इतश्चेतश्च संचरतेति आकाश...वीं जलविहंगमां ब्राह्मणभवनीं ऋचां यचं सामाचे उद्घोष सांप्रात्तसहोत्र हवने मंगलप्रकासक होमधूम। सुरभिपरिमलालंकृत श्री...मंत भवनीं बहकते अगरुधूम। क्रय-विक्रय व्यवहारीं, ससंभ्रम हट्टशाला प्रदेश। ठाईं ठाईं सतीसां दंडायुधां वे सरांवाचे या गरुडी। तांडवलास्यभेदें। भावकां नटांसि पात्र परिपाठ वाचीं अभ्यासस्थानें। गोववते आंगसरादींविश्रसाला। घट-प्रासादसाधकां देसी मार्गसाधनें। तत वितत घन सुखिर वाद्य वादकां सरावांचीं एकांतस्थानें परमप्रबोधा नंदानिर्भरां मुनीं वेद्याख्यान मठ राउलि वांसिह बारीं डाविये ऊजिवीये सुजे तीं तीं भूमींचीं भूविलासिणिचीं धवलहारें।' इसके बाद सभा आदि के वर्णन हैं।

वर्णन प्रकार—वर्णन करने की प्रणाली में मुख्यतया दो बातों की ओर हमारा ध्यान जाता है अर्थात् प्रधानतया वर्णनों को दो प्रकारों में विभाजित

कर सकते हैं (१) भेद प्रभेदों एवं नामावलियों का विस्तार (२) वस्तु और घटना का छटाकार अलंकृत शैली में चित्रण। इसमें तुकांत प्रासयुक्त गद्य की प्रधानता इसकी रोचकता में चार चाँद लगा देती है। छंद के बंधन से मुक्त होने पर भी तुकांत और प्रासयुक्त वर्णन शैली बहुत ही मनोहर एवं आकर्षक है। प्रस्तुत संग्रह में उपरोक्त दोनों प्रकार के वर्णन पाठकों को देखने को मिलेंगे।

दो अन्य राजस्थानी वर्णनसंग्रह ग्रंथ—इस ग्रंथ में संगृहीत सभी वर्णन जैन विद्वानों के लिखे हुए हैं पर जैनेतर लेखकों ने भी ऐसी कुछ रचनाएँ की हैं जिनमें से दो राजस्थानी रचनाएँ 'खीची गंगेव नींबावतरो दो-पहरो और राजान राउतरो वात वणाव' मेरे विद्वान् मित्र श्री नरोत्तमदास जी स्वामी संपादित राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण, प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग १ में प्रकाशित हो चुकी हैं। ये दोनों ही रचनाएँ किसी चारण विद्वान् की लिखी हुई प्रतीत होती हैं। इनमें प्राप्त होनेवाले वर्णन बहुत ही सुंदर और सांस्कृतिक दृष्टि से बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। बात बणाव का अर्थ है कि बात किस तरह बनानी अर्थात् कहनी व लिखनी चाहिए। राजस्थान में हजारों बातें (वार्ताएँ, कथा कहानियाँ) बड़े चाव से कही सुनी जाती रही हैं। बातों को अच्छे ढंग से छटादार शैली में कहनेवाले व्यक्तियों को राजाओं ठाकुरों आदि के यहाँ बड़ा संमान तो मिलता ही था पर जनसाधारण में भी उनका बड़ा आदर था। यद्यपि सैकड़ों राजस्थानी बातें लिखित रूप में भी मिलती हैं पर मौखिक रूप से कहने का ढंग बड़ा ही अनोखा और निराला होता है जो कि लिखित रूप में प्रायः नहीं पाया जाता। फिर भी कई बातों में कई प्रसंग बड़े सुंदर रूप से लिखे हुए मिलते हैं।

वर्णकों के प्रति आकर्षण—वर्णकों के प्रति मेरा आकर्षण बाल्यकाल से है जब मैं ८-१० वर्ष का था तो पर्युषणों में कल्पसूत्र सुनने के लिये पिताजी आदि के साथ व्याख्यान में जाया करता था। कल्पसूत्र की लक्ष्मी-वल्लभी टीका कल्पद्रुम कलिका में कई जगह राजस्थानी भाषा के सुंदर वर्णक हैं जिन्हें सुनकर मुझे बड़ा आनंद मिलता था। टीकाकार लक्ष्मी-वल्लभ ने ऐसे वर्णकों को 'वागविलास' ग्रंथ से उद्धृत करने की सूचना दी है अतः उस वागविलास ग्रंथ को प्राप्त करने की बड़ी उत्कंठा हो आई पर कई वर्षों तक उसका कोई अनुसंधान नहीं मिल सका।

अब से करीब ३० वर्ष पूर्व बड़ौदा ओरियंटल सिरीज से प्रकाशित 'प्राचीन गुर्जर काव्यसंग्रह' और मुनि जिनविजय जी संपादित 'प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ' में संवत् १४७८ में माणक्यचंद्रसूरि रचित 'पृथ्वी चंद्र चरित्र' अपर नाम 'वागविलास' नामक ग्रंथ देखने को मिला तो बड़ी प्रसन्नता हुई। पर इस ग्रंथ में लक्ष्मीवल्लभगणि ने 'वागविलास' के जो वर्णन कल्पसूत्र की टीका में दिए हैं वे प्राप्त नहीं हुए, इसलिये टीका में उल्लिखित 'वागविलास' नामक रचना और कोई होनी चाहिये इस धारणा के साथ उसकी शोध में लगा रहा।

संग्रह का प्रयत्न—महाकवि समयसुंदर की रचनाओं के अनुसंधान के प्रसंग से जब बीकानेर के हस्तलिखित जैन ज्ञानभंडारों की प्रतियों का अवलोकन शुरू किया तो सर्वप्रथम 'कुतूहलम्' नामक एक छोटी सी सुंदर वर्णनोंवाली रचना मिली। उसके बाद संवत् १७६२ की लिखी हुई 'सभा-श्रृंगार' (नंबर ३) की एक प्रति प्राप्त हुई। इन दोनों की नकलें करवा के रख ली गई। तदनंतर सन् १९५० में जैसलमेर की द्वितीय यात्रा में १६ वीं शताब्दी की लिखी हुई एक अपूर्ण प्रति बड़े उपाश्रय के यति लक्ष्मीचंद जी के पास देखने को मिली। अपूर्ण होने से इस रचना का कोई नाम ज्ञात नहीं हुआ। पर पत्रों के प्रत्येक उपांत में 'मुत्कलानुप्रास' नाम लिखा हुआ था। प्राप्त ८ पत्रों में १०८ वर्णन प्राप्त हुए पर बहुत खोज करने पर भी इसकी पूरी प्रति प्राप्त नहीं हुई।

जैसलमेर से बीकानेर लौटते समय मुनि पुण्यविजय जी के पास जैसलमेर पधारे हुए डा० भोगीलाल सांडेसरा और डा० जितेंद्र जेतली से सर्वप्रथम मिलना हुआ तो उन्हें अनुरोध करके बीकानेर साथ ले आया। प्रसंग-वश डा० सांडेसरा से यह ज्ञात हुआ कि उनके पास भी वर्णनों की एक विशिष्ट प्रति है। तो मैंने उनसे वह प्रति भी मँगवा ली। ४० पत्रों की वह महत्त्वपूर्ण प्रति भी अपूर्ण थी। सन् १९५१ के मार्च में ही मैंने उसकी प्रतिलिपि करवा ली। उसके बाद जोधपुर जाने पर वहाँ के केसरियानाथ जी के भंडार में सभाश्रृंगार (नंबर १) के १८ पत्रों की एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई इसमें १५८ वर्णन थे। इन सब प्रतियों व रचनाओं के आधार से 'राजस्थान भारती' में 'कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य ग्रंथ' नामक लेख प्रकाशित किया। जिसमें उपरोक्त रचनाओं के कुछ चुने हुए वर्णन प्रकाशित किये गए। माननीय वासुदेवशरण जी अग्रवाल को उपरोक्त रचनाओं की

प्रतिलिपियाँ देखने को भेजी तो आपने इन्हें महत्त्वपूर्ण समझकर संपादित कर देने को लिखा। नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से इस ग्रंथ के प्रकाशन में भी अग्रवाल जी का मुख्य हाथ रहा है।

इसी बीच बीकानेर के खरतर आचार्य गच्छ के ज्ञानभंडार से कुशलधीर रचित सभा कौतूहल की ९ पत्रों की एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई। आगरे जाने पर विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर से सभाश्रृंगार (नंबर १) जो पहले अपूर्ण मिला था उसकी संवत् १६७१ की लिखी हुई पूरी प्रति मिली और पाटोदी दिगंबर मंदिर, जयपुर से भी उसकी एक प्रति प्राप्त हो गई। इस तरह वह रचना तो पूरी की जा सकी। सौजन्यमूर्ति आगमप्रभाकर मुनिवर्य पुण्यविजय जी को लिखने पर उन्होंने पाटण भंडार से 'सभाश्रृंगार (नंबर २) की ६ पत्रों की प्रति संवत् १६७७ की लिखी भिजवा दी। जयपुर जाने पर मुनि जिन-विजय जी के संग्रह में खरतर गच्छीय कविवर सूरचंद्र रचित 'पदैक विंशति' नामक महत्त्वपूर्ण अज्ञात ग्रंथ की ९८ पत्रों की अपूर्ण प्रति अवलोकन में आई तो उसे भी साथ ले आया। मूल ग्रंथ संस्कृत में है पर उसमें प्रसंग प्रसंग पर राजस्थानी के गद्यवर्णन स्वर्ण आभूषण में जड़ाव की तरह सुनियोजित हैं। अतः उन सब वर्णनों को अलग से छाँटकर लिखवा लिया गया। उसके बाद मुनि पुण्यविजय जी और जयपुर के दिगंबर भंडार तथा विनयसागर जी के संग्रह की प्रतियाँ प्राप्त होती गईं और कुछ अपने संग्रह की प्रतियों का भी उपयोग किया। चित्तौड़ जाने पर यति बालचंद्र जी के संग्रह से १ पत्र में लिखा हुआ सभाश्रृंगार ले आया। भारतीय विद्या भवन से जिनविजय जी के संग्रह के सभाश्रृंगार की प्रति मँगवाई। बड़ौदा, पूना आदि से भी प्रतियाँ मँगवाई गईं। इस तरह २५-३० प्रतियों को प्राप्त करके इस ग्रंथ को तैयार किया गया है।

आवश्यक स्पष्टीकरण—यहाँ यह भी बतला देना आवश्यक है कि जब मैं इस ग्रंथ की तैयारी में लगा हुआ था तो डा० भोगीलाल जी सांडेसरा से सूचना मिली कि वे भी एक 'वर्णक समुच्चय' ग्रंथ तैयार करने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसलिये उनके संग्रह की जो प्रति मँगवाई थी उसका उपयोग मैं अपने ग्रंथ में नहीं करूँ। अतः उस प्रति के वर्णनों का इस ग्रंथ में उपयोग नहीं किया गया। यद्यपि उसके बहुत से वर्णन सभाश्रृंगार आदि अन्य संग्रहों में प्राप्त होने से मेरे इस ग्रंथ में भी आ चुके हैं पर कुछ वर्णन ऐसे भी रह जाते हैं जो सांडेसरा जी की प्रति में ही थे, अन्य प्रतियों

में नहीं। सांडेसरा जी का वह वर्णक समुच्चय ग्रंथ महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा से प्रकाशित हो चुका है। उसमें प्रकाशित सभा-श्रृंगार तो मुझे प्राप्त सभाश्रृंगार (नंबर १) ही है। अतः 'वर्णक समुच्चय' के प्रथम भाग में सांडेसरा जी की प्राप्त प्रति में पत्रांक २ न मिलने से पाठ त्रुटित रह गया था, उसको मैंने उन्हें भेजकर वर्णक समुच्चय भाग २ में प्रकाशित करवा दिया है। इस दूसरे भाग में प्रथम भाग के वर्णकों का सांस्कृतिक अध्ययन और शब्दसूचियाँ प्रकाशित की गई हैं जो बहुत महत्वपूर्ण हैं।

अपूर्ण प्रतियाँ—काफी खोज करने पर भी सभा कुतूहल, पदैक विंशति, मुक्तकानुप्रास की पूरी प्रतियाँ कहीं से भी पूरी नहीं हो सकीं और न लक्ष्मीवल्लभी टीका में उल्लिखित 'वागविलास' ग्रंथ ही अभी तक प्राप्त हुआ। इसलिये उसके अनुसंधान एवं प्रकाशन का कार्य अब भी बाकी रह जाता है।

सभाश्रृंगार नामक संस्कृत ग्रंथ—संस्कृत में भी सभाश्रृंगार नामक एक पद्यबद्ध ग्रंथ प्राप्त हुआ है जो अंचलगच्छ के कल्याणसागरसूरि के शिष्य द्वारा रचित है। इस ग्रंथ की ३ प्रतियाँ देखने को मिली हैं। जिनमें से नित्यमणि जीवन लायब्रेरी, कलकत्ता की प्रति की नकल परिशिष्ट में देने को भेज दी गई थी, पर जब तक वह अन्यत्र प्रकाशित हो गई। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर (पुरातत्वान्वेषण मंदिर) और बड़ौदे आदि के जैन भंडारों की प्रतियों का भी उपयोग नहीं किया जा सका। 'सभा तरंग' नामक एक संस्कृत पद्यबद्ध ग्रंथ की एक प्रति आमेर भंडार से मँगवाई गई थी और भंडारकर ओरियंटल इंस्टीट्यूट पूना में भी इसी नाम वाले ग्रंथ की २ प्रतियाँ हैं पर उनका उपयोग इस ग्रंथ में करना आवश्यक नहीं प्रतीत हुआ क्योंकि उनकी वर्णनशैली भिन्न प्रकार की है।

जैनेतर संस्कृत रचनाओं में गीर्वाण पद मंजरी और गीर्वाण वाग्मंजरी क्रमशः वरद भट्ट और ढुंढिराज के रचित वर्णक पद्धति की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इनमें से एक की प्रति हमारे संग्रह में भी है। ये दोनों रचनाएँ डा० उमाकांत साह द्वारा संपादित होकर जर्नल ऑफ ओरियंटल इंस्टीट्यूट भाग ७ नंबर ४ (जून १९५८) के अंक में प्रकाशित हो चुकी हैं।

परिशिष्ट—परिशिष्ट नंबर १ और २ में दो और महत्वपूर्ण रचनाएँ दी गई हैं जिनमें से प्रथम 'रत्नकोष' नामक ग्रंथ तो बहुत ही प्रसिद्ध रहा है।

उसकी हमारे संग्रह और बडे ज्ञानभडार की प्रति से पहले प्रेस कापी तैयार की गई पर उसके बाद अनूप सस्कृत लायब्रेरी की ४ प्रतियाँ और मँगाकर देखी तो उनमें काफी पाठभेद मिला। पर उन सब पाठभेदो का देना सभव न होने से केवल उनमें जो विशेष वस्तु प्रकारो के नाम मिले हैं उन्ही की सूची दे दी गई है। परिशिष्ट नबर २ में राजनीति निरूपण नामक सस्कृत ग्रथ दिया गया है। वह मुगलकालीन शब्दो एव सस्कृत पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। इस रचना की एक मात्र प्रति जैन भवन, कलकत्ते की लायब्रेरी से मिली है। परिशिष्ट की सामग्री प्रतिपरिचय छपने के बाद तैयार की गई इसलिये उसमे इन रचनाओ की प्रतियों का परिचय नही दिया गया है।

उपयोग—वर्णको का उपयोग ग्रथो में किस प्रकार किया जाता है इसका सुदर उदाहरण 'पृथ्वीचद चरित्र' और 'पदैक विंशति' ग्रथ हैं। एक ही वर्णन को, भिन्न भिन्न लेखको ने कुछ घटा बढा कर भी लिखा है। कुशल धीर ने पुराने वर्णनो में किस तरह अपनी ओर से कुछ मिलाकर परिवर्धन किया है इसकी कुछ सूचना इस ग्रथ मे प्रकाशित 'सभा कुतूहल' के वर्णनो से पाठको को मिल जायगी। फुटकर पत्रों में भी ऐसे वर्णन लिखे मिलते हैं। जिनमें प्रकाशित वर्णको से कुछ भिन्नता है, पर उन सब वर्णनो के उपयोग से यह ग्रथ काफी बडा हो जाता है।

नवीन उपलब्ध ग्रंथ[1]—अभी अभी मेरे भ्रातृपुत्र भँवरलाल को 'आभाणक रत्नाकर' नामक ग्रथ का प्रथम खड प्राप्त हुआ जिसमें बहुत सी कहावतो के साथ कुछ ऐसे वर्णनो का भी प्रारभ में संग्रह किया गया है। इससे मालूम होता है कि वर्णकसंग्रहो का व्यापक प्रचार था और ऐसे अनेक सग्रह समय समय पर तैयार होते रहे हैं। खोज करने पर और भी ऐसी मूलयवान सामग्री अवश्य मिलेगी। सभाश्रृंगार की तो अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं।

वर्णनसंग्रहो के नाम—वर्णन करने की प्रतिभा प्रत्येक व्यक्ति में समान रूप से पाई जाना सभव नही इसलिये कुछ प्रतिभासपन्न व्यक्तियों ने वर्णनो के सग्रहग्रथ तैयार कर दिए, जिनको अन्य लोगो ने अपनी रचनाओ में यथाप्रसग स्थान दिया। ऐसे वर्णनसग्रहो का नाम सभाश्रृंगार, वागविलास, वर्णनसार, सभा कौतूहल, आदि रखे गए।

---

१ दे० मरुभारती वर्ष ८।

प्रस्तुत ग्रंथ का संपादन—इ्नमें से जितने ऐसे ग्रंथ राजस्थानी गद्य में प्राप्त हुए उनकी प्रतियों को कई ज्ञानभंडारों से मँगवाकर विषय वार वर्गीकरण करके इ्स ग्रंथ में दिया गया ह। पहले ऐसी रचनाओं को मूल रूप में अलग अलग प्रकाशित करने के लिये उनकी प्रतिलिपियाँ की गईं पर बहुत से वर्णन एक दूसरी रचना में समान रूप से मिलते थे इसलिये उस रूप में प्रकाशित करने से बहुत अधिक पुनरावृत्ति होती। अत. पुनरावृत्ति न होने और उपयोगिता को बढ़ाने के लिये प्रत्येक वर्णन को अलग अलग लिखवाया गया फिर समान वर्णनवालों का पाठ मिलान कर पाठभेद लिखा गया और उन्हें क्रमबद्ध करके १० भागों में विभाजित किया गया। इस कार्य में कई महीनों तक कठिन परिश्रम करना पड़ा। इसलिये ग्रंथ को तैयार करने में अधिक समय लग गया और फिर मुद्रण में भी देर होती रही। फिर भी पाठकों के समक्ष इस रूप मे रखते हुए, किंचित् संतोष का अनुभव होता है।

आभार—इस कार्य में श्री भँवरलाल नाहटा, ताराचंदजी सेठिया, नरोत्तमदास जी स्वामी और श्री बदरी प्रसाद जी सा[illegible]रिया से बड़ी सहायता मिली है। श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने भूमिका लिखकर मुझे बहुत उपकृत किया है। श्री चद्र[illegible]न जी [illegible] सौन्दर्य पर लिखा है। ना० प्र० सभा काशी ने इसे प्रकाशित किया है। कृतार्थ सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

अगरचंद नाहटा

सभा शृंगार का साहित्यिक सौंदर्य

वर्णकसाहित्य में विभिन्न वस्तुओ के वर्णन का सग्रह होता है। इसी प्रकार का एक सग्रह 'सभा शृगार' हे जिसे 'वर्णन सग्रह' भी कहा गया है। यद्यपि डा० साडेसरा ने भी अपने ग्रथ में सभा शृगार का समावेश किया है[1] पर वह वर्णन एक ही सग्रह का है और अधूरा है जिसका त्रुटित अश उन्होने बाद में प्रकाशित किया है।[2] वह आकार मे भी छोटा है। प्रस्तुत 'सभा शृगार' को श्री अगरचद जी नाहटा ने अलग अलग ५ 'सभा शृगार' के वर्णनो की कई प्रतियो के आधार पर सकलित किया है। इन पॉचो का तथा विभिन्न प्रतियो का परिचय ग्रथ के अत मे दे दिया गया है।[3] डा० साडेसरा ने 'वर्णक समुच्चय' (भाग १) नामक ग्रथ में जो वर्णक सग्रह दिया है वह महत्वपूर्ण है पर नाहटा जी के 'सभा शृगार' की विशेषता यह है कि उन्होने सभा शृगार के पाँचो सग्रहो को ज्यों का त्यों नहीं छापा है बल्कि उन्होने समान विषयो को अलग अलग करके एक जगह प्रकाशित किया है। साथ ही डा० साडेसरा द्वारा प्रकाशित 'सभा शृगार' के अश को उन्होने छोड़ दिया है।

'सभा शृगार' निम्नलिखित १० विभागो मे विभाजित है—

१. देश, नगर, वन, पशु-पची, जलाशय

२. राजा, राजपरिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

३. स्त्री-पुरुष वर्णन

४. प्रकृति वर्णन [प्रभात, सध्या, ऋतु आदि]

५. कलाएँ और विद्याएँ

---

१ डा० भोगीलाल ज० साडेसरा, वर्णक समुचय, भाग १, पृ० १०५–१५६

२. डा० भोगीलाल ज० साडेसरा, वर्णक समुचय, भाग २, पृ० १२०–१२३

३. श्री अगरचंद नाहटा — सभा शृंगार, परिशिष्ट २, पृ० १–४

६. जातिया और धधे
७. देव, वेताल आदि
८ जैन धर्म सबधी
६ सामान्य नीति वर्णन
१०. भोजनादि वर्णन

वर्णकसाहित्य मे वस्तुओ के विभिन्न नामरूपों का वर्णन होता है। इस प्रकार का वर्णन लेखक के ज्ञानभडार की तो सूचना देता ही है, साथ ही पाठक या श्रोता भी उससे अपने ज्ञान की वृद्धि कर लेता है। इन वर्णनो के द्वारा पाठक के समक्ष एक चित्र उपस्थित हो जाता है और वह वर्ण्य विषय को सरलता से ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार का परिनिष्ठित और रूढिगत रूप हमारे मस्तिष्क की बौद्धिक चेतना को तो उद्‌बुद्ध करता है पर वह हमारे हृदय की मार्मिकता को सजग करने मे अधिकाशतः असमर्थ रहता है। पर वर्णकसाहित्य के सभी लेखक समान नहीं होते। उनमें से कुछ कविहृदय होते हैं और उचित प्रसग पाकर उनका अतर भावुकता के साथ विषय का चित्रण करने लगता है। 'सभा शृगार' भी इसका अपवाद नहीं। इसमे अधिकाशतः वस्तुओ के नामरूपो का ही वर्णन है पर कहीं कहीं काव्यछटा के भी दर्शन होते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से सभा शृगार का 'युद्धवर्णन' उत्कृष्ट है। इसमें स्वाभाविकता के साथ साथ रसमग्न करने की शक्ति है। यह वर्णन या तो लेखकों ने पूर्व ग्रथो के आधार पर किया होगा अथवा यह भी सभव है कि उनमें से किसी की व्यक्तिगत अनुभूति इसमें अभिव्यक्त हुई हो। ग्रंथ में ७ युद्धवर्णन हैं। इनमे परस्पर कुछ न कुछ समानता होते हुए भी भिन्नता है। प्रथम युद्धवर्णन के आरभ मे दोनो दलो की सेना के मिलने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ उसका चित्रण किया गया है। जब दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गई तो चारो ओर रेत ही रेत छा गई। उससे अधकार हो गया और वातावरण की धूमिलता के कारण अपने पराये का भी ज्ञान न रहा। इसके बाद युद्ध का वर्णन किया गया है। कहीं कहीं आरभ में युद्ध के वाद्य बजने और वीरों के सजने का वर्णन है यथा चतुर्थ युद्धवर्णन में—

> वीर मादल वाज्या, सूर साज्या।
> जय ढक वाजी, नीसत नीकली गया ताजी।
> त्रबक त्रहत्रहायइ, नेजा लहलहायइ।

कहीं कहीं युद्ध में भाटों द्वारा वीरों को उत्साहित करने का भी वर्णन है। द्वितीय युद्धवर्णन सबसे विस्तृत है और उसमे सघर्ष का जो चित्रण है वह काल्पनिक प्रतीत नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु के ताण्डव-नृत्य को अपने सामने देखकर ही लेखक ने लेखनी उठाई हो। सेना के व्यूह बनाकर खडे होने के बाद युद्ध के बाजे बजे और रण आरंभ हुआ। धनुष से निकलकर तीर मस्तको से जा टकराए। खाडे ऐसे चल रहे थे मानो वर्षा की झड़ी लगी हुई हो। वीर एक दूसरे को काटने लगे। कई वीर सिर कट कर गिर जाने पर भी लड़ते रहे। कइयो की तलवारें टूट गईं। कायर लोग भागने लगे। इस प्रकार के युद्ध को देखकर वीर युद्धोन्माद से भर गए पर कायर कॉपने लगे—

भाजेवा लागा धनुर्दंड।
जाएवा लागा शिरः खड।
पडेवा लागी खाडा तणी झड़।
बजेवा लागी सुत्रट तणी काटकड़।
नाचेवा लागा भड़ कबध।
फोटिवा लागा धज विध।
त्रुटेवा लागा खड्गफल।
नासेवा लागा कायर दल।
इसइ सग्रामि सुभट गाजइ।
कायर थर थर धूजइ।

कहीं कहीं हाथी, घोड़ो और रथो की तैयारी और सृष्टि पर पड़नेवाले उनके प्रभाव की व्यजना ध्वन्यात्मक ढंग से की गई है—

रथ थडहडइ, रण काहल त्रडत्रडइ।
गजेंद्र गडगडइ, घोडे पाखर पडइ।
पृथिवी चलचलइ, समुद्र झलझलइ।
शेष सलसलइ, सूर सामला हलफलइ।

यद्यपि युद्धवर्णनों से पूर्व 'सभा शृगार' में शस्त्रवर्णन अलग से दिए हुए हैं पर इन युद्धवर्णनो से भी अनेक प्रकार के शस्त्रो का वर्णन किया गया है जो लड़ाई के समय काम में लाए जाते थे। यदि किसी युद्धवर्णन का आधार

ऐतिहासिक घटना हो तो उसका वास्तविक स्वरूप समझने मे भी सहायता मिलती है, यथा ७ वें युद्धवर्णन से जो कालिकाचार्यकथा से लिया गया है। इसमे कालिकाचार्य का गर्द्दभल्ल के साथ युद्ध का वर्णन है। युद्ध आरभ होने से पूर्व जीते जी मैदान न छोड़ने की सौगध ली गई —

आमल पाणी कीधा, भाजण रा सूँस लीधा।

पर जब युद्ध में कालिकाचार्य और उसके दल की विकट मार पड़ी तो विपक्षी दल के लोगो की जो दशा हुई उसका वर्णन इस प्रकार किया गया है —

काबलि मीर, नखइ तीर।
लागी खड़ा खड़, वागी भड़ाभड़ि।
गर्द्दभल्लरी फौज भागी, सबल लीक लागी।
जे हूँतो सेनानी, ते तो धूरखी थयो कानी।
जे हूँतो कोटवाल, तेचो भागतो ततकाल।
जे हूँतो फौजदार, तिणरै माथै पड़ी मार।
जे हूता चौरासीया, ए दाते त्रिण लीया।
जे हूँता खवास, तीए जीव वा री मुकी आस।

युद्धवर्णनो के पूर्व विभिन्न प्रकार के शस्त्रो, गज, अश्व, ऊँट, रथ आदि का वर्णन किया गया है। शस्त्रो के वर्णन जहाँ सूचीमात्र हैं वहाँ गज, अश्व, ऊँट आदि के वर्णन मे उनकी विभिन्न जातियो व आकृति का भी वर्णन किया गया है।

नायिका के अगों का, उसके आभरणो का और सुष्ठु स्वभाव का वर्णन शृगार रस की निष्पत्ति मे सहायक होता है। पर सभा शृगार मे सुस्त्री के अतिरिक्त कुस्त्री के जो वर्णन हैं वे रति के स्थान पर जुगुप्सा भाव उत्पन्न करते हैं। विरहिणी के दो वर्णन हैं। दोनो मे ही वियोगिनी की मानसिक दशा के साथ उसकी उद्वेगजनित क्रियाओ का वर्णन किया गया है। विरहदशा मे भोजन से विरक्ति हो जाती है और सब प्रकार के शृंगार विरहिणी को अगारवत् प्रतीत होते हैं। चद्रमा की शीतल चाँदनी उसके लिये वृष राशि के सूर्य के समान दग्धकारी हो जाती है। वियोग की आग से उसका शरीर जलता है और सहेलियों का साथ उसे नहीं सुहाता —

किसी एक विरहिणी हुई ?
विरहावस्था, आहारि ऊपरि करइ अनास्था ।
सर्व शृगार, मानइ अगार ।
चद्र तपइ पान, थ्या विखवान ।
विरहानल प्रज्वलइ अगु, सखी जन स्यू विरग ।

विरहिणी अपने हार को तोड़ रही है, हाथो के वलयो को मरोड़ रही है, गहनो को तोड़ रही है, कपडे उतारकर ढेर लगा रही है, किंकिणी की ध्वनि अच्छी नहीं लगती अतः उसे अलग कर रही है। वह अपने मस्तक और वक्षस्थल पर प्रहार करती है, बालो को बिखेर रही है और धरती पर लोट कर आँसुओ से अपने कचुक को भिगो रही है —

हारु त्रोडती, वलय मोड़ती ।
आभरण भाजती, वस्त्र गाजती ।
किंकिणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती ।
वक्षस्थल ताड़ती, कुचूउ फाड़ती ।
केश कलाप रोलावती, पृथ्वी तली लोटती ।
आँसू करी कचुक सींचती, डोडली दृष्टि मींचती ।

विरह विलाप का वर्णन करते हुए प्रेमी के विभिन्न विशेषणों का प्रयोग किया गया है —

हा कात !
हा हृदयविश्रात !
हा प्रियतम !
हा सर्वोत्तम !
हा सौभाग्यसुदर !
हे प्रेमपात्र !

स्त्रीस्वभाव का जो वर्णन किया गया है उसमे 'त्रियाचरित्र' को ध्यान में रखकर नारी के चरित्र की अस्थिरता का मनोवैज्ञानिक ढग से उद्घाटन किया गया है। स्त्री के कामो की गणना तो निम्न जाति की स्त्री के कार्यों को ध्यान में रख कर की गई है पर उसके जो नाम लिखे गए हैं वे केवल आभिजात्य वर्ग और रानियो के नाम हैं। हाँ विभिन्न प्रातो की स्त्रियो के नामो का वर्णन अवश्य, स्थानगत विशेषता लिए हुए है। पुरुषवर्णन में

उसके विभिन्न अंगों के सौंदर्य का चित्रण किया गया है और अनेक गुणों की सूची दी गई है। दुष्ट व्यक्ति के स्वभाव का चित्रण कर संग न करने योग्य पुरुष का स्पष्ट परिचय दे दिया गया है।

सभा शृंगार के वर्णनो पर मध्ययुगीन सामंती वातावरण का स्पष्ट प्रभाव है। राजाओं के अनेक प्रकार देकर उनके विभिन्न चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। कहीं वीर, कहीं उदार, कहीं न्यायी, कहीं दानी, कहीं यशस्वी और कहीं इन सबका समवेत रूप लिए हुए राजा का वर्णन है। राजाओं का केवल उदात्त रूप ही नहीं है, उनके अहंकारी रूप, कोपातुर रूप, रूठे हुए रूप आदि भी दिखाए गए हैं। राजकुमारो, रानियो और मंत्रियो का भी एकाधिक बार वर्णन किया गया है। पौराणिक नरेशों मे राम, रावण, वासुदेव आदि का वर्णन है। राजसभा का वर्णन तो विस्तृत है ही, राज्य के अंगों और कई अन्य कर्मचारियो का भी परिचय दिया गया है।

प्रथम विभाग मे देशो के नाम देने के बाद जो नगरो का वर्णन किया गया है वह कई जगह तो विशेष नगरो का है, जैसे पृष्ठ ८ पर नगरवर्णन संख्या ६ में उज्जयिनी का वर्णन है। लेकिन यह वर्णन भी किसी काल-विशेष का वास्तविक वर्णन न होकर लोकाश्रित है। इसीलिये विक्रमादित्य की विभिन्न लोककथाओं में आनेवाले विभिन्न नाम इसमें हैं। कई वर्णनो में यद्यपि नगर का नाम नहीं दिया हुआ है पर उस वर्णन से नगर की समृद्धि और सुव्यवस्था का ज्ञान होता है—

> नगर ने विषै खुश्याली दीसै छै—
> भरिया दीसै हाट, अनेक स्वर्णमय घाट।
> मोकली पोली वाट, चालै घोड़ा तणा थाट।
> लोक नै नहीं किसो उचाट।

नगरवर्णन के अंतर्गत चौरासी चोहटो का नाम दो जगह है। इनसे बाजार में मिलनेवाली विचित्र वस्तुओं और उनके विक्रेताओं के नामों का पता चलता है। निश्चय ही चौरासी चौहटे किसी बडे नगर में ही संभव हैं। यहाँ पाई जानेवाली भीड़ इतनी अधिक है कि मनुष्य धीरे धीरे चलते हैं। भीड़ के कारण लोग एक दूसरे का बिलकुल स्पर्श करते हुए चलते हैं। भीड़ के कारण साँस लेना भी कठिन है। भीड़ इतनी अधिक है कि एक तिनका भी नीचे नहीं गिर सकता। नजर घुमाकर, पीछे मुड़कर, देखना

कठिन है। यदि थाली फेंकी जाय तो वह सब लोगो के सिरों के ऊपर ही तैरती रहे, नीचे न गिरे—

चोरासी चौहटा भीड़, मनुष्य शनै शनै फिरै।
हिइ हिइ दलै, हारइ हार त्रूटै।
पूठैं पूठ मिलै, बाहे बाह घसाइ।
सास न लिवराइ, घड़ाधड़ हुई।
तिणखलो धरती पडि न सकै, दृष्टि फेरवी न सकै।
थाली माथा ऊपर तरै, इम अनेक भीड़ हुई।

नगरवर्णन के उपरात वहाँ के लोगो का, घरो का, प्रासाद का वर्णन किया गया है और बाद में अनेक प्रकार के वृक्षो, पक्षियो, चतुष्पदों, कीटो व पर्वतों के नाम गिनाए गए हैं। इनका वर्णन प्रायः रूढ है। इनके बाद सरोवर व पनघट का वर्णन करके नदियो व समुद्रो के नाम देकर इस विभाग को समाप्त किया गया है। सरोवरवर्णन में तो विशेष रमणीयता नहीं है पर पनघट का जो चित्र अंकित किया गया है वह स्वाभाविक होने के साथ साथ आकर्षक भी है। राजस्थान मे जहाँ पानी का अभाव होने के कारण दूर दूर से जल लाना पड़ता है, इस प्रकार का दृश्य किसी भी पनघट पर देखा जा सकता है। पानी भरने के लिये भीड़ हो रही है। कोई तेजी से दौड़ रही है, कोई सिर पर बेहड़ा रख रही है, कोई किसी से टकराकर गिर रही है। कभी कोई स्त्री दूसरी स्त्री की साड़ी भिगोकर उल्टे उसी से लड़ रही है। मोटे अंगवाली तो गाली दे रही है और दुर्बल अगवाली वैसे ही अप्रसन्न हो रही है। सास भी बाद में उन्हे बुरा भला कहती है—

बईरा नी भीड़, हुइ पीड़, त्रूटे चीड़।
एक ऊतावली दोडे छै एक माथै बेहडू चौहडे छै।
लूगुडु ते माथैं ओढे छइ, बेहड़ो ते फीडे छइ।
एक एक नै अडै छइ धडाधड पडै छइ।
माहो माहि लडे छइ॥
हवें नान्ही लाडी, चीखल थी पडैं आडी।
बीजी नी भींजाइ साडी, ते माटेइ करे राडी।
सोक सोक नी करइ चाडी, डीले बाडी।
खीजें माडी, सासूइ पाछी ताडी॥

पनघट का अंतिम दृश्य तो ध्वन्यात्मक सौदर्य लिए हुए है। विभिन्न आभूषणों के नाद को लेखक ने अनूठी व्यजना से व्यक्त किया है—

घूघर ते घमके छै, पायल ते ठमके छै।
वेहइ अरघट्ट, घणक गट्टगट्ट।
बाजं अणवट्ट, आवे दट्टवट्ट॥
एहवें पणघट्ट।

प्रकृति के प्रति आदिम युग से ही मानव का सहज आकर्षण रहा है। प्रभात और सध्या नित्य होते हुए भी प्रति दिन की नवीनता से युक्त रहते हैं पर इनका मनोहारी रूप नागरिक जीवन के व्यस्त वातावरण मे प्रतीत नही होता। सभा शृगार मे प्रकृतिवर्णन के अतर्गत प्रभात, सध्या, रात्रि आदि का जो वर्णन किया गया है वह मुस्लिम काल का है और उसमें प्रभात, सध्या आदि का प्राकृतिक सौदर्य नहीं है बल्कि तत्तद् कालों मे जगत् के विभिन्न प्राणियो पर पड़नेवाले प्रभाव का वर्णन है। अँधेरी रात का वर्णन नागरिकता लिए हुए है। लेखक की दृष्टि अधिकाशतः शृगार-परक होने के कारण वह गणिका, जार, दूती आदि के चतुर्दिक् चक्कर लगाती रही है।

ऋतुवर्णन में वसत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमत आदि का वर्णन है। वसत का एक ही वर्णन है। उसमे ऋतुराज के आगमन के समय कोयल की कूक, मजरित आम्र, उल्लसित अशोक, विकसित चपक कली आदि का वर्णन और लोक पर उसका प्रभाव दिखाया गया है। ग्रीष्म के ३ वर्णन हैं। प्रथम के आरभ मे राजस्थान की उस भीषण गर्मी का वर्णन है जब चारों ओर लू चलती है, धूप के कारण नगे पैर जमीन पर चलने से पैर जलने लग जाते हैं, पेड़ो के पत्ते जलकर गिर जाते हैं। जलाशय सूख जाते हैं और पनिहारने पानी के लिये लड़ती हैं, लोग काम पर नहीं जा पाते, गला सूख रहा है, सब छाया की शरण ग्रहण कर रहे हैं—

लू वाजै छै, शीत लाजै छै।
पग दाझै छइ, तावड़ो तपै छइ।
रुख पात झड़ै छइ, रुख पवनै पड़ै छइ।
पणिहारी पाणी माटि लड़ैं छइं, बावकूआ सुकै छइं।

लोग काम चूकैं छइ, पथीमार्ग मूकै छइ।
तावड़ो लुकैं छइ, कठ सूकैं छइ।

पर इसके उत्तरार्द्ध में गर्मी से बचने के लिये आभिजात्य वर्ग द्वारा प्रयुक्त उपकरणों का वर्णन है। वर्षा काल के ५ वर्णानो मे लगभग समानता है। लगभग सभी में काली घटा उमड़ने का, धारासार वर्षा का, मेढको के बोलने का, जलप्रवाह बहने का, पथिको की यात्रा रुकने का वर्णन है। कही कहीं वर्षा से मकान गिरने, छप्पर टपकने, हरियाली होने, मोर नाचने, किसानो के हल चलाने आदि का वर्णन भी है।

'सभा शृगार' में अलकारो का सुदर प्रयोग हुआ है। गद्यमय तुकात होने के कारण अनुप्रास तो लगभग सर्वत्र ही मिलता है। कहीं कही उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलकार भी आए हैं। 'सभा शृगार' का विषय और उसका उद्देश्य बौद्धिकता से सबधित होने के कारण जो अलकार आए हैं वे सहज रूप से ही आ गए हैं। राजसभा मे बेठे हुए राजा की शोभा का वर्णन करते हुए निम्न प्रकार से उपमा दी गई है —

सभा माहि राजा बइठा थको सोभइ छै ते केहवो-
अक्षर माहि जिम ओकार, मत्र माहि ह्रींकार।
गधर्व माहि तुवर, वृक्ष माहि सुरतरु।
सुगध माहि जिम कपूर, ओत्सव माहि जिम तूर।
वस्त्र माहि जिम चीर,.........
वाजित माहि जिम त्रभा, स्त्री माहि जिम रभा।
शास्त्र माहि जिम गीता, सती माहि जिम सीता।
देव माहि जिम इद्र, ग्रहा माहि जिम चंद्र।
द्वीप माहि जिम जबू द्वीप, प्रदीप माहि जिम रत्न प्रदीप।

'सभा शृगार' किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कई वर्णन ग्रंथों का समूह है अतः उसमे भाषा का भी एक रूप नहीं है। कहीं सस्कृत, कहीं अपभ्रश, कहीं व्रजभाषा, कहीं गुजराती और कहीं मारवाड़ी का रूप होने के कारण पाठक के लिये भी यह आवश्यक हो जाता है कि वह उपर्युक्त भाषाओ का ज्ञाता हो अन्यथा उसे वर्णानो को सम्यक् प्रकार से समझने मे कठिनाई हो सकती है। कहीं कहीं अरबी फारसी के भी शब्द आए हैं। ऐसे शब्द विशेषत' मुस्लिम काल से प्रभावित वर्णानसूचियो मे हैं।

'सभा श्रृंगार' उस वर्णकसाहित्य की एक बहुमूल्य कड़ी है जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देशी भाषाओं में अपनी एक दीर्घ परंपरा बनाए हुए है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने कई उदाहरण देकर बताया है कि इस प्रकार के वर्णकसाहित्य के प्रमाण प्राचीन काल से ही उपलब्ध होने लगते हैं।[1] हिंदीसाहित्य का विद्यार्थी पृथ्वीराजरासो, पद्मावत, सूरसागर आदि ग्रंथों की वर्णनसूचियों से तो परिचित है पर अभी वर्णकसाहित्य की इस विशाल पृष्ठभूमि की ओर विद्वानों का ध्यान कम गया है। श्री नाहटा जी ने बड़े श्रम से जो वर्णन संग्रह तैयार कर हिंदीसाहित्य के विद्वानों के सामने प्रस्तुत किया है उससे इन नये क्षेत्र में कार्य करने की अन्य विद्वानों को भी प्रेरणा मिलेगी, ऐसी आशा है।

— चंद्रदान चारण

भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर।

---

१. हिंदुस्तानी, भाग २१ अंक १ [जनवरी–मार्च १९६०] में 'वर्णक-साहित्य' शीर्षक लेख।

प्रति-परिचय

सभाशृंगार नं० १

संकेत　　　　　　　　　　स्पष्टीकरण

(स० १)=सभा शृंगार न० १—इसकी दो पूर्ण और दो अपूर्ण, कुल चार प्रतियाँ प्राप्त हुई, जिनका परिचय—

(१) विजयधर्मसूरि ज्ञानमदिर, आगरा की प्रति। शुद्ध। पत्र २ से १६, पक्ति १५, अक्षर ४८ से ५०, ले० १७वी का पूर्वार्द्ध।

अत—इति सभा शृगार वचन चातुरी ग्रथ समाप्तः।

(२) पाटोदी दि० मदिर, जयपुर—

पत्र २०, पक्ति १७ अक्षर ५२

लेखन स० १६७१ वर्षे आह मासे शुक्ल पक्षे ३ दीतवार। लेखक साह दासू सुतेन। मा. सारगपुर वास्तव्य।

(३) केशरियाजी मदिरस्थ खरतरगच्छ भडार, जोधपुर। डा. १५, पोथी १६६, पत्र १८, प० १५, अक्षर ४८, वर्णन १५८ वा चालू, फिर अपूर्ण। शुद्ध। लेखन काल १७ वीं शती।

प्रारम्भ के पत्र मे पीछे से लिखा गया है **'व्याख्यान पद्धति वचनिका।'**

(४) (अ० पु०) मुनि पुण्यविजयजी सग्रह—

पत्र ६ से १५, पक्ति १७ अक्षर ६५ (आदि के ५ पत्र नही) लेखन काल १७ वी शती।

अत में—"स्त्री गुणाः ४२" के बाद ग्रथ का नाम व प्रशस्ति नहीं है। पुरुष की ७२ कला से पूर्व "इत्युपदेश लेशः समाप्तः मिति भद्र शुभ भवतु ॥छ॥" लिखा है अतः वही समाप्ति सभव है।

मुनिजी ने प्रति के कवर पर **'पदार्थ वर्णना'** नाम लिखा है।

सभा शृंगार नं० २

(स० २)=इसकी एक ही प्रति मुनि पुण्यविजयजी से प्राप्त हुई। इसके वर्णन अन्यो से भिन्न व मौलिक है। मगलाचरण श्लोक मे इसका नाम "वर्णन सार" दिया है।

प्रति=पाटन भंडार। डा० २६४ नं० १२६४० पत्र ६, (अंत का एक पृष्ठ रिक्त, पत्र ५½ लिखे), पंक्ति ३१, अक्षर ५३।

अंत—'इति सभा शृंगार ग्रंथ लवलेशोयं। लिपिकृतः संवत् १६७१ वर्षे आश्विन व० ८ दिने मंगल। छः ॥

सभाशृंगार नं० ३

(सं० ३)=इसकी दो पूर्ण और तीन त्रुटित (अंश रूप) प्रतियाँ मिलीं।

१—मोतीचंद खजानची संग्रह। पत्र १२ की अपूर्ण प्रति। अन्य एक गुटका सं० १७६२ के लिखित से नकल करवाई थी उसे बहुत वर्ष होने से स्मरण नहीं, वह कहाँ का था।

ले० प्र० इति सभा शृंगार सम्पूर्ण। संवत् १७६२ वर्षे फाल्गुन सुदी सप्तम्यां तिथौ भृगुवारे, गणि महिमाविजयेन लिपिकृता श्रीरस्तु। श्लोक ग्रन्थाग्रन्थ ७५६। ए ग्रन्थ संख्या जायते।

२—भांडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट पूना, की प्रति नं० ६७१ सन् १८६६ से १६१५ का संग्रह। इसमें नं० १ प्रति के 'अंधारी रात' वर्णन तक का प्रसंग आया है। नं० १ में इसके बाद कुछ वर्णन और है।

अंत इस प्रकार है—इति सभाशृंगार संपूर्णम्। सं० १७८१ वर्षे जेठ सुदी ७ चंद्रवासरे। लिखितम् बर्हानपुर नगरे। शुभंभवतु ॥

सभाशृंगार नं० ४

(सं० ४)=उपाध्याय विनयसागरजी संग्रह कोटा की प्रति, पत्र १०, पंक्ति १७, अक्षर ४३। इसके प्रारंभिक वर्णन तो सभाशृंगार नं० ३ के ही हैं। पीछे के स्वतंत्र हैं और वे अधिकतर जैन संबंधित ही हैं। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार हैं:—इति सभाशृंगारहार संपूर्णम्। लिखितं गणि उत्तमकुशलेन श्री आमेठ नगरे श्री पार्श्व प्रसादात्। प्रति १६वीं शताब्दि की लिखी हुई है। भारतीय विद्याभवन, बंबई से मुनि जिनविजयजी संग्रह की प्रति पीछे से मिली, जिसमें प्रारंभिक अंश ही था और नई लिखी हुई थी इसलिये उसका उपयोग नहीं किया गया।

सभाशृंगार नं० ५

(सं० ५)=चित्तौड़ के यति बालचंदजी के संग्रह से १ पत्र १८ वीं शती का सभाशृंगार के नाम का मिला था, जिसमें कुछ वर्णन थे।

(सू०)=खरतर गच्छीय कविवर सूरचंद रचित 'पदैकविंशति' नामक ग्रंथ के ६८ पत्रों की अपूर्ण प्रति मुनि जिनविजयजी से प्राप्त हुई थी। मूल ग्रंथ संस्कृत में है, पर बीच-बीच में प्रसंगानुसार राजस्थानी भाषा में वर्णन दिये गये हैं। प्रति १७ वीं शती के उत्तरार्द्ध की, अर्थात् रचना के सम-कालीन लिखित है। ग्रंथ अपूर्ण अवस्था में मिला है, अतः पूर्ण प्रति के मिलने पर और भी बहुत से सुंदर वर्णन प्राप्त होंगे।

कु०=१८ वीं शताब्दि के कवि कुशलधीर रचित सभा कुतूहल की भी अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। इसके बहुत से वर्णन तो पदैकविंशति के ही हैं। उसमें कुशलधीर ने बीच-बीच व अंत में कुछ पंक्तियाँ बढ़ा दी हैं। उन पंक्तियों में कहीं 'धीर' कहीं 'कुशलधीर' नाम भी निर्देश किया है। पत्र ६ पंक्ति १७ अक्षर ७१, प्राप्त वर्णनों की संख्या ३६ है। पत्रों के परस्पर चिपक जाने से कहीं-कहीं अक्षर नष्ट हो गये हैं। यह ग्रंथ कितना बड़ा था, पूर्ण प्रति मिलने पर ही विदित हो सकता है।

कौ०='कौतुहलम्' इसकी प्रतिलिपि बहुत वर्षों पूर्व श्री भँवरलाल द्वारा की हुई हमारे संग्रह में थी। इसमें २५ वर्णन हैं, जो स्वतंत्र, मौलिक और सुंदर हैं। अंत में इति 'कौतुहलम्' लिखा होने से इसको यह संज्ञा दी हुई है। यथास्मरण प्रति १८ वीं शताब्दि की लिखी हुई थी।

मु०='मुत्कलानुप्रास' जैसलमेर के यति लक्ष्मीचंदजी के संग्रह में १६ वीं शताब्दि के लिखे हुए ७ पत्र प्राप्त हुए जिनमें १०८ वर्णन हैं। इस प्रति के बोर्डर में 'मुत्कलानुप्रास' नाम लिखा हुआ था। वैसे है यह अपूर्ण ही। इसके कई वर्णन संस्कृत में हैं और कई राजस्थानी में। उपलब्ध प्रतियों में यह प्राचीनतम है। इसकी पूरी प्रति प्राप्त होना आवश्यक है। पत्र ८ पंक्ति १८ अक्षर ६२।

पु० अ०=आगम प्रभाकर मुनि पुण्यविजयजी द्वारा यह प्रति प्राप्त हुई। यह १६ वीं शताब्दि की लिखित है। इसके ६ पत्र ही मिले, जिनमें भी बीच का १ पत्र नहीं था। ग्रंथ अपूर्ण होने से 'पु० अ०' संज्ञा दी गई।

का०=कालिकाचार्य की गद्य भाषा कथा से केवल वर्षा और युद्ध के दो ही वर्णन लिये गये हैं।

पु०=इस प्रति का १ पत्र मुनि पुण्यविजयजी से प्राप्त हुआ था।

इन प्रतियों में से सभा शृंगार नं० २ और सभा कुतूहल के प्रारंभ में ही मंगलाचरण श्लोक मिलते हैं। अन्य प्रतियों में मंगलाचरण का अभाव है। इन दोनों प्रतियों के मंगलाचरण नीचे दिये जा रहे हैं—

सभा-शृंगार नं० २

मंगलाचरण

॥६०॥ ऐं नमः ॥ पंडित श्री दयाकुशलगणि गुरुभ्यो नमो नमः ।

सर्व-जीव-निकायस्य, सर्वथापि हितप्रदाः ।
सुरासुर-नरैः स्तुत्या, जैनी जयति भारती ॥१॥
कोविदा देशिनं किंचित्, दृष्टं शास्त्रेषु किंचन ।
किंचेच्चात्ममति-ज्ञातं, वर्णनासार[1] मुच्यते ॥१॥

सभा- कुतूहल (कुशलधीर)

प्रणम्य पार्श्वं प्रकट-प्रभावं, आनंद-कंदोदय-वारिवाहं ।
सुरासुराधीश-नतांघ्रियुग्ममनन्तकीर्ति महिमानिधानं ॥१॥
नत्वा गुरून् प्रकट-पुण्यरसातिरेकान् लोक प्रमोदकरणं वितनोमि शास्त्रं ।
चंचच्चमत्कृति-विधायकमातलोक मान्यं मनोरथवरद्रुमबीजकल्पम् ॥२॥
सम्यक् सभाकतूहलमिदमधिकरसं तनोमि गुरु शक्ता ।
दृष्ट्वा शास्त्र-समूहं सानुप्रासं यथाबुद्धि ॥३॥
नगर-नरेश्वर-राज्ञी-मंत्र्यादिपदार्थ-वर्णन-विशिष्टम् ॥
वार्त्ता प्रबन्ध संयुतमेतन्मोदयतु जन-चित्तं ॥२॥

नोट—सभा शृंगार नं० १ से ५ की भिन्न-भिन्न प्रतियों के सूचक संकेत इस प्रकार हैं—

जो०=सं० १ जोधपुर प्रति
पु०=सं० २ पुण्यविजयजी प्रति
पू०=सं० ३ भां० रि. इं० पूना की प्रति
वि०=सं० ४ विनयसागरजी प्रति
चि०=सं० ५ चित्तौड़ प्रति
जै०='मुत्कलानुप्रास' की प्रति जैसलमेर की होने से कहीं-कहीं 'मु' के स्थान 'जै' संकेत भी लिखा गया है।

१—वर्णनासार की एक अन्य प्रति भां० रिसर्च इंस्टी० पूना से और प्राप्त हुई थी पर देरी से मिलने के कारण उसका उपयोग नहीं किया जा सका।

अनुक्रमणिका

विभाग १— देश, नगर, वन, पशु पत्ती, जलाशय

विभाग २—राज, राज परिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

विभाग ३—स्त्री पुरुष वर्णन

विभाग ४—प्रकृति वर्णन, प्रभात, संध्या, ऋतु आदि

विभाग ५—कलाएँ और विद्याएँ

विभाग ६—जातियाँ, धंधे और व्यक्ति नाम

विभाग ७—देव, वेताल, शाकिनी, सिद्ध, व्यक्ति तथा व्यक्तिकष्टादि वर्णन

विभाग ८—जैनधर्म संबंधी वर्णन

विभाग ९—सामान्य नीति वर्णन

विभाग १०—भोजनादि वर्णन

(मंगल, वर्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्रालंकारादि)

सभा-श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग १

देश, नगर, वन, पशु पक्षी, जलाशय

देश-नाम १

१ अग
२ वग
३ कलिग
४ तिलग
५ भग
६ गौड
७ चौड
८ कर्णाट
९ लाट
१० पाट
११ राष्ट्र
१२ महाराष्ट्र
१३ कीर
१४ काश्मीर
१५ सौवीर
१६ आभीर
१७ चीन
१८ खुरसाण
१९ दशाण
२० गूर्जर
२१ बर्जर
२२ बर्बर
२३ शर्बर
२४ बगाल
२५ नेपाल
२६ पचाल
२७ कुणाल
२८ जहाल
२९ जागल
३० डाहल
३१ कौशल
३२ सोसल
३३ सिहल
३४ हिमाचल
३५ मरुस्थल
३६ कुशस्थल
३७ पुसस्थल
३८ कुरू
३९ जगल
४० दिल (ल्ली!) मडल
४१ जालधर
४२ लोहित
४३ किरात
४४ तामलित
४५ पारिजात
४६ वरूट
४७ भट्ट
४८ शकट
४९ नलदतट
५० लोहतट
५१ समुद्रतट
५२ मेदुपाट
५३ वैराट
५४ भोट
५५ महाभोट
५६ नगरकोट
५७ वागड
५८ कामरू पीठ
५९ छोकाण
६० केकाण

६१	कुकण	९१	उड्डीयाण	१२१	मिल्लिन्द्र
६२	टक्क	९२	गुडीयाण	१२२	पुल्लिद्र
६३	तटक्क	९३	बगलाण	१२३	क्रौच
६४	कान्यकुब्ज	९४	खान	१२४	भ्रमरक
६५	काबोज	९५	चद्रकुमार	१२५	कोय
६६	भाडेज	९६	मलबार	१२६	चचका
६७	श्रीरज	९७	समुद्रपार	१२७	शक
६८	मगध	९८	छप्पर	१२८	यवन
६९	मध्य	९९	सक्खर	१२९	उड
७०	अध्य (दे० १३६)	१००	भक्खर	१३०	मरुड
७१	बध्य	१०१	काय	१३१	ओड
७२	पारसकूल	१०२	गोद	१३२	भेडक
७३	गककूल	१०३	पक्कण	१३३	भित्तक
७४	वेलाकूल	१०४	आखयक	१३४	कुलाच
७५	खस	१०५	हूण	१३५	क्रोव
७६	खास	१०६	रौमक	१३६	अन्धय
७७	काछ	१०७	पारस	१३७	द्रविड
७८	सिधु	१०८	द्रमिल	१३८	चि (वि?) ल्लल
७९	सवालख	१०९	लकुस	१३९	आरोघ
८०	सूरसेन	११०	बक्कुस	१४०	डोब
८१	पोकाण	१११	आमापक्क	१४१	मरुक
८२	गधहार	११२	अनद्ध	१४२	साल्व
८३	बह्लीक	११३	लास	१४३	कारव
८४	जल्ल	११४	मेदर	१४४	तायिक (तासिक)
८५	राम	११५	मठ	१४५	सारस्वत
८६	मोष	११६	मौष्ट्रिक	१४६	वाल्हीक (दे० ८३)
८७	मलय	११७	आरब	१४७	तुरुष्क
८८	चूलिका	११८	कुहण	१४८	कारूप
८९	स्वर्णभूमिका	११९	केकय	१४९	कुतल
९०	मोग्गर	१२०	रौरव	१५०	फिरग
				१५१	सौराष्ट्र इत्यादि सू. प.

२ देशनाम (२)

अंग, अनंग, किलिंग, तिलंग, । बंग, भंग, बंगाल, वच्छ, वत्स, विदेह, वैराट, कर्णाट, लाट, धाट, भोट, महाभोट, कोणाल, कामरु, काश्मीर, कुंकण, कच्छ, केकी, गोड, तोड, बहस, बब्बस, हबस, मालव, मागध, मरुस्थल, मेवात, मेवाड, मरहट्ट, राष्ट्र, सौराष्ट्र, पंचाल, पारकर, सिंध, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, इत्यादिक देश नाम । (स ३)

३ देश—नाम (३)

गौड, द्रविड, मालवउ, नेपाल, जंगल, अंग, वंग, तिलंग, हर्मुज, गुर्जर, राष्ट्र, महाराष्ट्र, कुरु, काश्मीर, राट, लाट, धाट, कर्णाट, मेदपाट, भोट्ट, महाभोट्ट, विदेह, ऊच, मूलथाण, कुंकुण, चीण, महाचीण, खुरसाण, सवालख, सिंधु, ढोरसमुद्र, महरठा, नमियाड, कनूज, महाकनूज, अकज, अबज, कुरक, कोरटक, कौशिक, पाणीपथ, पाडवा, मरुस्थल । (स० १)

४ देश—नाम (४)

अंग, बंग, कलिंग, मगध, माधर ।
मालव, विदर्भ, वाल्हीक । हूण, रूण ।
उडीयाण, आनर्त, त्रिगर्त्त ।
सोरठ, मरहठ । कुंकण, कस्मीर ।
कीर, गूर्जर, जालंधर । गोड, बूड, कर्णाट
लोट, भोट । कान्यकुब्ज, कांबोज
बर्बर, बंगाल नेपाल, भाहल, सिंहल
चीण, महाचीण इत्यादि देश ॥१०॥ (मु०)

५ पर-द्वीप-नाम (५)

हरमज, वक्खार[1], गोहा, सवाकीन, कौची, मक्का, मदीना, मूसब, पुरतकाल, पेगू[2], दीव, घोघा, डाहल, मलवार, चीउल, पथगु, मुलतान, जाबू, आबू, ढाको, रोम, साम, आरब बलख, बुखार, चीण, महाचीण, फिरंग, हबस, इत्यादिक परद्वीपनाम (स०३)

१—रका (ववरण) २—पीगु

६—देशों की उपज (१)

७२ (लक्ष) गाजण[1], ३४ (लक्ष) कनूज, १८ लक्ष बाणू मालवउ
६ लक्ष गौड, ६ कारू, ६ डाहालू,
७० सहस्त्र गुजरात, ६ सहस सोरठ[2], ४० जेजाहुत,
२४ सहस गगापरू, २१ लाड देस, १४ सहस व्यालकुकुण[3] नमियाड[4]
स० १

७—नगरादि-पर्याय

नगर, निगाम, ग्राम, आगर, पुर पाटण, खेट कब्बड, मडब, दोघ्रण, द्रोण-मुख, सबाध, सनिवेश, आश्रम, उद्यान, द्वीप, बदर इत्यादि पृथिवी।

८—नगर-नाम

द्वारावती, देवपुर, दसोर[5], देवकौपत्तन[6], सौरीपुर, सुदर्शनपुर, सामेरी, कावेरी, कुन्दनपुर, कोसबी[7], कोसल, काशी, कोगाल[8], कोइलपुर, कनकपुर, काकटी, विनीता, विशाला, वाराणसी, दल्लि, अहिछत्ता, अयोध्या, अवती, एलचपुर, पावा, पाटलीपुर, चदेरी, चपावती, गधार, गजपुर, गधिलावती, भद्दिलपुर, भरूच, तिलकपुर, त्रबावती, मथुरा, हथिणापुर इत्यादिक मोटा नगर। स० ३

९—नगर-नाम (२)

आगरो	उजैण	उदैपुर	ईडर
आबेर	अजमेर	अहमदाबाद	अवरगाबाद
दिल्ली	दौलताबाद	दरियाबाद	दीव
फतियाबाद	दसोर	गोधा	गोलकुड
लाहोर	लखमीपुर	बर्हानपुर	बहादुर पुर
बिजापुर	बूदी	राजमहल	राजनगर
भागनगर	खभाति	सूरति	पाटण
पटणू	जेसलमेर	विकानेर	सागानेर
योधपुर	जालोर	नागोर	मेडर्तू
मलकापुर	मुरादाबाद	साहज्याबाद	फत्तेपुर

इत्यादि नगर छै।

---

१ ७७ लक्षण गाजणउ, २ ५५ सहस सोरठ, ३ १४ सहस चाल कुकुण ४ प्रमुख देशा। ५ वसौर, ६ पाटण ७ कुलाल, कोषालाणा, ८ वलभी।

१०—नगर-वर्णन (१)

देवकुल विभूषित, सप्तभूमिक धवलहर अलकृत सविस्तर तर हट्टश्रेणि विराजित, समस्त क्रियाणक विश्रामभूमि, कूप, वापि सरोवर सनाथ । प्राकारवेष्टित, खातिका दुर्ग । इसउ नगर नगरी ।

११—नगर वर्णन

महा मनोहर

हिमगिरि शिखरानुकारिए प्रसाद करि सुन्दरु ।
प्राधान प्राकार करि परिकलतु,
वापी कूप प्रपा तटाक आराम करि अति शोभितु ।
धनदयक्षानुकारि, धनवते व्यवहारिए करि शोभायमानु । झात्कार
एव विधु द्वादश तूर्य निर्घोषि निरुपमु
चउहि दिशि द्वारि, प्रतोली द्वार । अनिवार शत्राकरि ।
तेही करि सविभ्रमु स्वर्ग्य समानु, अतिहि प्रधानु
रत्नपुर इसइ नामि नगर ॥ २ ॥

(मु०)

१२—नगर-वर्णन (३)

यत्र खल तैलिका पर्णेषु, गुप्ति' शुक सारिका पुजरेषु ।
उपसर्ग निपातो व्याकरणेषु, कटकापद्मनालेषु ।
मारि. सारिषु, बन्ध पुष्पेषु ।
चिन्ता काव्येषु, व्यसन दानेषु ।
आकाक्षा कीर्त्तिषु , तुच्छता बधूना मध्य भागेषु, ।
चपलता लीलावतीना नयनेषु, दण्ड' छत्रेषु, ।
वक्रता कामिनीना भ्रूयुगेषु । निम्नता वनता नाभीषु, मौरवर्य वाद चर्चाषु ।
पुरन्दर, पुरी सहोदरु ।
क्वचित्कथा कथ्यमान, चिन्तन कथानकु ।
क्वचिद्वाद वृन्दारकारब्ध वाद, क्वचिन्नाटक प्रस्तावनाकर्ण्यमान मर्द्दल निनद ।
क्वचिद्विविध बधू विधीयमान धवल मगलाचारु, क्वचिद्वणिक जनोद्यम द्यमान क्रयाणक ।
क्वचिद्विजय मगलोद् घोष्यमान वेदोद्गार. एव विध नगर (मु०)

१३—नगर-वर्णन (४)

पत्तन, विशाल, पथिकशाल, निरपवाद प्रसाद, नाना प्रकार सत्रूकार। तिरस्कृत त्रिविष्टप, प्रपा मडप, अगाधोदर सोदर सरोवर, पृथ्वीमडल मडन। लक्ष्मी सकेत निकेतन, रमणी जन निधान। विद्वज्जन कृतावस्थान शत्रु सघातानाकलनीय। ईति अनीति अखडनीय। (स० १)

१४—नगर-वर्णन (५)

नगर ने विषे खुश्याली दीसैछै—
भरिया दीसैहाट, अनेक स्वर्णमय घाट।
मोकली[1] पोली वाट, चालै घोडा तणा थाट।
लोक नै नही किसो उचाट[2]।
जिहा पुण्य विशाल, तिसी ही पोसाल, जिहा छात्र पटै चौसाल।
पाणी पिइ सुभावि, तिसी वावि।
देखता आणद हुवा, तिसा कुवा
मोटैमड, पद्मवन खड।
जिसा रग कीजै खाडि, तिसी माहि वाडि
जिहा शीतल फुरकै पवन, तिसो पाछलि वनि।
इम अनेक प्रकार सोभैछै।—(स० ३)

१५—नगर-वर्णन (६)

उज्जयिनी वर्णन
जिहा सिप्रा नदी विराजमान, महाकाल प्रासाद शोभमान।
हरसिद्धिदेवी निवास, चउसिठि योगिनी सविलास[3]।
आगीया वेताल स्थान, कउडीया जयारी अहिठाण।
खापरा चोर प्रबल बात, गद्दमा मसाण विख्यात।
अनेक देव देवी होइ यात्र, प्रबल सिद्ध पुरुप बसइ पात्र।
सिद्ध वड भूषित परिसर, युगादि नगर।
महा मनोहर हिमगिरि शिखरानुकारीए प्रसादे करी सुदर।
(जिहा)[4] विक्रमादित्य नरेश्वर, (जिहा) साक्षात् पुरदर।

---

१ नोकलि पेली वाट २ लोक ने किसी उचाट ३ विलास, ४ जिहा

प्रधान प्राकारि करी परिकलित, जिहा बसइ लोक सम्मिलित ।
वापी कूप तटाक आरामि करी अति शोभित, पर दलि करि अक्षोभित ।
धनद यक्षानुकारिए व्यवहारिये करी शोभायमान ।
स्वस्व क्रिया सावधान, जन वसइ प्रधान[1] ।
कीजइ षडदर्शन विचार, परमार्थि आत्मज्ञान अविकार ।
चिहुँ दिसि च्यागि प्रतोलीद्वार, अनिवार, सत्रागार ।
अति प्रधान, स्वर्ग समान ।
ठामि ठामि फूल पगर, इस्यउ[2] उजयनी नाम नगर । सू०

कुशलधीर सकलित 'सभा कुतुहल' मे परिवर्द्धित पाठ—

द्वादश तूर्य निर्घोष पडित वइ सुजाण वइ कोष ।
धनधान्य समृद्ध, त्रिभुवन मइ प्रसिद्ध ।
आराम जलाश्रयादि रम्य, परचक्र अगम्य ।
अनेक देवकुल सकुल, नाचइ रगइ प्रमादाकुल ।
मेदनी शृगार, बसइ वर्ण अढार ।
अति ऊचा आवास, पूजइ सहु आस ।
वसइ जिहा पडित, हट्ट श्रेणि मडित ।
जिहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विशाल वाडी ।
जिहा पढइ छात्र चउसाल, तिहा इसी अनेक लेसाल ।
अति रूडी धर्मसाल, नगर नइ बिचाल ।
बखाणइ आवइ गुरु समीपइ बाल गोपाल ।
मधुर वाणीयइ पद गुरु धरम उपदिसे बिशाल ।
श्रावक पडिकमइ उभइ काल, अतीचार टाल ।
जिहा अध्यात्मी जोगी दृढ, तिसा महाकाय मढ ।
रग विमासीउ लीये वाद, तिसा पुष्कल प्रासाद ।
जिहा माहि गुरुआ भवन, बाहिर गुरुआ उपवन ।
माहि मनुष्य दख्य, बाहर पखीयातणा लख्य ।
माहि बसइ भोगी, बाहिर बसइ योगी ।
माहि चउरासीहट्ट श्रेणि, बाहिर अरहट्ट श्रेणि ।
ठाम ठाम फूल फगर, इसउ धीर कहइ उजेणी नगर ॥

---

[1] मनुष्यनउ, कुण जानइ गान (इतना पाठ अधिक है) [2] इसउ वीर कहइ उज्जेणी नगर ।

वर्ण—यत्र वर्णव्यवस्था । नागर ज्ञातीय । श्रीमाल ज्ञातीय । डीडवाल । सडेर वाल । जालधरीय । सत्यपुरीय । प्रमुख ब्राह्मण ।

सोम वशीय । सूर्यवशीय । हरिवशीय । उग्रकुली । भोग कुली । सोलकीय गुहिल्ल । उच्च । परमार । प्रतिहार । चौलुक्य । सकल प्रमुख क्षत्रिय । शिल्पकार । स्वर्णकार । प्रमुख वैश्य वर्ण । प्रमुख, सौद्र ।

तथा काव्यकार । पदानुसारि लाक्षणिक । प्रामाणिक प्रमुख पडित मडित । तथा अजन सिद्ध । गुटिका सिद्ध, योग सिद्ध, चूर्ण सिद्ध । लेप सिद्ध । पादुका सिद्ध । मत्र सिद्ध । विद्या सिद्ध । वचन सिद्ध । प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ । जेणि दीठइ उत्तम ना मन विकसइ ।

वृक्ष लतादि—तथा । त्रिक । चतुष्क । चत्वर । रमणीय । हिताल ताल । तमाल । मालूर । खर्ज्जूर । अर्जुन चदन । चपक । वकुल । सहकार । काचनार । निब । कदब । जबु । जबीरक । कणवीर । वानीर । कपित्थ । अश्वत्थ । करुण । वरुण । धव । खदिर । पलाश । अकुल्ल । सरल । सल्लकी । नाग । पुन्नाग । नागर । वल्लि । मल्लिक । यूथिका । मालती । माधवी लता । मडपाभिराम । परपरा विराजमान परिशर । गगाफेनदी फेनपट्टलसट्ट प्राकार पाडुर ।

यत्र नगरे । जडता । सरस्सु । नमनुजमनस्सु । खलस्तैलिका पणेषु । गुप्तिः शुक सारिका पजरेषु । उपसर्ग निपाता व्याकरणेषु । कटका पद्म नालेषु । बध· काव्येषु । दडश्छत्रेषु । कुटिलता कामिनामलकेषु । निसता वनिता नाभीषु । चपलता लीलावती लोचनेषु । चिता शास्त्रेषु । व्यसन दानेषु । मौखर्य वादचर्याषु । धन कनक समृद्ध, पृथ्वी तल प्रसिद्ध । अत्यत रमणीय, सर्वजन स्पृहणीय ।

जिहा वाडा, वाडी, कूआ, परव । तलाव । आराम । गढ । देहरा । विहार । सत्रागार । कोष्टागार । भाडागार । धउल हर । पिडहर । जोगहर । मोगहर । पीटणी हर । पडवा । पटसाल । अधहटा । फडहटा । माडवी । दड कलस । आमलसारा । तोरण । वदनमाला झलकइ । पचवर्ण पताका फरकइ ।

तिहा नगर मध्ये किसा लोक वसइ । भणइराय राणा । मडलीक । महाधर । मउडधर । सामत । सेलुत । वर वीर । राउत । पायक । डिडिमायन ।

भया मत । पटायत । फलह कार । छुरीकार । नलिकार । कुतकार । खागडीआ । साबलिआ । जेठी । यत्रवाह । जालधर । प्रभृति राजवर्ग ।

अनइ व्यवसाईआ किसा—सोनी । गाधी । दोसी । नेस्ती साहब । साह । सेठि । सोणावई । पडसूत्रीआ । कसारिआ । त्रीजउरीआ । खजूरिआ । कणसरा । भणसरा । मयारा । मणीयार । सुतार । सूत्रनार । तूनारा । बधारा । चीताहारा । लुहार । नाचकर । भोज कर । कवीअर । करीअ वेश्यादि वत । योगि । भोगि । विरागी । नट । विट । खुट । खरट । लाट । मीठा । जुगव सिगार । वातहडा । रसिक । रगाचार्य । एइसे । मागणहार मडित । पाचसइ व्यवसाईआ । व्यवसाईआ माहि वर्त्तइ । एव विवनगर प्रवर्त्तइ ॥ छ ॥ (स० ७)

१७—नगर-वर्णन (८)

गढ, मढ, पोल, पगार, मदिर, मालीया, सेरी, चोहटा, चोक, चच्चर, चोतरा, गली, गोचर, घर बार, बारणा, कागुरा, कोरणी, बइठक, बार' ग्वाल, खूणा, खूट, पुट्ठ, पछिल, गोख, गवाक्ष, बोकडसाला, दानसाला, देहरा उपासरा एहवु नगर सोभे छे । (स० ३)

१८ –नगर-वर्णन (९)

(विषम प्रवेश)

नगर पाखती कटक वन, एकुमार्ग अगाधि खाई, अभगु प्राकारु । अनै अनादिकालीन आबद्ध मूल, परचक्र अगम्य, थिर सन्निवेशु, विषम प्रवेशु ॥ (पु० अ०)

१९—नगर-वर्णन (१०)

चौरासी चौहटा, बहोत्तरि पावटा, अनेक शत बावि नही गावि । कमल खडे करि कोटडी कमाडि, अति मनोहर, सप्तभूमिका धवलहर । जिसी नगर लक्ष्मी तली प्रलब वेणि, तिसी हट्ट श्रेणि । अति सुदर प्रासान राज मदिर । (स० ५)

२०—नगर-वर्णन (११)

नगरि—जहि ८४ चौहटा ८४ टाडा, ८४ देवकुल, ८४ शाला, ८४ वावि ८४ कूआ, ८४ सरोवर, ८४ आराम, किंबहुना ८४ स्थानक । (पु० अ०)

२१—नगर-वर्णन (१२)

[चौहटा— नाम]

१ सोनीहटी	२ नाणावटहटी	३ जवहरी हटी	४ सुगधियाहटी।
५ फोफलिया	६ सूत्रियाहटी	७ पटसूत्रियाहटी,	८ घीया।
९ तेलहरा	१० दतारा	११ वलियार	१२ मणिहार हटी।
१३ दोसी	१४ नेस्ती	१५ गाधी	१६ कपासी
१७ फडिया	१८ फूलहटी	१९ एरडिया	२० रसणिया
२१ प्रवालिया	२२ त्राम्बहडा	२३ सांखहडा	२४ पीतलगरा
२५ पन्नागरा	२६ सोनार	२७ सीसाहडा	२८ मोती प्रोया
२९ सालवी	३० मीणाहरा	३१ चूनाहरा	३२ कूटारा
३३ गुलियारा	३४ परीयटा	३५ घाची	३६ मोची
३७ सूई	३८ लोहटिया	३९ लोढारा	४० चीतारा
४१ लखारा	४२ कागलिया	४३ मद्यपहटी,	४४ वेश्याहटी
४५ पणगोला	४६ गाछा	४७ भाडभूजा	४८ भाइसाइत
४९ मलिननापित	५० चोखा नापित	५१ पाटीवणा	५२ त्रागडिया
५३ वहित्रा	५४ काठपीठिया	५५ चोखावटिया	५६ पत्रसागिया
५७ मूखडिया	५८ साथरिया	५९ दउढिया	६० मूजकूटा
६१ सरगरा	६२ भरथारा	६३ पीतलहडा	६४ कसारा
६५ खासरिया	६६ पाथरिया	६७ तेरमा	६८ वेगडिया
६९ वसाह	७० साथूआ	७१ पेरुआ	७२ आटिया
७३ दालिया	७४ मजीठिया	७५ साकरिया	७६ साबूगर
७७ लोहार	७८ सुथार (सूत्रधार)	७९ वणकर	८० तम्बोली
८१ कदोई	८२ बुद्धिहटी	८३ कुत्रीकं पणहटी	८४ तूनारा

(सग्रह फलसे)

२२—नगर-वर्णन

— चौरासी चौहट्ठे —

१ अकीक हट्ट	२२ चितेरा	४३ पस्ताक	६४ लखेर
२ अफीण	२३ चोखावटी	४४ पाननी	६५ लुहार
३ अमल	२४ छीपा	४५ प्रवाल	६६ लूण
४ इवण	२५ जवाहर	४६ फड	६७ लोहनी

५ कडव	२६ जीर्णशाला	४७ फूल	६८ शस्त्र
६ कपास	२७ जोडा	४८ फोफलीय	६९ षामर
७ कसेग	२८ तलाविट	४९ बकर	७० षीजर
८ कदोई	२९ तूनारा	५० बलियार	७१ षेडागर
९ कागल	३० त्रापडिया	५१ बाजित्र	७२ सकह
१० काछी	३१ दात	५२ बिधरा	७३ सतूआरा
११ कापड	३२ दूध	५३ वेश्य	७४ सरहिआ
१२ कीलिका	३३ दोरावली	५४ ब्रग्रक	७५ सराणिया
१३ कुभकार	३४ टोसी	५५ भडभूजा	७६ साकर
१४ कूडिया	३५ नाण	५६ भरतार	७७ साथरिया
१५ गलियार	३६ नावित	५७ भागुडा	७८ सिलाव
१६ गधर्व्व	३७ नालिकेर	५८ भेंसा	७९ सुई
१७ गधी	३८ निस्ती	५९ मणियार	८० सुनार
१८ गाध्या	३९ नीराग	६० मजी	८१ सुवर्ण
१९ गुलनी	४० पटुआ	६१ माडविया	८२ सुषडी (सुखडी)
२० घात्रीनो	४१ पट्टकुल	६२ मोची	८३ सूत्र
२१ घीवटी	४२ परीषद	६३ रगरेज	८४ सूत्रहार

(नाहर जी को प्राप्त प्राचीन पत्र से)

२३ नगर वर्णन (१४)

भीड़

मुड मुडि फूटइ[1], खुरु खुरि त्रुटइ।
हियउ हियइ दलियइ, पूठि पूठइ मलियइ।
बाहु बाह घासइ, ऊसासु निसासु नासइ।
तिलु पडउ खिरइ[2] नहीं, पर दृष्टि फिरइ नहीं। इसी बहुस ॥

(पु० अ०)

२४ नगर-वर्णन (१५)

चौरासी चौहटा भीड, मनुष्य शनै शनै फिरै।
हिइं हिइ दलै, हारइ हारत्रूटै

१—समद्द मउड मउडिइ फूटइ, हारिहार तूटइ २—खिमइ (स० १)

पूठै पूठ मिलै, बाहें बाह घसाइ ।
सास न लिवराइ, धडाधड हुई ।
तिणखलो धरती पडि न सकै, दृष्टि फेरवी न सकै ।
थाली माथा ऊपर तरै, इम अनेक भीड हुई ।

२५ नगर लोक-वर्णन (१६)

सकल कला कलितु । सर्व शास्त्र विशारद । अनागत त्रिवेलितु स्वभाव सरल प्रियालाप तरल परदोष वार्त्ता विरल । दुस्थित जन दयालु, धर्म श्रद्धालु । परस्त्री सभोग भीरु, पयः पवित्रित शरीरु । प्रतिबध बन्धुर व्यवहार, नयानुबुद्ध बुद्धि व्यापार । सत्पथ विज्ञ, सर्वज्ञ शासनाभिज्ञ । एव विध लोकु ॥१०५॥ (मु०)

२६ धवल गृह वर्णन

स्वर्णमय प्रकार, अतिमनोहराकार ।
विचित्र कलिकाइ शाल मान, सहस्त्र सोपान ।
समस्त जन मनोहरु
ते कि चद्रमा किरण धवलितु कि छोहि करी कलितु । स्फुटित कोल घट्टितु ।
कि मुक्ताफल राशि निर्म्मित । इसउ धवल गृह निर्मल ॥६३॥ (मु)

२७ जिन प्रासाद

लेवा हींडीइ जगि जसवादु, तउ माडावीइ प्रासादु ।
पुण्य नउ भारउ, एकासी आगुल गभारउ ।
सूत्रधारि घाट नइ विषइ नथी कीधी मउली, कउलीवटि सहित कउली ।
अतिहि प्रचण्डु, आखा मडप अखण्डु ।
किसु एक नवचउकिउ, जाणे सृष्टिकर्त्ता आपहणी किउ ।
सुघट पणइ केतलउ एक बखाणउ, आगलि गूढ मडप मडाणउ ।
अहर्निशि अभगु, रग मडप नउ रगु ।
चिहु चउवीसी नी विगति, पाखलि जगति ।
मूर्त्तिवती कला बहुत्तरि, देइसी देहुरी बहुत्तरि ।
सुवर्ण्य दड कलसि अलकरी, ध्वजा परहरी ।
हिमाचल श्रीभरु, सूलिगउ शिखरु ।

जाणे मेरु पर्वत शृगु, एहवउ ऊगरि स्वर्णमय कलश नउ रगु ।
लोह घटातु, लक्ष्मी गजातु ।
धर्म ध्वजातु चिहु पखेर कोटरी, कोसीसे करी आकाशि अडी, सुधा करि धवलितु ।
विविध घाटि करी सारूआर, एव विध जिन विहारु ।
सकल पणइ करी महा स्फूर्ति, माहि माडी वीतरागनी मूर्त्ति ।
परिगर करी शोभायमान, छत्र त्रय करी नइ विराजमान ।
आठ मागलिक मडाणा छइ, पुण्यवत पूजा करइ छइ ॥
प्रासाद वर्णन ॥ ३६ ॥ जै० (मु०)

२८ स्वयबरा मंडपु—

चउदिसि माच, हेठि रत्नमय भूमिका, स्वर्णमय स्तभ,
ऊपरि पचवर्ण देवाशुक तणा ऊलोच,
तलिया तोरण ऊभविया, स्वेत चगर लबाविया,
फूलमाला लाबावी, सिखरि आरीसा झलकइ,
गगनि चिंछ पताका झलहलइ,
अच्छारायणु, इसउ जसउ देव निमियउ तिस्तु मडपु । (पु० अ०)

२९ वाडी वर्णन

बीजउरी ना अखाडा, नीबुइना वृक्ष लक्ष, नवरग नारगि ।
द्राख मडप, जोइवाजिससी जबीरि, दीठी हाथ उपशमइ तिसी दाडिमि फूल्या फणस करणी नी कोटि केलि वृक्ष असख्य अनेक विध आंबा रूढि रायणि चारु वृक्ष रसाल नक्षथ लगइ वाधीना नीलिएरि पान वारी प्रगटक खारिक खभूरि वडोरि वोरि फूटी फोफलणी गूद नरीना गजा इसी वृक्ष अलकारी वाडी ॥ ३५ ॥ (मु०)

३० आराम-वर्णन (१)

नारिग, लवग, प्रियग ।
पूफ, पुन्नासा, नाग, मागधी ।
धव, अर्जुन, सर्ज, खर्ज ।
एलूर, बीजपूर, कृतमाल, तमाल ।
नक्त माड, प्रियाल, ताल, हताल, श्रीताज ।

खदरी, बदरी, कदब, निम्ब ।
जब, जंबीर, वानीर, कणवीरू ।
रुक्षा, अक्ष, प्लक्ष,अखा ओवट, कुटज ।
पटोली, पनस, वेतस ।
पलास, सल्लकी, अकोल, किकिल ।
नागवल्ली, गिरिकर्णिका, कर्णिकार, सिदुवार, मदार ।
कोविदार, कल्हार, दाडिमी, करुणा, वरुणा ।
कपित्थ, अपत्थ, किकिरात, पारिजात ।
पटाजा, सपूला, मालती, पद्मस्थल ।
पद्म तिलक, बकुल प्रभृति वनु ।
पुष्पित, फलितु, मंजरितु, पल्लवितु ।
स्निग्धच्छाया, सश्रीक, साड्वल, निचय, पत्र बहुल ।
परिमल पवित्र सपुष्प सफल, अनेक पथिक विश्राम मूर्त्ति ।
विविध पक्ष कुलाचार, दृष्टि आनदक ।
मन सतोषक, एव विध प्रधान वृक्षा ॥ ६५ ॥ (मु०)

३१ आराम-वर्णन (२)

सच्छायु महाकायु लताकीर्ण द्रुम सकीर्ण पल्लवितु कन्दलितु पुष्पितु फलितु सजनु शीतलु साड्वलु इसउ उद्यान वनु । (पु० अ०)

३२ सुगंध वृक्ष नाम (१)

जाई, जूही, जासूल, नाग, पुनाग, चपो, दमणो, वालो, वेल, पाडल, कुद, मचकुद, केतकी, केवडो, मोगरो, मालती,[१] मरुओ, गुलवास, सेवत्री, शतपत्र, सहस्रपत्र, सहकार प्रमुख एहवू वन छै ।

तेहना फल केहवा छइ ?

रुडा, रगीला, मीठा, मधुरा,[२] फूटरा, फरहरा, पाका, पडवाडा सुहाला, सुगध, सुकोमल, सदाकर, फूल, फल, पत्र, माल, प्रवाल, पल्लव, मकरद, मजरि पराग, परिमल, छाया, सोहामणी । एहवू वन तिहा स्त्री क्रीडा करै छै ।

३३ सुगंध वृक्ष नाम (२)

कणयर प्रवर
कुद, मुचकुद ।

१—गुलाब २— खाटा । प्रति (को) में अकित नामों के वाद ये नाम विशेष हे ।

जाइ, जूही । वेल, वउला
निरुपम निरवाली । सेवत्री नासइ
मनोज्ञ मल्लिका राज गिरी नी रचना ।
फूल्या चपक रहित शोक । कुम्हलित केतकी ।
मनोहर माडणीया अगथीया असख्य
कउतिगा वरणा कोरटक इत्येव मादल पुष्प वृक्षा (३३) (मु०)

३४ सुंगध वृक्ष नाम (३)

कुसुम—
चम्पक, राज चम्पक, विचकिल, स्वर्ण जूथिका
केतकी पुन्नाग, मालती जाप कुसुम कुद, मुचुकुद
मदार दमनक, कुरुवक शतपत्र बधुजातिका पारिजात
हरिचदन, कल्पवृक्ष प्रमुख कुसुम समूह तेहि रम्यु । (पु० अ०)

---

३५ सुगंध वृक्ष नाम (४)

मरूयउ
देखिवा जिसी देव गधारि सविशेष सुरहि
विविध वालउ गधि विमणउ, दमणउ ।
बहु विध बावची, त्रिभुवन विख्यात तुलसी ।
एव विधि पात्री ॥ ३४ ॥ (मु०)

३६ अटवी-वर्णन (१)

अरण्य, उजाड, झाड, जाल, माल, जल, थल नदी, निवाण, नाल, खाल, खेड, खोह, वाका, विषमा, गिरि, गोबर (गह्वर) इत्यादि ।

३७ अटवी वर्णन (२)

॥ अटवी वर्णक ॥ रौद्र घोर भयकर ।
मनुष्य रहित । अनेक स्वापद महित ।
किहा इक शिवा फूत्कार । घूहड तणा घू घू शब्द कार । सिंह तणा सिंहनाद ।
वाघ तणा गुजारव । सूअर तणा घर घरा रव ।
वानर फूत्कार करइ । चित्र कबरकइ । बेताल किलकिलइ । दावानल प्रज्वलइ ।
भील गीत गाइ । कष्टि चलाइ । रीछ तणा समुदाय । चरू तणा घाट ।
साहसीक तणा हृदय कंपइ । कातर कोइ उभउ न रहइ ॥
इति रौद्र महाटवी ॥ छ ॥

३८ अटवी वर्णन (४)

अटवी—अथाऽटवी वर्णन । अनेकोत्कट वृक्ष गहन । विविध व्याल शार्दूल । काल ककाल । वेताल । क्षेत्रपाल । शाकिनी । डाकिनी योगिनी । यक्ष । राक्षस । गधर्व विद्याधर । खेचर । भूत । प्रेत । पिशाच । क्रीडादिक करि । कोलि डब टबर । श्मशान भिल्ल कर्बर । शबर । तस्कर । शबर । सरभ । कासर । व्याघ्र । सिह । शृगाल । वृक । शूकरादि । स्वापद । रौद्राकार । घूक । शिवा । फेतकार । डाकिनी । डमर डात्कार । यक्ष राक्षस महा हुकार ॥ एव विधा अटवी ॥ छ ॥ (स० २)

३ ९ अटवी वर्णन (५)

जिहा सिवातणा फेत्कार,[१] घूक तणा घूत्कार ।
व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ बाट नइ घाट ।
लाघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, वेडि विलाउ बुरकइ ।
बताल किलकिलइ,[२] दावानल प्रज्वलइ ।
रीछ साचरइ, वीरूतणा यूथ विस्तरइ ।
वेडी रा साड त्राडूकइ, ठामि ठामि वनरा भइसा दूकइ[३] ।
सादूला सीह गाजइ, कायर ना हीया भाजइ ।
सूरा हथियार साजइ, उद्दड वाय वाजइ ।
रूख कडकइ, वटाऊ भडकइ । ताड खडहडइ, पखी भडहडइ ।
चालइ[४] वाट साधि छड हडइ, कुमार जागइ छइ ।
इसी रौद्र अटवी, किसी घणी वान रटवी ।
जिहा न लाभइ माग, न लहीयइ नदी तणा थाग ।
न सकइ चाली हाथी[५], न कोइ मिलइ साथी ।
विपम पर्वतमाला, डावी जिमणी दव तणी ज्वाला ।
जई न सकइ चढ्यानइ पाला, दीसवा लागा भील अत्यत काला ।
आवी विषम वेला, साथी हुवा लागा भेला ।
झाड सधि मिली, न सकीयइ टली ।
ठामि ठामि दीसइ ज्वाला, माहि ओझीसाला ।

---

१ फुतकार, २ एक एक सू मिलइ, वणराइ बलइ (विशेष पाठ), ३ मनीष्य मारग थो चूकइ ऊचा शिखरि चढि कूकई (विशेष पाठ) ४ एक एक सू अडेइ, चालइ नाय छडई । ५ दीमइ अरण्य ना हाथी ।

जिहा रहइ सापकाला, न करी सकइ टाला, बडानइ बाला[1] ।
दृस्यउ महा अरण्य, तिहा एक परमेश्वर सरण्य[2] । (मू०)

४० अटवी वर्णन (६)

शिवा तणा फेत्कार, घूअड तणा घूत्कार ।
सिंघ तणा गुजारव, व्याघ्र तणा घुर्घुरारव ।
सूयर घुरकइ, चित्रक बरकइ ।
वेताल किल किलइ, दावानल प्रज्वलइ ।
रीछ उछलइ, अग्रणी भ्रमइ ।
मृग रमइ जिसा हुइ दविधा रूख
इसा दीसइ भील इसी वन भूमि ॥ ४ ॥ (मु०)

४१ अटवी-वर्णन (७)

महात घोर निर्मानुषी अटवी, जहि-कवहि ठाइ शिवा तणा फेत्कार ।
कवहि ठाइ अलिजर तणा फूत्कार, कवहि ठाइ वानर तणा बोकार ।
कवहि ठाइ घूयड तणा हूँकार, कवहि ठाइ सीह तणा गुजारव ।
कवहि ठाइ व्याघ्र तणा घरघरारव, कवहि ठाइ सूकर घरकइछइ ।
कवहि ठाइ चीत्रा बरकइ छइ, कवहि ठाइ वेताल किल गिलइ छइ ।
कवहि ठाहि दवानल प्रज्वलइ छइ, कवहि ठाहि रीछ साचरइ छइ ।
कवहि ठाहि विरूतणा यूथ हीड छइ, इसी महाभय वणी अटवी ॥

४२ अटवी-वर्णन (८)

किहाई घूवडना घूत्कार, कि० शिवा तणा फेत्कार ।
कि० अलिंजर तणा फूत्कार, कि० शाकिनी तणा रासडा ।
कि० डाकिनी तणा काचडा, कि० कलहस ना कलकलाट ।
कि० काबरि तणा कर्बराट, कि० चीतरा तणा वर्वराट ।
कि० सीह तणा गुजारव, कि० व्याघ्र तणा घुर्घरारव ।
कि० क्षेत्रपाल तणा भैरवारव, कि० वेताल तणा कल कल ।
कि० वलइ दावानल, कि० रीछ तणी श्रेणी साचरइ ।

---

१ कुण छोटा कुण वाला । सूरा सजे भाला, चतुष्पदरा चाला । घणा पखिया रा माला । (विशेष) २ इसी रोद्र अटवी, वखाणइ कुशलधीर कवी ॥ (विशेष) ।

—सभा कुतूहल से

कि० गाडा तणा यूथ फिरइ, कि० हरिण रोभ्र सूअर तणी श्रेणि चरइ।
दुष्ट जीव प्रचार, विरुअ तणा जूथ हींडइ। इसी निर्मानुषी अटवी॥ स० १

४३ अटवी-वर्णन (६)

एक अटवी तिहा सीह तणउ गुजारव, व्याघ्र तणा घुरघुरारव।
घूअड तणा घूत्कार, सिवा तणा फुत्कार।
साकिणी तणा रासडा, डाकिणी तणा काचडा[1]।
काल कसालना कलकलाट, काबरि तणा करबराट।
खेत्रपाल तणा अट्टहास,
भैरवराहु तणा भुत्कार[2], हणवन तणा हुत्कार।
वैताल कलकलै, दावानल प्रज्वलै।
रीछ तणी श्रेणी सचरै, मृगतणा यूथ विस्तरै।
रोभ्र चरै, गाडा तणा यूथ फिरै।
सूअर दौडै, दुष्ट जीव रूख मोडै।
विरवा तणा यूथहीडै,
धरती धडहडै, एहवी अटवी भय करै॥ (स० ३)

४४ वृक्ष-नाम (१)

चपक, राजचपक, कुद, मुचकुद, पुन्नाग, नाग केसर, केसर, नारग, लवग कपूर, बीजपूर, जबीर, बकुल, त्रिचकल, सिदुवार, देवदारु, नमेरु, ताल, तमाल, हिंताल, तिलक, शिरीष, कक्कोल, मरिच, पिप्पली, एला, भूर्ज, कपित्थ, खर्जूर, पूग नागवल्ली, नालिकेरी, कदली, दाडिमी, कदब, सप्तपुत्यच्छद[3] प्रियगु, चदन, हरिचदन, सतानक, पारिक, पारिजात, वृक्षावली बहुल शीतल छाय वन॥
जबीरबकयबलि बकयली, कपूर, पूगीफली।
विज्जूर[4] ज्जुण सज्ज[5] सल्लय समी निग्गोह, सोहजणा॥
ककोली कवली लवग लवली नोमालया मालई।
सग्गा सोअ तमाल ताल तिलया रेहति निद्धादुमा। (स० १)

४५ वृक्ष-नाम (२)

ताल, हिताल, कुद, मुचकुद, अशोक, चपक, कोरिटक, कर्णिकार, मदार सहकार, सिन्दुवार, कणवीर, जबीर, निबक, कदब स्वच्छ, कपित्थ प्रमुख अशेष, वृक्ष विशेष॥ (पु० अ०)

१—रामत २—भेरूतणा हूंत्कार पाठान्तर—३—सपूछद ४—खज्जूर ५—सज्जण

४६ वृक्षनाम (३)

अथ अंब, नीब, बीली, बाउल[1], बोर, बीजोरी, बदाम, ककोल, केलि, कमल कणयर, करज, कणज, कयर, कदब, केसु, कोरट, कैवच[2] कालुबरी, कथर, ताल, तमाल, तगर, अगर, अरणी, खिरणी, श्रीखड, अखोड, अपनस, असोक, आउल आबिली, इक्षु, एलची, आमला, अजीर, सालर, सदाफल, सोपारी, सरद्द[3], गूगल, गूठी, जाबू, नीबू, नागरवेल, रायण, दाडिम, जाल। (स० ३)

४७ वृक्ष-नाम (४)

वन वर्णनम्

अगर, तगर, निब, अंब, जबू, कदब, बड, कुडा, केर, खेर, बाउल, बोर-बीजोरा, अकोल, ककोल, करज, कणयर, केसू, कोरट, कैवच, उबर, कठुबर, कथार, ताल तमाल, करणा, नीबू, दाडिम, आबला, हरडइ, बहेडा सेव, अखरोट बिदाम, पिसता, निवजा, दाख, किसमिस, अबनूस, असोक, आउल, आबिली इक्षु, एलची, अजीर, सीताफल, नालेर, सोपारी, सालर, गूलर, गूदी, रायण रत्ताजणी धव, सीसम, पीपल, टीबरू, करमदा, प्रमुख, (कौ०)

४८ वृक्ष नाम (५)

वनस्पति नाम—

अंब, निब, कदब, जब, ताल, तमाल, हिताल, प्रियाल, नन्दमाल, रसाल-नाग, साग, पुन्नाग, मदार, केदार, देवदार, कोविदार, सिदुवार, कर्णिकार, जबीर करवीर, वानीर, मालूर बीजपूर, खजूर, नारेल, नारिंग, लविंग, प्रियगु, कुद, मचकुद, पाउल, कमल, उत्पल, चपक, केतकी, किशुक, अशोक, ककोल, कलि प्रमुख वनस्पति जाणवी ॥ (स० ३)

४ _ वृक्ष नाम (६)

नारग, लवग। प्रियगु पूग। पुन्नाग साग। मगधी धव। अर्जुन, शोभा-जन। सालरि बीजपूर। धत्तूर वानीर। करवीर करीर। जबीर जबु। कदम कर-जन। कृतमाल, तमाल, ताल, हिताल। रसाल, सजसाल। प्रियाल, पीतसाल। महाकाल अक्षरोट। अश्वथ, कपित्थ, अक्ष प्लक्ष, वट, कुटज। पनस, बेतस। तिनिश, पलाश काश। अकोल्ल, ककोल्ली। मल्लिका, नागवल्लिका। गिरि कर्णिका, श्री पर्णिका। कर्णिकार, कोविदार। मदार, सहकार। सिदुवार कल्हार वृद्धदार, दमनक, दाडमी करणावरणा। किंकिरात पारिजात, आम्रातक श्लेष्मतक। विभीतक

१—बाहुल २—किवच ३—मरखू

हरीतक । आमलक गुडफलक । झाबुक, गुग्गुल । पिचुल, निचुल । वजुल जाई जुई । कुद, मुचकुद । पाटल कमल । बधुक मधूक । भूर्जा खर्जूर । मालती, नव मालिका । केतकी चेतकी हरीतकी । चारकुलिक तिलक वकुल, कटुफली उबर, कालुबरि, नालिकेरि । प्रमुख नाना प्रकार, वनस्पति सभार । पुष्पित, फलित । मजरित, पल्लवित । सच्छाय स्निग्धच्छाय । नीलच्छाय, हरितच्छाय, शीतलच्छाय । शाद्वल प्रवल । वहलदल सकल, अतुल परिमल । अनेक पथिक विश्रामभूत लक्षपक्षि सभूत । निष्पीड नीड विराजमान प्रधान, । अखड वनखड । (सू०)

५० वृक्ष वर्णन

वृक्ष फलित, पुष्पित, मजरित, पल्लवित स्निग्ध, सच्छाय, शीतलच्छाय, सश्रीक, शास्वल, भास्वल, निचितपत्र, बहुल, परिमल, परिकलित पुण्यकर शोभित[1], विविध विहगमाधार, अनेक पथिक-जनागार, आनददायक[2] ।

(चि०)

५१ पक्षी-नाम (१)

अथ पक्षी नाम—

हस, कलहस, राजहस, चकोर, चास, चातक, चकर, कबु, चक्रवाक, क्रौच, कपोत, कपिजल, कलक, कलविक, कलकठ, केकी, नीलकठ, कूर्कट, कोसीट, कहुआ, कारड, भारड, कुडल, कावर, कादब, काग[3] खग, बग[4], चातिक, ढीकण, वलाहक, लावक, तीतर, भ्रमर, सुक[5], सारस, सारिका, खजन, सूकविक, भार इत्यादि ॥

कतार, जतार, बाज, कुई, सीकरो, कोइल[6], समलो, चडकली, चडी, कमेडी, ढेवी, लावा, बटेर, कबूतर, होला, बगला ॥

५२ पक्षीनाम (२)

हस कलहस, राजहस सारस, चकोर, चक्रवाक, कोकिल, कोकनद, बक, मदन-शाल, कुक्कुर, कलविंक, क्रौच, अरिष्ट, पारापत, कपोत, शुक, सारिका, वल, लीका, कपिजल, चातक, चास, मयूर, तित्तिर, लावक, कुरर, शकुनिका, भैरवा, भ्रमर, दुर्गाकोशटक ,टिट्टिभ वेलाक, ढिक, काकजीव, जीवक, हारीज, कारड, कुडल, खजन, पिंज, भृगार, वितत पक्ष, सिचानक, गुरुड । इत्यादि पक्षी वर्णन (सा०२)

---

१ पुष्प प्रकर शोभित २ आयायक (म० १ , ३ काक ४ बक ५ शुक ६ कोकिल

(पु० अ०)

५३ चतुष्पद-नाम (१)

स्वापद नाम--

सिह, शार्दूल, सरभ, साबर, व्याघ्र, व्याल, वरु, वरगडा, वराह, चमर, चीतरा, महिष, जरख, रीछ, रोम्म, सियाल, हरिण, गडक, गोमायो, ससलो, वणोटी, वानर, भूड, भैसा, खर, करत (भ), हस्ती, इत्यादि चौपद ।

५४ चतुष्पद-नाम (२)

बोकडो, गाडर, मीढो, भैसो, शसल, सूर, सारब, हिरण, रोभ्फ, रींछ, सरभ, प्रमुख, चतुष्पद वर्णन ॥

५५ चतुष्पद (३)

सिह-वर्णन

सिह पुच्छयच्छोटित भूपीठ ।
सिंहनाद प्रति शब्दित वत्तातु ।
विस्फारित मुख कुहर विकराल दंष्ट्रा दु. प्रेक्ष. ।
तीक्ष्ण नख विदारित करि कुभस्थल ।
पिंगल लोचन, केशर भासुर स्कध देश ।
रक्तोत्पल कमल कोमल रसना सनाथ, समस्त श्वापद नाथ (स० १)

५६ कीट-नाम

कीडी, कथुआो, कीडो, कमीआकीला, घीवेल, गदहीरा, माकण, मकोडो, मकोडी, चाचड, चूडेल, फाका, बगतरा, उदेही, अलसिया, गटोला जलोक, चदाण, भमरा, भमरी, तीड, माखी, मसा, डास, कसारी इत्यदि जीव ॥

५७ पर्वतनाम

अर्बुदाचल, सिद्धाचल, विन्ध्याचल, मलयाचल, उदयाचल, अस्ताचल, रेवताचल, हिमाचल, कनकाचल, रोहणाचल, हिमवत, महा हिमवत, त्रिकूट, चित्रकूट, रूपी, सुरूपी, नीली[1] महानीली[2], सिखरी, मुक्तागिर, धोलागिर, मानुषोत्तर, समेदसिखर, अष्टापद, नैषध, वैताढ, कैलाश, गोवर्द्धन, गधवाहन, इत्यादि ॥

---

१ नील २ महानील

५८ सरोवर-वर्णन (१)

अगस्ति ना रोस लगी सृष्टि कर्त्ता अभिनव समुद्र सरिज्यउहुइ,
आठ दिग्गजे दतूसले थिरू हुतउ निरालब भणीउ जिसउ आकाश विसम्य हुइ ।
आदि वराह पृथ्वी ऊधरी तीणइ म्लान कि जल सरित हुइ
वन लक्ष्मी नउ जिसउ क्रीडा सरोवर हुइ
किवाहइ नीलकठ तणइउना कठ विषु विहतु घूटिवा भणीनइ भय
ब्रह्मा पाताल हूतउ लोक जीवन हेतु अमृतकुड आणी मेलहउ हुइ
सत्कवि सहस्रमुख विनिर्ग्यतु जिसउ वचनामृत पिडीभूत हुउ हुइ
धवल स्फटिक पाषाण तणी पालि वृक्षावली शोभितु हस बग बलाहक चकोर
चक्रवाक मछ्य कच्छप कूर्म पाठीन पीठ जलचर जीव विशेषि विराजमान ।
वन हस्ती जलक्रीडा करइ, तापस जन वल्कल प्रक्षालइ छइ
सुरसुदरी विद्याधरी जल केलि करइ भ्रमर गुण गणाट करइ
वाइ पाणी झलकइ घट नाला सूसूइ पाणी घूमूइ
पथिक जनना श्रम हरइ एव विध सरोवर ॥ ५ ॥ (मु)

५९ सरोवर-वर्णन (२)

पानि तणो परिगरु, देहरी तणउ समहरु ।
चउकी चउखडे झलहलइ, उआरे पाणी खलहलइ ।
पगथिया रा सारुयार[1] वरडी उदार लहरी मला उछलइ ।
मत्त वारण ऊपरि पाणी वलइ
समुद्र नी परि गभीर, निरुपमान[2] नीरू ।
उपरि जाण भर[3]इ, खडगू ए तरीइ[4] ।
नइवाली अगोरिजालि । प्रवाह छूटइ, बध फूटइ ।
देहरि दड कलस आमलसारा सोना तणा झलकइ ।
जला[5] ढिरिणि कुल वधू तणे पागि नूपर खलकइ ।
तडिइ किर्त्तिस्तभ दीसइ, लोक हिया विहसइ ।
मेघ मल्हार (राग) गाईयइ वीणा वश मनोहर वाईयइ ।
देहरीए पूजा कीजइ, जन्म फल लीजइ ।
शत पत्र, सहस्र पत्र लक्ष पत्र ।
सूर्य वशी, सोमवंशी कमल करी सश्रीक दीसइ ।

---

१ रासा उयारा २ तीर ३ भरीयइ ४ तरीए ५ जलाढिरिणी ।

जिहा हस सरलइ, सारस करलइ ।
कपिजल कलइ, वृक्ष ना पान चल चलइ ।
राजहस रमइ, भ्रमर भमइ ।
चकोर चक्रवाक मयूर कूजइ, जलकेलि तणा मनोरथ पूजइ ।
महा काय पोलि, पावडियारा तणी ओलि ।
निर्मल जल कमनीय, विपुल पालि रमणीय ।
पथिक जनाधार, वृक्ष परपरा सार ।
कल्लोल माला मनोहर, एव विध सरोवर ।
सरस्या भोगलहर्यंभोग जाड्याम्बुज षट् परा. ।
हस चक्रादयास्तीरोद्यान श्री पाथ केलय ।। (मु०)

६० सरोवर वर्णन (३)

तलाव—
सखरी एकल्लोल, देखोने समुद्रनी पडे भोल ।।
[1]पखीनी वेट्टीओल, उछलेइ कल्लोल ।।
दोसे अमोल, घणाइक रगरोल ।।
घणाइक वायरना झकोल, भला पगथीयाना वोल[1] ।।
घणीक पखीयानी कलब्रल, घणीइक हलफल ।।
धोबी धोइ मलमल, भला विकस्या कमल ।।
पाणी पिण अमल, भला परिमल ।।
ख्याल देखीइ मुख पखालीइ पथी पाणीले पीइछे ।।
झारी भरी लिजीइछै, हाथोहाथ दीइछै ।।
मसकते भरीइछै, भैंसा उपरि धरीइ छै ।।
मोजकरीइ छे बाभण न्हावे छै ।।
धोतीया ते ल्यावे छै, ईश्वर ते ध्यावेइ छे ।।
सहसनाम ते गिणे छे, सरस्वती पाठवद तैभणे छे ।।
वेद वाचे छइ, प्रभाति ख्यालते माचे छइ ।।
सहुकोई राचे छै ।।
रसोई जिमीइ, आखो दिन तीज रमीइ ।।
बीजे स्यु भमीइ ।।

---

१ पखी ।

एहवउ तलाव, परमेश्वर मिलाव ।
इति तलाव वर्णनम् ॥ (पू०)

६१ पनघट-वर्णन

बईरा नी भीड, हुइ पीड, त्रूटे चीड ।
एक ऊतावली दोडे छै एक माथै बेहडू चोहडेछै ।
लूगुड ते माथै ओढे छइ, बेहडो ते फोडे छइ ।
एक एकनै अडै छइ धडाधड पडै छइ ।
माहो माहि लडे छइ ॥
हवे नान्ही लाडी, चीखल थी पडे आडी ।
बीजी नी भीजाइ साडी, तें माटेइ करे राडी ।
सोक सोक नी करइ चाडी, डीले जाडी ।
खीजे माडी, सामूइ पाछी ताडी ॥
एक पणयारी भरे छइ, वाता ते करे छइ ।
नजर ते अरह परइ फिरे छइ, एक एक ने हसे छइ ॥
बीजी ते पाणी माहि धसेछइ पग ते पागोथियासू घसइ छइ ।
एक एक टोली जाइ छै, आपणी आपणी पाछे आवे छे ॥
एक एक नो छेहडो साहे छे, उपाडवा उमाहे छे ।
उतावली धाइ छे, वाता ते चाहै छै ।
जीवाणी पाछू रेड्यू छै, छोकरो तेड्यू छै ।
माथा उपरि बेहड़ चोहड्यू छै, जेहडे भमके छै ।
घूघर ते घमके छै, पायल ते ठमके छै ।
बेहइ अरघट, घणेक गहगट्ट ।
वाजै अणवट्ट, आवे दहवट्ट ॥
एहवै पणगट्ट । इति पणगट्ट वर्णनम् ॥

६२ नदीनाम (१)

गगा, गोमती, गोदावरी, सिधु, चामल, सिप्रा, सोवनभद्रा, सरस्वती, सीता, सीतोदा, रेवा, रिक्ता, रक्तवती, बनास, जमुना, मही, सरजू, तापी, सतलज, भूवि, ऐराव, १४ लाख ५६ हजार ६० समुद्र, भेली थई छइ । (का)

६३ नदी नाम (२)

गगा, गोमती, गोदावरी, सिन्ध, सिप्रा, सरस्वती, सोवनभद्रा, सीता सीतोदा, रेवा, रिक्ता, रक्तवती, सुवर्णकुलिका, रुपकुला, नरकता, नारिकता

हरिकता, हरसलिला, यमुना, मही, तापी, बनास, गभीरी, चाम्बिल, कृतमाल, नक्र-माल, प्रमुख, चौदलाख, छप्पन हजार नदी, लवण समुद्र माहि मिलै। (स० ३)

६४ नदी-वर्णन (१)

नदी, दो तड पाडती, कचवर उपाडती।
रुखउन्मूलती, कुभिणि घालती।
सावज हणती, जडी मूली खणती।
मार्ग्गलोक खलती, वलणि वलती।
तरू तोषती, नीचउ जोम्रती।
महापूरि कलकलती, कल्लोलि उछलती।
लहरि करी सू सूती, वाहले फूफूती।
जिसी कृतात तणी मूर्त्ति तिसी रौद्र, बेउतटलेई आवी नदी। (स० १)

६५ समुद्र-वर्णन

समुद्र उच्छल दूहुल कल्लोलमाला मालित गगन मडलु।
मत्स्य कच्छप कमठ कूर्म नक्र चक्र पाठीन पीठ जलचर सकुल।
अतिशय गभीर, समुद्दड नीर डिंडीर।
अनेक सायात्रिक लोक सेवित,
सोल जाति रत्ननउ आगरु एव विध अपारु सागरु। (स० १ और स० ५)

६६ समुद्र-वर्णन (२)

समुद्र अगाध, अलब्ध मध्य, गुहिर गभीर, आवर्त्त दुर्ग, कुतीर्थ विषम, मकर भयकर। (पु० अ०)

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग २

राजा, राज-परिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

नरेश्वर वर्णन (१)

समुद्रनी परि लक्ष्मीनिधान, सहिजि ही सावधान ।
मेरुनी परि सर्व जनाष्टम, अति निर्दंभ ।
कार्त्तिकेय नी परि अप्रतिहत शक्ति, देव गुरु नइ विषइ निविड भक्ति ।
आसमुद्रान्त भूमडल भर्त्ता, आश्चर्यमय महा कार्य कर्त्ता ।
सूर्य नी परि नित्योदय, सत्पात्र कृत सचय ।
दिग्गज नी परि अनवरत दानाद्री [1] ।
कृत करु, जय श्री वरु ।
ईश्वर नी परि जितमन्मथु, प्रजापति धकटित[2] सत्पथु ।
मित्र प्रति, उदयशेल अति[3] ।
सशील, सलील ।
विक्रमाक्रान्त भूतलु, अतिहि प्रबलु ।
रूपइ अभिनव कदर्पावतारु, अति सुविचारु[4] ।
यशस्वी[5], तेजस्वी ।
प्रतापि लकेश्वरु[6], एव विध नरेश्वरु ॥ १ ॥
जिणइ राजायइ गौड देश नउ राउ गाजिउ, भोट नू माछिउ[7] ।
पचाल नउ पालउ पुलइ, कानड देश नउ कोठारि रुलइ ।
ढूढाडि नउ ढोयणउ ढोयइ, वावर देश रउ बारि बइठउ टगमग जोयइ ।
चौड नउ त्रापिउ[8], काश्मीर नउ थरहर कापिउ ।
सोरठी (य) उ सेवइ, दसउर नउ दड देवइ ।
मेवाड नउ माल आपइ, काछ नउ कापइ ।
अग देश नउ अग ओलगइ, जालधर नउ जीवितव्य तणइ कारणि[9] रिगइ

---

१ दिग्गज नी परि निरतर, दानाद्रीकर २ प्रगटित ३ मित्र प्रति उदयशील, शत्रुहृदय सील । ४ सीकर घोर अ वार (विशेष पक्ति) ५ जयस्वी ६ सार्वभोम नरेश्वर (विशेष पक्ति) ७ भजयउ ८ चाप्यउ ९ काजि १० वयरीया कृतात, सेवका परम सात । काछ वाच निकलक, सीह नी परि निस्सक (विशेषपक्ति)

[१]धणू किसु रिपुकुल कालकेतुवर, शरणागत वज्र पजर[२] ।
पचम लोकपाल[३], जिमइ सोना रइ थालि ।
जिणइ रिपु सवे निर्द्धाट्या,
दुर्ग सवे आपणा[४] कीधा, वइरी नइ[५] देसवटा दीधा[६] ।
इस्यु नि:कटक साम्राज्य राज्य पालइ[७] । (मु०)

२ नृप वर्णन (२)

एकागवीर, रणागणधीर[१] ।
पराक्रम निर्भय भीम, साहसिक सीम ।
विसम धाडि मोडण, पर भूमि पचाणण ।
परदल खडण, छत्रीस राजकुली मडण ।
लडवाय भडकोडि भजन, अगज गजन ।
रढ रावण, अरिदल ऐरावण ।
अहकारी माण मोडण, मूछाला वीर माण खडण ।
शरणागत वज्र पजर, गढ मजन[२] कुजर ।
अडवड्या आधार, वाका वीर पाधोरणहार ।
सीकरि घोरधार, विकट पर[३] महाहकार धिक्कार ।
कलकीया केदार, पवाडा कोडि जइत्तूयार ।
रण रगमल्ल, अरडकमल्ल । वीर टोकर मल्ल ।
पर बीर हृदय सल्ल, बावन्न वीर कटार मल्ल[४] ।
रण भग्न सुहडावष्टभन मेरू, साहण[५] समुद्र विलोडण मथाण मेरू ।
वीर ककाल वेताल काल, चमर बिंवाल ।
परदल हल्ल कल्लोल, वैरि वर्ग[६] द्रह बोल ।
भय भीत भडकोडि[७] रखा वज्र कमाड,[८] दूठ राया हीयइ दराड ।

---

१ विस्तीर्ण कर (विशेष) २ हृदय विसाल ३ जिण रायइ वडावटा वि?? खाट्या, सकल वइरी निर्धाट्या । ४ अपणइ वसि ५ बीहते ६ लीधा ७ रामच?? नी परइ चालइ । इमउ नि कटक वीर जितशत्रु राजा राज्य पालइ ।

पाठान्तर कुशलधीर कृत 'सभाकुतूहल' मे ।

पाठान्तर—

१ अटग गजण, रढरावण । २ भजन । ३ भट । ४ भाले भगाकर । कराल करवाल तर, ललधाराधर । ५ सीहण । ६ परदल । ७ भमकोडर । ८ रणागण भिड़माल पाठान्तर— सभा-श्रृगार विनयसागर प्रति ।

गय घड विभाड, चोर चरड दुफाड ।
नीसाण निसक, रिपु राय तारामयक ।
महारिपु कीर्त्तिलकार हनुमत, घणघोर बल घूमत ।
डाकीया ऊतारण टोप, धयवड घटा टोप । इत्यादि ।

३ राजा वर्णन (३)

विक्रमाकान्त भूतल, शक्तित्रय भासित रिपुबल ।
प्रजापति जनक जननी समान, सेवक कल्पद्रुमोपमान ।
युधिष्ठिर जिम वचन प्रतिष्टु, श्रीराम जिम न्याय निष्टु ।
विष्णु जिम प्रजापालन व्रत, तरुणादित्य जिम प्रौढ प्रताप ।
समुद्र जिम अनाकलनीय स्वरूप, एहवउ भूप ॥

४ राजा (४)

निज विक्रमाक्रान्त क्षोणि मडल, शौर्य श्री वदनारविन्द प्रद्योतन ।
सकल महीपाल लीला लालितु , रिपु कुल काल केतु ।
सरणागत वज्र पजर, पचम लोकपाल मुद्रावतार ।
इसउ राजा । (पु० अ०)
सीमाल सवे वश वर्त्तिया किया, गढ सवे ढालिया ।
गढवई सबे निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा किया ।
समुद्र पर्यन्त आण फेरी, इणपरि एकत्र निःकटकु राज्य परिपालइ । (पु० अ०)

५ राजा (५)

महाशासनु, अरडक मल्लु, जग झपणु, प्रताप लकेश्वरु
पर राष्ट्रीक हृदय शल्यु ।
जसु तणइ प्रार्थित प्राण भिक्षा हुता राय ओलगइ
केइ हाथि दर्पण लियइ ओलगइ
केइ पुण स्त्रीवेश मुडित कूर्च हुता ओलगइ ।
केइ दाते आगलि लेइ ओलगइ ।
केइ वेला बाढी ओलगइ ।
केइ कोढ कुहाडइ ओलगइ ।
केइ लोटीगरो ।
बिंहु नाकेइ हाथु खालइ लोटइ ।
इसउ प्रतापी राजा । पु० अ०

६ राजा (६)

राजा आदित्य जिम प्रतापियउ, सिंह जिम सौर्य संयुक्त, हंस जिम उभय पक्ष विशुद्ध, हार जिम कामिनी वल्लभु चंद्रमा जिम कलावंतु, पट जिम गुणवंतु, धनद जिम श्रीमंतु, हस्ति जिम दानवंतु, मकरध्वज जिम रूपवंतु ।

७ राजा (७)

याचक लोकु कामधेनु, उग्र विग्राहक ।
राज सभा चक्रवर्त्ति,
नीति विधातु । साहसैक स्यातु,
जेह प्रसन्नु ।तेह धनदावतारु,
जेह प्रति कुपितु ।तेह कुपितातावतार,
दोष दरिद्रु । गुण द्रव्य ईश्वरू, परदोपान्वेषण जात्यन्ध । तत्त्वावलोकन सहस्राक्ष, परदोपोद्घाटन मूक ।सद्गुण ग्रहण व्यवदूक,
एवं विध राजा ॥१०७॥ (मु०)

८ राजा (८)

जसु राय तणइ खड्गि राज लक्ष्मी वसइ ।
सरस्वती जिह्वाग्रि वसइ, वचनालापि अमृत वसइ ।
महाजन हुइ गौरव दरिसइ, सेवकजन मन संतोसइ ।
दीठउ आणंद करइ, तूठउ दरिद्र हरइ ।
रूठउ सर्वस्व अपहरइ, अन्याय तणी वात परिहरइ ।
कीर्त्ति कामिनी कामइ, देव गुरू मेल्ही कुहिहुइ सिर न नामइ ।
मधुर प्रसन्न मुख, इंद्र पदवो तणउ सुख ।
परनारी सहोदर, दान सन्मान सदादर ।
ऊचित्य चतुर, प्रतिपन्न वाचा सार ।
सर्वजन आधार, पंडित जन शृंगार ।
अस्खलित कीर्त्ति, सूर वीर विक्रान्त ।
परम स्फूर्ति
उदार स्फार मूर्त्ति ।
पाप निःकंदन, सज्जनानंदन । एवं विध राजा ।
उश्वातान् प्रति रोपयन कुसुमिता विन्वन लघून वर्द्धयन् ।
कुब्जान् कटकि नो बहिर्नियमयन् विश्लेपयन् संहतान ।

अत्युच्चान्नमयन् शनैश्चवित तानुन्नामयन् भूतले ।
मालाकार इव प्रपच चतुरो राजा चिरं नदतु ॥११७॥ (स० १)

९ राजा (६)

जसु राय तणइ खड्गि राज्य लक्ष्मी वसइ, जिह्वा सरस्वती वसइ ।
वचनालापि अमृत वरसइ, महाजन किहि गौरव दरिसइ ।
सेवक लोक मन सतोषइ, दीठउ आणद करइ ।
तूठउ दारिद्रु हणइ, रूठउ सर्वस्व हरइ ।
नीति अनुसरइ, अन्याउ परिहरइ ।
कीर्त्ति कामइ, देव गुरु मेल्ही सिरू कुणहइ न नामइ ।
जसु राय तणइ आणदु मधुरु प्रसन्न मुख,
प्रीति तरगित मनु दान सन्मानु आलापु ।
अमृत सहोदरू, वचन कारूण्य रस कूप तुल्य,
उचत्य चतुरु वाचासारु ।
शौर्य्य उपशम श्री विलासु, तत्त्वविचारणैक फल बुद्धि ।
सर्वत्र विख्याति कीर्त्ति, सत्पात्र सेवा रसिक मत्रि ॥१॥ पु० अ०

१० राजा (१०)

प्रतापि लकेद्र, सत्यवाचा हरिश्चद्र ।
साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला कर्ण ।
वचन प्रतिष्ठा युधिष्ठिर, धनुर्वेद अर्जुन ।
आज्ञा अजयपाल, परनारी सहोदर गागेय
निर्भय भीम, आपन्न सत्व जीमूतवाहन,
विवेकी नारायण, विद्या बृहस्पति ।
लावण्य लवणार्णव, रूपि कदर्प, प्रतपि मार्त्तंड
औदार्य बलिराज, अद्भुत दानि चितामणि
सेवक जन कल्पतरु, चतुरग वाहिनी समुद्र
सौभाग्य गोविन्द, ऐश्वर्य सुरेन्द्र ।
सिंह जिम सौर्यवत, चद्रमा जिम कलावत ।
शीलि सुदर्शन, विक्रमाक्रात क्षोणीमडल
अतुल बल, पचम लोकपाल
शरणागत व्रज पजर, सकल वैरि महीपाल दुर्जर ॥५७॥ (स० १)

११ राजा (११)

छत्रीस राजाकुलीनो नरेश्वर, सहजे अलवेसर ।
प्रत्यक्ष परमेश्वर,
कपालै राज्य लक्ष्मी वसैं, मुख सरस्वती उल्लसै ।
तूठौ दारिद्र हरै, दीठो आनन्द करे ।

१२ राजा (१२)

पीनोन्नत स्कध, सत्य सध ।
कमल वदन, उज्ज्वल रदन । सुरभि निश्वास, लक्ष्मी निवास ।
सदल नासावश, पृथ्वी पीठावतश । प्रलब कर्ण, सुवर्ण वर्ण ।
विशाल नेत्र । सर्व कला क्षेत्र ।
अष्टमी चद्र समान भालस्थल, अनाकलित बल ।
कज्जल श्यामल केश पाश, सर्व जन पूरिताश ।
सत्वैकतान वृत्ति, उभय पक्ष निर्मल प्रवृत्ति ।
त्रिशक्ति समन्वित, चतुराज विद्या अलकृत ।
जित पचेद्रिय विक्रम, षएमुख सम विक्रम ।
सताग राज विराजित, अष्ट विध मद विवर्जित ।
नव निधानाकार, भाडागार ।
दश दिशि विख्यात नामासार, अेकादश रुद्रइ कलाधार ।
द्वादश दिवाकर, प्रताप विस्तार ।
त्रयोदश यक्ष कृत सानिध्य, चतुर्दश विद्यालब्ध मध्य ।
पचदश तिथि दत्त दान, सोल कला संपूर्ण ।
सप्त दशक युसवना अभ्य व्यवहारक । अष्टादश द्वीप कीर्त्ति विख्यात ।
एकोनविंशति पाटण नायक, वीस विसा परोपकारक ।
दानी कर्ण, पवित्रता ऋतुपर्ण । उपक्रमि राम, पितृभक्ति परशुराम ।
राधा वेधि अर्जुन, रससिद्धि नागार्जुन ।
सग्रामि भीमावतार । शरणागत वज्र कुमार ।
द्रोणाचार्य धनुर्विद्याया । सुश्रुत आयुर्विद्या ।
आज्ञालकेश्वर । न्याइ विभीषण । इस्यो राजा भूमि भूषण ।
तथा । प्रतिपन्न विंध्याचल, अगि भोगि मलयाचल ।
कीर्त्ति गगा । हिमा गुण रत्न रत्नाचल ।
तथा नयन नद वा चद्र । पृथ्वी धर नागेद्र ।

पराक्रमि कार्त्तिकेय, शत्रु सैन्य सैंहिकेय।
स्त्री जन रति पति, प्रतापि दिनपति ।
ऐश्वर्य सहस्राक्ष विभूति धनद यक्ष ।
रूपि अश्वनी कुमार, लोकवसतावतार ।
तथा । जस प्रतापि ।
मध्य देसीय मूझइ । सौराष्ट्रीय सूझई ।
मालवीउ आच माडइ । मेवाड़उ मद छाडइ । कनूजो कापइ ।
वाणारसउ बरकइ नही । मागध तणउ मुणकइ नहीं ।
तिलंगु तडफडइ बारि । कलिग तणउ रूलइ कोठारि ।
मरहठु होठ दसइ । कुकणउ हाथ वसइ ।
तथा । जू राजा दिन गमनिका करइ ।
किवारह आस्थानि किवारह देवस्थानि ।
कही देहवासरि । क० अतेउरि । क० सत्र उसरि ।
क० राज पाटिका । क० पुष्पवाटिका । क० सत्तागारि । क० वडइ प्रकारि ।
तथा । जीणइ गीत प्रवृत्तइ तुबरु ताल मुझइ, रभा नाच मुकइ ।
हा हा हू हू डर फर किन्नर कान धरि । गधर्व गीत मुकइ ।
स्वर्गइ देव साभलवा ढूकई ।
तथा । जेह तणी दृष्टिइ दाधा पालूईइ ।
त्रूटा सधाइ । भागा सभ्भिईइ । सूका नीलाइइ । जीर्ण पुनर्नव हुइ ।
अशक्त शक्त हुइ । बाधा छूटइ । कुकवि कल्प त्रूटइ ।
दारिद्र जाइ । लक्ष्मी अमाइ । इस्पु सत्यवत । सूर्यवत । कलावत ।
गुणवत । आकृतिमत । दान पर । मान पर । ऋजु स्वभाव ।
मृदु स्वभाव । गीत प्रिय । काव्य प्रिय । दक्ष दातार । विधु विचारज्ञ ।
अस्खलित सासन । सार्व भौम । राजा चद्रातप राज्य करइ ।।छ।।

१३ राजा (१३)

राजा सूर्यवत
अखड प्रताप, साख्यात कदर्प बाप ।
दुष्ट निग्राहक, शिष्ट परिपालक ।
नीति प्रधान,[1] पुण्य प्रधान ।

पाठान्तर—१ निधान

विवेक नारायण,
परनारी सहोदर,[१] भरै अनेक ना उदर ।
पराक्रमवत, दानवत ।
सत्यवत, सोमवत ।
याचक जन कामधेनु,
एव विध राजान ॥ चि०

१४ राजा (१४)

दान वीर, सग्राम धीर ।
वैरी कुल खडन, निजकुल मडन ।
सत्यवाच अविचल, अति गाढो अकल ।
सग्रामे स्थिर, प्रतापै युधिष्ठिर ।
पर राष्ट्र द्रदप सल्ल,
ब्रीडी वयरागर, गुण रत्न सागर ।
साहण समुद्र, दान खडै निर्जित दरिद्र ।
कप्पूर धारा प्रवाह, अति स्वोछाह ।
सेवक जन कल्प वृक्ष, अति दच्छ ।
विचक्षण, छत्रीस लक्षण ।
याचकजन चितामणि, राजा मडल चूडामणि ।
प्रतापै दिनेश्वर, गाढो मलवेसर ।
इसौ जित शत्रु नरेश्वर ॥ चि०

१५ राजा शरीर वर्णन (१५)

राजा कर्ण, गौर वर्ण, लब कर्ण ।
विशाल नेत्र, फूल गात्र ।
उपराही रोमराय, हीए श्रीवत्स, पाय पद्म, हस्त चक्र
एक अखड प्रताप, ऊचो लक्ष ।
कटि लक, मूल वक ।
इति शरीर वर्णनम् (चि०)

---

१ सेवक जन वत्सल । इस प्रति मे ऊपर लिखे प्रथम चितौड की प्रति के अ त मे यह शरीर वर्णन भी लिखा है ।

१६ महाराजाधिराज (१६)

जीह रायतणी आज्ञा पचाल देश स्वामी मस्तकि वहइ ।
नेपाल देश स्वामी, द्वारि रहिउ, प्रासाद लहइ ।
मलया देश स्वामो पाहुड पाठवइ ।
द्रविड देश स्वामी वाज धयकउ ओलगइ ।
सिन्धु देश स्वामी पडपडी दिइ ।
कच्छ देश स्वामी दिवमोदव नगइ ओलगइ ।
गउड देश० कोठारि ओलगइ ।
मरहठ देश० वज्र पजरि खडहडइ ।
जालधर देश० पग पखालइ ।
सोरठीउ राजा आठील आस्फालइ ।
केई गोतिहरइ तडफडइ, केई लोह खडे खडावडइ ।
केई दाति आगुली लेई ओलगइ, केइ स्कधि कुठार घाति ओलगइ ।
कि बहुना जीणइ सीमाडा सवे वस कीवा ।
गढ सवे ढालिया, रिपु सवि निर्धाटिया ।
समुद्र पर्यंत आज्ञा पाठवी, अनेकि परि प्रजा सुखिणी कीधी ।
इण परि राजाधिराज राज्य करइ । ५६ । (स०)

१७ अहंकारी राजा (१)

अहकारी कहवा छई—

अटाला, अणियाला, पटाला, हठाला, मुछाला, मामला, करडाला, मरडाला, मछराला, मतवाला, मलपता, मरडता, मसलता, आखडता, अडता, आपडता, पडता, पाडता, पकडता, अत्रीहता[1] बलवता, बोलता, बुद्धिवता, रूपाला, रगीला, रसीला, रढीला, रेखाला, रतीला, रिद्धाला, सूरा, पूरा, छयल, छबीला, एहवा गुमानी राजा ।

ओष्ठ युगलु फुरकावतउ, वचन विन्यासि खलतउ ।
भीषणाकार मुख करतउ, आरक्त लोचन धरतउ ॥
इस्यु राजा कुप्पउ ॥ पु०

१८ कुपित राजा (१)

कुटिल भ्रकुटि ताडी, चपेटा ऊपाडी ।

---

१ अतिहन्ता

३३ रानी वर्णन

तेह तणी कलत्र-जिसीरंभा, जिसी उर्वसी, जिमी तिलोत्तमा. जिमी अप्सरा, जिसी पातलागना । इसी राज्ञी ॥ (पु०)

३४ मंत्री वर्णन

रूपि करी रूडउ, पाट प्रति नथी कूडउ ।
राउला अर्थ निधानु, विण झूझ पृथ्वी आपणी करइ,
अनेरइ राय नइ चउका सरि सरइ ।
अनेइ खडि आस जगीस, ताडी वखाणयइ विश्वावीस ।
लोक ना कार्य समारइ, अने प्रजा उगारइ ।
वाद विग्रह राखइ, असत्य न भाखइ ।
शास्त्र कुशल, यशि करी निर्म्मल ।
प्रजा नउ पीहरु, अतिहि अलबेसकरु सविहु बुद्धि निधानु एहवु प्रधानु ॥ १८ ॥ जै० मु०

३५ मंत्री-वर्णन

तेमहाराय तणउ चतुर्बुद्धि विलासु, समस्त जन विहितोल्लासु ।
नीति शास्त्र विचक्षणु, विद्यामान सामुद्रिक लक्षणु ।
महाराय तणउ प्रतिशरीरु, अवर्णवाद भीरु ।
कनकमय मुद्रालक्रियमाणु दक्षिण हस्तु, अति प्रशस्तु ।
मन्त्रिमडलमुखाभरणु, सकल राज सभालकरणु ।
अनेक साधित दुर्घट कार्य सिद्धि, महतउ सुबुद्धि ।
तीणपरि सुख सदोह भरि पच प्रकार सोख्यसारु, परि पालइ राज्य सारु ॥

२७ रावण-वर्णन (४)

त्रिकूट पर्वतु, लकापुरी समुद्र खाई ।
दश सिरु बीस भुजु, त्रैलोक्य कटकु ।
रावण मडलेश्वरु, तूठो ईश्वरु ।
.. वरु, नवाणवइ कोडि राक्षस बल ।
नव कोडा कोडि नवकोडि नवाणवइलक्ष नवाणवइ सहस्र नवसई

नवोत्तर राक्षस कुल ।
कुभकर्ण विभीषण प्रमुख बाधव लक्ष,
मदोदरी प्रमुख सवालक्ष अतेवरी ।
इद्रयम मेघनाद प्र० सवालक्ष कुमार ।
असाली सूर्पनखा प्रमुख अढार बहिन ।
मातलक्ष बेटी, तेर कोडि चेटी ।
विहि बेइठी कोद्रवा दलइ, आदित्य रसोई करइ ।
भैंसा रूपी घटवाजतेइ यमुदेवतापाणी आणइ ।
विश्वकर्मा सूत्रधारउ करइ, शुक्र दैत्यगुरू पोथी वाचइ, कथाकहइ ।
इन्दु माली रूपि फूल आणइ, साड छेहिखाट तणी उडाणी ताणइ ।
तेतीस कोडि देवता ओलगकरइ, इठियासी सहस्र ऋषिश्वरपाणी परबभरइ ।
वेद उच्चरइ, शिव शान्तिक करइ ।
देवगुरु वृहस्पति आरिसू देखाडइ, मगलू क्षेत्र खेडावइ ।
कामदेवु कडी कटारउ बाधइ, धनुपाग्नि बाण साधइ ।
महेश्वर पवन (?) वायइ, ब्रह्मा वीण वायइ ।
नारायण , पवन देवता धूलि बुहारइ ।
नवदुर्गा आरती उतारइ, गगा यमुना बे चॅवर ढालइ ।
गणपति गोकुल चारइ, कृतान्तु कोट्ट राखइ ।
सनिश्चरू रसोई राधइ, जीव रति ढोलडी झाडइ ।
केतु भामणा भमाडइ गोरी सणगार करावइ ।
लाछि वस्त्रु सत्तावइ, नवग्रह खाट पाइयेबाधा ।
, धनदु भडारि भरइ ।
करइ, रावण राज करइ ।
सात समुद्र माजणउ करावइ, अढार भार वनस्पति फूल पगर भद्र ।
तक्षकु केडउ भडारि पहिरउ करइ ।

हस्ती-वर्णन

आलान स्तभ मोडी, निवड लोह तणी शृखला त्रोडी ।
पु तार पाडी, कपाट सपुट्ट फाडी ।
पडिहारु गाजी, वरण सबधोया त्रिगडा भाजी ।
वरडा पाडतउ, माणस मारतउ, राउत रसाडतउ ।
अटाल टलटलावइ, हाट्ट हलहलावइ ।

आराम उन्मूलइ, ऊभा मनुष्य ऊलालइ ।
क्षत्रिय खलभलावइ, खडग्रह खडहडावइ, धवलग्रह धाकलइ ।
तरल तुरगम त्रासइ, नाइका नासइ ।
इसु मूर्तिमतउ कृतातु महाकाय, पर्वत प्राय ।
सभाग मद प्रतिष्ठतु, देवताधिष्ठितु, त्रिदड गलितु ।
सारसी करतु, मद प्रवाह झरतु ।
हस्ति राजु, निर्व्याजु ।
कृष्ण वर्णु, सूर्य्यमान कर्णु ।
लीला साचरइ, जयश्री वरइ ।
परस्त्री परिहरइ, शत्रु वर्ग दलइ ।
पर मानु मलइ, कोपि बलइ ।
मही तलि चालतउ, मेघजिम गाजतउ ।
इसउ हस्तिराजु चाल्यु । पु०

१६ कोपातुर राजा (२)

कृत भीम भ्रकुटि उत्कट ललाट पट्ट घटित त्रिशूल ।
उत्पाटितु दृष्टि सपुट्ट ।
दसन सदष्टौष्ठः
प्रकम्पित देह यष्टि·
इणि परिराजा कोपि चडिउ । पु० अ०

२० रूठा राजा (१)

रूठो साते पताल फोडै,
रणागणि गयवर तणीं गडी गाजै, शत्रु भड भाजै ।
दानेश्वरें कर्ण तणो अवतार, धनुर्धरइ अर्जुन प्राग्भार ।
जेह तणो अतुल भडार, प्रबल कोठार ।
बडा जुझार, कटक तणो नहि पार ।
करै शत्रु सहार, महा उदार ।
एहवो पराक्रमी ।
अजनाचल रै कैलास पर्वत तणी पदवी आपी ।
यमुना तणैं स्थानके कीधो गगा प्रवाह । मित्रकीधा चद्रनैराह ।
सरीखा कीधा हारनै नाग, अतर टालियो बगनै काग । एहवो जाणवो ।।स २०

२१ राजानाम

जितशत्रु, जितारी, जयसिंह, जनक, जयराज, कनकभ्रम[1], कनककेतु, कनकसिंह, कुंभकर्ण, कुरु, मदनभ्रम, मदनसिंह, मदनकेतु, मदनवेण, मकरध्वज, मृगांग, महिधर, मन्मथ, विजयसिंह, वैरीसल्ल, वैरीमल्ल, वीरसेन, विजयकरण, चंद्रसेन, प्रजापति, पृथ्वीपति, पृथ्वीमल्ल, प्रतापसेन, महीसेन, एहवा राजान महाबलिया छै।

२२ चक्रवर्त्ती ऋद्धि (१)

नव निधान १४ रत्न, सोल सहस्रयक्ष, बतीस[1] सहस्र मुकुट वर्द्धन राय, ६४००० अंतःपुर, सवालाख वारांगना, १४००० वेलाउल, ३२००० देश, २१००० संनिवेश, ५६ अंतरद्वीप, ९९ सहस्र द्रोणमुख, ९६ कोडि ग्राम, ९६ कोडि पदाति, ४९ सहस्र उद्यान, १८ श्रेणि, १८ प्रश्रेणि, ८० सहस्र पंडित, १०० कोडि[2] कौटुंबिक, ३२ कोडिकुल १४ सहस्र चतुर्बुद्धि निधान, १४ मंत्रीश्वर, ३२ सहस्र नव बाहरी नगरी, ४९ कुरराज्य आताप[3] संपात १६ सहस्र म्लेच्छ राय, १४ सहस्र मडप[4], १४ कडबट[5] १४ सहस्र संधान, १४ सहस्रखेट, ४८ सहस्र पत्तन, १८ कोडि अश्व[6] ८४ लक्ष उत्तम गज, ८४ लक्ष रथ ७२ लक्ष पत्तन, ३६ लक्ष वेलाकूल, ३२ सहस्र प्रवर देश, ६४ सहस्र कुलांगना[7], सवा लाख वारांगना, ३२ भेद भिन्न नाटक, ३२ सहस्र आगर, ८४ लक्ष तालारक्षु, ८४ सहस्र सूत्रधार, सवा कोडि व्यापारिण, १४ सहस्र जलपथ, २४ सहस्र कटक ३६० सूपकार।

अन्योपि श्रेष्ठि सार्थवाह माडंबिका कोडंबिकादयः।
ग्रामो वृत्त्यावृतः स्यान्नगरमुरु[8] चतुर्गोपुरोद्भासि शोभं।
खेट नद्याद्रिवेष्ट परिवृतमभितः कर्बट पर्वतेन।

---

१ जनक भ्रम (स० ३)

१—१००० कोटि २—आपाताप संघात ३—मटंब ४—सह कर्बट ५—मुउरु।

ग्रामैर्युक्त मटंबदलित दश शतैः पत्तन रत्नयोनिः।
द्रोणाख्य सिंधु वेला वलयित मथ संबाधन चाद्रि शृंगे।
इति चक्रवर्त्ति ऋद्धिः॥ (मु०)

पाठान्तर—१ छत्रीस २ १००० कोटि ३ आताप ताप संघात ४ मटंब मटंब ५ सहकर्बट ६ चउरासी लक्ष जात्य तुरंगम अंत पुर ८ मुउरु

विशेष—बहुत्तरि सहस्र पुरवर, छत्रीस सहस्र जनपद चउबीस सहस्स कर्पट सोल सहस्र खेटक चउद सहस संवादन पचास करुधान अधिपत्य, पुरावृत्तित्व, स्वामित्व, भर्तृत्व अनुभवति॥ (अन्तिम) ६९ (स० १)

२३ वासुदेव राज्य (२)

केवडउ राज्य वासुदेव तणउ
जिहा समुद्रविजय प्रमुख दस दसार।
पजून प्रमुख अहूठि कोडि कुमार।
शब प्रमुख एक सहस्र दुर्दात कुमार।
बलदेव प्रमुख पाँच वीर।
वीरसेन प्रमुख एकवीस सहस वीर।
उग्रसेन प्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा।
महसेन प्रमुख छप्पन्न सहस बलवत।
रूपिणि प्रमुख सोल सहस अत.पुरी जन।
अनग (सेना) प्रमुख सोल सहस वेश्याजन ७० (स० १)

२४ रावण-वर्णन (१)

लका नगरी राजधानी त्रिकूट पर्वत गढ।
अनेक अक्षौहिणी दल, अढारकोडि तूर। जिणइ मृत्यु पातालि घाल्यउ,
नवग्रह खाट पाईयइ बाधा।
वाउ देवता आगणउ बुहारइ, बार मेघ छडउ दीयइ।
वनस्पती फूल फगर भरइ, सूर्य रसवत्ती करइ।
चद्रमा घडी-घडी अमृत स्रवइ, यम देवता पाणी वहइ।
सात समुद्र माजणउ करावइ, सात सात रसा[1] आरती उतारइ।
विश्वकर्म्मा शृगार करावइ, तेत्रीस कोटि देवता आस्थानि[2] ओलग आवइ।
गगा जमुना चमर ढालइ, तुबर गीत गावइ।
सरस्वती वीणा वावइ[3], रभा नाचइ, बृहस्पति पुस्तक वाचइ।
इन्द्रमाली, ब्रह्मा पुरोहित।
जीमूत रिषि छोरू खेलावइ।
कामदेव कटारउ बाधइ, वासुगि खटि पहुरउ दीयइ।
कुलिक उपकुलिक बेउ पाउ उलालइ, अर्द्ध प्रहर श्रीखड घसइ।
वैश्वानर वस्त्र पखालइ, चाउँडा तलारउ करइ।
विधात्रा[4] कोद्रवा दलइ, गणेस[5] गर्दभा चारइ।

पाठान्तर—

१ सातरिसी २ आस्थानि ३ वाजइ ४ विहि ५ विनायक

२५ (पुनर्वर्णकान्तरं लंकेश) रावणस्य ।। २ ।।

पहिलउ त्रिकूट पर्वतनी विसमाई, पाखलि (अनी) समुद्रनी खाई ।
लका नगरी पाखलि गढु, अति सद्दढु ।
ओलगइ निन्नाणवइ कोडि राक्षस ना कुल, बलि करि अतुल ।
बाधव कुभकरण विभीषण जिसा, बेटा मेघनाद, इद्रजित् जिसा ।
बहिनी असाली सूर्पणखा जिसी,
रावणनइ दस मस्तक, वीस भुज, ए वात साभली कुणहइ इसी ।
लाधउ ईश्वर नउ वरु, वाउ बुहारइ घरु ।
मेघ करइ छाटणउ, देवागणा करइ ऊगटणु ।
यम देवता[1] पाणी वहइ, सूर्य देवता रसोई रहइ ।
ब्रह्मा वेद वखाणइ, इन्द्राणी केस ताणइ ।
गगा यमुना चमर ढालइ, नवदुर्गा आरती ऊतारइ ।
विश्वकर्मा सूत्रहारू करावइ[2], विश्वामित्र आभरण घटावइ[3] ।
मगल पडिउ चैत्र नीअ परिवारइ, छइ ऋतु आपापणी ओलग सचारइ ।
देवता मिलि आगलि नाटक माडइ, विधात्रा कोद्रवा खाडइ ।
धनद भडार भरइ, रावण इस्यउ राज करइ । सू० मु०

२६ रावण—(३)

लका राजधानी, त्रिकूट दुर्ग, जीणइ मृत्यु बाधी पातालि घालिउ, नवग्रह खाट तणइ ।ाइयइ बाधा ।
वाउ देवता आगणउ बूहारइ, चउरासी मेघ छडा छावडा दिइ ।
वनस्पति फूल पगरि भरइ, जमराउ भइसा रूपि पाणी वहइ ।
सातइ समुद्र स्नान करावइ, सात मातर आरती उतारइ ।
विश्वकर्मा शृगार करावइ, शेषनाग राजछत्र धरइ ।
गगा यमुना चामर ढालइ, छइ रितु पुष्प पूरइ ।
सरस्वती वीणा वायइ, तुबर गीति गायइ ।
रभा तिलोत्तमा नाचइ, नारद ताल धरइ ।
आदित्य रसोई करइ, चद्रघडी २ अमृत झरइ ।
मगल महिषी दोहइ, बुद्ध आरीसउ दिखाडइ ।
बृहस्पति घडियारउ वायइ ।
शुक्र मत्री बइसइ, शनैश्चर पूठि पग देई खाट बइसइ ।

---

१ ममहण (महमहण=) २ अधरावइ ३ थटावइ (घडावइ)।

३ कोस समुद्र खाई, दस सिर, बीस भुज, ३० सहस्र वर्ष आयु, २१ धनुष-उच्च, त्रैलोक्य कटक, रावण राजा जेहनइ—६६ कोटि राक्षस कुल, ६ कोडा-कोडि, ६६ लक्ष, ६६ सहस्र, ६०६ राक्षस बल, कुमकरण विभीषण प्रमुख लक्ष-बाधव, मदोदरी प्रमुख सवालक्ष अतेउर, इन्द्रजीत मेघनादादिक सवालक्ष बेटा, ७ लक्ष बेटी, आसाली सूर्पनखादिक ८८ भगिनी, ३ कोडि चेटी, विहिक्रोद्रवा दलइ ।

८८ सहस्र ऋषि पर्व पाणी भरइ, ३३ कोडि देव उलगइ आस्थानि इद्रमाली ।

ब्रह्मा पुरोहित पणउ करइ, भृगरी ति आचमन दिइ ।
जीमूत ऋषि छोरु खेलावइ, कामदेव कटारउ बधावइ ।
वैश्वानर वस्त्र पखालइ, कार्त्तिकेय तलारउँ करइ ।
चामुडा चाउरि सचारइ, विणायक गादह चारइ ।
अनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ ।
इसिउ त्रिभुवन सल्ल, महामल्ल, राणउ रावण । १-४ (स० १)

२८ राम-वर्णन

यथा क्षीर माहि गोक्षीर, जल माहि गगानीर ।
पट्ट सूत्र माही हीर, वस्त्र माही चीर ।
अलकार माहि चूडामणि, ज्योतिपी माहि निशामणि ।
अश्व माहि पच वल्लभ किशोर, नृत्य कलावत माहि मोर ।
गज माहि ऐरावण, दैत्य माहि रावण ।
वन माहि नदन, काष्ठ माहि चदन ।
तेजस्वी माहि आदित्य, साहसी माहि विक्रमादित्य ।
वाजित्र माहि भभा, स्त्री माहि रभा ।
सुगध माहि कस्तूरी, वस्तू माहि तेजमतूरी ।
पुण्य श्लोक माहि नल, पुष्प माहि सहस्र-दल-कमल ।
सत्यवादी माहि धर्म्मपुत्र, ज्ञानी माहि ज्ञातपुत्र ।
बाण कला माहि अर्जुन, सूर माहि सहस्रार्जुन ।
उपगारी माहि जीमूतवाहन, देव माहि मेघवाहन ।
शीलवत माहि नारद, रसायण माहि पारद ।
वृक्ष माहि सहकार, भोगेश्वर माहि कृष्णावतार ।

दातार माहि कर्ण, धातु माहि सुवर्ण ।
देव माहि अरिहंत, ऋतु माहि वसंत ।
भोगांग माहि नारी, क्रीडांग माहि सारी ।
धान्य माहि चोक्ष, सुख माहि मोक्ष ।
नाग माहि धरण, मंत्र माहि परमेष्ठि स्मरण ।
पक्षी माहि हंस, भूषण माहि अवतंस ।
शास्त्र माहि गीता, स्त्री माहि सीता ।
रूपवंत माहि काम, तिम पूर्वोक्त गुणोपेत न्यायवन्त श्री राम ।

२९ सीता

प्रधान, सर्व गुण निधान । भर्त्तारनी भक्त, धर्म नइ विषइ रक्त ।
राम नइ प्रेमपात्र, सुंदर गात्र । शील गुल विभूषित, सर्वथा अदूषित ।
कमल नेत्र, पुण्यखेत्र, । जेहनी मीठी वाणी, सगले जाणी ।
रूपवन्त माहि वखाणी, घणु स्यू इंद्राणी, पणि जे आगइ आणइपाणी ।

(सू०)

३० दशार्णभद्र सवारी (१)

महा गहगहाटि हाटि हाटि गूडी ऊभवी, विविध वदन माल शोभी ।
विचित्र वर्ण संपूर्ण उल्लोच ताड्या, मनोहर मंडप माड्या ।
गृहि गृहि आरीसानी ओलि[१] झलकइ, कांचन तणी किंकिणी खलकइ ।
स्थानकि स्थानकि सुवर्णमय पूर्ण कलश श्रेणि चडावी ।
नीसरिणीनी ओलि मंडावी, कल्याण झल्लरी तडावी ।
पंचवर्ण पुष्प प्रकर भरी, अविद्ध मौक्तिक चत्रक पूरइ ।
कृष्णागरु धूपहडी मेल्हियई, रंग नइ तरंगि रास खेलीयइ।
शृंगार सार रस गाइयइ, वीणा वंशादि वादि वाईयइ ।
पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गुंहली दीधी ।
मोती तणा झूबखा झूबाव्या, माहि पद्मराग पटल लबाव्या ।
केलि ने स्तंभि तोरणि तिग तिगाव्या, दुर्गंध ऊपजता राख्या ।
मण[२] पगाम कर्पूर लाख्या ।
केसर कुंकुं तणा छडा छाबडा नीपना, कमलिनी कमाल सपना ।
छत्र चामर गहगहइ, केतकी दल परिमल महमहइ ।

---

१ ओलि २ मण गम (गने)

सुगध माहि जिम कपूर, ओत्सव माहि जिम तूर ।
वस्त्र माहि जिम चीर,
वाजित माहि जिम भभा, स्त्री माहि जिम रभा ।
शास्त्र माहि जिम गीता, सती माहि जिम सीता ।
देव माहि जिम इद्र, ग्रहा माहि जिम चद्र ।
द्वीप माहि जिम जबूद्वीप, प्रदीप माहि जिम रत्न प्रदीप ।
तिम सर्व छत्रीस राजकुली माहि राजा बइठो सोभै छइ ॥

३० राजा राज-वाटिका गमन

राजा राज वाटिका चालिउ, गजेन्द्र चडिउ[१] ।
पाखती अगरक्षक तणी ओलि, मडलीक नइ[२] परिवारि ।
पताका लहलहती[३], अजालबि[४] झलकतइ ।
मेघाडबरि, छत्र तणइ आडबरि ।
सीकरि तणइ झमालि, सुखासण नइ दडवडाटि[५] ।
घोडा तणइ थाटि[६], पायक तणी पहटि ।
रथ तणइ चीत्कारि, भट्ट[७] बदी तणइ जयजयारवि[८] ॥ ६१ ॥ (स० १)

३१ राज्य सुख

जीह नइ राज्य इसिउ सुख—
कुणहु सूता मुह न ऊघाडइ, पडिउ को न ऊपाडइ ।
आहा कोइ न बोलइ,
आज्ञा कोइ न लोपइ, पराई भूमि कोइ न चापइ ।
चोर चरड का नाम को न जाणइ, आपणइ मनि शका कुणह न आणइ ।
सोनू उछालते हीडियइ ॥ ६० ॥ (स० १)

पाठान्तर—

(१) प्रलब सूडादड, स्थूल दत मुसल
विपुल कुभस्थल चडिउ, (प्रथम पक्ति के पूर्व, विशेष)
(२) तणइ (३) फुरकती (४) अलवी (५) अडमड (६) थाकि ।
(७) भाट नगारी तणइ कइवारि ।
(८) राजा राज वाटिका चालिउ (विशेष)

—पुण्यविजयजी की अपूर्ण प्रति से

३२ राजा को आशीर्वाद

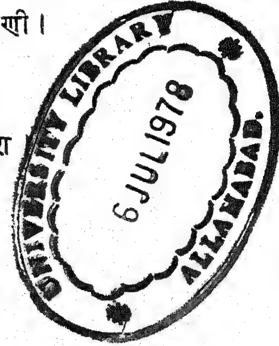
"अथ देसोत नै आसीस वचनिका" ।
काइम कवध, विरद धजावध ।
मोजा समद, आचार इद ।
दुरजोधण माण, अर्जुन बाण ।
भुजबली भीम, सूरति सींह ।
षट भाषा जाण, तप तेज भाण ।
विप्र गोपाल, लीला भोआल ।
वीराधिवीर, हेला हमीर ।
मधुकरि सुतन, कर्तव्य विक्रम ।
बासठि हजार फोजारा भाजणहार, छह खड खुरासाणरा विध्वसणहार ।
मसती[1] हाथियारा आमोडणहार, पतिसाह रा विन्नाण[2]हार ।
राजनि के हार,
अरी साल, केताइक साल ।
लख दीयण, जस लीयण ।
राजा के राजा, तप महाराजा ।
इति आसीस वचनम् ॥ (स० ३)

३३ पटराज्ञी-वर्णन (१)

जिस्यो मोर तणो कलाप, तिस्यो केश कलाप ।
जिसी शोभा अष्टमी चद्रमा, तिसी भाल चगिमा ।
जिसी जोत्र मालिका, तिसी कर्ण पालिका ।
जिसी खजरीट नी देह यष्टि, तिसी आकारि दृष्टि ।
जिसी पुष्प नलिका, तिसी नासिका ।
जिसा दर्पण तणा वलक, तिसा कपोल फलक ।
जिस्यो बिंबी फल, तिस्यु अधरोष्ट दल ।
जिसी दाडिम कली, तिसो दतावली ।
जिस्यो सूकडि तणो घास, तिस्यउ मुख तणोउ वास ।
तिस्यु मुख तणोउवास ।

पाठान्तर—
(१) मेगत हाथियारा मारणहार (२) विभाटण, परगाहण ।

जिस्यू पूर्णिमा चंद्र नो अवतार, तिस्यु मुख तणो आकार।
जिस्यूं दक्षिणावर्त्त शंख नूं मंडल, तिस्यु कंठ कंदल।
जिसी कोमल मृणाल कदली, तिसी बाहु युगली।
जिस्यां रक्त कमल, तिस्यां चरण तल।
जिसी अशोक तणा दल तरली, तिसी अंगुली सरली।
जिसी पद्मराग मणि, तिसी नख तणी कुणी।
जिस्या मुकुलित सरोज, तिस्यो उरोज।
जिस्यु सिंह तणौ वांक, तिस्युं मध्य तणों लांक।
जिसी नील वर्ण तणी युक्ति। तिसी सामल रोम पंक्ति।
जिस्युं गंभीर हुइ कूप, तिस्यूं नाभि नु रूप।
जिस्यूं हाथिआनुं कुंभस्थल, तिस्यूं जघनस्थल।
जिस्यो केलि तणौ मध्य भाग, तिस्युं उरु तणौ सोभाग।
जिसी वृत्तानुपूर्व शुंड हस्ति तणी, तिसी शोभा जंघा तणी।
जिस्या कूर्म तणा पृष्ट भाग, तिस्या उन्नत पाग।
जिस्यौ रक्त गेरु तणौ पराग, तिस्यौ तलां तणौ राग।
जिस्यौ कमल तणौ विकास, तिस्यौ लोचन तणौ प्रकाश।
तथा विकसित वदन, शिखराकार रदन।
सुललित कर्ण, चंपक वर्ण।
पीन स्तन, अकुटिल मन।
मुष्टिमेय मध्य, चतुःषष्ठि कला लब्ध मध्य।
कोमल कर, सुलक्षण धर
चक्राकार जघन, मत्त गज गमन। सुघटित चरण।
जेह तणी मुख चंद्रमा भामणुं कीजई, विकसित कमल नुं लुंछणु कीजई।



जेह तणी दृष्टि दृष्टिइं,.........................
निर्जित हरिणी वनवासि गई, कमलिनी जल दुर्ग रही।
खंजरीट दृष्ट नष्ट चरई, बेड़ी समुद्र मांहि फरइ।
जेहनई स्तन सुवर्ण कलस प्रसादि चडाव्या,
चक्रवाक वियोगिआ भणाव्या। तुंबाहलूआंधियां।
जेहना वर्ण आगलि सुवर्ण सामलउं। चांपा फूल झामलउं।
हरिद्रामसि वर्ण। गोरोचन धूम वर्ण।
तथा। जेहना वचन रस आगलि साकर मउली, द्राख लींबोली।

मधु नीरस, दूध विरस ।
अमृत खारु । अनेरु । किस्यु उपमान विचारु ?
तथा । कत माधुर्य आगलि किनरी मौन करइ गधर्व गर्व परिहरइ ।
सिद्ध कन्या कानओडइ, नाग कन्या हरख लोडइ ।
रभा सुरासक्त । तिलोत्तमा त्रिदिशानुरक्त ।
अप्सरा निःप्रसर, लक्ष्मी अस्थिर ।
सरस्वति हीन जाति लोपिणी, नागकन्या अवस्था रोपिणी ।
विद्याधरी, यामिवनी ।
ऋषि कन्या तपस्विनी, गंधर्वी गीत व्यसनिनि ।
रति प्रीति अनगनी । कलत्र करेणु उपमा न दीजइ ।
निरूपम चरित्र । इसी सुपरीक्षित दक्ष ।
दाखि नालू, मिति मयालू, देण हारि दयालू ।
सुललित, सुमलित ।
न ह्रस्व, न दीर्घ, न कृश, न स्थूल ।
न तोषाली । न रोषाली ।
न हठीली, न गहिली ।
अनुकितु सुपरीछणी । सु बूझणी ।
विछूटणी सुमुखि, सउलखि ।
सुजाणि । सुपरीआणी ।
सुपरठी, भर्त्त, चित्त वइठी ।
सइणी, गुहिणी । असिथिल, अकुटिल ।
धर्म परा, नियम परा ।
इसी सीलालकारिणी, गुणानुरागिणी । कला सग्रह कारिणी ।
विवेकवती, सौदर्यवती ।
लावण्यवती, पुण्यवती, आकृति मति देवी वर्त्तइ ।
तिणीस्यू राजा आनद मय वर्त्तई ॥छ॥ (स० २)

३४—राणी-वर्णन (२)

ते राजा नै अतःपुर माहि प्रधान, गुण निधान ।
भर्तार तणी भक्ति नै विषै[1] महासावधान

पाठान्तर—

१—भक्ति निवेषइ ।

कमल लोचना इस्यै नामै वर्त्तै ॥ (स० ३)
तेराणि, सहिजै मधुर वाणि ।
शीलवत माहि वखाणी, गुणै करी सत्य जाणी ।
घणू किस्यु इद्राणी, जे आगलि वहै पाणी ।
रहे घणै परिवारे, सखी अनेक प्रकारे । (स० ३)
लीलावती, पद्मावती, चद्रावती ।
चपकली, फूलकली, रामकली, गोकली, स्यामकली ।
हसी, सारसी, बगली ।
सुविधि प्रमुख इसि राजा नी स्त्री वर्णन ॥ (स० ३)

३५—राणी-वर्णन (३)

सुवर्ण वर्ण, प्रलब कर्ण ।
सुकमाल हस्त, स्त्री गुणै लक्षणै करी प्रशस्त ।
कमल दल समान आखडी, माथै रतनमय राखडी ।
देवागना नी परै रूप रूडी, हाथै सुवर्ण मय चूडी ।
लखमी अवतार, हृदय कमल रूलै मोती नो नवसर हार ।
लकाली कडि, कानै मोती जडित सुवर्णमय घडि ।
बोलै अमृत वाणि, अति सुजाणि ।
पडित लोकै वखाणी, इसी मदनमजरी राणी ॥१४॥ (चि०)

३६—राणी-वर्णन (४)

रभा जिम रूप सपन्न, पार्वती जिम निःसीम सौभाग्य लावण्य ।
अरुधती जिम निजपति पद चरण निरत, धर्मरत ।
सीता जिम शीलालकार ।
बीज तणी चन्द्रकला जिम सर्व वन्दनीय, अति कमनीय ।
चक्रवाकी जिम निश्चय, अति प्रेम, करइ पुण्य ना नेम ।
आलापि करी कोकिलारूप, गति करि राजहसी स्वरूपु ।
विनय गुणि करी वेतसमय, मनि शुद्धि करीय गगोदक मय ।
इति राणी वर्णन ॥५८॥ (मु०)

३७—राज्ञी-वर्णन (५)

अद्भुत भाग्यवती, सौभाग्यवती ।
पट्ट प्रतिष्ठावती, सत्वानुष्ठान वती ।

निर्मल शीलवती, उज्वल गुण झलकती ।
लावण्य निधान, अतःपुर प्रधान ।
निष्कलक, अकृत पाप पक ।
सुकर्तव्य सज, सलज्ज ।
विदित कार्य, पूजिताचार्य ।
औचित्य चतुर ।
पाप कर्त्तव्य कातर, सकल लोक मातर ॥६०॥ (स० १)

३८—राज्ञी-वर्णन (६)

सर्व अतेउरी माहि प्रधान, सर्व गुण निधान ।
लावण्य कूप, अति स्वरूप ।
भर्तार नी भक्त, धर्म नइ विषइ रक्त ।
सुदर गात्र, राजा नइ प्रेम पात्र ।
सर्वथा अदूषित, शील गुणे भूषित ।
कमल नेत्र, पुण्य क्षेत्र ।
सत्य गुणि कसी, रूप गुण उर्वसी ।
सुवर्ण वर्णकात, दीठइ आवइ देवागना सभ्राति ।
स्नेह कला रति, भारती सम मति ।
सौभाग्य हस तलाइ, कनक चूडि मडित कलाई ।
सदा सनूरी, कामदेव पूरी ।
त्रिभुवन तत्व माटी, अमृत बिंदु साटी ।
पुण्यतणी वाटी, अतिरग दाटी ।
रूपइ रति निर्घाटी, न करइ राटी ।
लावक, द्रावक, सावक ।
ऐरावण कुभ विभ्रमाकार स्तन, त्रस्त हरणी लोचन ।
मदन मुद्रावतार, प्रलवित हार ।
क्षीण कटि, अति सुघट ।
जेहनी मीठी वाणी, सगलै जाणी ।
रूपवत माहि अधिकी वखाणी,घणूस्यु इद्राणी,
'धीर' कहइ जे आगइ घडउ ले आणइ पाणी ॥
इति राज्ञी वर्णन ॥—कु०

३९ कुमार वर्णन (१)

असम साहसैक मल्ल, वैरि हृदय सल्लु ।
अग्र प्रहारि धाडी तिलकु, त्रैलोक्य कटकु ।
कृतान्त मूर्त्ति, सिंह स्फूर्त्ति ।
इसउ दुर्दान्त कुमरु ॥७६॥ (मु०)

४० कुमार (२)

अति प्रौढ, यौवनाधिरूढ ।
स्त्री जन नइ विश्राम भूमि, निरवद्य विद्या लास्य रगभूमि ।
सर्वांगीण शुभकारु, राज्य लक्ष्मी शृंगार हारु ।
मकरध्वजावतार, एव कुमार ॥५६॥ (मु०)

४१ राजकुमार (३)

तयोश्च पुत्रो जनि । यौवन प्राप्त सन् ।
जिस्यउ चद्रमा नु बिंब कोरिउ हुइ । जिस्यउ अमृत कुण्ड न्हाई होई ।
जिस्यउ कमल तणउ कोश आवरिउ हुइ । जिस्यउ कि मोहनवल्लि प्रसविउ हुइ ।
कि सौभाग्य मजरी हू तु सभव्यु हुइ । कोदड तणउ फूल हरु ।
कि काति तणी कुल भीति । कि ए रूप-प्रतिछदक तणी मूलगी रीति ।
कि मयण तणु मूल । कि सर्व रामणीयक तणउ अवचूल ।
इस्यु नयनानद दाईउ । नेत्रामृत आविउ ।
सुललित सुघटित ।
सुवासु सोहग निवास ।
अद्वितीय रूप, लावण्यामृत कूप ।
सर्वजन मोहक, मन नइ अद्रोहक ।
[सुकुमाल, सु विशाल ।] सुविचार,
[जोअण हार । तणा मन विहसइ, दृष्टि जाइ अगि पइसिइ ।]
पाय थभीइ, वाणी निरुभीइ ।
[सयल रोमचिइ । आत्मा अपूर्व रस सींचिइ ।]
[जाणे बीजो कामावतार, जाणेत्रीजु अश्विनिकुमार ।]
जेह तणइ नाम श्रवण लोक काकुली गीत निवारई ।
दृष्टि प्रसारि काय कथा मूकइ, कान उरडी ढूकइ ।

तृषित पाणी न पीइ । भूखा भोजन न लीइ ।
इस्यु सर्वजन वल्लभ, देव दुर्लभ ।
सलूणउ सदाखिणउ ।
मित्र वत्सल, स्वजन वत्सल । इस्यउ राजकुमार शोभइ ।।छ।।
इति नगर राजादि वर्णन स्वरूपमिद ।।छ।। (स० २)

४२ राजकुमार (४)

अति लखणवत, गाढौ सत ।
सकल शास्त्र भण्डार, राजवश शृगार ।
रूपइ करि जयत अवतार, विवेक सुविचार ।
पिता माता भक्त, लक्षण सयुक्त ।
सकल विद्या निवास, करै बहुत्तरि कला अभ्यास ।
बत्रीस[1] लक्षण लक्षित शरीर, पहिरणि निर्मल चीर ।
जेह नी लोक नै गाढी हीर, सग्रामे वीर धीर ।
चपक वर्ण अग, अति सुचग ।
नश्चल रण रग, न करै मत्री भग ।
अति दातार, प्रताप अपार ।
मनोहार, याचकजन साधार ।
' इस्यौ राजकुमार ।। १६ (चि०)

४३ कुमार (५)

प्रतिज्ञा सूरू, अवष्ठभ कैलासु ।
राजपुत्र पतल्लिका, बदि कोलाहलु ।
लोकरक्षा प्राकारू, माहात्म्य सारु ।
परनारी सहोदरु, इसउ कुमरु ।
पायक पहटु, ऊठवणि सुहडु ।
खाडा समुद्रु, बाण सडवडु ।
सेल धूसरु, भाला डबरु ।
रिण महाधरु, अतिशय दुद्धरु ।
इसउ कुमरु । (पु० अ०)

---

१ छत्रीय

४४ राजपुत्र शिक्षा–

राज्याभिषेक पुत्र शिक्षा ।
वत्स प्रजासुखि पालेवि, अन्याय वाट टालेवी ।
भलउ न्याय आदरवउ, जसवाउ उपार्जेवउ ।
चिर परिचित वार ही परहीन करेवी, कुणाहि विश्वास न जाण विउ[1] ।
अकुलीन पसाउ निसेधववउ, वेजाइ ससर्ग वर्जेवउ ।
महाजन समानेवउ, मडलीक प्रति उचित्य वर्त्तेवउ ।
सीमाला सवेऊस सत्य[2] राखेवा, लोक रूडइ नीति मार्ग दाखिवा ।
चोर चरड निग्रहेवा, पायक प्रति यथा योग्य ग्रास देवा ।
कि बहुना राज्य भलउ करिवु । (१५५) (स० १)

४५ राज्य के अंग–

करि, तुरग, रथ, पायक, चतुरगसेना, भाडागार, कोष्ठागार, गढ ।
सताग राज्य लक्ष्मी ॥ १२६ (स० १)

४६ राजसभा (१)

गणनायक, दण्डनायक । सेगरणा, वेगरणा । देवगरणा, यमगरणा । सामत, महासामत । मडलीक, महामडलीक, । चोहट्टीया, मुकुट बन्ध-सधिपाल सधि विग्रही[1], आमात्य, कानुगा, कोटवाल, सार्थवाह, महाजन, अगरक्षक, पुरोहित[3], नृत्यनायक, विहीवायक । दण्डधर, खड्गधर ।

बाणहीधर, छत्तधर, चामरधर, छत्तधर, दीवीधर ।

प्रतिहार, सेजपाल, तत्रपाल, अगमर्दक, मीठाबोला, साचाबोला[4], कथाबोला, गुणबोला, समस्याबोला ।

साहित्य बधक, लक्षण बधक, अलकार बधक, नाटक बधक ।

यत्रवादी, मत्रवादी, तत्रवादी, तर्कवादी एहवी सभाछै ।

---

१ जाएवउ २ सता

पाठान्तर

१ पारिविग्रही २ वहीनायक ३ पडवडियात, कपटायत ताकतमाली (ढाकढमाली) इद्रजाली धर्मवादी, धातुवादी–

४ सहसबोला विशेषनाम, समाश्रृगार से ।

४७ राजसभा (२)

युवराज, मत्री, महामत्री । गणनायक, दण्डनायक, तत्रपाल । माडविक, कौडबिक, श्रेष्ठि, सार्थवाह, पडित सभा, ज्योतिषक, प्रमुख राजसभा । (पु० अ०)

४८ राजसभा (३)

राजराजेश्वर, मण्डलेश्वर ।
सामत मत्रि, महामत्री ।
चौरासीकट नायकु, सेनापति प्रतिहारु, उपतारु ।
साहणिया, मसूरिया, दीवटिया, द्वारवट्टि, दौवारिका ।
सधिविग्रही, भाडारिक, महाजनिकु, श्रेष्ठि सार्थवाह, सभ्यसभापति, एव राज-लोकु ॥ १०६ ॥ (मु०)

४९ राज सभा वर्णन (४)

श्रीगरणा वयगरणा, धर्माधिकारणा ।
मत्रि,महामत्रि, मडलेश्वर ।
सविधान, प्रधान, नायक, दण्डनायक
सधिविग्रही, श्मसाहणी । सुविचारु, प्रतीहार
आ (र) क्षक, जद्वारिका कथक, लेखक ।
गायण, वायण । वीणाकार, वसकार । ज्योतिष्की
वैद्य, महावैद्य । गजवैद्य, अश्ववैद्य ।
मात्रिक, तात्रिक । कुतगीया, काठीया । प्रखर, सत्पात्र, नट, विट ।
इसी राजसभा ॥६॥ (मु०)

५० राज सभा (१)

अनेक गणनायक, दडनायक, राजेश्वर, तलवर, माडविक, कौटविक । मत्री, महामर्ि, गणक, दौवारिक । आमात्य, चेटक, पीठमर्दक, श्री गरणा, वयगरणा, श्रेष्ठि, सार्थवाह, दूत, सधिपाल, प्रतीहार, पुरोहित, थईयायत, सेनानी । अनेकि सधिविग्रही, त्रिधरणी, चउधरणी । पचउली, खट्तर्क विदुर, सात सेजवाल, आठ ग्रह गण जोसी, नव पडिहार, दस प्रति सुवर्णकार, इग्यारा सामत बार महा मडलेश्वर, तेर पसाइता, चउद चडियाता, पनर पडतार, सोल महा मसाणी, सतर आडणीया, अठार भूभार, अगुणीस माणिक्य विनाणी, वीस रत्न पारिखो । परिवारि परिवारिउ राउ सभा बइठउ ॥५८॥ (स० १) ।

५१ राज सभा-(६)

सभा माहि रामण काचढालिउ[1], कुकमतणा बडा छाबडा दीधा ।
कस्तूरिका ना स्तनक पडिया, श्री खडुतणी गूहली दीधी ।
काचइ कपूरि स्वस्तिक पूरिया, अविद्ध मोती तणा चउक पूरिया ।
परवाला तणा नदावर्त्त रचिया, अतरातरा पुष्प प्रकर भरिया ।
कृष्णागरु ऊखेविउ, पचवर्ण पट्टकूल तणा उल्लोच ताडिया ।
मोतीतणी श्रेणि त्रिसरी चउसरी लबाबी ।
मोर पीछ तणे वीजणे वाउ बींजियइ । ५६ । (स० १)

५२ जवनिका

राजहस, मोर, सभा, आतपत्र-केतु, भवन, वृक्ष, अबर, नदी, पुष्करनी, जलनिधि, रत्न, सरोवर, वाडि प्रमुख लिखीते रूप ।
एव विधि आश्चर्य विराजमान ।

५३ मंत्री वर्णन (१)

सरस्वती कठाभरण, राज्य श्री अलकरण ।
विचार चतुर्मुख, कृत सर्वजन सुख ।
लघुभोज, अत्यत ओज ।
कूर्चाल सरस्वती, साक्षाद्भारती ।
कलिकाल कल्पवृक्षावतार, समस्या सत्रागार ।
खाडेराय, करइ न्याय ।
षड दर्शन पारिजात, सर्व राजकुली विख्यात ।
समग्र[2] ग्राम नगर चैत्य पूजा प्रवर्त्तक, अन्याय निवर्त्तक ।
सकल ज्ञाति[3] अलकार, सुविचार, उदार, स्फार, श्रृङ्गार ।
सचिव चक्र चूडामणि, प्रताप दिनमणि ।
सरस्वती पुत्र, आचरण पवित्र ।
दातार चक्रवर्त्ति, अपहृत जन आर्त्ति ।
बुद्धिइ अभयकुमार, रूपि कदर्पावतार ।
चतुरिमा चाणक्य, मत्रिगण माणक्य ।
सदैवोत्साह, ज्ञाति वराह ।
ज्ञाति गोपाल, दूबला मुसाल ।
शत्रुवश क्षय कारक, वैरिराज मान मर्दक[4] ।

---

१ काब २ सन्मार्ग प्रवर्तक ३ ज्ञान ४ सारक

मजा जैन, अप्रतिहत सैन ।
जिनधर्म धरा धुरधर । भोग पुरदर ।
सर्वज्ञ शासन प्रभावक, जिन आज्ञा प्रतिपालक ।
कुल क्रमागत, सदाचार रत ।
लीला ललित गर्भेश्वर । साक्षात् लक्ष्मी वर[१] ।
जग ज्येष्ठ, अति श्रेष्ठ ।
चतुर्बुद्धि निधान, एव[२] विध प्रधान । (सू०)

५४ मंत्री (२)

चाणक्य जिम बुद्धि निधान, राज्य भार स्वीकार मूल स्तभायमान ।
चतुरशीति मुद्रा व्यापार परिपालन दक्ष, सकल लोक कृत रक्ष ।
अभयकुमारु जिम राज्य पालनोपाय सावधानु,
बृहस्पति जिम निखिल नीति-शास्त्र जाणु ।
एव विधु मत्री ॥ ६० । (मु०)
सरीर सकलापु, स्नेहाग आलापु ।
आडबर मूल, रिपु जन सिरि सूल ।
उपरोधि नमइ, सर्व जनी कउ वीनवइ ।
समय कहावइ, असमय रहावइ ।
कूड नी सारइ, आलू आरु वारइ ।
प्रयोजन पृच्छकु, चालतउ उच्छकु ॥ ६१ ॥ (मु०)

५५ मंत्रि वर्णन (३)

चाणक्य जिम बुद्धि निधान, अभयकुमार जिम राज्य राखिवा सावधान ।
बृहस्पति जिम निखिल नीति शास्त्राधिगत परमार्थ,
चउरासी मुख मुद्रा मथन दक्ष । सकल लोक कृत रक्ष ।
राजार्थ प्रजार्थ ।स्वार्थ कारक । अन्याय निवारक ।
एव विध महामात्य ॥ छ ॥ (स० २)

५६ महामात्य वर्णन (४)

चतुर्बुद्धि निधानु, महा प्रधानु ।
कुल क्रमागत, सदारत ।
नीति शास्त्रिकरी, सगुण धीर ।

---

१ नरेश्वर २ स्वामिधर्म सावधान (पाठ यहाँ अधिक है ।)

अलुब्ध, प्रबुद्ध ।
सर्व राज्य उद्वहन धुरधरु, पुरवरु ।
लीला ललित गर्भेश्वरु, ज्ञाने करि साक्षात् लक्ष्मीवरु ।
जग ज्येष्ट, अति श्रेष्ट ।
सुविचारु, उदारु ।
एव विध महामात्य ॥ ३ ॥ (मु०)

५७ मंत्रीश्वर (५)

अच्छेद्य, अभेद्य, गुहीर, गभीर ।
आकृतिमतु, कलावन्तु ।
मर्मज्ञ, उचितज्ञ, सर्वार्थ करण समर्थ ।
उद्यम प्रधान, सर्वमहिमा निधान ।
बुद्धिमय रहर, जग झपणु ।
राजार्थ स्वार्थ, लोकार्थकारक, न्यायशास्त्र तारक ।
गभीर धीर स्थैर्य मदर, गुणग्राम सुदर ।
षड् दर्शन दत्ताधार, निरीह, निस्पृह, योगीन्द्रावतार । अमात्य ५६ (स० १)

५८ मंत्री विरुदानि (६)

सुरताण सुभाषत, दीवाण दीपक ।
अश्वपति, नरपति, गजपति, रायस्थापनाचार्य ।
राज सभालकार, राजसूत्र सोधन सूत्राधार ।
रायसाधार, रायबदी छोड ।
राय वालेसर, मर्यादा मनोहर ।
परनारि सहोदर, कलिकाल निकलक ।
विचार चतुर्मुख, रूपरेखा मकरध्वज ।
वज्राक भालस्थल, चतु चिन्तामणिः ।
वाचा अविचल, बालधवल ।
शील गगाजल, गोत्र वाराह ।
उभय कुल विशुद्ध, एकोत्तर शत कुलोद्योतकारक ।
उभय कुलपक्ष निर्मल, राजहसावतार ।
हर्षवदन, सत्यवाचा युधिष्ठिर । इत्यादि मन्त्री विरुदानि । (स० ४)

५६ प्रतिहार

शरीरि सकलाप, स्नेहल आलाप ।
आडबर मूल, रिपुजन शिर शूल ।
अपरोधि मनइ, सर्वनाकुल वीनवइ ।
समय कहावइ, असमय रहावइ ।
कोप वीसारइ, अलू आरु वारइ ।
गुत आदेश प्रयोजन पृच्छक, चालतोच्छेक ।
एव विध प्रतिहार ॥ छ ॥ (स० २)

६० मंडलीक

सग्राम सीहु, रिण सीहु, महेन्द्रसीहु ।
सग्राम विक्रम, नरविक्रम, रिण विक्रम ।
सग्राम मल्ल, रिणमल्ल, भवनमल्ल ।
पृथ्वीमल्ल, आसा मडलीकः । (पु० अ०)

६१ खड़ायत

ठाकर भक्त, वाड सक्त ।
सयरि त्राणयनु, पडवइ प्राण इतु ।
हाथ वासइ ।
बाह खाडा तणी काल, आत्रणी अकल ।
आगलीउ साहकार, भाट तणो जय-जय कार ।
फरड उडवइ, माथउ मीडवइ ।
पयसी बोलावइ, सामहउ चलावइ ।
धाइ गाजइ, खाध भाजइ ।
एव विध खडायत ॥ छ ॥ (स० २)

६२ राज सेवक

तसु राय तणइ आसन्न ओलगा पसायता पायक आन छइ ।
कवहणइ चउद चयाल वृत्ति पलइ छइ ।
कवहणइ सोलसइ (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ वीर मुठियल (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ वीर वलकु (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ सासणबद्ध गामु (वृत्ति) पलइ छइ ।

कवहणइ सुखासण (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ चउखडी सीकरि (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ सुवर्णमय कलस पलइ छइ ।
कवहणइ धज बिन्धु पलइ छइ ।
कवहणइ पताका० ,,
कवहणइ घटा० ,,
कवहणइ चमर०
"कवहणइ आगच्छीता शृंगार०"।
कवहणइ भुजाई रुप्यमय स्थालु प०
कवहणइ शालिउ कूरु । ,,
कवहणइ रू (पु० अ०) (पत्राक ५ वा अप्राप्त)

६३ सुभट

साहण समुद्रु, वयरि घरट्टु ।
विपक्ष कटकु, चहुच्छ मल्लु ।
धाडी तिलकु, दगदेक वीर ।
इसा सुभट । (पु० अ०)

६४ गढ (१)

गढु गरुउ, अनइ विसमउ,
जसु तणा पाइया पातालि पइठा, भीति गगनि गई,
महागज इसा कोठा,

गरुई पोलि, निवड कपाट, लोहमइ भोगल, ऊपरि कसीसा तणी पक्ति, विद्याहरा तणी पद्धति, यत्र तणी श्रेणि, ढीकुली तणी परपरा, गढ बाहरि वा कवला मणा तणउदुर्ग, खाई तगउ दुर्ग, जल तणउ दुर्गा, थल तणउ दुर्ग,

अनइ परचक्र तणउ प्रवेश नही, हाथिया ढोह नहीं, पाखरिया रहण नहीं, सूयण थानक नही, पायल वाह नहीं, नीसरणी ठाउ नही, भेद सभावना नहीं, जिसउ वज्र खटितु, विश्वकर्मा निर्मापितु हुइ ।

कि बहुना ! पराक्रम असाध्यु,
बुद्धि मतह अयोग्य, देवहइ असाध्यु इसउ गढु । (पु० अ०)

६५ गढ (२)

किलास जिम उचउ । प्रधान प्रतोली द्वार । सघर कपाट । लोह मय भोगल विजय हरी तणी बरज ।

कोठा तणी पद्धति यत्र तणी श्रेणी । ढीकली तणी परपरा ।
खाई गढ । पाणी गढ । कटक तणउ गढ ।
बैरी तणो प्रवेश नही । हाथीआ तणो ढो नही ।
पाखरीआ रहण नही । भेद सभावना नही ।
जिस्यु व मय घडिउ हुइ ।
घणु किस्यु । अेक वा
देवता रहि अगम्य । गढ प्राकार ॥ छ ॥ (स० २)

६६ गढ़ (३)

गढ गरूअउ अनइ विसमउ ।
जीह तणउ पायउ पातालि पइठउ, पर्वत नइ शृंगि बइठउ ।
उच्चैस्तर पोलि, लोहमयकपाट, महाकाय भोगल ।
विजहारी तणी पद्धति, यत्र तणी श्रेणी ।
कुली तणी परम्परा, जल निभृत खाई तणउ दुर्ग ।
पर प्रवेश नही, हाथिया ढोउ नही, पाखरिया रहण नहीं ।
नीसरणी ठाउ नही, भेद सम्भावन नही ।
जिसिउ बज्र घटित विश्वाकर्मा निर्मापित ।
कि बहुना देवइ हुइ अगम्य ॥५५ (सद १)

६७ आस्थान-मंडप (१)

आस्थान मंडप, क्षोभ ऊपनउ,
कवणु सुभट सग्राम रसिक हूतउ, मुइ आहणिउ, ऊठइ छइ,
केऊ धसइ छइ, केउ प्रलयकालु समान उकार मेल्हइ छइ,
अट्टहास्यु नीपजावइ छइ, केऊ वक्षस्थला परामारश छइ,
केऊ खवा फुरकावइ छइ, के भुजाडडनिरहालइ छइं,
केऊ भ्रकुटि ताडइ छइ, केऊ नेत्र आरक्त करइछइ,
केऊ खडगि दृष्टि निवेसइ छइ, केऊ कटारइ हाथु घालइ छइ,
इणिपरि आस्थानु क्षुभियउ । (पु० अ०)

६८ आस्थान सभा (२)

पुरोहित । सेनापति । तत्रपाल । दड नायक
श्री गरणा । वइगरणा । मध्यगरणा ।
देवगरणा । आखडली । धर्माधिकरणी ।

कानडा। महीअडा। सोरठा। मरहठा। राठउड। बारहट। भाडिआ। भयाडिआ। जालधर। काश्मीर। मालविआ। प्रमुख सुभट। कोटि। सकट। अेव विध लोक अलकृत अस्थान सभा। (स० २)

६६ गज वर्णन (१)

सिघलद्वीप तणा, अगमइ गुण घणा।
भद्रजातीक प्रचड, उल्ललित सुडा-डड।
पर्वत समान, जलधरवान, चपल कान।
मदजलभूरता आलिकरता, अतुल बल उच्छृखल गलगर्जित करता।
सताग प्रतिष्ठित, प्रमत्त, मदोन्मत्त।
प्रचड उदडी विध्याचल, समान,
कज्जलवान।
कोपारुण, जाणे साक्षात ऐरावण, अविचल दतूसल।
छूटा हूता पर्वत प्राय गढ पाडइ, कुणातिहं स्यु पइसइ आखाडइ।
कुभस्थलि सिंदुर नउ पूर, अनइ ऊपरि कर्पूर।
सुवर्णमय साकलि करी अलकर्या, गजवरत्रा पाखर्या,
च्यारि शय चौयालिस लक्षणे अनुसर्या।
रूप्यमय घटानाद, जेहना जगत्र सगलइ जयवाद।
पगिघोर, करइ सोर, श्रम करता दीसइ जाणे लक्ष्मीना क्रीडा मोर।
जि वारइ कुंडलाकारि रमइ, ति वारइ इस्यु जाणीयइ जाणे पृथ्वी पद्मिनी ऊपरि भमरडा भमइ।
इस्या काइ हलूयइ फिरइ, परीक्षकना हृदय माहि सचरइ।
सारसी करता, जय श्री वरता।
इस्या अनेक प्रवेक, उत्तु ग मतग। सू

७० गज वर्णन (२)

सप्ताग प्रतिष्ठित, सुडा डड परिकलित।
सुगध मदजल वासित, गजेन्द्र गु······।
····· विंध्याचल समान, कज्जल वान।
चपला कान, लावण्य विधान।
प्रमत्त, मदोन्मत्त।
तेजकरी प्रचंड, साख्यात मार्तंड।
कोपारुण, जाणे ऐरावण।

विस्तीर्ण कुंभस्थल, अविचल दतूसल ।
कु भस्थलि सिंदूर, अनइ ऊपरि कपूर ।
परित्यक्त सकल, दोष सजल ।
जलधर गर्जित, गभीर निर्घोषित ।
महा साहसीक, भद्रजातीक ।
चार सय चम्मालीस गुणे अणुसरया, सुवर्णमयी साकल करी अलकरया ।
मद झरता, आलि करता ।
हालता चालता, जाणि करि पर्वता ।
शत्रुदला पालता, ईत भय टालता ।
रूप्यमय घटानाद, जेहना जगत्र सगलइ जयवाद ।
छूटा हुता पर्वतप्राय गढ पाडइ, कुण तिहस्यु पइसइ आखाडइ ।
पगि घोर, करइ सोर, श्रम करता दीसइ, जाणे लक्ष्मी ना मोर ।
जिवारइ कुडलाकारि रमइ, ति वारइ सुइ जाणीयइ जाणे पृथ्वी पद्मिनी ऊपरि भमरडा भमइ ।
इसा काइ हलुअइ फिरइ, परीक्षक ना हृदय माहि सचरइ ।
सिंहल दीप तणा, अगमइ गुण घणा ।
सारसी करता, जयश्री वरता ।
इसा अनेक, प्रवेक ।
उत्तग, मत्त ग ।

७१ गजवर्णन (३)

मदोन्मत्त, सप्ताग प्रतिष्ठित । भद्रजाती, चतुर्दंती ।
पर्वत प्राय, महाकाय । प्रसारित सुडादड, समर सागर[१] तरड ।
मद प्रवाह झरइ, भूमडल भरइ ।
जयलक्ष्मी वरइ, वैरिवर्ग दलइ ।
पर मान मलइ[२], कोपि बलइ ।
स्थूल दत मुसल, विपुल कुभस्थल । ५० (स० १)

७२ गजवर्णन (४)

गढ गजणु, अमर वल्लभु, विंभ माणिक्क, अरि असक्कु ।
चउदतु, मेरुआलि भयकरु, अरिकेसरि
सहजगेल्लि, हमीर मर्दनु । इसा हस्ति । (पु० अ०)

---

१ सारग २ परमानद मिलै ।

७३ गजवर्णन (५)

किसा ते हाथीआ[१]

सिंहल द्वीप तणा । भद्र जातिक । उल्ललिक सुडादड ।
पर्वत समान, जलधर वान, चपल कान । मदजल झरता, आलि करता ।
अतुल बल, उत्सृखल । गलगर्जित करता । २ ॥ (स० ५)

७४ गजवर्णन (८)

गजनाम—

गणेशावतार, गजगाह, गजराज, भज मडल, गजसुदर, गजजग, गढभजण, गढदीपक, पौलिभजण, दलदीपक, दलमडण, भुइ वादल, गजशोभन, भोगी नायक । सदा सुरग, रण अभग । सिदुरीआ भाल, मोत्या री झाल । सोना री ढाल, गलइ घूघरमाल । पेटझरता, मदवहता, चीकार करता, अभिनवा परब्रत सरीखा देही रा माता । एहवा हाथी छई[२] । (कौ)

७५ गजवर्णन (६)

गज मदावसर
लोहनी साकल त्रोडइ, आलान स्तभ मोडइ[१] ।
हस्तिशाल भाजइ[३], पडता गाजइ ।
कमाड फाडइ गढ मढ मदिर पाडइ ।
हस्तिनी यूथ स्मरइ । ·· ·
च्यध्य मन माहि धरइ, नगर माहि साचरइ । ५१ (स० १)

७६ अश्व वर्णन (१)

निमास्ति मुख मडल, लघुतर स्तब्ध कर्ण युगल ।
(अत्यन्त चपल), विस्तीर्ण हृदय स्थल ।
उद्धुर स्कध वंधुर, विशाल पृष्टि प्रदेशि मनोहर ।
हेशा रवि करी वधरित भुवनोदर,
अनिवार्य्य वर्य्य तेजः प्रसर । सकल जीव लोक विस्मय कर, (अनेक गुणधर) ।

१—गजभग, गजभजन, गज दीपक, गजजीपक, गढखडण, गलै घटा री माल ।
चाले अगड़धत्ता, पिलवान करै हत्ता हत्ता । इति विशेष पाठ (स ३)

२ रण सग्राम नै विषै दौडै, गुमान जोडै ।

३ अनेक दुश्मन नै गाजइ । (स० ३)

परमित मध्यदेश, स्थूलतम पश्चिम प्रदेश ।
स्निग्ध रोम राजी विराजमान, अति प्रधान ।
चद्रावर्त्त भद्रावर्त्त, प्रशस्ते समस्तावर्त्त परिकलित शरीर, सग्राम शौडीर ।
झाप, टाप । राग, वाग । अर्द्ध फल गति विशेषि । प्रवीण, धुरीण[1] ।
चतुः शत लक्षण समवाय, पर्वतोत्तु ग काय ।
समुद्र कल्लोल जिम चचल, सर्वत्र प्राजल ।
वेगि करी पवनोपमान, उच्चैश्रवा समान ।
असमान रूप विलास, सलील चरण विन्यास ।
शालहोत्रादि शास्त्र प्रणीत, जाणइ असवार चीत ।
मान सस्थान सपन्न, प्रशस्य देशोत्पन्न ।
राज्याभ्युदय करण, सदा जय लक्ष्मीशरण[2] ।
रेवत देवताधिष्ठित, पचधारादिकाश्व[3] ।
गति समाश्रित, सुवर्ण सकला विभूषित[4] ।

किस्या एक ते[5]—हयाणा, भयाणा, कूदणा[6], कास्मीरा, हयठाणा, पइठाणा, उत्तरपथा, पाखीपथा[7], ताजा, तेजी, तोरका, काछेला, काबोजा, भाडेजा ।

क्षेत्रशुद्ध, प्रमाण शुद्ध, चपल, ऊँचासणा ।
जोइउ सहइ, वपूकार्‌या रहइ, वाको द्रेठी, सभर पूठि ।
छोटे काने, सूधे वाने । मुहि रूधा, आसणि सूधा ।
हसमसत, हय हेषारवि अम्बर वधिर करता ।
सूरवीर साहसी, आम्हा साम्हा मिलइ धसि ।

कालूया, किराडिया, किहाडा, नीलडा, कविला, धूसरा, माकडा, हासला, जांबूया, दोरीया, बोरीया, शालिहोत्र शास्त्र लक्षण प्रणीत ।

---

१ विराजित जीण । २ प्रधान चरण । ३ देवाधिष्ठित रेवत, पचम धारावत । ४ नृत्य कलानी विषइ उचित, ५ हिव, तेहना, देश, कहियइ सुविशेष । ६ कू कणा ७ कनोजा कुहका, काबेला, मुकराणी, खुरसाणी, सतेजा, खरिंगा, तिलगा एहवा तुरगा ।

ते केहवा, घणू वखाणियइ जेहवा—

दीलइ घणा । दृष्टचोर, करइसोर । पीलड़ा, रातड़ा ।
कबोजडा, भागउड़ा, मेघ वरणिया, हिरणिया, अगजिया ।

हासला, वासला, चलइ उछाछला । अ बुआ—(कु०) में विशेष ।

+ प्रति (मु०) का पाठातर—देशसम्पन्न, कालाभ्युदय कारण, अतिमारण ।
सदाजयवाद, लक्ष्मी सपन्ना, क्षेप विक्षिप्त ।

ससइ, घसइ, साटि पइसइ । जुडइ, दुडइ ।

इस्या अनेक हृदयगम, तुरगम । सू०

७७ अश्व-वर्णन (२)

परिमित मध्य प्रदेश, विशोष्टोभय प्रदेश ।

निष्ठुर खुरो श्वात भूमडल, निर्मासल मुख मडल ।

स्तोकतर कर्ण युगल, विशाल वक्षस्थल ।

ह्रेषारव वधिरित भुवनोदर, मनोहर दर्पोद्धुर ।

सग्राम सोडीर, समुद्र कल्लोल चचल । ४६ (स० १)

७८ अश्व-वर्णन (३)

काछी, कबोजा, कलुजा, कश्मीरा, कसेला, काबरा, कमेत, काला, पचाला, अणियाला, हसाला, हरियाला, हयाणा, भयाणा, पतगा, उत्त गा, उनगा, जलगा, पाणीपथा, उत्तरपथा, ऊर्धपथा, अधोपथा, पइठणा, तेजाला ।

लोहधार न मुडइ, ऊँचै आसण भडइ ।

धू सरा, भूसरा, माकड़ा, वाकडा, राकडा, खुरसाणी, तुरकी, नीलडा, पीलडा, धोलडा, जलबाधी, भरेजा, खेचरा, खेतरा खरा (त), नासै परा, आखडता अनिहता, रिधाला, जुवाधिया । (स० ३)

७६ अश्व-वर्णन (४)

तेजी उरडा । गह्वर तोरा । खुरासाणा । भयाणा । हयाणा । रोहवाल । रु डमाल । तोरकामद कोरा । पीलुआ । भादिजा । दक्षिण पथा । पाणी पथा । माकड । नीलडा । कीहाडा । गगाजल । सिधूआ । पारकरा । पारसीका भद्रेश्वरा । काबूआ । इसी घोडा जाति । पु०

८० अश्व-वर्णन (५)

अथ अश्व लक्षणानि

नरागुलानि द्वात्रिंशात् । मुख भाल त्रयोदश ।

अष्टाङ्गुल शिरः कर्णौ । षडगुलमितौ मतौ ॥ १ ॥
चतुर्विंशत्यगुलानि । हयस्य हृदय तथा ।
अशीतिश्च समुछ्रयै । परिधिस्त्रिगुणो भवेत् ॥ २ ॥
एतत्प्रमाणसयुक्ता । ये भवति तुरगमाः ।
राज्यवृद्धिमहीपस्य । कुर्वंत्यन्य स्व वाछित ॥ ३ ॥
अेकः प्रमाणे भाले च द्वौ द्वौ रध्रापरध्रयोः ।
द्वौ द्वौ वक्षसि शीर्षे च ध्रुवावर्ता हये दश ॥ ४ ॥

(स० २)

८१ अश्व-वर्णन (६)

क्याहडा, खूगडा, नीलडा, हरियाडा।
सेराहा, इलाहा ऊराहा, बराहा।
सिरि खडिया, बोरिया।
इसा अनेक जाति तणा तुरगम अश्व ॥
रूपि हीरउ, कठि हीरऊ।
माणिकउ, फटिकडउ।
रेवतु जयवंतु। विसालु, सुकमालु, सावष्टभु, गरुयारभु।
गगाजलु, ससारफलु। इसा नामाकित घोडा ॥ (पु० अ०)

८२ अश्व-वर्णन (७)

केहाडा, नीलडा, हरियाडा,। सेसहा, इराहा, वराहा।
कोहाणा, भायाणा। ताई, तुरगी।
ऊघसिया, पीघसिया।
झाटकिया, झोटकिया। खोलाविया, मल्हाविया,
लडाविया, पुलाविया। सरला, तरला। छोटकर्णा, एकवर्णा। ५२ (स १)

८३ अश्वी-वर्णन

जइ हुई घरि व्याउर[1] घोडी, तउ घरस्यु दारिद्रय काढीइ झाडी पखोडी[2]।
पुण प्रिय जोइ लीजइ, दरिद्रहइ जलाजलि दीसइ[3]।
वरस मइ दीसि वियाइ, घरि घणी ऋद्धि थाइ।
लाखीणउ जिणइ, धणी हइ डाकुर मानइ गिणइ[4]।
जिहनइ घरि घोडा सुजाति, देसि विदेसि[5] तिहनी विख्याति।
किसोरो[6] साखीइ पृथ्वी प्रमाणइ, वात सहु को बोलइ ऊखाणइ।
द्रव्य कइ घोडी नइ कोटि, कइ वउणि नइ खोटि[7]।
घोडी साखियइ एह कारण, जिम धणियाणी पिहरइ सोनाना मुण[8]।
एह स्यु कूड्ड, घर दीमइ घोडे जि रूड्ड।
जइ तूसइ रेवतु, तउ वेगउ आणिइ दारिद्र नू अतु। (मु०)

८४ ऊंठ-वर्णन

गोली वीतली रउ, लाबी नली रउ।
जाडै गोडइ रउ, ससा सेरीयइ बगला रउ।

+ एकर्णा

१ च्यार २ झझोड़ी ३ दीजइ ४ धणीनइं ठाकुर डूडा माहि गिणइ ५ परदेस
६ किसउ रउ ७ कई राजवीनी ओटि ८ अकीर्त्ति निवारण।

सिघोडा जेहे ईडर रउ, बाजवट आठूआ रउ ।
लाखेरी रग रउ, कुमराले थूभे रउ ।
· ·   ·, लटीयाले पूछ रउ ।
वलिवीं फीच रउ, लावे गडदाणइ रउ ।
कोरीयइ कान रउ, सीपीयइ दात रउ ।
रतनाले आखि रउ, दमामा जेहइ कोपट रउ ।
गाले बिहु गूजतउ,   ।
लाबाण इरे (दूरे),
भामण ज्यु नेसे चसडका करतउ,   ।
धसला देतउ, ऊठ तउ इसउ ।
ऊबर सूवरा चडण रउ । (कु०)

८५ रथ-वर्णन

चारु चीत्कार कलित, विशाल सालभजिका शालित ।
धवल पताकाचल मालित, विचित्र चित्र परम्परा विराजित ।
पर पथिनी निर्दलन । ७३ (स० १)

८६ शस्त्र-वर्णन (१)

१ चक्र	२ धनु	३ वज्र	४ खड्ग
५ कृपाणी	६ तोमर	७ कुत	८ त्रिशूल
९ शक्ति	१० पासु	११ मुग्दर	१२ मषिका
१३ भल्ल	१४ भिडमाल	१५ गुरुज	१६ लूठि
१७ गदा	१८ शखी	१९ परशु	२० पट्टसु
२१ यष्टि	२२ सपन	२३ पठसु	२४ हल
२५ मुशल	२६ कुलिस	२७ कातरि	२८ करपत्र
२९ तरवारि	३० कुद्दाल	३१ यत्र	३२ गोफण
३३ डाहिणि	३४ सडसिका	३५ कुहाडी	३६ लिपुख

इति दडायुधानि । १८५ । (स० १)

८७ शस्त्र-वर्णन (२)

सिल्ल, भल्ल, वावल्ल, कुत, करवाल, तीरी, तोमर, नाराच, अर्द्धनाराच, चक्र, शख, शक्ति, क्षुरप्र, दुस्फोट, कोदड, हल, मुशला, गदा, तरवारि, कातरि, शस्त्रिका, खड्ग, मुग्दर, तद्वल, भिडमारि । ११५ ।   (स० १)

८८ शस्त्र-वर्णन (३)

तरवारि। त्रिशूल। नाराच। कौशल। कृपाण। चक्र। कुत। सङ्ग। गडीव। सहापट्टि। मुसढि। गदा। मुशल। लकुटी। मुग्दर। छुरिका। शास्त्री। कस। अर्द्धचद्र। कर पत्र। बाण। यष्टि। असि पत्र। क्षुरुप्र मुखी। अर्द्ध मुखी। भिंडमाल। तोमर। भल्लि। लागल। पाश। परश। क्षुर। विस्फोट। वज्र। शक्ति। मूल। भल्लल। सबला। इत्यादि शस्त्राणि। (स०२)

८९ शस्त्र-वर्णन (४)

हथनाल, हवाई, हल, मुंशल, चक्र, नाल, गदा, गुरज, गेडि, गोलो, गोफरण, गुप्ती, फरसी, तरवार, तीर, तरकस, कटारी, कसी, कुद्दाल, कबाण, कोकबाण, काती, भाला, बरछी, बगतर, पाखर, अकुश, अणी, छुरी, साकल, दारू। इत्यायुध।[1]

९० शस्त्र-वर्णन (५)

तीरी, तोमर, नाराच, अर्द्धनाराच, भल्ल, सिल्ल, बावल्ल, कुत, खड्ग, छुरिका[1] तरवारि, यमदंष्ट्रा, पटह, फुरसी कर्त्तरी, धनुष, शींगिणि, चक्र, शक्ति, गदा, मुद्‌गर, गर्ज, त्रिशूल, फलक, ओडण[2] प्रमुखा। (स० १)

९१ शस्त्र-वर्णन (६)

छुरसार लोहतणी घणी, पौगर मेल्हती, बीजली परि झलकती, तीन्ही धाराली, बढाली, अणियाली पइसारुई, नीसारुई। ७४ (स० १)

९२ छुरीकार

हाकइ, ताकइ। दडइ, दावरइ। ऊधसइ, विहसइ। हणइ, धुणइ। पुलइ, मेल्हइ। उविलइ, रहइ। हसइ, घुरकइ। चड़इ, पडइ, अडवडइ। डुलइ, डुलइ। छुरीकार। (स० २)

९३ धनुर्धर

सामितणु वयरु, नव यौवन शरीरु।
सीगणि तत्र अभ्यासु, आगुलि तणउ प्रासु।
सौर्य वृत्ति तणी गाठि, उधसि झाटि।
जोइ त्रिविविध गणु, लाखइ बाणु।
हाथ वावरइ, भवरउ वीसरइ।

---

१ फासी। वज्र, त्रिशूल, मुदगर, डड, बगदो, ढाल, चक्रबाण, कुट—इति विशेष (स० ३)
१ छुरिक २ उडण।

समरु साधइ वेझउ वीधइ ।
कोसीसा उतारइ, निटोल मारइ ।

६४ योध-पायक

जेह तणु जाणइतु कुल, स्वामि तणु बल ।
आगलि आचार चालइ, थोडू बोलइ ।
छइ दर्शन नमइ, ठाकरईं गमइ ।
सग्रामि युद्धर, परनारि सहोदर ।
पागे काम करइ, स्वामि काज मरइ ।
रणि वइरी नइ हाकइ, हथीआर ताकइ ।
बोलावी दिइ घातइ, जाणइ युद्ध तणु उपाय ।

६५ युद्ध-वर्णन (१)

बिहु पखा दल मिल्या ।
सर्वत्र धूलि-पटल ऊछल्या ।
कोई आप-पर बूझइ नहीं ।
न जाणीइ आपुदल
सर्व एककारु प्रतिभासइ ।
केतलउ गज सारसी करतउ जाणियइ ।
तुरगम हेषारवि जाणियइ ।
रथ चीत्कारि जाणियइ,
विंधि पताका जाणियइ,
किंकिणी नारि जाणियइ,
सुभट मनोरथ मालियइ,
हीन हृदय ना शस्त्र ऊदालियइ ।
तुरंगमे खुरे करी पृथ्वी दलीइ ।
काहली त्रडत्रडइ ।
प्रहारि जर्जरित खडहडइ ।
कबध धरा पडइं ।
राजपुत्र घोड चडइ ।
सूरवीर गहगहइ,
कातर डहडहइ ।
विंध लहलहइ,

सेनानी महमहइ ।
घड भूझइ,
इतर मूझइ ।
एकि खड्ग काढइ,
एकि गज तणी वस्त्र वाढइ ।
अनेकि शस्त्र झलहलइ,
हाथिआनी गुढि दलइ ।
कायर खलभलइ,
घोडे पाखर गणगणइ ।
विहित सर्व जन डमरि,
इसइ समरि ॥ ७१ ॥ (मु०)

९६ युद्ध–वर्णन (२)

बिहुँ पखा वृहत पुरुष साचरिया
क्षेत्र सूडावियउ
बिहु पखा सन्नद्ध बद्ध नीपना
सुभटे पाखर लीधी
मयगल गुडा सुरिड-दरिड मुहवड घाता
पंच वल्लहा किशोर पाखरा ।
जाति तुरग पलाणा ।
रथ पाखरा ।
वीर पुरुष महा सुभट प्रगुण नीपना ।
केई आगि लोहमय आगी करिउ मस्तकि सिरि कुनिसि ओ हुआ सग्रामोद्यत ।
केइ परिकर सपूर्ण लौह चूर्ण हुया सोत्साह ।
केई आबद्ध तोणीर वीर हुया युद्ध प्रगुण ।
सेवागत राजान चक्र हुयउ सावष्टभु
चक्रव्यूह गरुड व्यूह तणी रचना नीपनी ।
आगवाणि सीगडीया तणी श्रेणी ।
पश्चात् भागि फारक मडल तणी पद्धति ।
तदनतर हस्ती घटासीत्कार करती ।
पाखरा तणी श्रेणी हेषारव मेल्हती ।

बिहु पखा पच शब्द तणा निर्घोष उछलेवा लागा ।
रणतूर्य वाजेवा लागा ।
नीसाणे घाय वलेवा लागा ।
बिहु पखे भाट पढेवा लागा ।
बिहु पखे सुभट तणा सिहनाद प्रवर्त्तेवा लागा ।
सिल्ल भल्ल वावल्ल नाराच प्रमुख प्रहरण पडेवा लागा ।
बिहु पखे हाकि २, हणिउ २, मारि २, नाठउ रे २, भागउ रे २, आटउ रे २
इणि परि सुभट शब्द नीपजेवा लागा ।
गयण आच्छ-दिय । आदित्य किरण निरुद्धा ।
तेतलइ समइ कूटेवा लागा कपाल ।
भाजेवा लागा धनुर्द्दण्ड ।
जाएवा लागा शिरःखण्ड ।
पड़ेवा लागी खाडा तणी झड ।
बाजेवा लागी सुभट तणी काटकड ।
नाचेवा लागा भड कबध ।
फोटिवा लागा धज विध ।
त्रूटेवा लागा खड्गफल
नासेवा लागा कायर दल ।
इसइ सग्रामि सुभट गाजइ ।
कायर थरथर धूजइ ।
वीरे बाधी कसणि ।
कायर झूरहि खणि खणि ।
कु भ सेल लीजइ ।
कायर खीजइ ।
वीर तणा भाला झलकइ ।
कायर तणा मन टलकइ ।
पचब्दि पड घाय ।
कायर भणइ पाय पाय असके जाइ ।
निसाण, कातर तणा पडइ प्राण ।
दल आघा खिसइ ।
कायर खूणे खुसइ ।
दल हियरइ वडइ ।

कायर तक्खणि पडइ ।
दल आफलइ, कायर खलभलइ ।
भड झूझइ, कायर मूझइ ।
भड मेल्हइ प्रहारु ।
कायर जोय बारु ।
वीरह मुडी पडइ ।
कायर पींडी चडइ ।
तिणि सँग्रामि हृदय दृढु करी सन्नाहु करिउ ।
एक मनु धरिउ ।
खाभनी खणीउ ।
पय घरट्टु बाधिउ ।
बाणु साधिउ ।
रिणि राजा चढिउ ।
जिहा धूलि पटल सर्वत्रइ ऊछलिया ।
कोइ आपु पर विभागु न बूझइ ।
पिता पुत्र न सूझइ ।
न जाणियइ आत्मदलु ।
न जाणियइ हाथिया तणइ गुलगुला-रवि ।
तुरगम तणइ हिणहिणकारि ।
रथ तणइ चीत्कारि
भाट नगारी तणइ कयवारि ।
इसइ समरि भरि वर्त्तमानि हूतइ
सुहड सूडइ, सगुण हाथि लूडइ ।
रथावली उथिल्लवइ, मउडबद्धा माकड्डु जिंव खिलावइ ।
पाखरिया थाट हणाइ ।
दल समदाय भाजइ, दलवइ गाजइ
सत्रु स्कधावार तणा कद ।
समग्र तृण समान करिउ गणइ ।
इसउ सग्राम ।
बहल कुंकुम तणइउ छडउ दीन्हइ
कस्तूरिका तणा स्तबक पडिया
बावना श्रीखडहणी गूंहली दीन्ही

काचइ कर्पूरि स्वस्तिक भरिया
अवीधा मोती तणा चउक पूरिया ।
प्रवालाधोखडे नदावर्त्त रचिया ।
अतरा २ पुष्फ तणउ प्रकरु भरियउ
कृष्णागरु ऊखवियउ ।
पचवर्ण पाट्ट पटुला तणा ऊलोच बाधा
मुक्ताफल सबन्धिनी त्रिसरी मोतीसरी लबावी
राजा स्वयमेव आस्थानु दे बइठइ
मोरवीछ तणे वाउ वीजणे वाउ खेपियइ छइ
ऊपरि सजल जलद पटलाय मान मेघ डंबरु धरिओ
मस्तकि त्रिशेखरु मुकुटु रचियउ
दीप्ति विनिर्जित मार्त्तण्ड मडल कर्णि कुडल निवेस
वक्षस्थलि स्थूल मुक्ताफल ग्रथित सर्व सारु नवसरउ हारु लबावियउ ।
सहस दलु हस्ति कमलु, निरुव करु पाय टोडरु
पुरुष प्रमाणु सिहासनु कटी प्रमाणु पादपीठु, पश्चिम दिग्ग विभागि थईयायतु
वाम प्रदेशिमत्रि, जीवणइ पुरोहितु । विहु पक्खइ अगरक्ख तणी ओलि ।
सर्वत्रइ काबडिया फिरिया । तेतइ समइ सुपहुत्तउ ॥
जोड काहली तडपडइ
सार उठिया हाथि गडयडइ
सीगी तणा शब्द कल्लोल ऊछलइ
नीसाण घाइ वलइ
तुरंगम तणा हिणहिणाकार
सुभट तणा वापूकारु
घटा हणा टकार
कवीहणा भकार हूया
वीर सिरि पट्ट बाधा
फरीहणा मडप ठाडा
खाडा तणा समुद्र विस्तारा
कडोरण कोठारु भरिया
सुभट तणी पाटी भरी
आरेणि तणी सूत्रण धरी
प्रलय तूर्य वाजेवा लागा

वीर मोदला रुण ऊगोवा लागा
असी परि सग्रामु प्रगुणु हूया ।

(पु० अ

६७ युद्ध वर्णन (३)

सीमाडा सवे वसि कीधा, सवे गढ लीधा ।
गढवई सवे निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा कीधा ।
समुद्र लगइ आपणी आण फेरी ।
एकछत्र निष्कटक राज्य प्रतिपालता सग्राम विषय कदाचित् उपजइ ।
बिहु पखा वृहत्पुरुष साचरिया ।
क्षेत्र सुडाविउ, बिहुगमा सन्नद्ध बद्ध नीपना ।
सुभटे जरहि जीण साल लीवी ।
मयगल गुडिया, सुडादडि मुहवडि घातिया ।
पच वल्लह किसोर पाखरिया, जाति तुरगम पलाणिया ।
वीर पुरुष महा सुभट प्रगुण नीपना ।
चक्रव्यूह गुरुडव्यूह तणी रचना नीपनी ।
अगेवाणि सीगडिया तणी श्रेणी ।
पछेवाणी फारक तणी पद्धति ।
ततो हस्ति घटा सोतकार करती ।
पाखरीया नो श्रेणि हेषारव मेल्हती ।
पच शब्द तणा निर्घोष जमला उछलइ ।
रणतूर वाजइ, नीसाण घाय गाजइ ।
बिहु गमे भाद पढइ ।
बिंहु गमे सुभट तणा सिंह नाद हुवा लागा ।
सिल्ल भल्ल तीरी तोमर नाराच प्रहरण पडवा लागा ।
बिहु पखाहा कि २ हिणि हिणि मारि २ नाठउ २ भागउ २
इण परि सुभट शब्द नीपजावइ ।
गयण आछादिउ, सूर्य किरण रूध्या ।
तेतलइ समइ फूटेवा लागा कपाल मडल ।
ाजेवा लागा धनुमडल, जाएवा लागा शिरः खड ।
पडवा लागी खांडा तणी झड, वाजेवा लागी सुभड तणी काटकडि ।
नाचेवा लागा धड-कवध, पडिवा लागा ध्वज चिंध ।

प्रहार जर्जर कुंजर पडइ ।
सुनासणा तुरगम तडफडइ, भाले भरडीता गजेंद्र आरडइ ।
रीरीया करता राउत हथियार हलइ, घाइ घूमिया सुभट ढलइं ।
पडिया पाइक न उसासीयइ, हिवा हाथीया आश्वासीयइ ।
मउडउ धाम उडवडइ, रेवत रडवडइ ।
पडिमा पचायण नी परि हाकइ, रोस लगी मुँछ भूछफरकावइ ।
रथ चक्र चापीति करोडि कडकडइ, वेताल हडहडइ ।
भाग्यवत जय लक्ष्मी वरइ, आपणउ काज करइ । १२२ (स० १)

६८ युद्ध-वर्णन (४)

वीर मादल वाज्या, सूर साज्या ।
जय ढक्क वाजी, नीसत नीकली गया लाजी ।
त्रबक त्रहत्रहायइ, नेजा लहलहायइ ।
त्रिभुवन टलवलवा लागा, माहोमाहि वइर जाग्या ।
सूर्य्य आछादिउ, रजो गण उन्मादिउ ।
सेष सलसलिउ, दिग्गज हलवलिउ ।
आदि वराह घुरहरिउ, उच्चैश्रवा धरहरिउ ।
परदल मिलइ, चींध चलवलइ ।
नीसाण वाजइ, जाणे आकासि मेघ गाजइ ।
रथ थडहडइ, रण काहल त्रडत्रडइ ।
गजेन्द्र गडगडइ, घोडे पाखर पडइ ।
छत्रीस दडायुध झलहलइ, कायर खलभलइ ।
पृथिवी चलचलइ, समुद्र झलझलइ ।
शेष सलसलइ, सूर सामला हलफलइ ।
कापुरुष टलवलइ , हाथीया गुलगुलइ ।
झूझार ना मनोरथ फलइ ।
अति रागी रा मन छूडायइ, रूडा रणक्षेत्र सूडाइ ।
ढोल ढमकइ, चित्त चमकइ ।
अतिहि फार, फुकार, हुकार ।
सुहड हसइ , अगि ऊधसइ ।
वीर किलकिलइ, सूरना टोल मिलइ ।
बिहुँ दल विचालि प्रधान फिरइ, थापिउ झूझ सिरइ ।

वाणावली विछूटइ, पर्वतना शिखर त्रूटइ ।
घोडा ने खुरे उडी खेह, जाणे आकासइ आव्या मेह ।
धूलि गगनागिणि लागी, मार्ग प्रचारनी वात भागी ।
अधकारि विश्व व्यापिउ, इसु रणक्षेत्र थाप्यु ।
धारा मडप गाज्यउ, जगत्रय अमूझ्यउ ।
सेष सलक्यउ, वाराह चमक्यउ ।
माहो माही हस्या, इस्या सुभट धस्या ।
भाट बपूकारइ, पूर्वज सभारइ ।
हाथीयइ हाथिउ, घोडेइ घोडउ ।
रथइ रथ, पायकिई पायक ।
हुयवा लागू झूझ, स्यु वर्णवि वस्यइ अबूझ ।
वात करता रोमाचीयइ अग, ते सुभट भला जे मरइ रणरग ।
उड्यालोह, मेल्ह्या घर ना मोह ।
आपणा स्वामी आगलि ऊभा, नथी किसी वात नी छोभ ।
अख्या झाटके, कायर ऊडी गया गोफणि ने त्राटके ।
रथना धडधडाट, बाणना सडसडाट ।
रणतूर ना गडगडाट, कहुक बाणना पडपडाट ।
तुबक ना भडभडाट, गोली ना कडकडाट ।
चद्रवाण ना तडतडाट ।
सर धोरणि साधी, माहोमाही चाल बाधी ।
अणीसर फूटइ सेल, देव जोवइ खेल ।
सन्नाह त्रूटइ, खग ना अगार विछूटइ ।
धड पडइ, मस्तक रडवडइ ।
कवध नाचइ, नीर याचइ ।
अति उ गाढ, फूटइ जम दाढ ।
तेहने अगि उपरापरइ झाटके तरवारि त्रूटइ, ते मरइ अखूटइ ।
पड्या ऊठइ, धायइ एक एक नइ पूठइ ।
गध्र ऊपरि साचरइ, अपछरा वरइ, देवता जय जयारव उच्चरइ ।
सूर वाहइ भाला, न छूट चड्या नइ पाला ।
वहइ फोला, लोक ल्यइ ओला ।
गूहा आवइ वांण, कायरा रा पडइ प्राण ।
बाधी चाल, निपटि घोडी विचाल ।

भाला री भचाभचि, बकतर भेदी लागइ विचाविचि ।
घोडे घाली पाखर, आडी आया जाणे भाखर ।
कहता तो घणाही कहइ, ते विरला सूर जे इसइ रिण ऊभा रहइ ।
एहवा सब्द सहइ, ते कवि कहइ ।
देठ लागा, माहो माह बइर जागा ।
जे हुता सेनानी, ते धुर थी हुआ कानी ।
जे हुता कोटवाल, ते पिण नाठा तत्काल ।
जे हुता एक एकडा, तीयारइ नाम नामइ दीया छेकडा ।
जे हुता फोजदार, तीयारइ सिर पडी मार ।
जे हुता फउज विडार, ते हुआ कहार ।
जे हउसे बाधता कटारी, तीयानइ ते पडी मारी ।
जे हुता खवास, तीया मुकी जीविवारी आस ।
जे वणावत्ता सागी बाकी, तीया नासिवा नइ वाट ताकी ।
जे पहिरता मोटा साडा, तीया नासता कीधा कोडि पवाडा ।
जे ढोलरइ ढमकइ मिलता तिकेपिण दीसइ टलता ।
काबिली मीर, नाखइ तीर ।
इस्यै रणि जे पामइ जय, तेहनइ पोतइ पुन्य निचय । सू०

युद्ध-वर्णन (५)

परदल मिलइ, सुभट कल कलइ ।
नीसाणि घाय वलइ, पताका झलहलइ ।
ओरणि माडीयइ, अर्द्धचद्र बाण खडियइ ।
भट्ट हका हक करइ, देवागना वीर वरइ ।
विद्याधरी पुष्प वृष्टि करइ, धनुर्धर बाण तणी श्रेणी वावरइ ।
आकाश मडलि गृध्र फिरइ, सीचाणा समली साचरइ ।
हाथियानी घटा गुडी, घोड़े पाखर पडी ।
विहुगमा दल मिलइ, धूलि पटल उछलइ
जेतइ सुभट गाजइ तेतलइ कायर थरहरइं ।
जेतइ सुभट बाधइ कसणा तेतलइं कायरथाइ नासणा ।
जे० खड्ग खञ्जिइ, लीजइ, तेतलइ कायर मन माहि खीजइ ।

जे० वीर भाला झलकइ, तेतलइ कायर ना मन टलकइ
जे० पच शब्दि पडइ धाय, ते० कायर करइ पाय।
जे० ढूमके बाजइ नीसाण, ते० कायर ना पडइ प्राण।
जे० दल आधा खिसइ, ते० कायर खूणे खिसइ।
जे० वेदल ही चडइ, ते० कातर तत्काल पडिइ।
जेत० बिदल आफलइ, ते० कातर मनि खलभलइ।
जेतलइ सुभट झूझइ, तै० कातर लोक असूझइ।
जे० सुभट मेल्हइ प्रहार, तेतलइ कायर जोअइ नासिवा वार।
जे० वीर मस्तक पडइ, तेतलइ कायर पगि पीडी चडइ।

हाथिउ हाथिइ, घोडउ घोडइ।
रथ रथिइ, पायक पायकिइ।
भथाउत भथाउतिइ, खड्गायुद्ध खड्गायुद्धिइ।
कुतायुध कुतायुधिइ, गदायुध गदयुवइ।
गर्जायुध गर्जायुवइ।
हलायुध० मूशलायुव, शलायुध०, त्रिशूलायुध०।
वेउ दल मिलइ, सर्वत्र धूलि पटल उच्छलइ।
कुण हूँ आपणउ परायउ विभाग बूझाइ नहीं, पिता पुत्र सूझइ नही।
न० जाणियइ आत्मदल, न जाणियइ पर दल।
न० भूतल, न० नभोमडल।
न० रात्रि, न० दिवस।
न० पूर्व, न० पश्चिम।

सहू एकाकार हुइ, इसिइ समय समग्र दलि वर्त्तमानि।
राजा सन्नद्ध वद्ध लोह चूर्ण हुई सुहडइ सगुड हाथीया लूडइ।
रथावली ऊथलावइ, मउडउधा माकड जिम खेलावइ।
पाखरिया घाट हणइ, महायोध समुख मणइ।
दलवइ भाजइ, जल समुदाय गाजइ।
एतलइ समइ समकाल काहली बाजइ, मदभभल गजेन्द्र गाजइ।
सीगडियानी श्रेणी कमकमइ, नीसाण तणा घाय घमघमइ।

तुरग तणा हेसारव, घटा तणा टकारव।
वीर रण भूमिभरी, आरोणि तणी सूत्रधरी।
प्रलय घघल तूर्य वाजइ ॥ ६७ (स १)

१०० युद्ध वर्णन (६)

फौज फौज मिले, सुभट कल कले।
पताका झलहलैं, नगारे घाउबलैं।
रिण मडिये, अर्धचन्द्र बाण खडिये।
गयवराह, हयवराह।
बाह्यहोवे लडाई, वडावशी राजपूतने होहलागारि नडाई ॥
चिहुँ दिशा धमाधम, सो मेदनि रक्त छाई।
कटाझटि काटे, योधा एकएका सवाई।
हला मुमला पडत्ताल बूढइ हवाई ॥
अडे आथडे पडे वद थाई ॥
गडेगट गोफणागढ़ आवे गिराई।
धमहुइ ओवइ, अरिप्राणपाडे धकाई ॥
काठाओनरखग्ग धारा तणा कटाका।
पडे कोकबाणा गोलाहिदा पटाका ॥
अडे डील डीला लिये लाबा छटाका।
पीठे बटाबट पडे बरछा बटाका ॥
बडा जोधमारे जम्म दाढा।
लगे घाउ त्यु मानने मन गाढा ॥
चणाक चणाक बहे तीर सूधा।
आखेवटस्यु घावधावे विलुद्धा ॥
अजुआलवावस आप आपे अलुद्धा ॥
गिरे दुर्जनें गेडिझरे लोह बुद्धा ॥
फोज फोजें सिंधुडा रागरी ध्वन्न वाजे ॥
गोलानाल नोवत्त सारसी वाजे ॥
भोम्र उठ भारथ मास लोहि भभके।
ओर भूपाल दिकूपाल देखी लबके ॥
महा एक कारक हूओ जग्ग माहे।
उडि रज आकाश भूह सूरथाए ॥
बार वरसा लगे युद्ध एह दिट्ठो
हारीओ पापने धर्मराजान जित्तो।

इति युद्धवर्णन ॥ (स० ३)

१०१ युद्ध-वर्णन (७)

आम्हो साम्हो कटक आविया बडी, फोजइ फोज अडी।
बगतर नइ जीन साल, सुभटे पहिरया ततकाल।
माथइ धरया टोप, सुभट चल्या सबल कोप।
पाचे हथियार बाध्या, तीर-तीर साध्या।
आमल पाणी कीधा, भाजण रा सूस लीधा।
घोड़े घाली पाखर, जाणे आडा भाखर।
आगइ कीया गज, ऊपर फरहरै धज।
ढमामे दीवी घाई, सभ वीर आया धाई।
रण तूर वागइ, ते वलि सिवूडइ रागइ।
ठाकुर बपुकारइ, बडा बडा बापारा बिरद सभारै।
छूटै नालि, निपटि थोडी विचाल।
वहइ गोला, लोकल्यै ओला।
छूटै कुटक बाण, कायरा रा पडै प्राण।
काबलि मीर, नखइ तीर।
लागी खडा खड, वागी भडाभडि।
गद्दभल्लरी फौज भागी, सबल लीक लागी।
जे हूँतो सेनानी, ते तो धूरखी थयो कानी।
जे हूतो कोटवाल, तेत्तो भागतो ततकाल।
जो हूँतो फौजदार, तिणरै माथै पडी मार
जे हूता चौरासीया, ए दाते त्रिणा लीया।
जे हूता खवास, तीए जीववा री मुकी आस।
जो हूता कायर, तिणने सभरी आपणी बायर।
जे चढता वाहर, तेह थया छोडी कायर।
जे ढ़ोलरै ढमकै मलता, ते गया पासे टलता।
जे बाधता मोटी पाघडी, ते ऊभा न रह्या एका घडी।
जे हूँता अेक अेकडा, तिणरे नामइ दिया छेकडा।
जो माथै धरता आकडा, तीए मुहडा कीया बाकडा।
जे वणावता सारगी वाकी, तीए तउ रण भूमिया की।
जे बाधता बिहू पासे कटारी, तीयानइ नासता भुई पडी भारी।

जे पहिरता लाग्रा साडा, तीए नासता कीया कोडि पवाडा ।
गर्दभिल्ल नाठउ, बोल थयो घणु माठौ ।
गढ माहे जाई पयठउ, चिंता करइ बयटउ ।
पोलिना ताला जडया, कालिकाचार्यना कटक चिहू दिसि वीटी पड्या ।

—कालिकाचार्य कथा से

सभा-श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ३

स्त्री-पुरुष वर्णन

पुरुष-वर्णन (१)

कज्जल श्यामल केश पाश,
अष्टमी चन्द्रोपमानु भालस्थल।
कामदेव कोदण्डाकृति भ्रूभगु,
विकसित नीलोत्पल दीर्घ लोचन
सज्जन चित्त वृत्ति तुल्य सरल नासा वस
परिपक्व बिम्बाफल तुलिताधरोष्ठ
कुदकलिकोपमान दत पक्ति
निर्मल परिपूर्ण पूर्णिमा चद्र मण्डलायमान वदन मडलु
सख सदृश त्रिरेखाकित कठ कदल
लबमान स्कधन्यस्त कर्णपालि
मासल स्कध देशु
पृथुलु वक्षस्थलु
नगर दुर्ग परिघा समान वर्तुल भुजादड्ड
सर्वथा अलक्ष्य क्षामोदर गभीर नाभि प्रदेशु
कदली स्तभोपमानु उर युगुलु
कूर्म पृष्ठि प्रदेश जिय उन्नत चरण
अशोक तरुपल्लवानुकृत हस्तपाद तलु
विद्रुमारुण नखमणि निकर
छत्रीस लक्षण लक्षित शरीरु
पृष्ठि पालकु बहुत्तर कला कुशल
लिखित पठित प्रमुख चौसठ विज्ञान विचक्षणु
उदग्र यौवन पुरुष नीप जइ। पुरुष वर्णन (पु०)

२ पुरुष गुण-वर्णन (२)

सौन्दर्य,	धैर्य,	औदार्य,	गाभीर्य ,
शील स्वभाव,	सत्य,	साहस,	भाग्य ,
राग,	रूप,	लावण्य,	लालित्य,
कान्ति,	कला,	ज्ञान,	विज्ञान ,
विद्या,	विनय,	विवेक,	विचार ,
शस्त्रशास्त्रभेद,	वेद विदान,	लक्षण	प्रमाण ,
तर्क,	साहित्य,	सामुद्रिक,	शकुन ,
सगीत,	गीत,	निमित्त,	निरुक्ति,
निघट्ट,	पिगल,	पुराण,	गणित ,
ज्योतिष ।	एहवागुण —		(स०४)

३ सत्पुरुष-गुण वर्णन (३)

कुलीन	शीलवान	विवेकी
दाता	भोक्ता	कीर्त्तिवान्
सूर	साहसिक	सत्ववान्
सत्यवान्	गभीर	प्रियवाग्
धीर	सलज्ज	बुद्धिवत
कलावत	गुणग्राही	उपकारी
कृतज्ञ	धर्मवान्	महोत्साह
सवृत मत्र	क्लेश सह	पात्र रुचि
जितेन्द्रिय	सतुष्ट	अल्प भोजी
अल्पनिद्र	मितभाषी	उचितज्ञ
जितरोष	अलोभ	स्वरूप
सुभग	तेजस्वी	बलिष्ट
प्रतापी	सुसस्थान	सुगध देह
सुवेष	शुभगति	सुस्वर (सुखर)

सुकान्ति इत्यादिक पुरुष गुणा । (स० १)

४ सत्पुरुष के स्वाभाविक गुणों की उपमा (४)

सत्पुरुष स्वभाव—

क· शशिन[१] शीतल करोति, को दुग्ध धवलयति ।
को मयूर पिच्छानि चित्रयति, क· शर्करा मधुरा[२] करोति ।
कोमृत[४] सर्वरसा स्वाद धत्ते, को गगा पवित्रयति ।
हसाना को गति शिक्षयति, क. पद्मराग[३] रजयति ।
कश्चपक[५] सुरभी करोति, को जात्यमणिषु काति कलाप ।
क. सरस्वती पाठयन्ति, को लकाया अलकार कुरुते ।
तथा साधु पुरुषस्य स्वभावेन गुणाः ॥ (स० १)

५ सज्जन स्वभाव उपमा (५)

चद्रमा नै कुण शीतल करै ?
अगनि नै कुण दाह करै ?
दुग्ध नै कुण धोलै छै ?
मयूर पीछ नै कुण चित्रै ?
लक्ष्मी नै कुण नोत्रै ?
कमल नै कुण मधुरा करै ?
गगोदक नै कुण पवित्र करै ?
हस नै गति कुण सीखवै ?
जुआरी नै कुण भीखवै ?
चपक नै कुण सुगध करै ?
सारदा नै कुण भणावै ?
लोका नै कुण दीपावै ?
स्त्री नै कपट कुण गोखावै ?
वृहस्पति नै कुण वचावै ?

---

१ शिशिरी २ मधुरी ३ ब्रह्म ४ को मेवानभ्यर्थयति,
५ इनके बदले मे यह पाठ—को नालिकेरे जल क्षिपति
क कोकिला स्वर माधुर्यं विन्धाति ।
को वृत्तता नयति मौक्तिकान् । मु
कु मे विशेष पाठ—तथा को पुत्रो विनय नयति ।

कृपण नै लक्ष्मी कुण सचावै ?
तिम सज्जन नै स्वभावै जाणवो।
(सू ३)

६ सत्पुरुष प्रतिज्ञा (६)

कदाचित् समुद्र मर्यादा व्यतिक्रमइ, कदाचित् जइ मेरु महीधर चकमइ।
कुलाचल चक्रवालइ , ग्रहचक्र निज मार्ग सू चलइ
पृथ्वी पातालि जाइ, वाउ निश्चल थाइ।
वज्र दण्ड जर्जरता धरइ, जल ज्वलइ।
ज्वलन शैत्य धरइ,
आदित्य पश्चिम ऊगइ,
कमल वन पर्वत विकसइ
कदाचिदमृत विष थाइ
कदाचित्पाषाण जल माहि तरइ, कदाचित्नारकी सौख्य पामइ
कदाचित्बृहस्पति वचन खलइ, गगाजल पश्चिम वहइ
कदाचित् अभव्य जीवहृदयि धर्मोपदेश रहइ, कदाचित् मानस सरोवर सूखइ
कदाचित् हरिश्चद्र प्रतिज्ञा हूतउ चूकइ, कदाचित् सिद्ध गर्भवासि अवतरइ
तथापि सत्पुरुष आपणीप्रतिज्ञातउ न टलइ। १०८।

७ सत्पुरुष के परोपकारों की उपमा (७)

सत्पुरुष परोपकार किहि पृथ्वी नियमिया छइ
शेषराजु पृथ्वीधरइ, आदित्य अधकार सहरइ
चन्द्रमा शैत्य करइ, मेघु जलु पृथ्वी भरइ,
गोमडलु दुग्ध त्तरइ, चन्द्रोपलु अमृतु झरइ,
वैश्वानरु प्रज्वलइ, वृक्ष फलइ॥
(पु अ)

८ सत्पुरुष के परोपकारों की उपमा (८)

सत्पुरुषः परोपकारमेव कुरुते न पुनरात्मार्थं यथा—
रविस्तमो नाशयति, पर नास्त स्फोटयति।
चद्र' स्वामृतेन जगत्ताप, निर्वापयति न क्षय।
वृक्षाः पथानामातप निवारयति, नात्मनः

यथा खड्गोऽन्येषा शरीराणि विदारयति, नात्मशाणा घर्षण
यथा वैद्योऽन्य नाटिका[1] विलोकयति नात्मनः ।
यथा मन्त्रवित्पर विषाणि छिन्नति[2] तथा न स्वदेह विष ।
यथा रत्नाकर पर दारिद्रय निराकुरुते तथा कस्मान्न क्षारत्वम् ।
तथा चितामणि कल्पद्रुमाद्याः कामान् कुर्वते ।
तथा स्वाचेतनत्व कस्मान्न स्फोटयति ॥ ७६ (स १)

६ सत्पुरुषों के परोपकारों की उपमा (९)

सत्पुरुष परोपकाराय अवतरति ।
कर्पास. परार्थे विडबना सहते, मौक्तिक पर शृगाराय बेधसहते ।
सुवर्ण परालकाराय, ताप ताडनादि ।
अगरु पर सौरभ्याय दाह, चदन पर तापोपशातये घर्षण ।
कर्पूर पर सौगध्याय मर्दन, कस्तूरिका पर पत्रभगी कृतेवर्त्तन ।
ताबूल पर रगाय चर्वण ।
दधिविलोडन परार्थ सहते, मजिष्ठा वस्त्र रजनार्थ कुट्टन खडनादि सहते ।
धुर्य. परार्थमेव भारमुत्पाठ्यति, सूर्यः परार्थमेवोद्गच्छति ।
जलधर. परोपकारायेव वर्षति ॥ २१ । (स० १)

१० सत्पुरुष के कोप की उपमा (१०)

सत्पुरुषस्य कोपो मनस्येव विलीयते ।
यथा दरिद्रस्य मनोरथा मन विलीयते ।
यथा कूपस्य छाया कूप एव० वि० ।
यथा सुरगाया धूली सुरगायामेव वि० ।
अरण्य कुसुमानि अरण्य एव विलीयते ।
कातारच्छिन्न कूट शैल फलानि शैल एव० ।
यथा वध्यावपुरपत्यानि तत्रैव विलीयते ।
विधवा जन स्तना हृदय एव विलीयते ।
कृपण लक्ष्मी भूमावेव यथा विलीयते । ७७ । (स० १)

११ पुरुष के ३२ लक्षण (११)

इह भवति सप्तरक्त' षडुन्नत. पंच सूक्ष्म दीर्घोयः ।
त्रि बिपुल लघु गभीरो द्वात्रिशल्लक्षणः सपुमान् ॥ १ ॥

---

१ नटिका २ भिन्नति ।

नख चरण पाणि रसना दशनछद तालु लोचनान्तेषु ।
रक्तः सप्त स्वाध्य सप्तागा सलभते लक्ष्मीम् ॥ २ ॥
पटक कक्षा चक्षुः कृकाटिका नासिका नखास्यमिति ।
यस्येदमुन्नत स्यादुन्नत यस्तस्य जायते ॥ ३ ॥
दतत्वग् केशागुलि पर्व नखा पच यस्य सूक्ष्माणि ।
धन लक्ष्म्यायेतानि च जायते प्रायसः पुसा ॥ ४ ॥
नयन कुचातर नासा हनुभुज मिति यस्य पचक दीर्घ ।
दीर्घायुर्भवति नरः प्राक्रमी जायते सह ॥ ५ ॥
भाल मूरो बदनमिति त्रितय भूमिश्वरस्य विपुल स्यात् ।
ग्रीवा जघा मेहनमिति त्रिक लघु महेश्वरस्य ॥ ६ ॥
यस्य स्वरोऽग्य नाभी सत्वमितीट त्रय गभीरस्यात् ।
सप्ताबुधि पर्य त भूमे स परिग्रह कुर्यात् ॥ ७ ॥
इति द्वात्रिशल्लक्षणानि ॥ १२३ । (स० १)

१२ संग योग्य पुरुष (१२)

सुमति, शीलवत, सतोषी, सत्सगी, स्वजन, साचाबोला, सत्पुरष, समेला[1], सुलखणा, सलज्ज, सुकुलीण, गभीर, गुणवत गुणज्ञ । एहवा पुरषनो सग कीजे ॥
(स० ३)

१३ कीर्त्याभिलाषो पुरुष (१३)

चौदह विद्यानिधान,
समस्या शत्रुकार,
षड्भाषा चक्रवर्ती,
जाणराय कालिकाचार्य,
कालिकाल सर्वज्ञ,
सरस्वती कठाभरण,
प्रत्यक्ष बृहस्पति,
वादी विभाड,
कवि-कामधेनु,
इत्यादि विविध गुण वर्णना कीर्त्याभिलाषिण॰ ॥ (स० ४)
(वि०)

1 मामल

१४ रूपालो (रूपवान) पुरुष (१४)

छयल,	छबीला,	रूपाला	रगीला,
रलियामणा,	ललिताग,	ललितगर्भ,	लीलाभोपाल,
लीलावत,	सुम्राला,	लटकाला,	भटकाला,
लवण्वत,[१]	मीटाबोला,	मलण्ता,	मा (म्हा) लता,
विनोदी,	विनयी,	ख्याली,	खुस्याली,
सौभागी,	सुदर ॥	एहवा	रूपाला ॥

(स० ३)

निर्द्धन होने पर भी सत्पुरुष

१५ प्रतिभा-वैशिष्ठ्य पुरुष उपमा (१५)

निर्द्धनोपि सएवोतम॰ पुरुष यथा-भग्नमपि वाराह ।
श्रातोपि पारसीको हय , रक्तोपि कपूर्र समुद्गक॰ ।
खडोपि निशाकर , अच्छादितोपि दिवाकर ।
दुर्बलोपि सिह॰, शुष्कोपि वकुलश्री विद्धापि मुक्तावली ।
फाटितमपि रत्न कबल[२] । मलिन मपि दुकुल,तृप्तमपि गगाकूल ।
म्लानमपि इक्षुखड, जीर्णमपि शर्करा खड ॥ ७४ । (स० १)

१६ दुर्जनवर्णन (१)

दुर्जन एहवउ दीसइ, बाहिर हेजालूओहीयउ हीसइ ।
अतरग बलइ रीसइ मिलइ सुजगीसइ ॥
आवेरउ जात (प्र) दॉत पीसइ , मुहि मीठउ, चित्त वीठउ ।
पराया छल छिद्र जोवइ, विरणास विण विगोवइ ॥
परम प्रससायइ खीजइ, उपगारन सहसे न लीलइ ।
पर मर्म भाखइ, साच करी दाखइ ॥
पहिलउ विचार मॉहि आवइ, अवसरे खिसी जावइ ॥
मुहडइ सहू सु लिबास, वाह नउ न करइ विसास ।
केहनइ वचनि न पतीजइ, जउ आपणउ चित्त दीजइ ॥
तोही भीजइ न सीजइ, वार वार स्यु कहीजइ ॥
न सगा, न सणीजा, जाणु मो सारिखा करू बीजा ॥

---

१ लावण्यवत

न सहइ बीजा साथइ, ठाक ठोक ल्यइ आपणइ माथइ।
इसउ दुर्जन, तिण सु न मिलइ कोई मन॥
इति दुर्जनकम्॥ (कु०)

१७ दुर्जन पुरुष

मुहि मीठउ, चित्ति विणठउ।
पिराया छल छिद्र जोयइ, विणास विण विगोयइ।
पर प्रशसाइ खीजइ, उपकार ने सहस्रि न लीजइ।
परमर्शु भाखइ, साच करी दाखइ।
न सगा न सणीजा, नविहु छइ इस्या लोक बीजा।
न सहै जैइ बीजा साथइ, ठाक ठोक कल्पइ आपणइ माथइ।
नहीं कोई नेह नइ सज्जन, इसिउ दुर्जन॥ १६॥ (मु०)

१८ दुर्जन-वर्णन (३)

दुर्जन, कृतघ्न, निष्ठुर स्वभाव, अप्रतिष्ठ, वदनानिष्ट
स्वकार्य बद्धकक्ष परकार्य निरपेक्ष। (पु० अ०)

१६ दुष्ट पुरुष (४)

रे रे दुराचार, अधर्म व्यापार।
जनित कुल कलक, दूर मुक्ति मर्याद।
पापिष्ट, निकृष्ट, दुष्ट दृष्ट इण परि निर्भर्छउ। १५६ (स० १)

२० कुपुरुष (५)

प्रत्यक्षे मधुरया गिरा अमृत वर्षता परोक्षे दोष जल्पता।
नीचाना व्यसनैर्वस्सी कृताना इद्रियै.[1] पराभूताना।
पल्वल जलादपि निर्मलाना।
अमावास्याया अपि अंधकार मुखाना।
गुरुषु विद्वेषिणा।
बधुषु वद्ध वैराणा, पितृमित्र द्रोह कारिणा।
मातृ शूकलाना, स्वपुच्छादि कारकाणा।
समुद्र जलादप्यनुप भोग्याना।
अत्यज चरितादपि मलिन चरिताना।

---

१ इद्रैयै

सर्पजाते रपि अनात्म नीताना ।
प्रदीपा दप्याश्रय विश्वसिना ।
नदी कूलादपि नीच गामिना ।
मृत्पात्रादपि भगुराणा ।
हरिद्रा रागा[1]दपि क्षण विनश्वराणा ।
उदया न दृश्यते कुपुरुषाणा ।
यत.—

परवादे दश वदन पर दोप निरीक्षणे सहस्राक्ष ।
सद्वृत्त वृत्त हरणे बाहु सहस्रार्जुनो नीच ॥ ६७ (स० १) ॥

२१ अंध-वर्णन (६)

रणाध, रोगाध, बुभुक्षाव, तृष्णाध[1], लोभाव, कामाध, दर्पांध, मद्याध, क्रोवाध[2], विद्याध, वित्ताध, अहकाराध[3], जात्याध, चित्ताध ।

पुरुष सर्वथापि न देखइ काई ।

न पश्यति मदोन्मत्त. कामाधो नैव पश्यति ।
न पश्यति जात्यधो अथो दोषा न पश्यति ॥ १।१३६ (स० १)

२२ मूर्ख संग (७)

कुमाणस नउ ससर्ग न कीजइ, वरि व्याघ्र सिउ, क्रीडा कीजइ ।
वरि सूता सीह[1] मुखि हाथ घातीयइ, (आ)अजीसाप[2] सिउ साई दीजइ ।
अजी[3] हलाहल बिष पीजइ, वरि अगिनी ज्वाला लीजइ ।
वरि[4] वयरि घरि वासउ वसीयइ, वरि चोर साथि बइसीउ ।
वरि पाताल विवरि पइसीइ, वरि बलतइ दावानलि जईयइ ।
पुण[5] सर्वथापि मूर्ख साथि न जाईयइ ॥

न स्थातव्य न गंतव्य, क्षण मप्यसना[5] सह ।
पयोपि शुडिनी हस्ते वारुणी[6] त्यमिधीयते ॥ १
वर पर्वत दुर्गेषु, भ्रात वनचरै· सह ।
नतु मूर्ख जन सपर्कः सुरेन्द्र भुवनेष्वपि ॥ २।८५ (स १)

---

[1] रागा दपि
अति लाभ
[1] कोपाध २ मदाध ३ तृषाधु । (पुन्य विजय जी अपूर्ण प्रति)
[1] सम्सर्ग २ जिसापस्यु ३ वरि ४ वरि यरि ५ पण ५ सती सता ६ वारुणी

२३ संग न करने योग्य पुरुष (८)

केहवा पुरुष नो सग न कीजे ?

छल, छद्म, वच, द्रोह, कूड, कपट, करह, कोसेर, लहक, त्रहक, टगा, अहक, अन्याय, जोर, जुलम, ओछो, अविकी, चोजारी, हेरा, लूटवा, लगडवा, पीडवा, परिच, पापीडा, फट जाल, अजाडी, आहेडी, अखाद्य, अपेय अगम्य, मोडा-मोडि, मुरडा मरड, मचली, मसकरी, ठीगाई, ठीगलणी, ठकुराई, ठमटोरणी, वाकाई, वरणागी, चउ सारगी, वेढि, लडाई, लपटाई, हासी, बाजी, चोराला, एहवा पुरुषनो सग न कीजे। (स-४)

२४ संग न करने योग्य पुरुष (९)

चुगल[१], चचल, चोर, छलवेदी[२], अधर्मा, अविनीत, अधन, अविक-बोला, आकुला, अणाचारी, अधगा[३], अधूरा, अधीहा[४], अमोहा, कुलखणा। कुबोला, कुपात्र, कूडा बोला, कुशीलिया, कुव्यसनी, कुलम्बन, भगु, ममता, सुडा सुछ, एहवानो सग न कीजै ॥ (स-३)

२५ कृपण (१०)

सचक[१] अदाता, बद्धमुष्टि, कापडिउ, भिक्षाचर, रकप्राय, चमार चक्र-वति, कृपण पितामह, अग्राह्य नामवेय। जीह[३]नइ नाम लीवइ[४] वान पुण न मिलियइ ॥१४॥ (स-१)

२६ दुष्टागमन (११)

भ्रकुटी त्राडतउ, विकट चापटा उपाडतउ
ओष्ट जुगलि फुडफुडतउ, वचनि विन्यास प्रस्खलतउ।
बिभीषणाकारु मुखु करतउ, आरक्त नेत्र दरिसतउ
दुर्वाक्य बोलतउ, त्रिवली तरग विकासतउ।
महाकोपाकुलु, जाणिय करि प्रज्वलितु वडवानलु।
अति रोषारुणु, प्रकटित क्रूरु मणु।
आरक्त लोचन, बोलतउ निष्ठुर वचन।
आपापिष्ट, कृतान्त कटाक्षित, व्याघ्र वदन पतित।
अहो पापात्मनु, इसउ कोपीन दुष्टागमनु । (पु० अ०)

---

१ चपल, २ छलबधी ३ अतगा ४ अधूरा अधीरा ५ भलवेढा

१ मचक्रु २ चिहुण ३ जसुतणइ ४ लियइ (पु०अ०)

२७ स्त्री गुण (१)

कुलीना	शीलवती	विवेकिनी
दानशीला	कीर्त्तिवती	साहसिका
सत्ववती	सत्यवाक्	प्रियवाक्
गभीरा	स्थिरा-सरला	सलज्जा
बुद्धिमती	कलावती	विज्ञानवती
गुणग्राहिणी	उपकारिणी	कृतज्ञा
धर्मवती	सोत्साहा	नवृतमत्रा
क्लेशसहा	अनुपतापिनी	सुपात्ररुचि
जितेन्द्रिया	सन्तुष्टा	अल्पाहारा
अलोला	अल्पनिद्रा	मितभाषिणी
उचितज्ञा	जितरोषा	अलोभा
विनयवती	सुरूपा	सौभाग्यवती
शुचिवेषा	सुखाश्रया	प्रसन्नमुखी
सुप्रमाण शरीरा	सुलक्षणवती	स्नेहवती

योषिद्गुणा ।। इति सपूर्ण समाप्त. ।। १७१ ।। [1] (स० १)

२८ स्त्री गुण (२)

सुवरणि, सुसची, सुसूत्रणी, सुसील,
अमृत वाणि बोलती पाहण पल्हालइ
दुग्ध मधुर, हाथि मोकली, सहजि प्राञ्जलि ।
इसी सर्व गुण परिपूर्ण
इमी कलत्र महाभाग्य लाभइ ।। (पु० अ०)

२९ सुस्त्री (३)

भर्त्तारि अनुरागिणी, कोमल भाषिणी
अदृष्ट मुख विकार, सदाचार सुविचार
परिपालित कुलाचार, उदार, कृत परोपकारु[1]
असी कलत्र ।

---

१ स० १ अन्तिम पुष्पिका—१ इति सभा शृंगार सपूर्ण समाप्त ।।

अवरु रूप तणी रेख, लावण्य केरउ कसवट्टउ
कनीयता तणउ भडार, काति केरउ आधारु
पसइ प्रमाण लोचन, जसी कामदेव तणी सीगी
धणुही त साभमुह,
जसउ जाइलउ हीरउ, तिसी झलकती दत पक्ति
त्रिहु पहटे वहतउ सीमतउ, अति सुकोमल रोमराजि
बोलती जिसी अमृत तणीवेलि, वचनि करी पाहण तेई पल्हाल
इसी स्त्री ॥ (पु अ०)

३० सुस्त्री (४)

चद्रमुखीचकोराची, चित्तहरणी, चातुर्यवती, शीलवती सिहलकी, सुलक्षणी श्यामा, नवागी, नवयौवना, गौरागी, गुणवती, पदमणी, पीनस्तनी, हेजाली, हस्तमुखी, एहवी स्त्री पुण्य नइ योगइ (पामइ)

प्रति स० ३ का पाठ इस प्रकार है—

रूपाली, चद्रमुखी, चकोराची, चातुर्यवती, हसगतिगामिनी, चित्तहरणी (मनहरणी), हसत मुखी, पद्मिनी, पीनस्तनी, गोरागी, गुणवती, नवागी, नवयौवना, सिहलकी, भ्रूहवकी, शीलवती, सुलक्षणी, पद्मगधी, सुकोमल शरीरी, पातल पेटी, मोहनगारी, अतिहलवी, नही भारी, हेजाली, शील गगेव, मधुरभाषिणी, कोकिलकठी। एहवी स्त्री क्रीडा करै छै।

३१ सगर्वा स्त्री (५)

हस गति चालती,मयगल जिम माल्हती।
कामिनी गर्व भाजती, चद्रकला जिम वाधती।

---

१ इति सभा श्रृगार वचन चातुरी ग्रन्थ समाप्त

२ स० १ प्रति, मे इसके बाद का पाठ नीचेवाला न होकर इस प्रकार है—
सुघराणि, सुसची, सुसूत्रणी, सुशील,
अमृत वाणी बोलती, पाहण पल्हालती
हाथि कोमली। सहजि आजली
सव गुण सपूर्ण। इसी कलत्र महा भागि लाभइ, स्थाने निवास ॥

नोट—स० १ की दूसरी प्रति में पाहण के स्थान पहाण और कोमली के स्थान मोकली पाठ है।

नयण बाण जण बींधती ।
तरुण तरङ्गि, करुण तरङ्गि ।
वाकउ जोअती,जन हृदय आल्हादती ।
कंचुक ताडती, सीमवउ फाडती
कंठ कंदलि हारु रोलवतो,
जोवतु न इसी बाल सुकुमाल, तत्काल उत्सलित काम काल ।

विरह—

हा कान्त !
हा हृदय विश्रान्त !
हा प्रियतम
हा सर्वोत्तम
हा सौभाग्यसुन्दर
हे प्रेमपात्र । ॥ ६६ ॥ (मु०)

३२ सुबाला (६)

हंसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती ।
कामिनी गर्व भाजती, चन्द्रकला जिम गुणिहि वाधती ।
नयण-बाणिहि जण मण बींधती ।
माथइ सीमतउ फाडती, हियइ कुचक ताडती ।
वाकउ जोयती, विरहिया चित्त बोअती ।
अति रूपवती, साक्षात रति तणउ रूप ।
लक्ष्मी तणउ लावण्य, पार्वती तणी रेषा ।
रंभा तणी कांति, रन्ना देवि नउ तेज ।
रोहिणी तणी कला, सीता देवि नी लीला ।
द्रौपदी तणउ सौभाग्य, लक्ष्मी तणउ भाग्य ।
अग्नि देवता नउ वान, रूपिणी तणउ संस्थान ।
कठि नवसरइ हारि रुलतइ जिम दीठि ।
तिम चित्त माहि पइठी ॥ अेइसी बाला ।
इंदुर्वक्रस्य वीणा सदन मुपकथा पादयो पंकजाली
पर्यापोलि कर्वयानतनु महसा वर्णिका कर्णिकार ।

आभास कुंभि कुंभ द्वय' मुरसि जयो काम कोदंड दंड. ।
पाखंड भ्रूलत्तायारतिरभि नयन पश्य रूपस्य यस्यः ॥१३१॥ (स०-१)

३३ नायिका अंग उपमा (७)

काजल श्यामल केश कलापालंकृत उच्च मस्तक ।
जिसिउ अष्टमी तणउ चद्र तिसिउ भालस्थल ।
जिसीया वसत मास तणा हींडोला तिसिउ कर्ण युगल ।
पुरुष प्रसृति प्रमाण कमल परिलोचन ।
जिसी कामदेव तणी सागिणी, तिसी भुमहि ।
जिसी तेल तणी धार, तिसी सरल तरल नाशावश ।
जिसीउ पूर्णिमानउ चद्रमा तिसी मुख कमल ।
जिसिया प्रवालिया, तिसिया ओष्ट पुट ।
जिसी दाडिमनी कल, तिसी दंत पक्ति ।
जि० विशाल करि कुंभस्थल, तिसिउ वक्षस्थल ।
जि० कमल कोमल नाल, तिसी बाहु लता ।
जिसिउ सीह तणउ लाक, ति० मध्यदेश
जि० पर्वत्त शिला, तिसिउ नितंब बिंब ।
जि० केलिना स्तंभ, ति० बेऊर ।
जि० ऐरावण सुडादंड, ति० जंघ युगल ।
जि० अलता[१] नी पोली, ति० सुकुमाल पादतल ।
जि० यमुना प्रवाह तिसी वेणी लहलहइ ।
जिसी चापानी कली तिसिउ सकल शरीर ।
रूप तणी रेखा, लाबण्य तणउ कसवट्टउ ।
काति तणउ आगर, सौभाग्य भडार ।
बोलती अमृत वेलि, जे वचनि करी पाहण पहालइ[२] । ६५ (स० १)

३४ नायिका आभरण (८)

ललाटि तिलक, काने झलक

---

१ अलना

२ पटहाल

बाहे वलक[१], आगुलि अगुलियक,
कठि कठिका, गलइ हारु,
माथइ मोतीसरि, हृदय सोवन[२] ऊतरी
हाथे दोरा, पाए पोलरा,
इसे आभरणे आहरी दोहरी नायका ॥ (पु० अ०)

३५ कुस्त्री (१)

काली, नकाली, कोचरी, काणी, कुरूपी, कुत्सित, कुरुर, काकसरी, काकजघा, कुहाटी, कुलक्षणी, सापिणी, पापिणी, सखिणी, सउखिणी[१], सवणी, निरगुणी, चचल, चीपटी, कुखेडी, कुबडी, बोबडी, मुकडी, सुबडी, लबडी, सडी, पडी, बली, उछाछली, भूतेछली, चितावली, पागुली, रूलीखली,[२] खुली बली, खेलेजाडी, नुल, आखा चिपडी, आ खेबाडी, डीलेजाडि, कामकाज माडी, आखेचूची[३], कानि ऊची, हाथिटूटी, कानि बुटी, लाबा दात, करेरात, नीलज, अकज, छिनाल, दारी, कुतरी, निसनेही, कुहाड, दुर्गंध देह, जीभाली, रीसाली, भूठाबोली, निद्रणखीण, अकुलीण, सेडाली,

एहवी स्त्री पाप थे होइ । एहवी स्त्री भला माणसने वरजवी । (स० ३)

३६ कुस्त्री (२)

काली, कुत्सित, कुहाड, राड, रीसाली, रोमाली, रोती, चूची, चीपडी, सगाखी, सखिणी, हठीली, सेडाली, हराम जाति, कलेसणी, कुपात्रणी, कुजाति, एहवी भूडी स्त्री पाप नइ उदय पामइ (पै०)

प्रति स० ३ का पाठ—

काली, कुत्सित, कुरूप, कुहाड, कुतरी, राटी, रीसाली, रोमाली, रोती, चूची, चोपडी, सुगामणी, सखामणी, सोभाली, माजाली, सेडाली, माजरी, हठीली, हरामजादी, भूठा बोली, कलेसणी ।

३७ कुस्त्री (३)

बोलती हूती छड ऊतारइ, चाट फाडइ
महा विकरालि, अति आगि भालि
मान्दी अलछि, बोलती सर्वांग सूल उपजावइ

---

१ वलय २ सौवर्ण ३ हाथे ककण रव भलतकार, पगे नेवर भात्कार ।
(स० १ न० १४० के अनगत)

१ सउखिणी २ लुली ३ आखे चूची

मिरी तणी ऊगटि, अगार तणी सउडि
चालतउ पलेवणउ, दाघ ज्वर तणि बहिन
जिसी केवलइ हालाहलि
विषि घडी हुइ तिसि स्त्री ॥ (पु० अ०)

३८ कुस्त्री (४)

कुहाडि अढढ स्त्री—

बोलती छुउड ऊतारइ, दृष्टि देखती मनुष्य मारइ ।
साप माथइ सइ[1] थड फाडइ, चालती[2] भुहि फाडइ ।
नव धाया तिर पाडइ, वालि बाधी कुडी आहणइ ।
आकाशि उडता पखीया गणइ, कुहणी छेहि खात्र पाडइ[3] ।
विट्टु पुरुष देखता वाट उठाडइ ।
बगाई करति आबा[4] लुबि त्रोडइ, पग छेहि गाठि छोडइ ।
आखि हुतउ काजल हरइ, केसि बाधि[6] शिल वरइ ।
जीभइ जव छोलइ, निष्ठुर वचन बोलइ ।
जीण[7] बोलाविती माथा ना केस ऊभा थायइ । सा चालती अलच्छि जागवी ।
दुरित वन घनाली[8], शोक कासार पाली ।
भव कमल मराली, पाप तोय प्रणाली ।
विकट कपट पेटी, मोह भूपाल चेटी ।
विषय विष भुजगी, दुःख मारा कृशागी ॥ ८८ ॥ (म० १)

३९ कुस्त्री (५)

जीभइ जव छोलइ, बोलतु छुउड उतारइ ।
चालती भूमि फोडई, नव धामा तेर पाडई ।
बालि बाधी कोडीआ हणई, कुहणी छेहि खात्र पाडई ।
पग छेहडइ गाठि छोडई, साची अलछी,
मिरी तणी ऊगटी, चालतु पलेवणु
आगरण तणी दाह, जूर तणी वहिनी,

---

१ साथ, मथउ फाटइ २ भुटहि मुहि ३ पटइ ४ वाट ५ गानुवि [illegible] ७ जरिग
८ वराली

जिसी केवली, हलाहल विषइ ।
घडी हुई, इसी स्त्री प्राहिया पथिकु हुई ॥

(पु० अ०)

४० दुष्ट स्त्री (६)

काली, ककाली । ऑखि काणी, वणु खाणी ॥
आप टाणी, टीसइ घाणी ॥
पापनी अहिनाणी, न पीयइ को हाथ नउ पाणी ॥
आपरइ मनि राणी, लक्ष्मी नी बहिन जाणी ॥
कठोर वाणी, आडोसिये पाडोसिये पिछाणी ।
वाङ्ग[1] तउ काढियइ परीताणी, परमेस्वर काइ पडोरि आणि ॥
कोचरी, करइ अगोचरी ॥
कुरूप, बइसइ चूप ॥
काकमरी, जाणीये खरी ॥
काक जघा, लेवइ ऊवा सूधा ॥
कुहाडि, छाडि सकइ तउ छाडि ॥
कु कुलखिणी, सुखणी ॥
नरगणी पापिणी, जाणे सापिणी ॥
टिरती जाबडी, जीभइ बोबडी ॥
वली बाझ, घाणु स्यु न लीजइ जेहनु नाम साझ ॥
लाबडी, जिसी मूकी कावडी ।
पडी, सडी ।
धणी री छाडी, भले भाडी ।
कामि काज माठी, निरति सुरति नाठा ।
आखि चूची, कानि ऊँची ।
लाबा दात, करइ रात ।
निकज्ज, अकज्ज ।
निस्नेह, दुर्गन्ध देह ।
जीभाल, रीसाल ।
अलवइ बोलइ गालि, फिरइ कुहालि ।
निरदाखीण, अकुलीण ।

---

१ वाङ्ग ।

बोलती छडउ उतारइ, रीसइ छोरू नइ मारइ ।
जइ को वारइ, तउ साहमु तेहनइ विडारइ ।
जण जण स्यु आफलइ, बोलती विसइ हाथ उछालइ ।
जाअइ खेत्र खलइ, घरि वित्रोड करि बाहिर मलइ ।
पूरी पापिणी, फूफूती सापिणी ।
जे चालती कवच्छ, साची अलच्छ ।
जीभइ जब छोलइ, सासू सुसरा नू नखइ ओलट ।
अगार तणी सउडि, विढइ सहू सु दउडि ।
बोलता केस ऊभाथाय, मनुष्य नासी घरे जाय ।
बिलाड मुखी, धणी नइ दुखी ।
बगाई खाती, • ।
गोडउ गिलइ, झागूडे मुहडउ छिलइ ।
जाणे आरण नी राख, छोरू नइ लागइ जेहनी चाख ।
पर मर्म चापइ, आगलउ बोलतउ थरहर कापइ ।
जे जे चालत् पलेवणू, एहनू नाम न लेवणू ।
जिवारई गृहस्थ नइ जोग, तिवारइ होइसी कुकलत्र तणउ सयोग ।
चालती चीतरी, ।
लावा लूतरी, किता कहू कूतरी ।
पुण्य द्वार तणी आगल, मोक्ष तणी भागल ।
जेह जीव नइ होइ पापकर्म भारी, इसी सतापकारी तऊ मपजइ नारी ।
कहइ 'वीर' अणगारी ।

इति दुष्ट स्त्री वर्णक ॥

(कु०)

४१ दुष्ट स्त्री (७)

काली, ककाली । काणी, कोचरी ।
कुरूप, कुत्सित ।
काक जघा, काकसरी ।
कुहाडि, कुलक्षिणी,
सापिणी, पापिणी
सुखिणी, नरगिणी
लाबडी, बोबडी ।
सडी, पडी ।

वर्णारी छाडी, भले भाडी ।
कामकाज माठी, निरति सुरति नाठी ।
आखिचूची, कानिऊची ।
लाबदाति, करइराति ।
निकज्ज, अकज्ज ।
नि स्नेह, दुर्गंध देह ।
जीभाल, रीसाल ।
निरढाग्वीण, अकुलीण ।
जिवारइ गृहस्थ नइ होइ पुण्य तणउ वियोग,
तिवारइ होइ कुकलत्र तणउ सयोग ।
जे वालती वाछ साची अलछि ।
बोलती डारइ, रीसइ छोरू मारइ ।
बोलती विमइ, हाथ उछलइ ।
घरि वित्रोडकरी बाहरि मिलइ ।
फूँफूँती साविणी, पगी पाविणी ।
चालती चीनीरी, लावालूत्तरी कूनरी ।
पुण्य द्वार तणी आगल, मोक्ष नी भागल ।
इसी सताप कारी, तउ सपजइ नारी, जइ जीवनइ होइ पापकर्म्म भारी ।

(सू०)

४२ स्त्री दुर्गुण (८)

स्त्री हृती लाज नही, मर्यादा नही, अपेक्षा नही
कुल जाति मालज ऊपजावइ ।
अयुक्त साहसु खेलइ, सुख पाए पेल्हइ ।
कुलाचारु लोपइ, क्रियाद्वार लोपइ,
सत्य सौच आचार विचार लोपइ ।
मातृ पितृ कुल द्रोह करइ
स्वसुरु कुल द्रोह करइ
किबहुना जिण प्रकारि काक पासि सौच नही
तिणी प्रकारि स्त्री पासि भलउ काइ नहीं ।

(पु० अ०)

४३ अधम स्त्री (९)

बोलती खाल पाडइ, फूक देती पाहण फाडइ ।
महाकालि, विकरालि । सपूरी आगि झालि[1] साची अलछि ।
जाची जेऊ काल रात्रि ।
वचनि सवागि शूल ऊपजावई, मिरी तणी ऊगटि ।
अगार[2] तणी सउडि, चालतउ पलेवणउ ।
दाव ज्वर तणी वहिन, नव धाया तेर ऊपाडइ ।
बगाई करता घाटी त्रोडइ, फूँक बेहि गाठि छोडइ ।
जिसी केवलइ हालाहलि घडी हुइ, प्रलयकाल तउ नीपनी हुई ।
बीछी ना आकुडा नी परि वाकुडी, कूड कपट कारि साकुडी ।
कुलक्षण तणी आकुडी ।
इसी सर्वाधम स्त्री जाणिवी ।
आवर्त्त सशया नाम विनाय ।

(स० १) १३७

४४ फूहड़ स्त्री (१०)

कुघरणि, महा कुहाडि ।
सदा वरइ आटोपु, बइठी भरतार दिइ निरोपु ।
डोला हेठि कि कि उधरइ, मुहि साम्ही[1] थी बरबरइ ।
रावणा सीधणा नितु अणाह करइ, सकल दिवस सूअर जिम चरइ ।
ऊँचा × नीचा वाक्य बोलाई, यही प्राहुण उटल[ं] कोलई ।
घोर छाकरू[१] भिडइ, बाद + गुलाम ऊपरि मुहि चडइ ।
घरि थकि सीकउ त्रोडइ, बोलावी माथउ फोडइ ।
पाणी माहि कलि ऊठाडइ, कुटुम्ब सदा दु खि पाडइ ।
इसी घर नारि दुर्मुखि, अधकार मुखि ।
सताप कारिणी, उद्वेग कारिणी, कलह कारिणी ।
महापाप तणइ उदयि पामीयइ, रोसि चडी कुणही न मनावीयइ ।
रावती सीवती न्हारउ मउलउ करइ दावउ काचउ करइ ।
ढीलउ गीलउ करइ । जे खावउ ते खाधउ

---

[1] मूलि [2] अम्बार [3] छहि

[१] वीवर

+ दीठु मगलू × अवाम्यु — ठगणको ठोरु याऊ कुवारा कवारा ऊपरि त्रिनत्रउ चडइ

शेप माखी भिणहणतउ-मेल्हइ । हाडलउ कूडउ खरडिउ मेल्हइ ।
घर[2] ऊखरलउ, माकुण माचा भरिया, जू भरिया गोदडा ।
कान सियाली[3] भरिया रालडा ।
फूहडा पगभरिउ साडलउ, उघरसाला[4] भरिउ उढणउ
हाथि पाणी नहीं, पगि पाणी नहीं ।
मल मलिन सरीर दीठीइ उकारी आवइ ।
ईसी फूहडी नूगामणी घर नारि कलिकालि घणी ।। (स० १)

४५ विरहिणी (११)

किसी एक विरहिणी हुइ ?
विरहावस्था, आहारि ऊपरि करइ अनास्था ।
सर्व श्रृङ्गार, मानइ अगार ।
तीणइ अबला, अतर्गत फूल कीधा वेगला ।
चद्र तपट पान, थ्या विखवान ।
विरहानल प्रज्वलइ अगु, सखी जन स्यू विरग ।
एहवउ काई थ्यु विग्र चित्तु, न उलगइ गीतु ।
न कुणही स्यु हसइ, सदा नीससइ ।
बोलावी खीजइ, मा बाप हुइ न भजइ ।
एहवी अगही अबाधि, कदली गृहि सूता नही समाधि ।
प्रवासी थियु रामु, कहिहइ कहइ चित्त नु विरामु ।
सूआ सालही रामति, तिहा विरमी मति ।
सारि सोगठू तेहुँ न सहाइ दीठू ।
सगली इ मिली सखी, थई विलखी ।
पुण तीहे नु कह्यउ न परीछइ, योगी नी परि बइसी रहइ छइ ।
मेल्हइ सगला नउ अभ्यासु, अरण्य समान मानइ आवासु ।
सूनी श्री फिरइ, भणयूँ कहइ नउ न करइ ।
एवडु काई विरह नउ व्यापु,
अनेकि सीतलोपचार करीइ पुण न भाजइ
शरीर नउ सतापु ।
दीहाडइ दीहाडइ देह खीजइ, नेमित्तिक ने वचने न पतीजइ
कहिनइ कहीइ, जेइ पहिलइ दीसि न विमास्यउ तउ इम ईजि वेदन सहीइ ।

२ वीबर ३ कानमियाली ३ उधर ४ उकार

जिम थोडेइ पाणी माछलु, तिमि विरहि कीधउ आत्मा आकलउ ।
जिमि द्विविध ससार देखइ, तिम आपणपू उवेखइ ।
पुणि रोअइ, अनि आखि ना आसू लूही दिसि पखा जोअइ
जिसी बाग विछोही हरिणी,
तिसी विरहि व्याकुलि तरुणी ।
गाढइ दुख सागर बूडी
तउ निद्राइ न तेडी ॥ ३७ ॥ (मु०)

४६ विरहिणी (१२)

हारु त्राडती, वलय मोटती ।
आभरण भाजती, वस्त्र गाजती ।
किंकिणी कलाप छोडती, मस्तक फोडती ।
वक्षस्थल ताडती, कुचूउ फाडती ।
केश[1] कलाप रोलावती, पृथ्वी तली[2] लोटती ।
ऑसू करी[3] कुचक सीचती, डोडली दृष्टि मींचती ।
दीन वचन बोलती, सखी जन अपमानती[4] ।
थोडइ[5] पाणी माछली जिम तालो वली[6] जाती, शोक विकल थाती ।
क्षणि जोयइ, क्षणि रोअइ ।
क्षणि हसइ, क्षणि बइसइ[7] ।
क्षणि आक्रदइ, क्षणि निदइ ।
क्षणि मूझइ, क्षणि बूझइ ।
तेह तणउ तणु, सतापइ चदणु ।
कमल[8] नाल, पुण मेल्हइ झाल ।
चद्र काति[9] ज्वलइ, पुष्प[10] शय्या बलइ ।
हारु, भावइ अगारु ।

पाठातर

१ कुत कलाप रोलता (पु० अ०), कतुल कलाप रोडती (मु०) २ मराडत्र (पु० अ० ओर मु०) ३ मकजलि वाष्पाजलि (पु० अ०) सकल वाष्पि (मु०)

४ इसके बाद प्रति (पु० अ०) मे 'गुणवुण रोइती, अपरापर दिग्मरडल जोइनी ,। पाठ हे ।

५ पाणीय रहित मच्छी जिम तिलोवलिजाती, विकलथाती (पु० अ०) पाणीय रहित मत्स्य जिम वैल्लती, (मु०) ६ विकसइ (पु० अ०) विहसई (मु०) चद्रोपलपनइ । ७ क्षणि एक डबूकइ, क्षणि एक सूवई (मु०) ८ मृणाल नाल ९ ज्योत्स्ना (पु० अ०) चद्रिका (मु०) १० चद्रोपलवलई (पु० अ०) चद्रोपल खलइ (मु०)

कदली हर,[१] मानइ जमहर।
जे जल सीकर[२] ते उद्वेग कर।
जउ शीतलोपचार ते करइ[३] विकार।
इण परि प्रज्वलित स्नेह पटल।
विरहानल नीपजइ,
विरह ताप निश्वास चिता मौन कृशागता।
अरुइ शय्यानिशादैर्घ्य जागर' शाशिरोष्णता॥
अप सारथ्य घनसार कुरु हार दूर एव किं कमलै'।
अलमल मालि मृणालैरिति वदति दिवानिश बाला'॥
अथ सा पुनरव विह्वला, वसुधालिंगन धूसर स्तनी।
विललाप विकीर्ण मूर्द्धजा सम दु:खामिव कुर्वती स्थलीं॥ ११८। (स० १)

(स २) मे विशेष पाठ—

जे तरू किसलय तप, सोइ सताप करु

(स ३) मे विशेष पाठ—

आखि चचाले। बैठी डोलै। घूँघटरी ओट धरती लौटे।
आसूइ धरती सींचै, दुखे आँख मींचै।
कुटुंब नै करै कानै, सहेलिया नै अपमानै।
मूर्छा पामती धरती ढलई,
खिण उघाडै मुहडइ मूडैधरइ,
अहोराजकुल दिवाकर, हो करुणासागर
हो असरण-सरण, मुझनइ मूकी नै किहा गयो।

४७ विरह-विलाप (१३)

हा कान्त! हा हृदय विश्रान्त!
हा प्रियतम! हा सर्वोत्तम!
हा दयत[१]! हा प्राणहित!
हा सौभाग्यसुदर! हा भाग्य पुरदर!
हा अमृत वचन! हा चन्द्रवदन!
हा सुदर गात्र! हा प्रेमपात्र! (पु० अ०)

---

१ गृह (मु०) २ शीतलकर (पु० अ०) शीतलु (मु०) ३ भजइ (पु० अ०) (मु०) ४ इणि पर प्रबल, प्रज्वलित स्नेह पटल (पु० अ०) (मु०)

१ दयित (स० १)

४८ वेश्या वर्णन (१४)

चतुषष्ठी कला[1] कुशल, कोमलालाप पेशल ।
निरुपम[2] रूप लावण्य सरूप, विलसद् गुण निधान कूप ।
चतुरिम चाणक्य[3], ज्योत्सना माणिक्य ।
इगिताकार निपुण[4], कामशास्त्र विचक्षण[5] ।
चपक कलिकावत सुकुमार, सत्पुरुष सार सुकुमार ।
इस्यउ पुरुष देखि, कुट्टणि भणइ विशेखि ।
वस्यि[6] करै भक्ति, बडी आसक्ति ।
आव्यउ आपणौ गृहागणि, चाक्तउ[7] जाणौ चिंतामणि ।
निवृत्ति करु, साक्षात कल्पतरु । (सू०)

४९ स्त्री स्वभाव (१)

खिण रूसे, खिण तूसे । खिण मुलके, खिण छुरके ।
खिण मुरझे, खिण बुझे, खिण झूझे । खिण धीजे, खिण सूझे ।
खिण हँसे । खिण सस्नेह साहमु जोवे,
खिण प्रीति तोडे, खिण प्रीति खिण रोवे ।
खिण टले, खिण मिले । खिण कोप उछले, खिण वले। खिण तारे, खिण मारे ।
खिण राचे, खिण माचे । खिण विरचे, खिण वढे ।
खिण गाइ, खिण उदास थाइ । खिणापडे, खिण[1] पाडे, ।
खिण राग दिखाडे, खिण महिला मर्म उघाडे ।
खिण हसे, खिण मा र वाघसे । खिण भूडी, खिणरुडी ।
|| एहवो स्त्रीनोस्वभाव || (स० ३)

---

१ विज्ञान (मु) २ 'देखता मोहियइ बडाबटा भूप, विमल सद्‌गुण निधान कूप ।' इससे पूर्व अधिक पाठ—'महा एक अनूप, जोवता अवगुणइ छाह नइ धूप ।' (कु) ३ चतुर वाणिज्य (मु) ४ 'अ ग मइ घणा गुण' (प्रति कु, मे अधिक) ५ जाणइ नरनारी ना लक्षण (कु म अधिक) इसके आगे आर अधिक—

वक्षस्थल विशाल, अत्य त सुकमाल ।
रूपइ उर्वसी, मिलइ लोचन विमी ।
साक्षात रभा, देखता उपजइ अचभा ।

६ वल्मि (कु) वल्से (मु) ७ चालनउ (मु) आविउ (कु)

१ खाटै

५० स्त्रीना काम (२)

दलवा, भरडवा, पीसवा, थालघोवा, झटकवा, छाण पूछा, लीपणा, वासीदा, राधवा, प्रीसवा, कालवा, साधवा, इत्यादि स्त्री का काम ।

(स० ४)

५१ स्त्री उपमा (३)

रति, प्रीति, रभा, तिलोत्तमा, इन्द्राणी ४ अपछरा, उर्वसी, लक्ष्मी, गगा, देवकन्या, नागकन्या, किन्नरी, विद्याधरी, खेचरी भूवरी, सरस्वती, गौरी इत्यादिक [एह्वी कन्या]

(स० ३)

५२ स्त्री नाम (४)

कपूरदे, रत्नादे, रूपादे, अमृ प्रतापदे, सहजलदे, मूमलदेवि, चापल-देवि, रामलदेवि, पाल्हणदेवि, पाल्हणदेवि, राणी कपूरमजरी, रत्नमजरी, मदनमजरी, सोभाग्यमजरी, कुमरि ॥

(पु० अ०)

५३ मालवी स्त्री नाम (५)

चगा, गगा, चपा, गोभा, जसोदा,
जागसा, जसमा, वरजू, वेणि, खेडा,
सोना, लाली, लखमी, नीला, तेजू,
तिलका, अगरा, आसा, फूला, अनूला,
इद्रा, सुदर,

५४ मेवात स्त्री नाम (६)

गुलालदे, गुलाबदे, गोरादे गूजरदे ।
गुमानदे, गोपालदे, साहिबदे, चतुरगदे,
सोहागदे, सुजाणदे, सुरताणदे, देवलदे,
दुरगादे, साहिया दे[1], राययादे, सोभागदे
चमेली, कसेरी, कपूरी, कस्तूरी,
राकली गाकली,

---

१ साहिबादे

५५ मरुधरस्त्रीनाम (७)

हरकी, वीरकी, केसकी, रामकी, सोनकी, पूरकी,
देवकी, राजकी, चापली, पेमकी, आसकी, कोडकी,
ऊमली, सिवली, देवली, दीपली, जगली खेतली,
मानकी, नेतली, पासकी, इत्यादि मरुधरस्त्रीनामानि ॥

५६ दक्षिणी स्त्रीनाम (८)

तेजाई, तुकाई, तुलजाई, जोगाई, झरवाई, झबाई,
जम्यबाई, मोगाई, भोगाई, गगाई, मगाई गोभाई,
रगाई, रेवाई,[1] शिवाई, देवाई, चगाई लबाई,
केसाई, कोडाई, कोकाई, कनकाई, जमुनाई, हसाई,
भगाई, मणिकाई, भीमाई, कासाई, कामाई, जीवाई
फूलाई, द्वारकाई, पीलाई, राजाई,

इति दक्षिणीस्त्रीनामानि ॥

५७ गुजराती स्त्री नाम (९)

छोटी, चडकली, मडकली, मागबाई
गाबाई, गोरबाई, लाडबाई, लाछाबाई
लीलबाई, लालबाई, वीरबाई, वइणबाई
सेजबाई, बेजबाई, बालबाई, गेलबाई
तेजबाई, फूलबाई, पूतली बाई, सेवित्रीबाई,
कुअर बाई, कीकी बाई, रीडली बाई, मट्टूबाई,
मटकूबाई, फटकूबाई, फणकूबाई, झणकूबाई,
वीभूबाई ॥

(स० ३)

---

१ रीवाई

सभा श्रृंगारादि-वर्णन संग्रह

विभाग

प्रकृति-वर्णन

प्रभात, संध्या, ऋतु आदि

१ प्रभात-वर्णन (१)

हवै कूकडा बोल्या, लगारेक नीद थी डोल्या।
नींदै भकोल्या, मू की सभोग नी लोल्या, स्त्री भर्तार डमडोल्या।
आवी नारी, बार उघाडी, राति अँधारी।
भर्तारइ लूगडूँ आल्यू, वासै पाछै घल्यू।
दही सभाल्यू, विलोवणू घाल्यूं।
राति ज दीसै छइं, घरटी पीसै छइ।
इतरइ शख वाग्या, भत्रकी नै जाग्या।
ऊठ्या नागा, लूगडा पहिरवा लागा।
पहिर्या वागा, आपणौं कामै लागा।
टीवइ जोति घटी, चाकी परीवटी।
दूती परी सटी, चद जोति मटी।
गणिका नी महिमा घटी, माथा नी वाँवै लटी, पाप मति फटी।
तितरै भालर वागी, स्त्रियो पण जागी।
ऊठवानै लागी, भावठि भागी, पुण्य दिसा जागी।
किवाड खोली, मुँहडै बोली—
उठो बाई, जागो भाई, राति बिहाई।
प्रह पीली थई, राति परी गई।
कलीं चूण लई, हीइ सरदई।
आकाश लाली भई, स्त्रियो गहगई, सबकू भली भई।
शैया सकेली, अलगी म्हेली।

रजनी खेली, स्त्री रही इकेली ।
वात सभारै पेली, ऊभी देहली, नयणै रेली ।
प्रभाती गावो, मगल ध्यावो ।
आणद पावो, दरबार जावो ।
घोडै जीण करइ, कोतल आगल करइ ।
झाँखी नै मुजरै, बडै गुजरै ।
तीन हजारी, पच हजारी ।
सात हजारी, महा बजारी ।
बार हजारी, लाज वधारी, काज सधारी ।
मुजरै आया, मोजा पाया घोडा लाया ।
निवाज गुदारं, भेजत आवै ।
तुरक मुगल, सईद अवल ।
काजी आगे, पगे लागे ।
नोबत गडगडै छै, पारसी भणै छै, खुदा खुदा करै छै ।
चोपू उछेरयू, गोवालै घेरयू, आघु सू प्रेरयू ।
पथी परा चाल्या, आघा हाल्या ।
सोण साउ वाल्या, साथै सबल घाल्या ।
वाका मारग टाल्या, सज्जनिया पाछा वाल्या ।
सूरज उग्यो, ससार जग्यो ।
व्यापारे लग्यो, पनघट लग्यो ।
आप आपणा धर्म करीइं पुण्य करीइ, अरिहत धरीइ ।
सुणो हो भ्रात, करो पुण्य नी वात ।
पवित्र करो गात, गई रात, थयो प्रभात ॥ (स० ३)

२ प्रभात-वर्णन (२)

प्रभात समउ हुयउ प्रह फूटउ[1] ।
लोक तणइ ध छूटउ ।
तारागण विरलउ हुयउ, चद्रमा विच्छायु थियउ ।
कूकडउ[2] लवइ, देवतणाबार ऊघडा ।
प्रभातिक तूर्य वाजिया, राजभवन वैतालिक पढइ ।

१—अ धकार फीटउ । गाय तणा गाला छूटा ।
२—कूकडा तणी ऊलि लवइ,

हस्ति सिखलारवि कानि पडियउ न साभलियइ ।
विलोणा तणा भरडका ऊठिया,[1] पथिया मार्गिथिया ।
ब्राह्मण तणै घरे वेदध्रुणि[2] विस्तरियउ ।
धार्मिकलोक अनुष्ठान[3] पर हुया । (पु० अ०)

३ सूर्योदय-वर्णन (१)

उदयाचल चूलिकालकार, निज किरण विकाशितान्धकार ।
प्रवर्त्तित सकल महीतल व्यापार, चक्रवाक प्रीतिसूत्रतणा सूत्रधारु ।
निजकर निकर प्रतापाक्रान्त भूतल, इस्यउ सूर्यमडल ।
कातिसमूह प्रकासइ, उद्दड पद्मिनी खड विकासइ ॥ ६५ ॥ (मु०)

४ संध्या-वर्णन (१)

सूरज ना किरण पश्चिम ढल्या, पथी सगा नै मल्या ।
विरही ना हिया बल्या, गोवाल घरै वल्या ।
चोपू लाव्या, आप आपणा घरै आव्या ।
पखी टलवल्या, मालै जावानै खलभल्या ।
चोर सलसल्या, आवै हडफल्या ।
आकाश राता, मेहे करी माता ।
किहाकिण नीला, किहाकिण पीला ।
नानाप्रकार ना रग, भला सुरग ।
राछ पीछ सकेल्या, ठिकाणै मेहल्या, कारीगर घरै खेल्या ।
सक्का पाणी भरै, छटकाव करै, देसोत डेरै ।
फूल विखेरै छइ, छडीदार जी-जी करै छइ ।
दुलीचा विछावै छइ, उमराव आवै छइ ।
मोजा पावै छइ, कीर्तन थावै छइ ।
गुणियन गावै छइ, अब्रखास जुडै छइ ।
पाछा ते मुडै छइ, दुसमन ते कुढै छइ ।
हीयो हीयाते अडै छइ, असवार ते खडै छइ ।
एक-एक मा पडै छइ, कुजडिया लडै छइ ।
गुदडी जुडाणी छइ, अनेक वस्तु मडाणी छइ ।
दलाल बोलावै छइ, रसिया मोलावै छइ ।
माला गूथावै छइ, बीडा खावै छइ ।

१—उपजइ । २—ध्वनि । ३—प्रतिक्रमण (स० ११५०)

पान मिठाई ल्ये छइ, पईसा दे छई ।
झालर झणकै छइं, रणीसींगा रणकै छइ ।
शख भणक्कै छइ, कतेब भणै छइ ।
तसबी गिणै छइ, खटकर्म ते करै छइ ।
लोक अरापरा फरै छइ, दीवा हाटै धरै छइ ।
तेल ते भरै छइ, सध्या ते करै छइ ॥ (स–३)

५ चन्द्रोदय–वर्णन (१)

गजलक्ष्मी स्फाटित दर्पणु, चकोर सतर्पणु ।
अमृतमय किरणु, तिमिर हरणु ।
मुग्धवधू विदग्ध शिक्षिणोपाय, प्रणय कुपित कामिनी माननोपाय ।
विरहिणी हृदय करपत्रघातु, चकोर दत्तलातु ।
चक्रवाकु निःकारण शत्रु, कन्दर्पराजनउ छत्रु ।
अमृतइ भरिया चन्द्रकान्तु, यामिनी-कामिनी कान्तु ।
प्रकाशित कुमुदाकार, इस्यउ ऊग्यउ रजनोकार ॥ ६४ (मु०)

६ अंधारी रात–वर्णन (१)

साझ परी गई, गुदडी परी थई, दीवै जोति भई ।
चोहटै भीड मिटी, व्यापार नी महिमा घटी, हाटै तालू जटी ।
आप-आपणै घरै आया, कूँची लाया ।
स्त्री सोलैं सिणगार सजै, गणिका जारनै भजै, घडियाले घडी वजै ।
सर्वकारज साध्या, पाडा बाध्या, रधारण राध्या ।
व्यालू कीधा, किमाड आडा दीधा ।
सीरख माचा सभाल्या, ढोलिया ढाल्या ।
ऊपरि पहतेडा वाल्या, सूवा नै भाल्या, जामण घाल्या ।
मिठाई खाइ छै, कहणी कहवाइ छै, नीद आवै छै ।
सूपा पडया, जार परस्त्री नै अडया ।
अधकार व्याप विस्तरै, कुमाणस पर घर सचरै ।
काजल जेहवी, स्त्रियोनी वेणी जेहवी ।
यमुना ना प्रवाह जेहवी, रेवतकाचल जेहवी ।
अजनाचल जेहवी, पटाभर कुजर जेहवो, कालीघटा जेहवी ।
काली-काली स्याम, • • ।
हाथे हाथ न सूझै, कोई कोईनै न बूझै, विचार माणस मू झै ।

काइ न कहवाई छै, दूती उतावली धाई छै, सदेसो कहवा जाइ छै।
केडते कसै छै, चोरते धँसै छै, कूतरा ते भसै छै।
घोडा ते हणहणै छै, नीला जवते चरै छै।
कोटवाल ते फिरै छै, चोकी ते करै छै।
रणतूर बजावै छै, 'खबरदार खबरदार—जागते रहियो—जागते रहियो' कहीनै
जगावै छै, चोर चकार नै भजावै छै।
घणी सी कहीइ वात, दुसमणनी न पूगै घात।
मनुष्यनी नोवै यात, एहवी अधारी रात। (स० ३)

७ अंधकार-वर्णन (१)

काली लली—रात्रि रात्रि प्रतिइ मिली।
जिसी भ्रमरनी पाख, जि० अजनाचल नउ शिखर।
जि० कुमाणस मुख, जि० स्त्रीतणी वेणि।
जि० यमुना प्रवाह, जि० कज्जल नउ अबार।
जि० गुलीनउ रग, जिसिउ कसीसनउ जल॥ ७३ (स० १)

८ वसंतऋतु-वर्णन (१)

विरहिणी हसंतु, पुहतउ वसतु।
फूलइ वणराइ, नगरमाहि न फिराइ।
रुलीइ तिम' निजईय वनि।
मेल्ही वइराग, खेलीइ फाग।
कामराज ना भूप, तिसा मस्तकि रचीइ चूप।
अति सुविशाल, आत्र नी डाल।
तिहा बाधीइ हिडोला, रमइ नर भोला।
फूलहरा भरीइ, भला कदलीगृह अनुसरीइ।
कोइलि वासइ, रुलीईत विलासी नासइ।
भर्त्ता स्त्री रलिए, खेलहि खडोसली ए।
विहसी वउलसिरी, भमइ रहइ भमर पाखलि फिरी।
चपक नी कली, चपक ऊपर नीकली।
मस्तकि मरूआ, पहिरे लोक गरूआ।
रितुराज नउ भालु, वनि महक्यउ वालउ।
परिमल भारी, उल्लसी देव गधारी।
दमणउ पहिरीइ, कुण एकु चित्तु न हरीइ।

नीकली निरवाली, हियइ पहिरी बाली ।
सुकृतीया हुइ सुखकरणी, इसी विहसी करणी ।
दीसइ महाभरि, आबानी माजरि ।
उल्लस्या अशोकु, वसंत रागु आलवइ लोक ।
इम वसंतश्री विलसइ, सुरराज हुइ हसइ ॥ ४१ (मु०)

६ ग्रीष्मऋतु-वर्णन (१)

गयो सियालो, आयो उन्हालो ।
लू वाजै छै, शीत लाजै छै ।
पग दाझै छइ, तावडो तपै छइ ।
रूख पात झडै छइ, रूख पवनै पडै छइ ।
पणिहारी पाणी माटि लडै छइ, वावकूआ सूकै छइ ।
लोग काम चूकै छइ, पथीमार्ग मूकै छइ ।
तावडो लुकै छइ, कंठ सूकै छइं ।
जोगी जाप जपै छइ, जीव रूख नै लपै छइ ।
सर्वछाया छिपै छइ, तावडो तपै छइ ।
, चंदन प्याला भरावीजै ।
तैखाने पोढीजै, मलमल ओढीजै ।
एलची साकर ना पाणी पीजै छइ, वाय लीजै छइ ।
मोज दीजै छइं, करतूत कीजै छइ ।
लाहो लीजै छइ, आंबा मोरया छइ ।
फाग खलै छइ, पचरका मेलै छइ ।
मुहडै गुलाल छेलै छइ, लोक हाथ झेलै छइ ।
हीया विकसै, लोक हँसै ।
बागवाडी जाइजै, तलाव न्हाईजै ।
कमल लाइजै, चाग वाइजै ।
राग[1] गाइजै, आणंद पाइजै ।
दुलीचा विछाइजै, यार बोलाईजै ।
गोठ कराइजै, पात्र नचाइजै ।
बाजा बजाइजै, पाय नचाइ जइ ।
रंग रमीइ, परदेस काइ भमीइ

---

१ ःरास।

अवल्ल जीमिइ, • ।
केसरीलाल, रमोगुलाल ।
बइसै चउसाल, एहवो उष्णकाल । (स० ३)

१० उष्णकाल-वर्णन (२)

मह्रा पित्त[1] नउ आलउ, आव्यउ उन्हालउ ।
लूअ वाजइ, काननी पापडी दाझइ ।
झाझुआ वलइ, हिमाचल ना शिखर गलइ ।
निवाणै खूटा नीर, पहिरीइ आछा चीर ।
हथेली जेवडा, जीमइ[2] भोना बडा ।
एवडउ ताप गाढउ, भावइ करबउ टाढउ ।
पाचइ वण, राणी ना ढीला थायइ काकण[3] ।
वायु वाजइ प्रबल, उडइ धूलि ना पटल ।
सियालइ हूती राति मोटी, ते उन्हालै थई छोटी[4] ।
सूर आपणपइ तपइ, जगत्र सतापइ[5] ।
जे जीव थलचरइ, ते जलाश्रय अणुसरइ ।
लोक ल्यइ आबलवाणी[6], मेली टाढा पाणी ।
केइक जीमइ खाटा, तडकउ टालइ बाधइ त्राटा ।
साहूकार ल्यइ साकर, तपति नई सिर द्यइ टाकर[7] ।
एवउ उष्णकाल, फूलइ अंब डाल[8] ।

११ उष्णकाल-वर्णन (३)

जिसी दावानल तणी ज्वाला तिसी लू वाइ ।
जिसिउ बावन्नपल तणउ गोलउ धमिउ हुइ, तिसिउ आदित्य तपइ ।
जिसी भाड तणी वेलू तिसी भूमिका धगधगइ ।
मस्तक तणउ प्रस्वेद पानी[9] उतरइ ।
धर्मि जीवलोक गलगलइ, श्रीमत तणा चउबारा झलहलइ ।
जलद्रा शरीरि लगाडीपइ, गुलाल[10], तणा अभ्यगम[11] कीजइ ।
बावन्ना श्रीखडघसीयइ, चउदिसिहि वीजणा फिरइ ।

१—पित्र २—जीमइलोक ३—रणीय हुइ ढीला थाइ काकण ४—सीयालइ हुती मोटी रात्रि, ते नान्हीयइ रात्रि, ५—जगयउ तपइ ६—आछिल वाणी ७—तपति माहि फिरइ कागलिया चाकर ८—फलीयइ अंबा कालि। ९—पाल्ही। १०—गुलाम।
११—अभ्यंग।

कुडा बहक्या, केवडा महक्या ।
कुद उलस्या, करसणी हरस्या ।
कदम्ब महमह्या, मयूर गहगह्या ।
पपीहा वासइ , विरहणी उसासइ ।
पर्वत[1] नइ सिखरि स्नेह नइ भरि ।
सीगड़ू[2] वायइ, मल्हार गाइ ।
भील नाचइ, महिषी माचइ ।
तूठा मेह, उलस्या स्नेह ।
नदी पूर वहिवा लागी, पग न लहइ पागी[3] ।
जल सू भरया निवाण, पृथ्वी प्रवर्त्ती मदन नी आण ।
हरी प्रगट हुआ, दीसइ वराह रा जूथ जूजुआ ।
सालूर ना सामलीयइ स्वर, जाइ दीसइ विकस्वर ।
भला केलिवीयइ[4] वालर, वावीयइ भालर ।
अति सरूप, नींबूआ नीपजइ भूप ।
ठामि-ठामि[5] मन मोहीयइ, शालि ना क्यारा डोहीयइ ।
गुहिरउ मेह गाजइ, दुर्भिख्य तणा भय भाजइ ।
आगम नरेसर ना जाणै नीसाण वाजइ, बग पक्ति विराजइ ।
वाव्याकरण वाधइ, लोक धम कर्म बेवै साधइ ।
वेला लहलहइ, सर्वलोक आचारइ रहइ ।
पर्वत थी नीझरण छूटइ, भरिया सरोवर फूटइ ।
मघा अधकार विस्तरइ, कमल परिमल निस्तरइ ।
अखड धार पाणी पडइ, करसणी खेत्र खडइ ।
सीम जडइ, लोक ऊँचा चडइ ।
केई एक तिलकी पडइ, कोठार खोलीजइ ।
कढीयारा दीजइ, एक-एक नइ पतीजइ ।
धान रा धणी छीजइ, कागदी पीजइ (काम दीपीजइ) असबाब सहु भीजइ ।
इसउ वर्षाकाल जाणी, हीयइ सतोष आणी ।
साधुमास च्यार एक ठउडि रहइ, पीठ फलक संग्रहइ ।
घणू स्यू कहीयइ, जइ रूडू थानकि लहीवइ, तउ चउमासि एक रहीयइ ।

१ बप्पीहा (सु०) (मु) २ सीगलू (सु०) (मु०) ३ देश-विदेश नी वाट भागी (मु०) ४ कोलविइ (मु०) ५ अणवावै (मु०) [(सु) और (मु) प्रतियो मे यह पाठ नही है ।]

फोरवियइ तप री[1] सगति, श्रावक करइ[2] भगति ।
स्यउ बधुवर्ग,[3] साधु नइ[4] इहाई स्वर्ग ।
लाभइ प्रासुक[5] आहार, तउ लेवउ[6] व्यवहार ।
वइसइ श्रावक सुजाण, भला करइ वखाण ।
पुण्यवत नइ[7] सगलइ पूरउ, नहीं मुनिसर[8] नइ काई अधूरउ ।
(कु०)

१३ वर्षाकाल-वर्णन (३)

ऊमटी घटा, बादल हुई एकठा ।
पडइ छुटा[9], ऊलसै[10] कुलटा ।
भाजै भटा, भीजै लटा ।
पुहवि पुण्य प्रगटा, ऋषिराजान ठामि बइठा ।
मेह गाजै, जाणे नाल गोला बाजै ।
दुकाल लाजै, सुवाय बाजै ।
इन्द्र राजै, ताप[11] पराजै ।
बीजली झबकै, पाणी भभकै ।
मेह टबकै, हीया द्रबकै ।
नदी खाल उबकै, वनचर भबकै,[12] आयो अबकै ।
घणा जीवनी उतपत, को पथ चालो मत ।
बोलै मोर, डेडक जोर,[13] दादुर करै सोर ।
अधार घोर, पइसै चोर ।
भीजै ढोर, स्त्री करै निहोर ।
चद सूर बादलै छायो, पथि घरे आवि धायो ।
मेघ बरसै सवायो, रूठो नाइ मनायो ।
खलकै खाल, वहै प्रणाल ।
चचूइ बाल, चूइ ओरा साल ।
साप गया पयाल, नदी वहै असराल ।
झडी लागी, करसारी[14] दिसा जागी ।
वरसइलो पूर, भाजै रूख चकचूर ।

---

१ जीमवानी हुई २ गाढी (मु) घणी (मु) ३ सू करइ अपवर्ग (मु) ४ महात्मा हुई (मु) ५ परघल 'विशेष पाठ' (मु) ६ स्याकार करइ विहार (मु) ७ सहु करइ (मु) ८ तपोधन हुई। ९ छाटा १० ऊलटै ११ दाप।
१२ लबकै १३ डेड करै सौर १४ लोक दशा (कौ)

हाटि बिचै वाहला, लोक थया काहला[1] ।
जूना घर पडै, लोक ऊँचा चढै ।
आभ हुआे रातो, मेह थयो मातो ।
हाली हल खडया, वाडी सू सेरा जडया ।
नीली हरियाली महमही,[2] घणा दूध नै दही ।
मारग भागा, जे जिहा ते तिहा बइसवा लागा ।
गयो दुकाल, हुआे सुकाल ।
पाणी छडै पाल, एहवा वर्षाकाल । (स० ३)

१५ वर्षाकाल—वर्णन (४)

वर्षाकाल हूउ वहतउ रहिउ कूउ ।
कालूबणि वहइ[4], मेघतणा पाणी वहइ ।
पथिक[3] गामि जाता रहइ, पूर्व दिशि तणा वाय वायइ ।
लोक हर्षित थाइ । · · ।
आकाश धडधडइ, खोलड[5] खडखडइ ।
पखी तडफडइ, वडा मानुस अडवडइ[6] ।
काष्ट खंड सडइ, हाली लोक हल खेडइ ।
आपणा घरबारि कादम फोडइ[7], तिहा मुडि २ वेलू रेडइ[8] ।
पाणी पार न लहइं, साधु साध्वी विहार न करइ[9] ।
श्रावण लोक जयणा करइ । ·· · · · ।
अनेक जीवांध[10] नीपजइ, विविध धान्य ऊपजइ ।
लोक तणी आस पूजइ, गोकुलना[11] वृंद दूझइं ।
अनेक कोठार भरियइ, जूना धान्य वावरियइ ।
[12]आवइ रेलि, बाधइ वेलि ।
[13]ऊपजइ नीलि फूलि, कुटबी कणवीकइ मूलि ।
[1] फीटउ दुकाल, नीपनउ सुगाल ।
एव विध वर्षाकाल ॥ ४१ ॥ (स० १)

१—आकुला २—हरी डहडही । ३—वाविपाणी भरता रह्या, वादल उनह्या । ४—पथी । ५—खाल । ६—लडथडै ७—फेडै । ८—वीजा काजमेडै । ९—थईइ । १०—जीव । ११—गाय भैंस । १२—अनेक लपसै, लोक हँसै । १३—अनेक वनस्पति फूलै । १४ दुकाल नासीजे, सुकाल होइजै । (स० ३)

१६ वर्षाकाल वर्णन (५)

ऊपरि मेघ गडगडइ, अमोघ धारा पाणी पडइ,
अनेक घर खडहडइ, कर्दमि वृद्ध अडब्रडइ, दुर्दुर रडई ।
बीज झबाक जाइ, पामर लोक घर छाइ,
पथिकलोग ठामि ठाइ, पृथ्वी हरिताकुल हुइ ।
सरोवरहुया गडलु, सर्वत्री टोडा प (ख ?) डई ।
बगुला रूखसिहर ऊपरि चडई, वामर गिरी कदरि वीसमइ
हस पहुचइ मानसिसरि, ˙ ।
मयूर नाचइ, विरहणि सोचइ ।
करसणी लोक हल खेडइ, धनवतलाक धान खेडइइसउ वर्षाकालु ।।पु० अ०

१७ शरद ऋतु वर्णन (१)

ऊन्हालो नउ भाई, अनी लेई वैश्वानर नउ अगु काई ।
न जाणीइ किहाई हूतउ दिशि सप्रकाश, शरदऋतु पहुतउ फूल्याकाश ।
अगस्ति ऊगिउ, मेहनउ भरग्यउ ।
पाणी थ्या निर्मल, करसण सफल ।
चद्रज्योत्स्ना शीतल, पीजइ अभावताइ जल ।
हस स्वर सुखावा विलसिआ लागा ललभ (त) वर्ण्ण गावा ।
स्त्री सुनेत्र, डोहइ क्षेत्र ।
साड मावइ, कोठीबडा पावइ ।
वैद्य सुविचारू, करइ पित्तोपचार ।
करीइ स्यूस खाइइ, खाडु नइ पुहुक खाईइ ।
पूगी लोक नी आस, मह्रा भरिवा परया कपास ।
कोठा अन्न भरीइ, कुणहि हुई काई न करीइ ॥ ३६ ॥ (मु)

१८ हेमन्त ऋतु (१)

अति वसतु, आविइ ऋतु हेमन्तु ।
जिहा सीयना भर, सेवीइ निर्वात घर ।
तुलाईए पुढीइ, भली तुलाई उढइ ।
अति ही मोटी, प्रलब दोटी ।
ओढी बइसीइ सीयाल हुइ हसीइ ।
जिमतो न थाइ ५त्सक बेटा जिमई अनेक विध मोदक ।

मुहुडा रइ काइ लागी कुडेव, सदैव जिमइ सातू जल सेव ।
गजीणा खाजा, चिहुँ आगि साजा ।
परीसखि हारि किम नइ आइ आकुली, जीमइ भली साकली ।
घणी खाड करी बहू मूल्या, . . .
अमृत पाहिइ मोठी, तापइ अगीठी ।
ते तलाई माहि सगुण, आव्यउ माह नइ फागुण ।
सीय ना कोट दीसइ, दरिद्र बाढि मरता दात पीसइ ।
हिम जामइ, न खडाई ओढणु लामइ ।
काष्ट दग्ध सीय पडइ, दात खडहडइ ।
घसूइ जीमइ सपराणी रोटी, पुण न सकीइ नीगमी रात्रि मोटी ।
फूल माहि पडवउ, फूल नइ मिसि विहस्यु दीसइ कूदडउ ।
राति सघळीइ अरहट वहइ, ऊन्हाळऊ धान गहगहइ ।
पुण्यवत लोक, रहित शोक ।
रमइ होळी, फागु दिइ भभल भोळी ।
ऋतु सारी सबळ, सेवीइ आदा गुळ ।
रोग नउ भमु, जउ सीयाळइ कीजइ श्र म ।
भल तळ्या गुळ्या जीमइ, सीयाळा ना दिन सुखिइ गमीइ ॥४०॥ (मु०)

१६ शीतकाल वर्णन (१)

आविउ ऋतु हेमतु, भोगी प्राणीयइ अत्यत ।
जिहा सीय ना भर, सेवीयइ निबलि घर ।
तुलाईयइ पउढीयइ, सखरे सीयरक्ख ओढीयइ ।
अति हि मोटी, मजीठी दोटी ।
ओढी बइसीयइ, सीयाळा नइ हसीयइ ।
जिमता न धरईयइ[१] उत्सुक, भावइ विविध मोदक ।
अमृत पाहि[२] मोठी, लोक तापइ अगीठी ।
तेतला माहि सगुण, आव्या माह नइ फागुण ।
सीयना कोट दीसइ, दरिद्री टाढि मरता दात पीसइ ।

---

१ थाईजइ २ वहि ।

हिम जामइ, न छुडाइ ओढणु घणइ कामइ ।
काष्ट दाध सीय पडइ, दात खडहडइ ।
घणुइ जीमीयइ चोपडी रोटी, तउही[1] नीगमी न सकीयइ सीयाळानी
राति मोटी ।
राति सघली अरहट वहइ, ऊन्हाळू धान गहगहइ ।
पुण्यवत लोक, दूरी कृत शोक ।
जन रमइ होळी, फाग द्यइ भमर भोळी ।
ऋतु सारी सबळ, सेवीयइ आविनइ सूठ नइ गळ।
भला तल्या, गल्या जीमीयइ, तउ सीयाळा रा दिन सुखइ गमीयइ[2] ।

(सू०)

२० शीतकाल-वर्णन (२)

शीत कालि-दिवसि २ गोधूम वृद्धि थाइ ।
बेटी आपणा सासुरे जाइ, व्यास[3] रग महधा थाइ ।
कबळि जोईं ती न लाभइ, घरे फलसा वापरइ ।
तपोधन विहार क्रम करइ, श्रीमत घर माहि पइसी सूयइ ।
दारिद्री लोक सीयइ कापइ, सकळ लोक अगीठे तापइ ।
ताढि खड[4] बाखड खडइ, राति मिरी जिम साकुडइ ।
श्वान नी परि कुणमणइ, हाथ पाय आगुळी चणमणइ ।
हेमते दधि दुग्व सर्पिरसना० । १५३ (स० १)

२१—शीतकाल-वर्णन (३)

भोगी भमर नै प्यारो, योगीश्वर नै न्यारो ।
महा ताढो, वाऊ वाजै गाढो, जावा नो न मिलै किइ साढो ।
दाहे रूख बाल्या, सज्जन हीइ साल्या ।
विलोवणा घाल्या, बीजा काम टाल्या, स्त्रीना पालव झाल्या ।
वायइं खीजै, पान बीडा दीजै ।
सग कीजै, ऊडै पडवै पोढीजै ।
सखरा सीरख ओढीजै, हीये हीओ भीडीजै ।

---

[1] नीठ [2] गणिकुशळ धीर सु विशाळ, यू वखाणियउ शीतकाळ । [3] पास
[4] ताढिहड ।

बीजै नडीजै, लाड लडीजै ।
स्त्री स्यु घणी गोठि, खावा लाडू सोंठ
कोई न चहरै, दुसाला पहिरै ।
दुख हरै, आणद करै ।
पासै त्रागडी[1] धखै, अवल चोज भखै, साधो पासै रखैं ।
मांवठो होइ, लोक ऊचो जोइं ।
गाय भैस दूझै, विरही धूजै ।
तपसी बूझै, गगियो मूझै ।
हिमाचळै पडै बरफ, रोगी नै पगै चालै सडफ ।
होइ वधइ कफ वैद्य करैं शफ उफ, लबाडी करैं लपलफ ।
फिरै हरीफ, मागै गरीब ।
झाड झूड झडझडया, आक उजडया ।
पात झडपडया, दरिद्री तडफडया, पाणी पत्थर सम अडया ।
भोगी खाइ औषध ऊपर पीइ दूध, तेथी थाइ कोणे शुध ।
राबडिया दूध चाटै[2], ताढै होट फाटैं ।
खळैं धान लाटै, व्यापारी लाभ खाटै ।
आवै हाटे, फुलेल वाटे, देवै पईसा साटै ।
साध पागरया, पग ठागरया ।
गरढा डोकर, पगै लागै ठोकर, हसै छोकर ।
ठाकर ठरया[3], साथ सोड मा धरया ।
हाथे न लवेंवाइ शस्त्र, आघा ओढि वस्त्र ।
लोक सीसीयाट करै, पाणीं नीठ भरै ।
चोपूं उछरैं, ताढैं न चरैं ।
धूजै बाल गोपाल, विरही मा पडैं हवाल ।
विषम हवाल, सहु बैठा चउसाल ।
साचव्या देहरा नै पोसाल, एहवो शीतकाळ ॥ (स० ३)

२२—दुष्काल वर्णन (१)

एहवु एक पडिउ दुकाल, ठामि[२] दीसइ नर कपाल ॥
रुंड मुंड धरापीठ, चाचरि चाली सकइ नीठ ।

१—सगडी । २—वाटइ । ठारै करि ठन्या ।

नैरती बाय वाजइ, भूपति ना हीया भाजइ
मिल्या मेह नासइ, न रहइ को केहनइ पासइ ।
धनवत सीदाय, तउ राक नी सी गति थाय ।
मारग हुआ महाविषम, सचरइ चोर चिहुगम
गोरू विण दीसइ गाम नइ देस, वाल्हा छोडि गया विदेस ।
माणस माणस नइ भखइ, आपणो परायउ नोलखइ
लोक वेचवा लागा पुत्र, छाडीजइ फूटरा कलत्र
रोता बालक देख, तू पजइ दयानइ देख ।
लोक घणा निर्धन थया, उत्तम सु नीच घर गया ।
वडा जे जगम यती, तेह पिण ताकइ कोइक सती ।
केइक धान ना धणी, तेतउ वावरइ अन्नमिणी ।
पाताळ भोग लीजइ, सगउ सगा नइ न पतीजइ ।
पहिलउ जे लेता वनस्पती, तेह पिण न दीसइ रती
लोक भला लाज छोडी, मागिवा लागा हाथ ओडी ।
बीजा सहू भोग भागा, सहु ध्यान धान लागा ।
कहाजता जे दातार, ते पिण मागइ कही करतार ।
वीसरया सर्व कला गीत, घरि घरि कीजइ अन्न री चीत
रूडा जे राउत राजा, ते पिण ताकइ लोक ताजा ।
सर्व लोक निर्धन हुवा, बाप बेटा रहे जूजुआ ।
वचिवा लागा लोक, सगपण सेंध हूई सहू फोक ।
घणु किसु पतिसाह, ते पिण करइ धान ऊमाह ।
केतलु कहीये एक रूप, जेहनी वात भय रूप ।
एहवइ महा दुकालि, धीर पुन्यवत दीयइ दान सालि ।
इति दुर्भिष्य वर्णनम् ॥ कु० ।

२३—कलि-वर्णन (१)

ईणइ अवसर्प्पिणी कालि, समइ समइ अनत गुणी हाणि ।
बलि माति सभ्य, अबुद्ध नरेन्द्र लब्ध ।
रस निरास्वाद, लोक स्वोक मर्यादि ।
अविवेकि वासु, धर्मवन्त नासु ।
हुण्ड सस्थान, अल्प विज्ञान ।

अतुच्छ मच्छर, कर्कश स्वरु ।
तुच्छ धर्म रगु, गुरुजन प्रशंसा भगु ।
सुकृत करणी प्रमाद, बहु मृषावाद ।
साप्रत वर्त्तइ इसउ कलिकालु, जिह्वा कौ नहीं कृपालु, दर्शनं उत्सृंखलु ।
आर्यजन स्वल्प, घणा कुविकल्प ।
बहु कराक्रान्त देश मडल, पृथ्वी मद फल ।
नारी विकल निरर्गल, ऋषि भाजन खल ।
साधु लोक आकुल, राज तुच्छ बल ।
गुरु कलह कदल, धर्माचार्य चचल, भविक धर्म विकल ।
खड वृष्टि, बहु स्त्री सृष्टि ।
लोक द्रव्य दृष्टि, सर्व लोक मिथ्यात्व दृष्टि ।
लोक घटियइ कपटि दल, इसी प्रवर्त्तइ कलि ॥ १०० ॥ (मु०)

२४—कलिकाल-वर्णन (२)

साप्रति वर्त्तइ कलिकाल, महा कूड कपट काल ।
चोर चवाड साक्षात हालाहल, सासू बहू परस्पर कलि ।
गुरु शिष्या जायइ खाध बलि, अन्याय कुरीति देश मडलि ।
राजकुल रूंधा खली, राय राणा वर्त्तइं छली ।
क्षत्रिय नासइ दीठइं दलि, भला माणस हुइइं तातलि ।
पृथ्वी मद फल, मत्र सवे निफल ।
जडी मूली रस विकल, कुल स्त्री निरर्गल ।
न्यायी राय तुच्छ दल, चरड बहुल ।
वाट पाडा तणा कलकल, धर्म गुरु चपल ।
पापोपदेश कुशल, मिथ्यात्व निश्चल ।
लोक माया बहुल, अलप मगल ।
इणइ कुकालि, अवसर्पिणी कालि ।
अल्प क्षीर गाइ, निःस्नेह माइ ।
भक्ष्य भोज्य निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद, ।
रहस भेद, रस छेद ।
क्रूर सचना, गुरु वंचना ।
आऊषा स्तोक, निवाणिजा लोक ।

देह वातली, भक्ति पातली
अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्य ।
बाप बेटा तणा गर्थ सातइ, आपणां छोरु कुक्षेत्रि घातइ ।
श्लोक सीदति सतो विलसत्य सत ।
पुत्रा म्रियते जनकश्चिरायुः ।
परेषु तोष स्वजनेषु रोष. ।
पश्यतु लोका. कलि केलितानि ।
दाता दरिद्र. कृपणो धनाढ्य. ।
पापी चिरायु सुकृती गतायुः ।
राजा कुलीनः, कुलवाश्च भृत्यः ।
पश्यतु लोका. कलि केलितानि । ११४ । (स० ३)

२५—कलिकाल-वर्णन (३)

इसी स्त्री अनर्गल, देव नि.र्कल ।
पृथ्वी अफल, राजान अबल ।
चोर प्रबल, शत्रु बहल ।
साधु विरल, मडलीक कुटल ।
दर्शनिया शिथिल, इसी कलि । (पु० अ०)

२६—कलि प्रभाव-वर्णन (४)

पापि जउ, धर्मि खउ ।
साचउ अविगणियइ, झूठउ वखाणियइ ।
गुरु शिष्य तणउ[1] खमइ, बाप बेटा नमइ ।
सासू पाटलइ, बहू खाटलइ ।
ए कलि तणा प्रभाव ॥ १२१ ॥ (स० १) १ तण ख० इ (पु० अ०)

१—तण खबइ (प्र० अ०)

सभा-श्रृंगार

अथवा

वर्णन संग्रह

विभाग ५

कलाएँ और विद्याएँ

१ कला-भेद (१)

७२—कला वणिक

२३—कला वेश्या

७४— ,, जूबारु

७५— ,, रस-वणिक

(पु० अ०)

७२—कला पुरुष (२)

१ लेखन	२ पठन	३ सख्या	४ गीत	५ नृत्य
६ ताल	७ पट	८ मरुज	६ वीणा	१० वश
११ भेरी	१२ द्विरद	१३ तुरंभ	१४ शिक्षा	१५ घातु
१६ दग	१७ मत्रवाद	१८ वलित पलित नाश	१६ रत्न	२० नारी लक्षण
२१ नरलक्षण	२२ छद	२३ तर्क	२४ नीति	२५ तत्वविचार
२६ कविता	२७ ज्योतिष	२८ श्रुति	२१ वैद्यक	३० भाषा
३१ योग	३२ रसायन	३३ अजन	३४ लिपि	३५ स्वप्न
६ इन्द्रजाल	३७ कृषि	३८ वाणिज्य	३६ नृप सेवन	४० शकुन
४१ वायस्तभन	४२ अग्निस्तमन	४३ वृष्टि	४४ लेपन	४५ मर्दन
४६ ऊर्ध्वगमग	४७ घट बधन	४८ घट भ्रमण	४६ पत्र छेदन	५० मर्म भेदन
५१ फल वृष्टि	५२ अबु वृष्टि	५३ लोकाचार	५४ जनानुवृत्ति	५५ फलभृत
५६ खड्गधारण	५७ क्षुरि बंधन	५८ मुद्रा	५६ लोह	६० रद

पाठान्तर—

३ गणन, १०˘ ˘ १७ मन्त्रवाद के बाद तन्त्रवाद विशेष है । २६ व्याकरण । ३० षड-भाषा । ४१ वाक् स्तम्भन । ५१ कला वृष्टि । ५४ जातानुवृत्ति । ५५ फल भरण । ६१ काष्ट छेदन । ६२ चित्र कृति के बाद वाहु युद्ध है । ७२ अष्ट ज्ञान । (मो०)

६१ कार ६२ चित्र कृति ६३ दग युद्ध ६४ मुष्टियुद्ध ६५ दडा युद्ध ६६ असि युद्ध ६७ वाक् युद्ध ६८ गारुड दमन ६९ सर्प दमन ७० भूत दमन ७१ योग ७२ अब्ज ।

यथा श्लोक—

६४ कला—(स्त्री) (३)

चौसठ कला, तन्नामानि यथाः—१ नृत्य २ उचित्य ३ चित्र ४ वाद ५ मत्र ६ तत्र ७ यत्र ८ ज्ञान ९ विज्ञान १० दण्ड ११ जलस्तभन १२ १२ गीत-गान १३ ताल मान १४ मेघ वृष्टि १५ फलावृष्टि १६ आराम रोपण १७ आकार गोपन १८ धर्म विचार १९ शकुन विचार २० क्रिया कल्प २१ सास्कृत जल्प २२ प्रसाद नीति २३ धर्म नीति २४ वर्ण वृष्टि २५ सुवर्ण सिद्धि २६ सुरभि तैल करण २७ लीला सचरण २८ गज तुरग परीक्षा २९ पुरुष स्त्री लक्षण ३० सुवर्ण रत्न भेद ३१ अष्टादस लिपि परिच्छेद ३२ तत्काल बुद्धि ३३ वस्तु सिद्धि ३४ वैद्यक क्रिया ३५ काम क्रिया ३६ घट भ्रम ३७ सारि परिश्रम ३८ अजन योग ३९ चूर्णयोग ४० हस्त लाघव ४१ वचन पाटव ४२ भोज्यविधि ४३ वाणिज्य विधि ४४ मुख मडन ४५ सालि खडन ४६ कथाकथन ४७ पुष्प ग्रथन ४८ वक्रोक्ति ४९ काव्य शक्ति ५० स्फार वेष ५१ सकल भाषा विशेष ५२ अविधान ज्ञान ५३ आभरण ५४ नृत्योपचार ५५ गृहाचार ५६ काव्य करण ५७ परिनिराकरण ५८ धान्यरधन ५९ केस बधन ६० वीणा बजावी ६१ वितडावाद ६२ अक विचार ६३ लोक व्यवहार ६४ अन्ताक्षरिका—प्रश्न प्रहेलिका स्त्रियोनी चौसठ कला ।

६४ स्त्री कला (४)

नृत्य १	उचित्य २	चित्र ३	वादित्र ४
मत्र ५	तत्र ६	ज्ञान ७	विज्ञान ८
दभ ९	जलस्तभ १०	गीतगान ११	तालमान १२
मेघवृष्टि १३	फलाकृष्टि १४	आरामरोपण १५	आकारगोपण १६
धर्मविचार १७	शकुनसार १८	क्रियाकल्प १९	सास्कृत जल्प २०
प्रासादनीति २१	धर्म नीति २२	वर्णिका वृद्धि २३	स्वर्ण सिद्धि २४
सुरभि तैल करण २५	लीला करण २६	गज तुरंग परीक्षण २७	
स्त्री पुरुष लक्षण २८	सुवर्ण रत्न भेद २९	अष्टादश लिपि छुद ३०	
तत्काल बुद्धि ३१ ।	वास्तु सिद्धि ३२	वैद्यक क्रिया ३३	

काम विक्रिया ३४	घटभ्रम ३५	सारिपरिश्रम ३६
अजन योग ३७	चूर्ण योग ३८	हस्त लाघव ३९
वचन पाटव ४०	अताक्षरिका ४१	भोज्य विधि ४२
वाणिज्य विधि ४३	मुख मडन ४४	शालि खडन ४५
कथाकथन ४६	पुष्प ग्रथन ४७	वक्रोक्ति ४८
काव्य शक्ति ४९	स्फार वेष ५०	सकल भाषा विशेष ५१
अभिधान ज्ञान ५२	आभरण परिधान ५३	भूतोपचार ५४
गृहाचार ५५	व्याकरण ५६	परिनिराकरण ५७
रधन ५८	केश बन्धन ५९	वीणा निनाद ६०
वितण्डावाद ६१	अक विचार ६२	लोक व्यवहार ६३
हस्त[1] प्रहेलिका ६४	स्त्री चतुषष्टि कला ॥	(१५५ जो०)

५—(वशीकरण) विद्या साधन (५)

कामण	निर्जीव सजीव करण
मोहन	आम्नाय उपासन
थभन	अकाल फल
वसीकरण	मोहन वेल
आकर्षण	काली वेल
उच्चाटन	मत्र
सातन	तत्र
पातन	यत्र
अजन	जडी
(चू !) रण	स्याल शृगी
पाताल गमन	स्वेत चरमी
पाद लेपन	स्वेत अरड
इद्र दर्शन	स्वेत आकडो
अदृष्टीकरण	स्वेत पलास
आकाशगमन	बदो हाथाजोडी इत्यादि
रमणी मोहन	

(वि०)

१—प्रस्त (प्रश्न !) ।

अथ राग नाम (६)

१ श्री राग	१३ जयजयवंती	२५ केदार	३७ रामगिरी
२ सारग	१४ प्रभाति	२६ मारू	३८ सामेटी
३ दीपक	१५खभाइति (-यची)	२७ सिंधु	३९ आसाउरी
४ सोरठ	१६ ललित	२८ मधु	४० धन्यासरी
५ नट	१७ वसत	२९ माधव	४१ हिंडोलन
६ विहागडो (विहगडो)	१८ वेलाउल	३० परज	४२ मालकोश
७ कान्हडो	१९ भैरव (भयरव)	३१ पूरवी	४३ आशा
८ मालवी	२० भूपाल	३२ विभास	४४ काफी
९ गोलो	२१ बगाल	३३ कल्याण	४५ दीपक
१० गोडी	२२ रामकलो	३४ धोरणी	४६ माहव
११ टोडी (तोडी)	२३ मल्हार	३५ जयतसिरी	४७ अडाणो
१२ वैराडी	२४ देव गधार	३६ गूजरी	

३२ बद्ध नाटक (७)

१ गय	९ देवगण	१७ हरिण	२५ मडा(द्रा!)सन
२ रथ	१० विद्याधर	१८ चामर	२६ सिंहासन
३ तुरगम	११ गधर्व	१९ वनलता	२७ आरिसा
४ सीह	१२ विहग	२० पद्मलता	२८ विमान
५ वृषभ	१३ सरभ	२१ साख	२९ हस
६ सुर	१४ सर्प	२२ नदावर्त्त	३० कोकिल
७ असुर	१५ सुकराज	२३ पूर्ण कलस	३१ वांस
८ किन्नर	१६ सारस	२४ स्वस्तिक	३२ लाव
रथाग	पडह	भेरी	लांगळ
मृदग	ताल	भुगल	चतुंपद

वाद्य (८)

१ भमा, २ मर्डंग ३ मद्दल, ४ कडव, ५ झल्लरि, ६ हुडुक, ७ कसाला ८ काहल, ९ तिलिमो १० वसो, ११ संखो १२ पणचोय बारसमो ।

द्वादश तूर्य निर्घोषो नादी नाम रव ।

रण नंदी तूर (६)

१ ढका २ इका ३ डमरूय ४ काहल ५ पुप्फ-भेर ६ भाणग, ७ पडहो ८ जुग साख ६ करड १० पुग्गय ११ मद्दल १२ कसाल रणनदी। इतिरणनदी तूरः।
(१२७ जो०)

वादित्र नाम वर्णन (१०)

भेरि	भुगल	पडह	ढोल
लरि	कुंडि	पखाउज	मादल
वस	वीणा	सुग्मद्दल	पणव
ताल	भाली	घूघरि	कसाला
तूर	निसाण	नफेरी	डाक
बुक्कर	हुडुक	शख	शखमाल
रावणहथथ	दुदभि	करडि	तिवल
दुडदडि	कासी	भभा	डमरू
बरघू	पिनाकी	दमामा	महुँयारी
आउज	पटाउज	सींगी	घाट
अधउडी	रुद्रवीणा	सीमा	सरणाई
टमकीउ	मदनभेरी	काहली	कादबरी
चाग			

(सू०)

३६ वाजित्र (११)

१ भेरी	१० श्री मंडल	१६ मृदग	२८ गडबडी
२ भभा	११ तिबल	२० त्रिबल	२६ नाद
३ भूगळ	१२ ढोल	२१ भूलरी	३० केदारी
४ नफेरी	१३ करनाळ	२२ दुदुभी	३१ होक
५ नीसाण	१४ कासी	२३ बरघू	३२ पूगी
६ ददा मे मा	१५ सरणाई	२४ सारगी	३३ भाभ
७ दडबडी	१६ बासरी	२५ रणसिंघो	३४ तदूरो
८ ताळ	१७ वोणा	२६ जन्यघंटा	३५ [प] खाज
६ धूसाल	१८ चंग	२७ राई	३६ नरसिघो

१ शास्त्र

काव्य ना भेद (१)

काव्य, कबित्त, छद, सवैया, योतिस, वैदक, प्राकृत, तर्क, वितर्क, प्रमाण, चिंतामणी, चतुराई, रघु, किरात, माघ, मेघदूत, नेमदूत, नैषध, कुमारसम्भव चम्पूकथा, गीता, भागवत, स्मृति पुराण, वेद, विचार, वखाण, गाहा, गूढा, दूहा, प्रहेलिका, हरियाळो, कमलबन्ध, छत्रबन्ध, नागबन्ध, गरुडबन्ध राजबध तोडरबन्ध, मादळबन्ध, अहर, अलग्ग, हटापखरा, छपखरा, नटपखरा, पखाळ, पारगत श्लोक, सगीत, गीत इत्यादि काव्य (शास्त्र) ना भेद ॥

विद्वान लक्षण (२)

काव्य, कवित्व छद, सवैया, ज्योतिष, वैद्यक, प्राकृत, सस्कृत, तर्क, वितर्क प्रमाण, गीता, भागवत, पुराण, वेद, विचार, इत्यादिक ना जाणणहार छइ ।

(कौ०)

वादीन्द्र (३)

अढारहइ लिपि तणइ विषय कुसल, चारि विद्या कठस्थ
चेष्टानुवादु, अक्षरानुवादु, अर्थानुवादु परवादी सउ करइ
पर पटित अष्टोत्तर शत काव्य अर्थु देइ
एक पदी द्विपदी त्रिपदी समस्या पूरइ
तुरग पद पाठि कोष्टक पूरण करइ
गूढ पद क्रिया-गुप्तक तण लेखउ न लेई
त्रिवर्ग परिहारु पचवर्ग परिहारु बोलइ
प्रच्छन्न लिपि तणी अलवि करइ
कूर्चाल सरस्वती, प्रत्यक्ष वाचस्पति
पडित घरट्ट, भग्न वादी मुरुद्ध
इसउ वादीन्द्रः ॥

१८ लिपि (१)

हसलिवि[1] भूवलिवि[2] जक्खाका तह[3] रक्खसीय बोधव्वा[4] उड्डीह[5] जवणी[6] तुरकी[7] करी[8] दवडीय[9] सिधविया[10] ।

मालविणी[11] नडि[12] नागरी[13] लाड लिवि[14] पारसीय[15] बोधव्वा ।

तहय निमितिअ[16] लिव्वा चाणक्कि[17] मूलदेवीय[18] ॥ १ ॥ लिपि नामानि

१८४ न० (१२६ जो०)

१८ लिपि (२)

१ हस लिपि	७ तुरकी लिपि	१२ लाट लिपि
२ भूत लिपि	८ द्राविणी लिपि	४१ सारसी लिपि
३ यक्ष लिपि	६ सैधवी लिपि	१५ अनिमित्तिलिपि
४ राक्षस लिपि	१० मालवि लिपि	१६ चाणक्की लीपि
५ उड्डी लिपि	११ नडी लिपि	१७ मूलदेवी लिपि
६ यावनी लिपि	१२ नागरी लिपि	१८ करी लिपि

मौ०

लिपियें (३)

लाडी	चौडी	कान्हडी	गूजरी
सोरठी	मरहठी	कु कुणी	खुरासाणी
ससी	सिहाली	डाहली	कीरी
हमीरी	कास्मीरी	परतीरी	मागधी
महायोधी	मालवी	॥ इत्यादि लिपय. ॥	(११३ जो०)

सभा शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ६

जातियाँ, धंधे और व्यक्ति नाम

१०

१८ वर्ण ३६ पौन (१)

घाची, घाछा, मोची, मणीहार, मइणारा मेर, मैणा, सुई, सुतार, सोनार, चूनगर, चित्रगर, नीलगर, तेरमा, लूणगर, ठठारा, मठारा, लोहार, लोबाना[1], लोबना, लोढा, भोपा, भरडा, भिखारी, भील, कोळी, काठी, वणगर, कठीयारा, कळबी, कसारा, कुंभार, चूडीगर, काछी, वाणीग्रा, विप्र, वैद्य, वेश्या, वणगर माली, तेली, मरदनीया, मठवासी, गोला, गाधी गारडी,[2] योगी, यति, संन्यासी, जिंदा, सोफी, भगत, ग्रामीक, भेषधर, इत्यादि ३६ पवन (स०)

प्रत्यतरे—छीपा, सिलावट, सीसगर, तुरक, तबोळी, तीरगर (विशेष)

पेशेवार जातियाँ (२)

सोनी,	पारखि,	जवहरी	गाधी	दोसी,	नेस्ती
कणसारा,	मपारा,	मणियारा,	सोनार,	कुंभार,	ठठार
लोहार,	वलार[3]	पटउलीया,	पटसूत्रीया,	माली	तबोली
हरथेरवलिया,	जोगी,	भोगी,	वइरागी,	नट,	विट,
खूंट,	खरड,	लाठा,	माठा[4],	रगाचार्य,	उचितबोला
साहसोला,	मोटा बोला,	मेलगर,	मामगर,	कउतिगिया,	कुलहटीया
नटावा,	गाछा,	छींपा,	परीयट,	सुई,	ताई,
तेली,	मोची,	सतूग्रारा,	बधारा	चीत्रारा,	तूनारा
कोळी,	पचउळी,	डबागर,	बाबर,	फोफळिया,	फडहटीया
फडिया,	वेगडिया,	सींगडिया,	भोई,	कदोई,	देसाळी
कलाळी,	गोली,	ग्वाळ,	पसूयाळ	राजपात्र,	विद्यापात्र,

विनोद पात्र। १०८। (स० १)

चौरासी वणिक जाति (३)

श्रीश्रीमाल,	श्रीमाली,	ग्रोसवाल,	पोरवाल।
पल्लीवाल,	बघेरवाल,	दिसावाल[5],	मेडतवाल।

---

१ लबाना। २ गाडरी। ३. तराल। ४. मठा। ५ देसवाल।

खडेलवाल,	अगरवाल,	जैसवाल,	सेभवाल[१] ।
डीड्वाल,	कठोडा,	सूराणा,	सोनी ।
लाढ,	मोढ,	भागद्रा,	नागद्रा ।
नागर,	नीमा,	हरसोला,	नरसिघपुरा ।
दसोरा,	मेवाडा,	आमेटा,	मेडतिया ।
सोरठिया,	बीयाडा,[२]	खडायता,	साडेरा ।
भटेरा,	कुभा,	धाकड,	चीतोडा ।
लाड्आ,	हरसोरा,	हूबड,	नागोरा ।
जलोरा,	साचोरा,	वधनोरा,	सोभीता ।
वाल,	कपोला, इत्यादि वणिक जाति ।		

नैष्टिक ब्राह्मण (४)

उत्तरासग धोती, सऊतरिऊ जनोइ, हाथि प्रवीती,
सिरु भद्रियउ, सिखा फरहरती, तिलकु वधारियउ,
गात्री[४] आरु, त्रिकाल सध्याराधनु, प्रभात स्नानु, नित्यदानु ।
वेद पढइ, वेदान्त जाणइ, सिद्धात वखाणइ,
देव तर्पणु, गुरु तर्पणु, ऋषि तपणु, पितृ तर्पणु,
इसउ नैष्टिकु ब्राह्मणु ।

ब्राह्मण नी जाति (५)

नागर, राजर, उदवट, भटनागर, सिणोरा, साचोरा, दसोरा, उदबर,[५] साहोद्रा[६], नागद्रा,[७] रोडवाल, खेडावाल, इटावाल, पल्लीवाल, श्रीमाल, गोलवाल, चोवीसा, लोडी सीखा,[८] बडी-साखा, मथुरीया, सिनोडिया, कन्होजिया, वालिमिया, श्रीगोड, गुजरगोड, गोड, मेवाडा, चितोडा, कन्हडा सारस्वत, उदिच, धेणोजा, तदुआणा, मालवी इत्यादिक ।

विरुदावली वाचक छात्र नाम (६)

एक राजा नै ब्राह्मण महा पडित बोलाइ छइ ॥
मुहडा आगल छात्र भणे वृदावलि बोलइ छइ ॥
कुण २ ते छात्र तन्नामानः—

---

१ सेभवाल । २ वायडा । ३. थाकड । ४. गायत्री साधनु (स० १) प्रारभ के कुछ आगे पीछे है । ५ गोंडा । ६ सिवोद्रा । ७. नागोद्रा । ८ मिखा । ९. धारणी ।

उपाध्याय, शकर, ईश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, गगाधर, गदाधर, विद्याधर, महीधर, धरोणीधर, भूधर, श्रीधर, दामोदर, महादेव, सिवदेव, रामदेव, मेवाडी, त्रवाडी, उमापति, गगापति, गणपति, भूपति, देवपति, पडित, जनार्दन, गोवर्धन, मुकुन्द, गोविंद। एहवा नाम विरुदावली बोले ॥

विरुदावली (राजकुमार शिक्षक पंडित) (७)

सरस्वती कठाभरण, वादि विजयलक्ष्मी सरण।
ज्ञान सर्व पुराण, वादी कदली कृपाण ॥
जीतवादि वृन्दवादि, गुरो गोविद वादि।
धुक दिवाकर, अज्ञान तिमिर निसाकर ॥
वादि मुखभजन, रामसभा रजन।
कुवादि प्रस्वर खडन, पडित सभा मडन ॥
वादि गोधूम घरट्ट, मर्दित वादि मरट्ट।
वादि मृगसिंह सार्दूल, वचोवात्या विकृतवादि मूल ॥
षडभाषा वल्लिमूल, परवादि मस्तक सूल ॥
वादि कुद कुद्दाल, रजितानेक भूपाल ॥
वादि वेस्या भुजग, शब्द लहरी तरग ॥
सरस्वती भण्डार, चवद विद्यालकार ॥
सूर्य सास्त्राधार, बहुत्तरी कला भर्त्तार ॥
महाकवीश्वर, प्रत्यक्ष परमेश्वर ॥
कूर्चालि सरस्वति, प्रत्यक्ष सारमेति ॥
जितानेक वाद, सरस्वती लब्धप्रसाद ॥
ते षासभलि पडित जाणी, पोताना कुवर नइ कु वरी भणवा मूकी ॥

राजपूत नी छत्रीस वंशावली (८)

परमार,[१] राठौड, चौहाण, गहिलोत, दहिया, सेणचा, बोरी,[२] बगछा,[३] सोलकी, सीसोदिया, खेरमोरी,[४] नाकुभ,[५] गोहिल,[६] पडिहार, चावडा, झाला,[७] छूर, कागवा,[८] जेठवा, रोहर वूस,[९] बोरड,[१०] खीची, खरवड, डोडिया, हरिअड, डाभी, तूअर, कोरड, गौड, मकवाणा, यादव, कछवाहा, भाटी, सोनिगरा, देवडा, चद्रावत। ए छत्रीस राजकुलो छइ।

---

१ पमार २ वीर ३ काबा ४ खयरमोरी, ५ निकुभयक ६ गहिलोत, दिया, ७ भाला ८ गवा ९ छूमा १० बारड। (स ३)

महाजन नाम (९)

पासणागु आसणागु देवणागु
पासचद्र आसचन्द्र देवचन्द्र
पासवीरु जसवीरु आसवीरु
इसउ महाजनु

महाजन विरुदावलि (१०)

सुरताण सनाखत, दीवाणदीपक ।
अश्वपति, गजपति, नरपति, राय स्थापनाचार्य्य ।
राजसभालकार, राजसूत्रधार, रायब्रदिछोड, राजवाल्हेसर ।
मर्यादामयरहर, पर नारी सहोदर ।
कलिकाल निष्कलक, विचार चतुर्मुख ।
रूपरेखा मकरध्वज, वत्राक भालस्थल, चतुः पथ चिन्तामणि ।
वाचा अविचल, बाल धवल, शील गगाजल ।
गोत्रवाराह, शील गागेय ।
उभयकुल विसुद्ध, एकोतरशत कुलोद्योतकर, उभयपक्ष निर्मल हसावतार ।
हर्ष वदन, सत्यवार्त्ता युधिष्ठिर ।
सोना जलहर, कूर सागर ।
कडाहि समुद्र, सालि समुद्र, वाहण वरिस ।
द्रारिद्रय मुद्रा विहडणहार, बिहि लिखिताक्षर मीटणहार,
पचार्कादि सवत्सर मुद्राकणहार
अछित ना विक्रमादित्य, विमणिम भोज ।
जगज्जीवन जीमूत वाहन, दुबला मुसाल, दुबला पीहर ।
ताकूया रउ तीर्थ, याचका रउ जीवन, राक रउ रक्षक ।
मारून्नउ मालवउ, सकल जीव लोक कनक धार प्रवाह ।
ऋण मोक्षण कामधेनु, दीनोद्धरण धीर, दुस्समय सावधान ।
छत्रीस वेलाउल विख्यात, अष्टादस वर्ण पारिजात ।
विषम दुष्काल जीतूयार, कलिकाल कल्पावृक्षावतार ।
इत्यादि । दातृविरूदानि । (सू)

साहुकार विरुदावलि (११)

दान व्यसन वासित चेतसः । अथ एकोत्तर शत कुलानि । पितृपक्ष १४, अमाय पक्ष २०, श्रपक्ष पक्ष १६, असुतापक्ष १२, भगनी पक्ष ११, अफूई पक्ष १०, १७६, अमासी पक्ष १८, एवं १०८ पक्ष ।

सोना जलहर, कूर सागर ।
कडाह समुद्र, शालि समुद्र वाहन ।
दारिद्र मुद्रा विहडनहार, विहि लिना (रक्त !) अक्षर मेटणहार,
पचायन वादी, सवच्छर मुद्रा करणहार ।
अछति इला विक्रमादित्य, जीमणे भोज, जगत जीवन, जीमूत बाहन,
दुबलानो पीहर, सकल जीव लोक कनक धारा प्रवाह ।
कुण मोक्षण कामधेनु, दीन धरण हार ।
दु समय सावधान, छत्रीस वेलाउल विख्यात, अष्टादश वर्ण पारिजात,
विषम मार्ग भञ्जनहार । इत्यादि साहुकार विरुदानि (वि०)

गुजरात श्रावक नाम।(१३)

रामजी, रतनजी,[1] रूपजी, राघवजी, रायसिंघ, विजयसिंघ, [2]जैसिंघ, जसवत जिणदास, विमल दास, वर्द्धमान, वीरजी, वजीर, [3] सामल दास, सूरदास, शातिदास, शिवदास ।
ऋखभदास, राघवदास, सोमजी, सुदर, सोमचद, करमचद, कपूरचद, कमल सी, अमरसी, विमलसी, अमथो, ओधव, हेबुओ, ढबूड, धरमौ, धींगड, धनराज, मनराज इत्यादि ।

दक्षिणी श्रावक नाम (१४)

अथ दक्षणना श्रावक नामानि ।
बासवा, पासबा, आसबा, बोरबा, हीरबा, नारबा[4], सोनाबा, दानाबा, गोमाजी, रामाजी, तानाजी, कानाजी, मानाजी, खानाजी, इत्यादि ।

सीरोही श्रावक नाम (१५)

अथ सीरोहीनी धरतीना श्रावक नामानि ।
भूधर, भाखर, परबत, डूगर, राउत, दुलीचद, टेकचद, समरचद[5], उत्तम चद, उग्रसेन, वीरसेन, भगोतीदास, भिखारीदास, भइरोदास, नदलाल, बदलाल, जगतसिंह, सबलसिंह, जेठमल्ल, टोडरमल्ल, टेकमल्ल, झाझण, खाखण, खारवण इत्यादि ॥

१—मेवाड । २. खेतच । ३. वजिड । ४ नीरवा । ५. सभाचद ।

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ७

देव, वेताल, शाकिनी, सिद्ध, व्यक्ति तथा
व्यक्ति कष्टादि वर्णन

(१) देवता

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, भगवती, शक्ति, राम, कृष्ण, हनुमान।
आसपास [लोक देवता]—खेत्रपाळ, गोगो, पाबूदेव, शक्तिदेव, रामदेव, रामापीर, भैरव, पीर, हाउलपीर, भूत, सीतळा।

(२) अथ शाकिनी

करि माळ, दिती ताळ।
मुख बोलती आळ माळ, उर्द्ध कीधा मुत्कल केश जाल।
दष्ट्रा कराळ, हाथि धरती रक्त कपाळ।
मुखि बोलती जाणे वैश्वानर झाळ, इस्यउ शाकिनी चक्रवाळ।
जिसा मरु देशि कूर तल, तिसा नयन युगल।
जिसा पुरातन कोद्रव पलाळ, इसा पीळा केश जाळ।
जिसा साप पर्ण, तिसा टापरा कर्ण।
जिसी सिला उच्च सरल, तिसी अगुली विरल।
जिसा ताल वृक्ष तरल, तिसा जघा युगल
जिसी पर्वत नो दोतडि, इसी मोटी कडि। इसी शाकिनी ॥ ७२ ॥ (जै)

(३) वेताल (१)

साग पाग समान कर्ण, श्यामल कज्जल समान वर्ण।
निलाट चटित विकराल, महा भैरवानुकारि मुख।
ज्वलन ज्वाला कलाप पिंगल दृष्टि, निरतर अगार वृष्टि करतउ।
कडकडत महिष मोडतउ, पाताल विवर नी परि पेट सकोडतउ।
आपणउ कपाल आस्फालतउ, दुर्दरा रवि ब्रह्माण्ड फोडतउ।
आकाशि तारा मडल त्रोडतउ, कुलाचल पर्वत पातालि घाततउ।
हाथि तीक्ष्ण काती नचावतउ, महा कपालि रुधिर पीतउ।
गलइ रुडमाल वहतउ, अट्टहास करतउ, कातर आतुर बीहावतउ।

प्रत्यक्षकाल, कंकाल, कराल वेताल ।
काकीडा उदिर सर्प घेरोला नी माल घरतु ।
ताल तमाल जघा घग हरतउ ।
पग छापरा, कान टापरा, आखि ऊडी, निलाडी भूडी,
वमिया लोह गोला, तिसिया बेउ डोला । एव विघ वेताल ॥ ११२ ॥ जो०

(४) वेताल (२)

सूप जिसा नख, लोढउ जिसि आगुली, लोह तणी नीसाह जिसा पाय ।
ताल वृक्ष जिमी दीर्घ जघ, जिसी कूभी तणउ खापरु तिमउ उदरू । जिसउ प्रवहण तणउ कूया खभउ, तिसि बाह । लाबा होठ, नीचउ नाकु, वाकउ निलाड, त्रीभीटउ माथउ । इसउ रौद्र विकरालु वेतालु ।

(५) वेताल (३)

मनुष्य फीटि हुओ वेताल, कठि विलबित रु डमाल ।
करतल पातके, • •।
बभुक्षाभिभूत, जिसो जमदूत ।
कान टोपरा, पग छापरा ।
आख ऊडी, पेट कूडी ।
आख राती, हाथे काती । भूडी छाती ।
विकराळ वेस, बिहावे देस ।
हडहडाट हँसे, धरामडळ धँसे ।
मस्तके अगार बळै, रवि जिम कळकळै ।
इस्यौ रौद्र रूप, तेहनो स्वरूप । कान कूप
केतलो वखाणू, इस्यो वेताल ॥

(५) वेताल वर्णन (४)

भीषणाकार, अति रौद्राकार ।
मुखि करतउ फार फुत्कार, कृतान्तावतार ।
मुखि मेल्हतउ झाळ, हाथि देतउ ताळ ।
मस्तकि कपिल केश, स्थपुठ, ललाट ।
घटितका कराल दृष्टि, मुख विवर विरचिताागार दृष्टि ।
कर्ण कुहर विहरमाण, भुजगराज भीषण ।

चिपट नाशिका, ओष्टपुट विनिर्गत दीर्घ दृष्टि ।
ताल विशाल जघा युगल, सकल स्थाली बधू कठ कालकायकाति ।
कटि कलितु कपाल ।
लोहितारुण पाणि विकराल, हास वाचालित दिगतराल ।
एव विध वेताल ॥ ७३ ॥ जै०

(६) महासिद्ध

मत्र तणउ जाण योगींद्र[1], स्वर्गलोक समग्र अवतारइ[2] ।
गगनागणि चद्रादित्य[3] स्तभइ, आकाशि[4] वैश्वानर बालइ ।
आपणा वस्त्र आगि पखालइ[5], पाणी माहि[6] पलेवणउ प्रज्वालइ ।
पाताल कन्या प्रत्यक्ष दिखाइ[7], कउपउ[8] करता वन खड मोडइ ।
पातालि[9] बालि तणा बध घोडइ, लोह श्रृखला[10] फुक जोडइ ।
पर्वत्त[11] ना श्रृग ढालइ, शम्बर श्रृग गालइ[12] ॥ २४ ॥

(६) सिद्ध

कर कमल कलित योगदड स्कध प्रतिष्ठित योगपट्ट[13] ।
प्रभावित प्रचड चडिका मत्र, पिशाच साधन स्वतत्र ।
शाकिनी निग्रह साहसिक, रसायन प्रयोग रसिक ।
प्रदर्शित वलि पलित नाश, वशीकरणि अमूढ लक्ष ।
खडी चापडी प्रमुख विद्या कुतूहली ।
असाध्य साधक, आकाश पाताल बधका ।

(८) योगीन्द्र

ऊपर हुतउ इद्रिसहितु स्वग्रलोकु आणइ
गगनागणि चद्रमादित्य स्तभइ
आकाशि अग्नि बालइ
पाताल कन्य का प्रत्यक्ष देखाडइ
कडयडरभु करता वनखड पोडइ

---

१ जोगी । २ अवतारे । ३ चद्रसूर्य थभे । ४ आकाश विश्वानर बलै । ५. मा पखालै ६ माहे पलेवणू प्रज्वालै । ७ देखाडे । ८ कटक परोकरता वनखड मोडै । ९ पताल बलि तणा बधन छोडै, १० फूकै त्रौडै । ११ पर्वत श्रृग उबाडै । १२ गालै । १३ व्यायोग ।
इत्यादिक महासिद्ध जाणवो ॥ (पू०)

पातालि बलि तणा बध त्रोडइ
पर्वत तणा शिखर फोडइ
इसवु महा मा थिकु
शक्ति मतु योगीन्द्र ॥

(९) पूतली वर्णनम्

पूतली, जाणे काचइ कपूरि घडी, जाणे रभा तिलोत्तमा आकाशि हुति पड़ी।
जिसी अमृत सारिणी, इसी मनोहारिणी ।
जणि दीठि ऊपजइ रली, इसी पूतली ।
सा देखी जाणियइ चित्रामु चित्रितु, जिसउ पाषाण घटितु ।
जिसउ काष्ट उत्कीरितु, जिसउ मन्त्रि स्तभितु ।
जिसउ महाग्रह ग्रहितु, जिसउ भूताधिष्ठितु, जिसउ सन्निपात पूरितु ।
जिसउ मदन भिंभलु, इसउ हुइ ग्रहिलु ।
न बेलइ, न वेयइ ।
न चालइ, न हालइ ।
न खेलइ, न बोलइ ।
न जियइ, न रमइ ।
न नासइ, न सम्मुख लागइ ।
मन मध्यिकरइ ऊमाहउ ॥ २ ॥

(१०) रोषातुर व्यक्ति

सकोप नरः, भ्रकुटि ताडतउ ।
विकट चपेटाऊ पाडतऊ, होठकरी फुरफरतउ ।
वचन विन्यासि प्रसख लतउ ।
विभीषणाकार मुखवरतउ, आरक्त लोचन फेरतउ ।
दुर्वाक्य बोलतउ, महा कोपि सयर डोलतउ ।
जाणेकरि प्रज्वलतउ बडवानल ।
अति रोषारुण, जिसिउ रातउ अरुण ।
निष्ठुर वदन क्रूर लोचन ।
सर्व स्फुटाटोप कुटिल ।
कज्जल दल श्यामल, निर्लालित जिह्वा युगल ।

चूडामणि प्रभा प्रहताधकार जालु ।
सज्जित सज्ज सरल स्फालु स्फारस्फूत्कार भीषण ।
अत्यता[1] मर्य दूषण ।
अवनि वनिता वेणि[2]दडायमान, यमुना समान कायमान ॥ ४० ॥

(११) प्रसन्न व्यक्ति

किरि धनदु यक्ष तूठउ,
किरि वेतालु तसु सेव पयठउ ।
किरि कल्पद्रुम फलियउ,
किरि कामु घट्ठु माझि दलियउ ।
किरि कामधेनु ग्रिहागणि बाधी,
किरि नवनिधि तणि लाधी ।
किरि चिन्तामणि रत्न हाथि चडिउ,
किरि उदयु पुण्य ऊवडिउ ।
इसउ हृष्ट तुष्ट सानद हूयउ ॥ (पु० अ०)

(१२) प्रेमी

सहर्ष, सस्नेह, सोल्लास, सविकास, सविभ्रम, सप्रेम, सोत्कठ, विहसित-वदन, उल्लसित वचन, रोमाच, कुचकित शरीर, सर्वालकार विभूषित, सर्व-शंकादिदोषा दूषित, प्रेम सयोग ॥३॥

(१३) कांतिहीन

[[2]विच्छाय श्याम दीन बदन हूइ ।]
जिसिउ[3]*चपेटा आहणिउ माकड, जि० डाल चूकउ वानर ।
जि० घाय[4] चूकउ सुभट, जि० दाय[5] चूकउ जुआरी ।
विद्या चूकउ विद्याधर, फालै चूकउ दर्दर ।
जिम ठाम चूकउ भडारी, यूथ भ्रष्ट चूको हरिणु ।
जिसिउ[6] चौर अत्राण अशरण ।
राज्य चूकउ राजा[7], पदवी चूकउ पदस्थ,
लाज चूको नारि, भीख चूकउ भीखारी[8] (स० १)

---

१ अल्पता । २. सकल विकास । ३. स० ३ मे नहीं । ४. ऊच षेटा । ५. घाव। ६ दुख । ७. जिम । ८. राजश्री । ९. पदवी ।

(१४) भाग्यवान

तसु तणइ रूपइ कूलि वहइ, सोनमा मोर ऊडइ
मोन बेहूले राति विहाइ, पटउबे भूमि बहुरियइ
चीतविया पासा पडइ, ऊघउ करता पाधरउ थाइ
लक्ष्मी बाहिरि मूसाविइ, उपरि पइसइ,
इसउ दीहाडउ ॥

(१५) पुण्यवंत

जसु तणइ प्रदक्षिणा वर्त्त शख ।
चिंतामणि रत्न फरुस पाखाण, सोना तणउ पुरिसउ ।
कोटी बेध रस, काली चित्राबलि वेलि ।
चोटिया द्राम, जल तरणि हीरउ ।
कवडी पोतइ, साखिणी पदमिणी वेउ लक्ष्मी निधान कलस आणइ ।
लाखी कउ दीवउ प्रज्वलइ, कोटिध्वज लहलहइ ।
जसु तणइ रूपइ कोलू वहइ, सोना ना मयूर उडइ ।
सोवने फूले राति विहाइ सपालय सोना पहिरियइ ।
पटउले भूमि बाहिरियइ, चीतविया पासा पडइ ।
ऊघउ करता पाधरउ थाइ, लक्ष्मी वारणइ लाखइ ।
अनइ ऊपर वाडइ पइसइ, इसिउ दीहाइतउ ।

(१६) पुण्यवंत (२)

जाणे धनद यक्ष तूठउ, जाणे करि वेताल सेवावाहि पइठउ ।
जाणि करि कल्पद्रुम फलिउ, किरि काम घट आवी मिलिउ ।
किरि कामधेनु गृहांगणि बाधी, किरि नवनिधि तीणि लाधी ।
किरि चिंतामणि रत्न हाथि चडिउ, किरि पूर्व भवभाग्य ऊघडिउ ।
अथवा कल्प वैलि धरा गणइ पइठी ।
अथवा महालक्ष्मी मूर्ति मले घरि पइठी । भवति भूरिभिः ॥

१—गृहांगणि ।

(१७) लक्ष्मीवंत वर्णनः—

ऊँचो तो[1] अजान बाहु,[2] वामनो[3] वासुदेव ॥
गोरो[4] तो कदर्प, कालो[5] तो कृष्ण ॥
घणो जीमै तो आहारी,[6] थोडो जीमै तो पुन्यवन्त ।
जो ऊँचा वस्त्र पहिरै तो राजैश्वर, सामान्य वस्त्र पहिरै तो खुमो[7]
दाता[8] तो कर्णावतार, जो न दे[9] तो[10] छाना पुन्य करै
घणु बोलै तो भोलो, न बोलै तो मितभाषी
जो लपट ता भोगी, जो नपुमक तो परनारि सहोदर[11] इत्यादि ॥

(वि० पु०)

एक अन्यप्रति मे उक्त पाठ विशेष मिलता है ।
मुक्तिनारी प्रतोलीद्वार, सकल तत्व भडार
कर्मवल्ली छेदन कुठार, चतुर्दशयोद्वार
पचपरमेष्टि नवकार, कदर्पावतार

(पू०)

थोड़ु जिमइ तउ सुकुमार, झगडदू तउ व्यवहार
अपहुचवाण तउ पूरउ, जउ पहुचइ तउ सूरउ
लक्ष्मीवत जिमि करइतिमि छाजइ, 'धीर' जिम बोलइ तिम विराजइ

इति वर्णक—

सभा कुतुहल में यह पाठ अधिक मिलता है ।

(१८) लक्ष्मीवंत (२)

लक्ष्मीवतु ।
जइ ऊचउ तउ अजानु बाहू, जउ खाटरउ लउ वामणउ वासुदेव ।
गोरउ तउ कदर्प, कालउ तउ कृष्ण सोइ गालउ ।

---

१ उचउ तउ २ अर्जुनबाहु ३ वामणउ तउ ४ गोरउ ५ कालउ ६ पूरउ आहा।८
७ खूमउ ८ जइ दातार ९ जइन द्यइ १० तउ ११ साचदाषी १२ महायोगी ।

घणउ जिमइ तउ पूरउ आहार, थोडा जीमउ तउ पुण्यवतु ।
जउ पटउला पिहरइ तउ राज राजेसरु ।
जउ सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ अलवेसर ।
जउ दातार तउ वलि कर्णावतार ।
जउ लक्ष्मी न वावरइ तउ प्रछन्न पुण्य करइ ।
जउ घणउ बोलइ तउ भोलउ, न बोलइ तउ मित भाषी ।
भोग चपल तउ कदपवितार, जउ अविषइ तउ परनारी सहोदरु ।
जउ टालि माथइ, तउ टालिये पुण्यवत जि हुइ ।

श्लोकाः—

यस्याति वित्त स नरः कुलीन सः पंडितः सश्रुतवान विवेकी,
स एव वक्ता, सच दर्शनीय. सर्वेगुणाः काचन माश्रयति ॥
गुण वृद्धा तपोवृद्धा ये च वृद्धा बहु श्रुता ।
सर्वे ते धन वृद्धस्य द्वारे तिष्टन्ति किंकरा. ॥१०६॥ जे०

(१६) ऋद्धिवंतु—(३)

ऋद्धिवतु, पुण्यवतु ।
कर्पूर कुलगला करइ, अद्भुत शृगार रस माचरइ ।
नितु नव नवालंकार बावरइ, उत्फुल्ल पुष्प शय्या आदरइ ।
हींडोलाट खाटनी लीला धरइ, भोग पुरदर हुअउ फिरइ ।
सकल स्त्री लोक लोचन हरइ, दृष्टि दीठउ मनि विकार करइ ।
नव नवे लीला विलासे रमइ, मूँह पूछी जिमइ ।
कडि पूछी पहिरइ, खडोखलो तणा पाणी लहिरइ ।
ललित गर्भेश्वर, द्रव्य अविनश्वर ।
शालिभद्रानुकार, मदन मुद्रावतार ।
अश्रात तबोल समारइ, पच प्रकार विषय सुख अमाणइ ।
ऊगिउ आथमिउ काइं न जाणइ ।

गाथा

जाई विज्जारुवं, तिन्निवि निवडतु कदरे विवरे ।
अत्थुच्चिय परिबुद्धो जेण गुणा पायडा हुंति ।

(२०) वणिक वर्णन

रिद्धिवन्त पुन्यवत, कपूरे कोरला करे ।
अद्भुत शृगार समाचरे, नित नवा अलकार बावरें ।
कमल फूल त्रिदश आदरें, हिंडोला खाटनीं लीला करे ।
भोग पुरन्दर होइ फिरे, सकल स्त्री जन लोचन हरें ।
दृष्टि राघो ठाम बिकार न करे, नवा नवा विलास करे ।
महता भोजन जीमे, खडोखली तणा पाणी लहर ।
दयावत चित्तधर, पर उपकार कर ।
ललित गर्भेश्वर, द्रव्य अर्चनेश्वर (अविनश्वर ?) ।
सालिभद्रानुकार, मद मुद्रावतार । निरतर तबोल सभरे,
पंच प्रकार विषय सुख माणे, ऊग्यो आम्यो न जाणे,
दिन प्रति विलास हॅसें, एहवा महाजन वसें ।
भोग पुरदर, सौभाग्य सुन्दर ।
जवादि जलधर, ताबूल सनागर ।
बीडी वैरागर, माननीय मनोहर ।
लीला अलवेसर, लीला शालिभद्र, इत्यादि भोग पुरदर ।

(२१) श्रेष्ठि

जसु लणइ प्रदक्षणावर्त्त सखु, चिन्तामणि रत्नु ।
फरस पाषाण पुरिसउ, कोटि वेधु रसु, कालउ चीत्रउ ।
चोटीया द्रास, जलतरणि हीरउ, कवडी पोतइ, सखिणि पदमिणि ।
बेउ लक्ष्मी निधान कलस आणइ,
लाखि दीवउ ज्वलइ । ध्वज लहलहइ, इसउ पनउतउ सेठि ॥

(२२) सुखी श्रेष्ठि

श्रीमतु, रिद्धिमतु ।
काकबि करुला करइ । फोफले कग्ग ऊडावइ ।
महु पूछी जीमइ । कडि पूछी पहिरइ ।
ललित गर्भेश्वरु । शालिभद्रावतारु ।

गोरउ तउ पाडु रोगिउ, कालउ तउ कबाडी। व्यापारी तउ भडग,
विषयी तउ सर्वधर्म्म बाह्य। विषयहीन तउ नपुसक।
पुरुष लक्ष्मी रहित, तेहनइ कोइ न चीतवइ हित।
बोलतउ होइ मीठउ, तउही न सुहावइ किण ही नइ दीठउ।
गुणे करी पूरउ, तउ ही लोक कहइ अणूरउ।
घणु किसु झखीवइ, मेलावा माहि नो लखियइ।
लक्ष्मीयइ छाडियइ, ते कुण ही माडियइ।
सदीवउ सीयालउ, चड्या आगलि दीठइ पालउ।
घरनी कलत्र, तेहइन मानइ जिम सत्रु।
मोटायइ वस नउ, न लेखवइ कोइ किणही अस नउ।
इस्यउ दरिद्र पुरुष, सहू करइ कुरुष। (सू०)

(२६) निर्धन (२)

निर्धन-उचउ तउ मसाण खभ, खाटरउ तउ हीनाग।
घणउ जीमइ तउ छारीउ, थोडउ जीमइ तउ भूडऊ टाणउ[1]।
घणउ बोलइ तउ लबाल लापड, न बोलइ तउ मोगउ।
भला वस्त्र पहिरइ तउ ईतरवा, सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ दरिद्री।
गोरउ तउ आम वातीउ, कालउ तउ कबाडी।
बेवइ तउ खात्र पाडिउ, न वेवइ तउ भडग।
विषइ तउ सर्वधर्म बहिकृतः, विषयहीन तउ नपुसक।

श्लोकः—

वरं रेणुर्वरः भस्म नष्ट श्रीर्नपुर्नरः
पूज्यते परीणि[2] क्वापि निर्धनस्तु कदापि न ॥१॥

गाथाः—

पथ समा नत्थि जरा, दारिद्द समो पराभवो नत्थि।
मरण सम नत्थि भय, खुहा समा वेअणा नत्थि ॥२॥

पाठान्तर—१ भूडउ ऊणाटउ २ परवणि।

(२७) निर्धन वर्णक (३)

पुरुष लक्ष्मी रहित, तेहनइ कोई न चींतवइ हित ।।
बोलता होइ मीठउ, तउही, न सुहावइ किणहीनु दीठउ ।।
गुणेकरे पूरउ, तउही लोक कहइ अणूरउ ।।
घणुस्यु झखीयइ, मेलावा माहे न लखीयइ ।।
लक्ष्मी छडीयइ, ते कुणइ मडीयइ ।।
सदीव ओसीयालउ, चक्ष्याआगलि हीडइ पालउ ।।
घर नी, कलत्र, तेह पिणि गिणे सत्रु ।।
मोटा नइ वसनउ, न लेखवइ कोई किणही असनउ ।।
जउ ऊचऊँ तउ एरड, जउ मातउ तउ सड ।।
गोरउ तउ पडु रोगियउ, न बोलइ तउ सोगीयउ ।।
कालउ तउ कबाडी, घणु बोलइ तउ लबाडी ।।
थोडउ जिमइ तउ दूखउ, घणु जिमउ तउ भूखउ ।।
सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ छीतर, उचा वस्त्र पहिरइ तउ ईतर ।।
जउ पातलउ तउ विरग, व्यापारी तउ भडग ।
विषई तउ सकामी, निविषई तउ अकामी ।।
दातार तउ लड, सूब तउ भड ।।
झगडइ तउ नग, न झगडइ तउ ठग ।।
जिम चालइ तिम त्रोटउ, जिम बोलइ तिम खोटउ ।।
इसउ दलिद्री पुरूष, तिण जगत्र करइ कुरुख ।।
जिवारइ लक्ष्मी त्रासइ, तिवारइ डील माइ गुण सर्व नासइ ।।
दीन भाषइ, तउही को न राखइ ।।
इति दलिद्री वर्णकम् ।। कु.

(२८) निर्धन (४)

उचो तो एरड, खाटरो तो हीनाग ।।
घणो भोलो तो लाकु ।।
बहु बोलै तो लबोल, न बोलै तो मौन ।।
घणु जीमै तो भुख्यो, थोडु जीमै तो अभागीयो ।।

भला वस्त्र पहिरे तो ईतर, सामान्य वस्त्र पहिरें तो दरिद्री ।।
व्यापारी तो भडग, विषइ तो सर्वधनवाह्य ।। विषयहीन तो नपुसक ।।

(२६) दरिद्री,

पुरुष लक्ष्मी रहितु, तिह हुइ कुणहु न चीतवइ हितु ।
बोलतउ हुइ मीठउ, तथापि न सुहादू कुणइइ दीठउ ।
गुणे करी पूरउ, तोइ लोक देखइ अणूरउ ।
घणउ किसिउ भखीयइ, मेलावइ न उलखीयइ ।
लक्ष्मी छाडियइ, सुकुखिइ माडियइ ।
सदैव उसी आलउ, सुखासणि बइसण हारउ।
आगलि हीडइ, अण वाहणे अनइ पालउ ।
घरनी कलत्र, तेहइ मानइ भणी शत्रु ।
मोटावइ वंस नउ, पुखि रिखि राउलि निमइ,
इसउ दरिद्रो ।। २० ।। जै०

(३०) दरिद्रो वर्णन—(२)

दरिद्री ना टापरा, जूनागढ ना छापरा ।।
तिहा रहे माणस बापडा, ते महा लापरा । न जाणे आपरा ।।
वाका वला, उपरि पडे सला । नीकले कानसला ।
वासडा काला । घणा चडकलीना माला, विचमा साप ना चाला ।।
कुण२ दीसे ख्याला,
गीरोली ना इडा ।।
मकोडा ने कीडा, धरती, माननी निरती,
धडाधड करती, जिणतिणसु लडती, आगणे पडती ।।
घणा मेलना थोक, हीया थी न जाइ शाक, जे बोले ते फोक ।।
एह फुअड, बोले सदा कूड ।।
घरमा दीसे धूड, धणीमा पिण चूड ।।
परसाले चूइ, आगणै सूइ, रीट राली लुई ।।
तितरे भितडा पडे, वइर बढे, वली वापडो उचो चढे ।।

---

१ खड ।

विणठी हाडी, ते पिण किनारे खाडी ॥
थाली नी पडे भाडी, पीसवानी वेला मारे डाडी ॥
तुस ना ढोकला ते पिण बही मोकला,
माथे चढे जुना टोकला, रोव छोकरा, समझावे डोकरा ॥
खावा न मिले धान, देखीनें भडके सान, देखीने जाइ डील नु चान ॥
(स्वा०)

आगणे कुतराना घुरघुराहट, रहेता महा उचाट ॥
सुवा न मिले खाट घणा माखी ना भिणाभिणाट ॥
वारणे पिण तुटी त्राटी न मिले एक सूतनी आटी, दिले पछोडी पणफाटी,
भ्रागणे रोडी ॥ गाठे न मिले कोडी, घणी घणीयानी नी सरखी जोडी ॥
आगणें काटानी वागर, जाता न मिलै आदर ।
बेसवा न मिले किहा पाधार, जाता ऊपपजे डर ॥
घणा अजगर, शरदीना घर ॥
उदेही ना भर[1] अनेक कोल ना दर ।
उदरना भर, एहवा दरिद्री ना घर ॥
इति दरिद्र घर वर्णनम् ॥ ५ ॥ (क) (कु.)

---

(३१) जुआरी

निरतर जू रमइ, आपणउ सयर दमइ
सगल धन गमइ, भीख भमइ,
अलीख (क) भाषण करइ, निज कुटुब परिहरइ
अपमान आदरइ, अनर्थ परम्परा वरइ
जाणी पाणी दिव्य करइ, अनेक नीच कर्म समाचरइ
सात पूर्विज तणी लषि (ऋद्धि) क्षय करइ, आपणा मस्तक ताइ रमइ ॥२॥

(३२) चोर

विविध वेस, करइ विवरि प्रवेसु ।
चडइ अटालि मालि, पइसइ परनालि खालि ।
महा निसकु, अतिहि त्रिवकु ।

१—चर ।

छाने पगि चालइ, कुणहइ हुइ ! आपणु चित्त नालइ ।
चार चक्ष उपवाडइ, कमाड नी कोडि उघाडइ ।
नउल ना साकल वाढइ, भुइरा ध्याकेकाण काढइ
दीहइ सूइ, राति पग हठिइ करइ,
नगर सहु सूअइन मिलइ कहि नइ साथि, रुधइ जाइ ताली देई हाथि ।
राय ने भडारि, खात्रि पाडइ, पग रमाडइ
इसउ चोरु ॥ १७ ॥ जै०

(३३) चोर वर्णन (२)

विविध वस्तु हेरइ, बोलाव्यउ बोल फेरइ ।
चढइ माल अटालि, पइसइ परणाल खालि ।
कमाड ऊघाडइ, पणि सूतउ को न जगाडइ ।
अघोर निद्रा द्यइ, कान कोटिरा आभरण ल्यइ ।
कटारी यइ बधन वाढइ, पर्वत प्राय केकाण काढइ ।
चढिउ चोर पवाडइ, राउला भडार फाडइ ।
खलक नइ घरि द्यइ खात्र, न छोडइ छइल नइ छन[१] थात्र (पा १) ।
घण जिस्यउ गाढउ गात्र, दारिद्रय छेदिवा दात्र ।
दीसइ दीसइ शात, पणि रात्रिइ तउ साक्षात् कृतात ।
विणासीयइ तउ इह न मानइ चोरी, बाध्यउ वाढी जाइ दोरी ।
लोहनी साकल त्रोडइ, घडी न रहइ खोडइ[१] ।
हाकिउ ऊठी ऊजाइ, रुधिउ ऊधसी धाइ ।
करि कीधइ करवालि, इ लक्ष लोक विचाली ।
गढनी परनालि, पइसतउ वाघउ भालि[२] ।
पाणि ए महापापी, जेणइ प्रजा सतापी[३] । सू०

---

१ छात्र

१ कु० विशेष पाठ इसके बाद—सीमम ना किमाड फोडइ, मरण सीम ओटइ।
दीठु कार न छोडइ, पगे छछोहउ दोडइ, डीलइ जोर, कर्म हि शोर ।
मननउ कठोर, जाणे खा परउ चोर ।

२ इसके बाद का विशेष—फाठउ वाधउ, पोता नउ कमायउ त्लाधउ ।

३ कहिये सी वात, गणि धीर कहइ ए चोर अवदात ।

(३४) वृद्ध वर्णक

जिवारइ जरा चापइ, तिवारइ कर बेवे कापइ, पग थरहरइ ॥
कडि थाइ कूबी, वासा नीसरइ डूबी,
तडपडइ** थीमीट, तास कायइ वहइ रीट,
माथउ धूजइ, चालता मासन पूजइ,
आख गई ऊंडी, जेहवी घोबीनी कुंडी,
डागडी झालइ, हलवे हलवे हालइ,
मुहडइ पडइ लाल, हसई बाल नइ गोपाल,
टागे पडइ वल, सगले दीलइ सल,
दाढ दात सगला पड्या, काने तउ ताला जड्या,
खाजखिणेइ जिसइ, पीहिरणु खिसइ तिसइ,
हाल हुकम न गालइ, डोकरा नु भाखइ कानइ,
मास गल्यउ, चामडउ नीचउ ढल्यउ,
चिंता करी बल्यउ, माथज पल्यउ जुआ रउ जालउ ।
टाबरा नउ ओस्यालउ ॥
सहू ना करइ विषास, इसउ वृद्धावास ॥
घणातण डोकरा दुखी, ना केईक पुन्यवत सुखी ॥
मन सवेग आणउ, जउ इसउ बूढापणउ जाणउ,
गणि कहइ कुशलधीर, इम जाणि धर्म सू करिज्यो सीर,

इति वडपण वर्णनम् ॥ कु०

(३५) चतांग मनुष्य

टूटा, पागला, आंधला, असम, अनाथ, असरण ।
हीन, दीन, खीण, राक, रोगी, बधिर, बोबडा, गुगा ।
गहेला, दोहिला, दूबला, भूखा, तरस्या, इत्यादिक ना जाण ।

(३६) फूहड़ स्त्री

कानसियाली भरिया रालडा, फूहडा भरिउ साडलउ ।
ओघरसाला भरिउ ओढणउ, हाथि पाणिउ नही, पगि पाणी नहीं ।

मलि मलिन सरीरि, दीठि ओकारि आवइ,
इसी फूहडी सुगावणी घरनारि कलिकालु प्रचुरु ॥ (पु० स०)

(३७) व्यक्ति कष्ट

तृषा, भूख, भावठि, ठाढि, यह तापता, बडो, लू उगाल,
धूसर, आरत, उचाट, अजो अजप, इत्यादिक भोगव्थाजीव ।

(३८) व्यक्ति आपद (२)

आपदा, कष्ट, कलेस, गड, गु बड, ताव, सीसक, मथवाय, आफरो, अजीर्ण, उपद्रव, मार, छल, छिद्र, भूत, प्रेत, पिशाच, साकिणी, डाकिणी, यक्ष, योगिणि, व्यतर, वाल वेरि ।

रोग ८४ जाति ना बाय, ३६ जात ना फोडा, २१ जाति ना प्रमेह, २८ जातिना, आखना रोग १३ जाति ना सन्निपात, १२ जात ना ताव, ६ जाति ना श्लेष्म, ६ जात ना पित्त, दया पाली हो तो एती आपदा न पामियइ ।

रोग सोग वियोग ।

(३९) व्यक्ति रोग (३)

१२ ज्वर,	१३ सनिपात,	१६ प्रमेह,	५०० आमवत,
८४ वायु,	३६ महाव यु,	८४ दोष	४५ खाधा विकार
१०८ फोडी,	५ गुल्म,	५ क्षयन,	२० श्लेष्म,
८ उदर,	१०८ व्याधि,	१०८ सइमउमृत्यु	७६ चक्षुरोग,
कास श्वास,	हरिषा, (हास)	अतिसार,	गुडगूबड ।
देह रोगाः ॥	१०६ जो०,		

(४०) व्यक्ति रोग (४)

जलोदर, भगदर, खार, खयन, खास, स्वास, हडकी, हरस, हीक, कुलण, बलण, अजीर्ण आफरो, अतिसार, अमार, आधासीसी अतर्गल, वाय, वेमचीवेग-वमन, वासी छडप्रमेह, पाणहिपीन सपधरी प्रवाला नासूर, नकलोही, नीनामी, गोलो, गुल्मगोलो, फीहो-फूलीफोडो, रागपित्ति रगतविकार, पाणी विकार, सोजो-श्लेष्म छाया, छाणी उदर विकार, कफ, कोढ, कोरड, कहमीया लोहीगण,

सग्रहणी, सीताग, सन्निपात, शूलसीसक, चादी द्राद, वातपित्त, मूर्छा, मधुरो, बभूत, राघण भोलो, दृष्टिदोष नेत्रदोष, धान, निर्धात, पुन्य थकी ए माहिलो एकेह प्रकासन पामे। (वि०)

(४१) उपचारक प्रकार

वेद, वारा, जाणजोसी देव, देवला, डाकोनरा भोपा, भरडा, भगत, आमिक, भेषवर, भीखारी, भूआमडल, जोगी, जती, जदा सोफी, सन्यासी, पछणा, इछणा, उजणा, उतारणा, डोरा मादलिया, तेल, आम्नाय उपचार इत्यादि।

(४२) व्यक्ति कष्ट—दुस्काल वर्णन

दुष्काल वर्णन

एहवइ एक पडिउ दुकाल, ठामि २ दीसइ नर कपाल।
रुड मुड मय धरा पीठ चाचरि [1]लाली सकीयइ नीठ।
नेरती वाय वाजइ, भूपति नाइ हीया भाजइ।
मिल्या मेह नासइ, को केहनइ न रहइ पासइ।
धनवत पणि सीदाइ, तउ राक री किमी[2] गति थायइ।
मारग हुया महा विषम, संचरइ चोर विहुगम[3]।
गोरू विण दीसइ गाम देस, वाल्हा छउगया (वि)देस।
माणस माणस नइ भखइ, आपण पारका नो लखइ।
लोक बेचवा लागा पुत्र, छाडीजइ फूटराइ कलत्र।
रोता बालक देखि, नूपजइ दया (नइ) रेख।
लोक घणा निर्द्धन थया, उत्तमइ नीचनइ घरे गया।
बडायइ जे जगम जती तेहइ पणि ताकइ कोई सती।
केईक जे धान रा धणी, तेहइ पणि वावरइ [4]धान मिणी।
पाताल भोग लीजइ, सागउ सगानइ न पतीजइ।
पहिलु जे लेता वनस्पती, तेह पणि न दीसइ रती।
लोक भला लाज छोडी, मागवा लागा हाथ ओडी।

(जो०)

बीजा भोग सर्व भागा, सत्तु[5] धानरइ ध्यानि लागा।
जे कहीजता दातार ते पणि मागइ कही करतार।
बीसर्यासर्व कला गीत, घरि घरि कीजइ अन्नरी चींत।

---

१ चाली २ किसी ३ चिडु ४ अन्न ५ सहू

रूडायइ राउत राजा, ते पणि ताकइ लोक ताजा ।
सविलोक निर्द्धन हुया, बाप बेटा रहइ जुजुया ।
वचिवा लागा लोक, सगपण [1]सधि हुई फोक ।
धणु किस्यु जे पतिमाह, ते पणि करइ धान ऊमाह ।
कितलु कहीयइ ए सरूप, जेहनी बात भय रूप ।
एहवइ महा दुकालि, [2]जगडू दीयइ दान विसाल । सू०

इति दुर्भिक्ष वर्णन ।

---

१ सँव सहू २ धीर पुन्यवत धरिदीयइ दान सालि । (कु)

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन संग्रह

विभाग ८

जैनधर्म सम्बन्धी वर्णन

(१) तीर्थंकर

जगद्भूषण, जगदेकरत्तण ।
तीर्थंकर, सर्व पाप क्षयंकर ।
विस्तीर्ण ससार सागर, गुण रत्नाकर
करुणा निधान, सकल देव प्रधान,
त्रिभुवनाधिप रूप, प्रकाशित ससार रूप ।
लोकोत्तर चरित्र, गगाजल पवित्र गात्र ।
परमानद दायक, सकल कर्म घायक ।
निर्दलित दोष, नि प्रतिम सतोष ।
सकल कल्याण कारक, आठमद निवारक ।
आठकर्म जीपक, पेंतीस वाणीगुण कथक । आर्यदेश भविक जीव उपदेशक।
चउतीस अतिशय विराजमान, बार गुण विराजमान ।
सहवा वीतराग देव (पू०) ।

(२) प्रथम ऋषभदेव जिन वर्णन

युगला धर्म निवारणु, ससार समुद्र तारणु ।
मरुदेव्या स्वामिनी कुक्षि सरोवर राजहंसु, इक्ष्वाकु कुलावतसु ।
श्री नाभि नरेन्द्र नदनु, मुक्ति श्री हृदय चदनु ।
शत्रु जय मौलि मडनु दुष्टारिष्ट खडनु ।
केवलज्ञान भास्करु, सर्व सौख्य करु ।
अशरण शरणु, कुगति हरणु ।
अनाथु नाथु, जगपति श्री जुगादिनाथु ।
अयश हरण, परम सौख्य नउ देणहारु तउ दानु देवउ अति चारु ॥१३॥ (जै०)

(३) आदिदाथ (१)

नाभि नदनु, सकल जगत्रय[1] मडनु ।
पचशत धनुष मान,[2] तापोत्तीर्ण सुवर्ण समानु ।
अति[3] श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कधु, जगत्रय तणउ बधु ।

---

१ मही । २ प्रमाणु । ३ हरगल गवल ।

केवल ज्ञान लक्ष्मी सनाथ, भव्य लोकन्हि मुक्ति मार्ग तणउ दिखाडइ साथ।
ससार कूपि पडता प्राणि वर्ग[1] हुइ दिइ हाथ।
युगला धर्म निवारवा समर्थ, परमेश्वर[2] सदर्थ।
श्री आदिनाथ श्री सघ तणा मनोरथ पूरउ।१। जो०

(४) जिन बिब (१)

नासाग्र न्यस्त दृष्टि युगल, श्रीवत्सलाछित वक्षस्थल।
पद्मासन विधृत कर युगल, प्रकटी कृत वस्त्राचल।
शरीर तेजच्छटा छोटिताधकार जाल, त्रैलोक्य सुखाल वाल। ६३।जो० (२)

नासाग्र विन्यस्त दृष्टि युगलु,
श्रीवत्स लाछित वक्षस्थलु,
पद्मासनोत्सग विधृतकरकमलु,
प्रगटीकृत वस्त्रांचलु
शरीररश्मिच्छटाच्छोटितान्धकारु। अस बिंबु। (पु अ)

(५) परमेश्वर की नख कांति

जिसउ गुजा तणउ अर्द्धभाग, जिमउ पद्मरागु।
जिस्यउ मजीठ रगु, जिसउ जासू णउ पुष्प, जिसउ प्रवाल भंगु।
जिसउ चोल मजीठ, जिसी राती टसरि।
जिसी अशोक तणी कूपलि, जिसी कुपति कपि कपोल।
जिसउ बिबी तणउ फूलु, जिसउ अभक्तक।
जिसउ सिंहरू, जिसउ ऊगतउ सूरू।
जिसउ कुकुम, जिसउ कुसुभउ।
जिसउ हिंगुल, जिसउ शुक चचु।
तिसी परमेश्वर तणी चरण नख काति॥ ८६ ॥ जै०

(६) केवल ज्ञान से देखा हुआ अन्यथा नहीं होता (१)

कदाचित् समुद्र मर्याद मेल्हइ,
कदाचित् आदित्य पश्चिम ऊगइ।
,, अमृत विषु परिणमइ,

४ पडता। ५ भगवत।

कदाचित् चन्द्रमा अगार वृष्टि करइ ।
,, पाणी माहि पाषाण तरइ ।
,, मेरु चूलिका चलइ,
,, वाचस्पति वचन फलइ ।
,, शिला तलि कमल विकसइ,
,, गगा जलु पश्चिम बहइ,
,, अभव्य हृदय धर्मोपदेश रहइ ।
,, मानुस सरोवरु सूकइ,
,, सत्पुरुष प्रतिपन्नु चूकइ ।
,, मेदनी मडलु पातालि जाइ,
केवलज्ञानु दृष्ट तोइ अन्यथा (न) थाई । पु० अ०

७ केवल ज्ञानी के वचन अन्थया नहीं होते [२]

कल्हारइ[1] समुद्र मर्यादा मेल्हइ, नदी तणा वृद[2] पाछा पभेलइं[3] ।
क० सूर्य घोराधकार करइ, क० चंन्द्रमा अगार तणी वृष्टि करइ[4] ।
क० पाषाण[5] खड जल माहि लागमा[6] तरइ, निर्भाग्य मनुष्य हइ लक्ष्मी वरइ।
क० सकल दिशा मंडल फिरइ, क० मेरु पर्वत्त वाय[7] करी साचरइ ।
क० वेद विद्या[8] विदग्ध पुरुष मरइ, क० पवन वन माहि स्थिर पणउ आदरइ ।
क० वेलू माहि पीलता तेल नीसरइ, क० पूर्व भवान्तर नउ कर्म साभरइ ।
क० सूकड रूख फल फूलि करी विस्तरइ, क० सूकड इक्षु खड रस झरइ ।
क० कैलास चूला चलइ, क० वृहस्पति[9] वचनि करी स्खलइ।
[10] क० कुलाचल एक स्थानि मिलइ, क० अघटतउ सयोग मिलइ ।
क० गगाजल पश्चिम वहइ, क० अभव्यनइं[11] मनि धर्म रहइ।
क० मानस[12] सरोवर सूकइ, क० सत्य हरिश्चंद्र प्रतिज्ञा थकइ चूकइ ।
क०पृथ्वी[13] मडल पातालि जायइ, के वल ज्ञानी कथित तउ ही—अन्यथा न थाई ॥५॥

(जो०)

---

१ किवारे २ना उद्धरण ३ ठेलइ ४ झरै ५ जलमा पत्थर तरै ६ लगारेक तरइ ७ फेरिव्यो फिरें ८ ब्रह्मा वेद न उच्चरे ९ सुगुरु १० खल ११ पाखण्डी १२ रत्न कनक दहे अन्य प्रति मे इसके वाद "कुलवती भर्तार मुके" पाठ अधिक है। १३ आकाश।

(८) केवलज्ञान

विशेष अतिशय निधान, सकल ज्ञान[1] प्रधान ।
मोहांधकार विच्छेदन भानु, त्रोटिता शेष कर्म संतानु ।
त्रिभुवन जन सकल संदेह छेदक, अच्छेद्योभेद्य प्राणी-गण हृदय भेदक।
अनंतानंत विज्ञानु, इसिउ ऊपनउ केवल ज्ञान[3] ।। ३ ।। जो०

(९) समवसरण (१)

उत्पन्न दिव्य विमल केवल ज्ञानावलोकित सकल लोकालोक स्वरूप ।
सुवर्ण सिंहासन छात्र चामरादि अष्ट महा प्रातिहार्य्य शोभमान समानरूप।
देवाधि देव, विहित सुरासुर सेव ।
त्रिभुवनैक नायक, सकल सौख्य दायक ।
त्रिभुवन जन नयना प्यायक, निर्जित पंच सायक ।
चउत्रीस ३४ अतिशय सहित, पांत्रीस ३५ वचनातिशय परिकलित ।
चउसठि ६४ इन्द्र सहित, अष्टादश १८ दोष रहित ।
घात्य कर्म चतुष्टय मुक्त, देवता कोटि युक्त ।
यदा कालि नगर समीपि आवइ, तिवारइ आपणइ भावइ ।
चतुर्विध देव निकाय समोसरण नीपजावइ ।
तिहां पहिलूं देव निर्मित, संवर्त्तक वायु विस्तरइ ।
तृण काष्ट, कचवर अपहरइ, आकाशि मेह पटल पसरइ ।
सुगंधोदकि वृष्टि करइ, फूल पगर भरइ ।
योजन एक प्रमाण भूमिका, विरचित अगर धूमिका ।
मणि रत्न सुवर्ण सिउं सांधी, गुरूड रत्नमय पीठ बांधी ।
ऊपरि जानु प्रमाण पंच वर्ण कुसुम वरसइ, चिहुंदिसि दिव्य परिमल विलसइ।
उदार रत्न, १ सुवर्ण २ रूप्य ३ मय त्रिणि प्रकार ।
मणि, रत्न, हेम मय कोसीसे करी सदाकार, समस्त विस्व माँहि सार ।
पुण्यावतार, तेजि करी पूरस्कार ।
च्यारि (४) प्रतोलीद्वार, जिहां देवज प्रतीहार ।
तिहां बिहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ ।

---

१ किहवारइ २ लगारेक तरइ ३ ।

इंद्र धनुष मान मूरण, तिसिउं रत्नमय तोरण ।
ऊपरि प्रत्यक्ष जिसी मागलिक तणी पालि, तिसी वदर माल ।
अति पवित्र, विशाल छत्र ।
उदार स्वरूप, कनक रत्नमय पूतली तणा रूप ।
नयनइ जोता उपजावइ सुख, इस्या इद्रनील निर्मित मगर मुख ।
जिहा लिख्या सिंह, शार्दूल, गज, इसा निर्म्मल नीरज पचवर्ण धज ।
एहवा समोसरण विचालि, मणिवद्ध पीठ विशालि ।
सकल मागलिक मुख्य, बार गुणउ अशोक वृक्ष ।
तेह तणइ तलइ, स्वर्ण रत्नमय सिंहासण, जगन्नाथ नइ वइसण ।
तेजि करी जोई सकीयइ नीठ, इस्यु, सुवर्णमय पायपीठ ।
जिस्या हूवइ थवल कमल सहस्र पत्र, इस्या पनरह (१५) आतपत्र छत्र ।
व्यतर मध्यस्थ अमर, देवाधि देव न इ ढलइ चमर ।
अधरी कृत दित्य मडल, तीर्थंकर लक्ष्मीकर्ण कु डल ।
जगदीन पुठिइ झलकइ भामडल ।
जेहनइ दर्शनि मिथ्यात्व पटल टलइ, तिस्यु आगलि धर्म्मचक्र झलहलइ ।
आकाशि मधुर ध्वनि देव दुदुभि वाजइ, गाजइ ।
तेह नइ निर्घोपि करी गगनागण ।
पारतीर्थिक तणा भडवाय भाजइ, पापीजन पइसत्ता लाजइ ।
रूडा सवे विरूद वाजइ, सहस्र योजन उच्चैस्तर इद्रध्वज लहलहर ।
धूप तण परिमल मह महइ, इद्रादिक देवता गहगहइ ।
वाजित्र तणी कोडा कोडि व्रहव्रहइ, मनुष्यनी कोडि आवइ मननइ रह रहइ
इसिइ प्रवसरि, एक देवगति गान करइ, एक श्रुति धरइ ।
एक सिहानाद उच्चरइ, एक जग्गनाथ पासइ फिरइ ।
एक विचित्र वाजित्र वा यइ, एक रग करिवा सज्ज था यइ ।
अप्सरागण नाचइ, तीर्थंकर तणी भक्ति करीवा राचइ ।
दुष्ट वनचर आपणा आपणा जाति वइर परिहरइ,
परस्परइ प्रीतिवत हूता सचरइ ।
एणइ एहवइ समोसरणि, मार्गि काटे ऊवे थाइने ।
पृष्टानुगामी पवने वाइते, पोखी ए प्रदक्षिणा वर्त्तिजाइते ।
परमेश्वर तीर्थंकर ।
नव सुवर्णमय कमलि पाय स्थापतउ, तेजिकरि दसइ १० दिसि व्यापतउ ।
पूछिया तण ऊत्तर आपतउ, जन परम्परा नइ पाप थकी मूकावत्तउ ।

गज गतिइ चालतउ समस्त भव्य लोक तणा लोचन नइ आनद उपजावतउ।
भव्य जीव तणइ हृदय कमलि बोधि बीज वावतउ ।
पूर्व दिसि तणइ द्वारि पइसी, पूवाभिमुख सिंहासनि वइसी ।
चतुर्मुख होइ, भविक सम्मुख जोइ ।
वारइ (१२) परिषद पूरी, मिथ्यात्व मान मूरी, पापकर्म चूरी ।
सर्व सत्व साधारिणी, योजन नीहारिणी, अमृतानुकारिणी ।
वाणीयइ करी, लोक ऊपरि हित आदरी ।
चतुः प्रकार, सर्वसार, जग त्रयनइ आधार ।
धर्म्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक तणइ हीयइ वसइ ।
अनेक भव्य जन आदरइ धर्म्म, त्रूटइ जिणथी अशुभ कर्म्म ।
पामीयइ मोक्ष सर्म्म, इति समव सरण । (सू०)

(१०) समवसरण (२)

योजन लगइ खेहनु विस्तार । देव कृत कचवरा पहार ।
गधोदक सींचवइ । सौचाभ्यसार । पचवर्ण जानु प्रमाण जिह कुसुम सभार
देव कृत मणि कनक रूप्यमय त्रि प्राकार ।
विशाल शाल भजिका सहित रत्न मय दो जेहनु द्वार ।
यथा स्थान स्थित गणधर देव देवी प्रभृति वार सभा परिवार ।
उच्चैस्तर तोरण पताका किंकिणी नउ झात्कार ।
धूप घटिका निर्गछत् । कृष्णा गुरु कु दरुष्क तुरुकनो जिहाँ धूपोद्गार ।
चतुर्द्वार । एव विध समवसरण ॥ छ ॥ पु०

(११) समवसरण (३)

ज्ञानि इन्द्रादिक देव आवइ, समवशरण तणी भक्ति भावहि ।
एक देव स्फार नीपजावइ, रुप्यमय प्राकारु, एकदेव विस्तारित तेज. प्रकारु
निपजावइ स्वर्णमय प्राकारु ।
एक देव मणि रत्नोद्योत विघटिताधकार निपजावइ, रत्नमय प्रकारु।
एक देव अति उदारु, नीपजावइ प्रतोली द्वारु ।
एक देव लोक लोचन समुल्लासन, नीपजावइ सिंहासन ।
एक देव प्रकाशित दिग्मण्डलु, नीपजावइ भामडलु ।
एक देव विस्मापित जगत्त्रय, नीपजावइ छत्र त्रय ।

एक देव पल्लव निकुरब पूरितान्तरिक्षु, नीपजावइ किंकिल्लि वृक्षु ।
इसं धजविंघ पताका समलकृतु समवसरणु रचहि । पु० अ०

(१२) समवसरण में देवों की विविध भक्ति

ज्ञानि ऊपनइ, इद्रादिक देव आवइ समवसरण तणी भक्ति साचवइ[1] ।
एकि देव अतिस्फार, नीपजावइ प्राकार ।
एक तेज· सभारभासुर सुर करइ सुवर्ण प्राकार ।
एकि रत्न द्युति विघट्टिताधकार करइ रत्न प्रकार ।
एक उदारस्फार नीपजावइ प्रतोलीद्वार ।
एक लोचन समुल्लासन नीपजावइ ।
सिंहासन प्रसारित दिग्मडल, नीपजावइ भामडल ।
विस्मापित जगत्रय, नीपजावइ छत्रत्रय ।
कोई सपादित भुवनोत्कर्ष, करइ कुसुम वर्ष ।
के० भूमि स्थित धवल ढालइ चमर युगल ।
के० दत्रेक्षण करइ प्रेक्ष (ण) ।
के० विस्तारउ सर्व सार, वीणा झकार ।
केई अति स्फीत, गायइ परमेश्वर नउ गीत ।

१३ जिनवाणी वर्णन (१)

बारइ परिषद पूरि, मिथ्यात्व मान मूरि, पाप कर्म चूरि ।
सर्व सत्व साधारिणी, योजन नीहारिणी ।
चतुर्द्धा धर्म्म प्रकाशिनी, च्यारि कषाय निर्नाशिनी ।
भव्यजन कर्णामृत स्राविणी, कुमत विद्राविणी ।
ससार समुद्र तारिणी, आश्चर्य्य कारिणी ।
पर दर्शन क्षोभिणी, चतुत्रीस वचनातिशय शोभिनी ।
सकल क्लेश विध्वसिनी, उत्तम चतुर्विध सघ प्रशासिनी ।
अष्ट कर्म्म वल विदारिणी, दुर्गति पतज्जनतोद्धारिणी ।
सभा जन ससय हारिणी, मोक्षोपाय विधायिनी, सर्व वछित दायिनी ।
इसी वाणीयइ करी, लोक ऊपरि हित आदरी ।
चतु प्रकार, सर्वसार, जगत्रनइ आधार ।
धर्म्म मार्ग्र उपदिसइ, भविक लोक तणइ हीयइ बसइ । सू० ।

---

१ भावहि २ रूपमय प्राकारू ।

(१४) जिन वाणी वर्णक (२)

श्री जिनवाणी, सुणिज्यो भविक प्राणी ।
एछइ मुक्ति अहिनाणी, परभव नउ सवल जाणी ।।
आदरउ विवेक आणी, छोडउ अवर विकथा कहाणी ।
जउ वाछउ मुक्ति रूप पटराणी, घणु स्यु कहु ताणी ।
जिसी सिद्धातइ बखाणी, अमिय समाणी ।।
वाणी बारह परषद पूरी, मिथ्यात्वमान मूरी ।
पइत्रीस वचनातिशय सनूरी, पापकर्म-पूरी ।।
सर्वसत्वधारिणी, योजनानुहारिणी ।
भव्यजन कण।मृत स्राविणी, कुमति विद्राविणी ।।
ससार समुद्र तारिणी, महा आचार्य कारिणी ।
अष्टकर्म बल विदारिणी, दुर्गतिपतज्जनतोद्धारिणी ।।
सभा जन समय हारिणी, मोक्षोपाय विधायिनी ।
चतुर्धा धर्म प्रकाशिनी, च्यार कषाय निर्नाशिनी ।।
मालव कौशिक राग शोभिनी, पर दर्शन क्षोभिनी ।
सकल कर्म ध्वसिनी, कलिमल खयालिनी ।।
उन्मार्ग भेदनी, मिथ्यात्व छेदनी ।
इसी वाणीयइ करी लोक उपरि हित आदरी ।
चतुः प्रकार, सर्वसार, जगत्र नइ आधार ।।
धर्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक बराइ "धीर" हीये वसइ ।
एव विध भगवद्वाणी- सर्व वानछि दापनी । स० कौ०

(१५) जिन वाणी—(३)

वीतराग तणी वाणी, भव वेलि कृपाणी ।
ससार सागर समुतारणी[1], महा मोहाधकार[2] दिनकरानु कारिणी ।
क्रोध दावानलोपशम्मिनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी ।
कलिमल प्रक्षालनी, मिथ्यात्व छेदिनी ।
त्रिभुवन पालिनी, पाप विशोधिनी, मन्मथ प्रतिपथिनी ।

---

१ समार समुद्र तारणी । २ विध्वसनी ।

अमृत रसास्वादिनी, हृदयाल्हादिनी
आक्षेपकारिणी, विक्षेप विस्तारिणी।
सर्वजनचित्त चमत्कारिणी[1] जगत्त्रयोपकारिणी।
आगमोद्धारिणी, योजन विस्तारिणी। भग[2]वद्वाणी। रा० जो०।
आगे अन्य प्रति से—

सर्व विघन हारिणी, ससारोछेद कारिणी।
चतुर्विध सघ मनोहारिणी, चतुर्विध धर्म प्रकाशनी।
चतुः कषाय विनासनी, भव्य जन कर्णामृत श्राविनी।
सकल कुमति विद्राविणी, त्रैलोक्य आश्चर्य कारिणी।
सर्व ससय निवारिणी, योजन भूमि विस्तारणी।
विक्षेप विस्तारिणी, योजना विस्तारिणी।

(१६) जिनवाणी वर्णन (४)

चतुर्धा धर्म प्रकाशिनी। च्यारि कषाय निर्नाशिनी।
भव्य जन कर्णामृतस्राविणपाना हारिणी। ससार समुद्र तारिणी
आश्चर्य कारिणी। योजन हारिणी।
अखलित, पात्रीस वचनातिशय परिकलित॥ ८॥ जै०

(१७) धम उपदेश

निद्रान्ते परमेष्ठि सस्मृति रथो देवार्चन व्यावृति.।
साधुभ्य· प्रणतिः प्रमाद विरति· सिद्धान्त तत्त्व श्रुति·।
सर्वस्योपकृति शुचि व्यवहृतिः, सत्पात्र दाने रति.।
श्रेयोः निर्मल धर्म कर्मणि रति, श्लाघ्या नराणा स्थिति·॥
तुम्हे सदैव पुण्य कर्त्तव्य करिवु, मनुष्य जन्म नउ फल लेवउ।
निद्रा प्राति पच परमेष्ठि नमस्कार गुणिवउ, श्री सिद्धात सुणिवउ।
श्री सर्वज्ञ देव पूजिवउ नवनवे स्तवने स्तविवउ।
श्रीसद्गुरु सेवविउ, कुसग मेल्हिवउ,

---

१ सम्मोहकारणी। २ वीतरागवाणी।

विकथा प्रमुख प्रमाद—टालिवउ । मनि धर्मोद्यम आणविउ ।
सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावना प्रभावनादिक पुण्य कार्य करिवो ।
निद्रादिक[1] पाप करणीय परिहरवा ।
मन उन्मार्गि जातउ वालवु ।
वैश्वानर नउं[2] कर्म वन बालिवउ ।
परोपकार करवउ पुण्य भडार भरिवउ ।
शुद्धव्यवहार आराधिउ, मोक्ष, मार्ग साधविउ ।
न्याय उपार्जित वित्त क्षेत्र[4] नइ विषइ वेचिवउ ।
तीर्थयात्रा प्रमुख पुण्य लाभ लेवउ ।
जीवदया कीजइ, उचित दान दीजइ ।
'सकल लोक माहि प्रसिद्धि लीजइ, पूर्वोपार्जित पाप खीजइ ।
मनुष्य भव कृतार्थ नीपजावीयइ, श्रावकाचार साचवीइ ।
सर्व दुःख प्रमाजीय । ईण परि श्रीधर्म समाराधया जिय उत्तर मंगलीक माला पामउ तिम भी धर्म नइ विषइ सदैव सावधान हुया ।। इत्युपदेश।।

(१६३ जो०)

(१८) जिनोपदेश (२)

सत्संगत्या १ जिनपति नुत्या २ गुरु सेवया ३ सदा दयया ४
तपसा ५ दानेन ६ तथा तत्सफल सुकृतिभिः कोप ।।
तन्मानुष्य जन्म लब्ध्वा यो विपली कुरुते स एव कुरुते ।।
भस्मकृते स दहति चारुचदन जे मनुष्य जन्मेद कामार्थे
नयते सतत धर्म परिमुक्ता. । २ । अतत्सफली कार्य मेवा यतः ।।
पुष्णाति गुण मुष्णाति दूषण सन्मते प्रबोधयते
शोधयते पाप रज' सत्सगतिरगिना सतत ।। १ ।। कीरद्वयवत्
माताप्येका पिताप्येको ममतस्यच पक्षिणः
अहं मुनिभि रानीतः सचानीतो गवाशनै ।। २ ।।
सद्य. फलति कामा वामा कामा भय नयतते ।
न भवतिर्भव भीति जिनपति नति मति मतः पुसः ।। २ ।।

---

१ निंदा २ तउ ४ क्षत्री

कुमारपालाशोकमालिवत् गुरु सेवा करण परो नरो नारागै
रभिद्रुतो भवति ।
ज्ञान सु दर्शन चरणै राद्रियते सद्गुण गणैश्च ।। ३ ।।
केशि प्रदेशि वत् । नरय गइ प्रौढ स्फूर्ति निरुपम मूर्त्ति, शरदिदु कुद
सम कीर्त्ति ।
भवति सि सौख्य भागी सदा दयालकृतः पुरुषः ।। ४ ।। दामन्नक वत्
पूर्व भवे जालिकः जलमिव दहन स्थलमित्र
जलधिर्मृग इव मृगाधिप स्तस्य इह भवति
जे न सतत निज शक्तया तत्यते सु तप ।। ५ ।।
सनत्कुमार दृढ प्रहारि वत् । त परिहरति भवार्ति.
स्पृहयति सुगतिर्विमुचते कुगतिः यः पात्रता
कुरुते निज कन्यायार्जित वित्तं ।। ६ ।।
चतुस्सुत जनक जिनदत्त. श्रेष्टी च शालि भद्र
चदना श्रेयास धन सार्थवाह वत् ।। ६ ।। इत्युपदेशलेशः समाप्तः ।। १६८ जो०

(१८) धर्म कृत्य

देव पूजनु, गुरुवदनु, तीर्थयात्रा गमनु,
शील परिपालनु, अध्ययनु
स्वाध्याय, ध्यानु, तपोविधानु
अनुष्ठान, दानु
सुधी भावना, जिन शासन प्रभावना

(पु० अ०)

प्रमुख धर्म कृत्य—

(२०) धर्म कृत्य

यथा शक्ति दान दीजइ । शील पालीइ । तप तपीइ । भावना भावीइ ।
सम्यकत्व पालीइ । मिथ्यात्व टालीइ । देव पूजीइ । गुरु सेवा कीजइ ।

सिद्धान्त सांभलीइ । तत्व अभ्यासीइ । विचार पूछीइ । वदनक दीजीइ । सामायक लीजीइ । अधीत शास्त्रा गुणीइ । धर्मना फल लुणीइ । पर स्त्री परिहरीइ । नियम सपौषध लीजइ । तीर्थ यात्रा कीजइ । जिन शासन नी प्रभावना कीजइ । अट्ठाही महोत्सव कीजइ । गुरु सन्मान दीजइ । एव विध जिन धर्म भाव सहित कीजइ ।। पु० ।

(२१) दान वर्णन

दानु, विश्व रजनु ।
भवाभोधि निस्तरण शोकु,
यशः प्रकाश केतु
कीर्ति नर्त्तकी रगुभूमि, सकल सौख्य बीजाकुर क्षेत्र ग ग भूमि ।
कल्लोल कमला वशीकरण, समग्र गुण गणामत्रण ।
करइ लोक गान, जिणइ लाभइ सन्मान ।
निः समान, वधारइ कीर्ति विमान ।
रुडउ भावइ सतान, पामीइ शुभ स्थान ।
भदात्रातर लहीइ घणु वान, प्रतापि करी जीपइ भान ।
आपणइ उदार पणइ वसावइ रान, लक्ष्मी नइ उछरइ बान
जिह नइ मनि हुयइ सान, तिणि माहि मानि दान,
देइवउ दान ।। ८८ ।। जै०

जै०

(२२) दाने पुण्य संख्या

यदि मेघस्य धारा सख्या भवति । दिवि तारा सख्या ।
भूतले रेरु कण सख्या । समुद्रे मत्स्य सख्या । मेरु गिरौ स्वर्ण सख्या ।
मातृ स्नेह सख्या । सर्वज्ञ गुण सख्या । दुर्जने दोष सख्या ।
आकाशे प्रदेश सख्या । जीवस्य गति सख्या ।
सत्पात्र दाने पुण्य सख्या भवति ।। छ ।। पु

(२३) शील वर्णन

तीर्थ विण स्नान, दत्त[1] विण बहुमान ।
चदन विण विलेपन, अलकार विण विभूषण ।
लोके लेई न सकीयइ एहवु निधान ।
मुक्तिदान, सावधान, अमूलमत्र वसीकरण, दुर्गति हरण ।
अमूर्त्त शृगार, सयम श्री हार ।
भवाभोधि तारण, सकट निवारण ।
मोह महीपाल सिरि कील, करइ पुण्य कउ[2] उन्मील ।
नासइ मदन रूपीउ भील, उन्मूलइ अवेसास रूपी[3] उखील ।
न करवी एह नइ विषइ ढीलि । तिण पालिवउ निर्मल[4] शील ॥ सू० ॥

(२४) शील वर्णन (२)

शील, अति सुशील ।
विण स्नात्र पवित्री करणु, विण अलकार आभरणु ।
जग त्रय वश्य करु, दुर्गति हरु ।
विश्वास तणु कारण, अकीर्त्ति निवारण ॥१४॥ जै०

(२५) पारस्त्री गमन दोष—

परदार संग लगी घरबार चूकियइ ।
,, ,, धनधान्य चूकियइ[5] ।
,, ,, खाएवा पीएवा चूकियइ ।
,, ,, ओढेवा पहिरेवा चूकियइ ।
,, ,, स्वजन परजन चूकियइ ।
,, ,, देह वान[6] चूकियइ ।
,, ,, आचार व्यवहार चूकियइ ।
,, ,, सत्य शौच चूकियइ ।
,, ,, देवगुरु चूकियइ ।
,, ,, धर्ममार्ग चूकियइ ।

१ अदत्त बहुमान २ नउ ३ रूपीयउ ४ श्री शील । ५ मूकियइ, ६ स्नेहवान ।

परदार संग लगी इहलोक परलोक चूकियइ
,, ,, एक नरक ढूकियइ[1] ॥+पु. अ

(२६) तप वर्णन

तपु, साक्षात् परम जपु ।
अष्ट कर्म क्षयकरु, महा शोक हरु ।
मुक्ति श्री वशि करिवा परम मन्त्रु, मदन गढ गाजिवा मगर वइ यन्त्रु ।
मुनि जन शृंगार, अरिष्ट तरु कुठार ।
इस्यउ तप ॥ १५ ॥ जै०

(२७) अथ तप

त्रिभुवन वशीकरणु मन्त्रु, कन्दर्प दर्प ग्रहोच्चाटन परम यन्त्रु ।
लोभार्णव शोषण बडवानल, मोक्ष श्री कमल ।
माया वल्ली कुठारु, दुरितोपताप तस्कर, धर्म महाराज नगरु,
मानाचल चूलिका वज्र घातु, केवलि श्री कान्तु,
जु वहइ तपु, ते (घ) लहइ संसारि संतापु ॥ ६० ॥ जै०

(२८) भावना

मुक्ति श्री प्रति सगलाइ भावे जाणे हाव भावना ।
स्यू घणइ वादि, भावु हुइ तउ स्या जईय प्रासादि ।
भावु मूलगउ योगु, भावु लगी बइठा पुण्य नु समायोगु ।
ध्यान ध्येय धारणा, भावु लगी सगलाइ कारणा ।
एवं विध भाव ॥ १६ ॥ जै०

---

१ एक नि केवल नरक दुख देखइ+एक अन्य प्रति में—"खडत्वमि द्रिव्य० सव स्वहरण बध०"—पाठ अधिक मिलता है ।

भावना

जिम तुग प्रासादु दण्ड कलश प्राग्भार, जिम स्त्री सोहइ कठ कदलि हारि।
जिम मस्तक सोहइ केश प्राग्भारि, जिम कमल सोहइ वारि।
जिम कर्ण सोहइ स्वर्णालिकारि, जिम सोहइ गुहु नारि।
जिम नेत्र सोहइ कज्जल सारि,
जिम विवाहि सोहइ कूरि, जिम सोहइ उच्छव तूरि, जिम वीडउं कपूरि।
नदी जल पूरि,
रात्रि चद्र मण्डलि, जिम हारु मुक्ताफलि, जिम सरोवर सोहइ कमलि,
जिम मुख सोहइ तबोलि, जिम पृथ्वी सोहइ वेलाकूलि।
जिम सोहइ रसवती जिम सोहइ सरस्वती वचनि
तिम सोहइ धर्म भावना ॥ ६१ ॥ जै०

(३०) दया धर्म प्रधानता

धर्म माहि दया धर्म वीतरागि भाखिउ मुख्य[1] जाणिवउ।
जिम[2] पर्वत्र माहि मेरु, तुरंगम माहि पच वल्लह किसोर।
हस्ति[3] माहि ऐरावणु, दैत्य माहि[4] रावणु।
वृक्ष माहि[5] कल्प वृक्ष।
रत्न माहि[6] चिन्तामणि, अलकार माहि चूडामणि।
क्षीर[7] माहि गोक्षीर, नीर माहि गंगा नीर।
वस्त्र माहि[8] चीर, पटसूत्र माहि[9] हीर।
पुष्प माहि कमल,[10] बाद्य माहि शख यमल।
काष्ठ माहि चदन, वन माहि नदन ॥ २४ । जो० +

---

१ ते २ जिसो ३ हाथी ४ जिम ५ जिम ६ जिम ७ खीर ८ जिम ९ जिम
१० रग माहि धवल

+ एक अन्य प्रति मे "वाजित्र मॉहि भभा, स्त्री मॉहि रभा।
शास्त्र माहि गीता, सती मॉहि जिम सीता"
यह पाठ और मिलता है।

(३१) जीवदया रहित धर्म (६)

जिय लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती।
दधी[1] रहित ओदन[2], घृत रहित भोजन।
कठ रहित प्रासाद, माधुर्य रहित साद।
खड रहित मोदक, आधार रहित गगोदक।
कठ रहित गायनु, छद[3] रहित वायनु।
शक्ति रहित पौरुष[4], ध्यान रहित गौरुष[5]।
मद रहित रावण[6], वेद रहित ब्राह्मण[7]।
परिवार रहित नायक, शास्त्र रहित पायक।
फल रहित वृक्ष[8]...... ।
वस्त्र रहित श्रृङ्गार, सुवर्ण रहित अलकार।
तीम[8] जीवदया रहित धर्म न शोभइ ॥ १२, स० १

(३२) जीवदया रहित धर्म (२)

जीव दया रहित धर्म न शोभइ,
जिम मद रहित[9] गजेद्र, लज्जाहीन कुलबधू, नीति विकल[10] राजा।

---

१ दधि। २ उदन। ३ नृत्य रहित वादनु। ४ पुरुष। ५ गुरुव। ६ हाथी, सेवा सहित साथी। ७ इसके बाद "गुण रहित मागण" विशेष ८ इसके बाद "तप रहित भिक्षुक" वि०
फिर—वेग रहित घोडे, केस रहित मोडे।
प्रेम रहित सगम।
दान रहित राजा, खड रहित खाजा।
तेज रहित सविता, वाणी रहित कविता। (विशेष)

८ जिम एतला वाना बिना न शोभे, तिवा जाणदो। (सू० ३)

'पु०' प्रति के प्रारभ मे इतना पाठ अधिक ॥धर्म वर्णक॥ अहो धार्मिक लोकउ। फल्गु भाषित परित्यजी क्षण मात्र। एक तात्विकी वृत्ति। मन सावधान करी कश्य मानहूँ तउ धर्म नु सरवस्व साभलउ।

९ हीन १० हीन+इसी पु० प्रति मे इतना पाठ और अधिक मिलता है — घृत रहित भोजन। लवण रहित रसवती। आकृति हीन सरस्वती। छद रहित कवि। क्षमा रहित मुनि, जिम एतला पदार्थ मृत्युलोकइ न शोभइ॥
तिम जीव दया रहित धर्म न शोभइ ॥छ॥ पु०

बद्ध मुष्टि नायक, शस्त्र रहित पायक ।
अति निष्ठुर वाणिउ, खासणउ[1] चोर ।
आलसू कमारउ, दुर्विनीत चेलउ, ध्वजरहित देवकुल ।
जिम गाबडि छोटउ ऊंट, उसियालइ (अनइ) खुंट ।
वेग पाखइ[2] घोडइ, गृहस्थ माथइ बोडइ ।
एक स्त्री[3] अनइ बूटी, एक ध्वज अनइ अतरालि त्रूटी । (स.१)

(३२) धर्म महात्म्य

परम मगल धर्मो धर्मो बुद्धि[4] समृद्धि दः
इष्टार्थ साधको[5] धर्मो धर्मो मोक्ष दायकः ॥
भो भविक लोको, निर्मल विवेको, श्री सर्वज्ञ प्रणीत पुण्य कर्त्तव्य करवउं ।
आपणा मनुष्य तणउ फल लेवउ ।
ए धर्म परम उत्कृष्ट मंगलीक कहियइ, एह प्रसादिइ सर्व कल्याण लहियइं ।
जिम तेज सघलाई सूर्य तेज माहि समाइ ।
जिम नदी सघली समुद्र माहि माइ ।
जिम पग सघलाइ गजेंद्र पगि अतर्भवइ ।
जिम आकाशि माहि सर्व पदार्थ आवइ ।

तिम दधि, दुर्वा, ऽक्षत, चदन, कुसुम ककुम, पूज्यवृद्धाशीर्वाद द्वादश तूर्य निनाद । विवाहादि हर्षाकल अनेराइ पुत्र जन्मादि महोत्सव सानुकूल ग्रह बैरि निग्रह, भला स्वप्न, शुभ शकुन, प्रमुख प्रमुख सकल मगलीक माहि अतर्भवइ देखउ ।

ज्ञानत्रय सहित श्री तीर्थंकर तणइ गर्भावतारि माता अद्‌भुत १४ स्वप्ना लहइ । चलितासन देवेन्द्र तेऊ फल कहइ ।

देवता गृहांगणि निधान सचारइ, रत्न मणि, मौक्तिक, प्रवाल, पद्मराग, दक्षणावर्त्त सखे करी भडार भरइ । कण कोठार वृद्धिवत हुइ । गज तुरगम रथ पदाति समधिक थाइ, अनेक देश सविशेष आपणइ वसि सपजइ, राज्य संपदा वृद्धिवती नीपजइ । अनेक राय राणा आज्ञा[6] मानइ । जन्म समइ छप्पन्न दिकुमारिका सूति कर्म करइ, आपणी[7] रली चउसठी देवेन्द्र जन्माभिषेक करइ ।

---

१ खापणउ, खोसणउ २ रहित ३ स्त्रीकानि ४. वृद्धि ५. ऽनिष्ठ बाधका । ६.आणा ७. आणी

मेरु पर्वति मिली सुवर्ण, रूप्य, वस्त्र नी वृष्टि निरतर करइ, ज जं जोइई त तं आणी। नृपागण भरइ बालपणि देवागना लालइ। देव सवे दोहिला टालइ, अगुष्ठि अमृत सचारइ, देव पच धात्री वधारइ, यौवनि जं जोइय त सपाडइ, सहू काज कीधउ, जि दिखाडइ, दीक्षा लेता महा महोत्सव करइ।

परमेश्वर तणी स्तुति समाचरइ, केवलि ज्ञानि ऊपनइ
समवसरण रत्न, सुवर्ण, रुप्य मय प्रकार रचइ।
अढई गाऊ तीह नोवडा[1] वध खच्चइ।
जानु प्रमाण पुष्प प्रकर भरइ, त्रिन्नि छत्र परमेश्वर नइ मस्तकि धरइ।
व्यतर च्यारि रूय करइ, अंगुष्ठि अमृत सचारिइ।
रत्नमय दड चामर ढालइ, हर्ष लगइ आप न सभालइ।
नव सुवर्ण कमल पाय हेठि सचारइ, अष्ट मगलीक नवा अवतारइं।
इन्द्र ध्वजादि ध्वज लहलहइ, धूप[2] घटी परिमल महमहइ।
हर्ष प्रकर्ष लगइ देव गाजइ, असख्ये भव तणा सदेह भाजइ।
रभा तिलोत्तमा अप्सरा नाचइ, सविहु न मन पतीजइ साचइ।
चउत्रीश अतिशय, अष्ट महा प्रातिहार्य सहित
अढार दोष रहित, ३५ वाणी ना गुण सहित, इम तीर्थंकर देव
धर्म लगइ सदीव मगलीक महोत्सव अनुभवइ।
अनइ दश विध भवन पति निकाय, सोल व्यतर तणा निकाय,
पच ज्योतिषी निकाय, बार देवलोक देव,
पच अनुत्तर विमान देव ज सपूर्ण सुख अनुभवइ।
तेउ धर्म हीज नउ निःकेवल माहत्म्य जाणिवउ। (१६३ जो.)

(३४) वीतराग धर्माराधन

देव श्री वीतराग देव प्रणीत धर्म्म तेउ एकाग्र मने आराधीइ
एहु जिन धर्म दश लक्षणोपेतु, भवार्णव नइ पइलइ परि जाइवा सेतु।
सर्व सौख्य दायकु, समस्त जीव लोक नउ नायकु।
निर्मलु, पाप प्रति सबलु।
विश्व वात्सल्य करु, दारिद्र हरु। त्रैलोक्य छुइ आदारु

चिन्तामणि कल्पवृक्ष कामधेनु तेहनु केवल उद्यापारा जेहना ।
आदेश कराया चन्द्रमा सूर्य जलधरु, स्वर्ग्य विवर्ण्य करु ।
इसउ धर्म्म आराविइउ ॥ ३१ ॥ जै०

(३५) जिन धर्म

जिम देव मध्य इन्दु, तारा मध्य चन्दु ।
स्नग्ध मध्य घृतु, औषव मध्य अमृतु ।
बुद्धिमत मध्य बृहस्पति, निरीह मध्य यति ।
तिम धर्म मध्य जिन धर्मु ।

(३६) धर्म महात्म्य

जे गया विदेश, पडिया सबलह क्लेश,
ताण्या पाणी नइ पूरि आक्रम्पा अक्रूर,
चाप्या सधरि, डसिया विसधर,
धरिया राये, लेल्या धण घाए
सुरडिया भोगे, दूहविया रोगे,
पाडिया बंदी, पडिया विछदी,
तिहा सविनइ धर्मनौ आधार, एह साचो विचार,
'वीर' वदई बारम्बार, बीजऊ कारिमउ व्यवहार ॥ (कु०)

(३७) धर्माधार

जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि ।
ताण्या पाणी नइ पूरि, आक्रमण क्रूरि ।
चाप्यास धरि, डसीया विषधरि ।
धरीया राए, लेल्या वण घाए ।
मुरडीया मोगे, दूहवीया रोगे ।
पाडिया वदि, पडिया विछदि ।
तिहा सविहु नइ धर्म्म नउ आधार। ए साचउ विचार, वीजउ कारिमउ व्यवहार।

(३८) धर्म

ससाराभोधि तरण हेतु, यशः प्रसाद केतु ।
विचक्षण कीर्ति नर्त्तकी रगभूमि प्रदेश । सकल सौख्य बीजाकुरोद्गम क्षेत्र निवेस
जलधि लोल कल्लोल चपल लक्ष्मी तणु वशीकरण । समग्र गुण गणामत्रण

(पू०)

(३९) युगलिया सुख वर्णन

हिव युगलिया ना सुख साभलउ

अति रुडी नित्योद्योति रत्नमय भूमि, तिहा दश विध कल्पद्रुम मनोवाछित पूरइ,

एकि कल्पद्रुम अष्ट भूमिका रत्न निर्मित आवास तणाऊ आकार धरइ,

तेहि माहि नित्योद्योत पल्यक रत्नमय सिहासन सहित

एकि चद्र सूर्य नी प्रभा आपणो काति करी पराभवइ ।

एकि स्त्री पुरुष योग्य दिव्योपभोग्य आभरण विस्तारइं,

एक चक्रवर्त्तीनी रसोइ पाहिइ अनत गुण सुस्वाद ।

अष्ठोतर सउ खाद्य, चोसठि व्यजन रूप आहार आपइ ।

एकि स्थाल विशाल वाटुला वाटुली सीप कच्चोल भृगारादिक,

भाजन सवे समोपइ ।

एकि क्षोम, पट्टकूल, चीनाशुक, क्षीरोदक,

प्रमुख पच वर्ण विचित्र भाँति स्वच्छ[1] निर्मल वस्त्र पूरइ ।

एकि बल बुद्धि आयु,

वृद्धिकारक शीतल सरस आप्यायक पाणी आपता तृषा चूरइ ।

एकि वीणा, वेणु मृदग, यमल, शख,

पटह कसाल[2] प्रमुख अगुण पचास वादित्र स्वर साभलावइ मधुर ।

एकि तिलकु, वकुल, अशोक,

चम्पक, कुद, मचकुदादि, पुण्य प्रकर सपाडइ प्रचुर ।

एकि १ दीवानी परि उद्योत करइ, रात्रि ना अधकार निराकरइ ।

तेह युगलीया ना च्यारि भेद छप्पन अतर दीवा,

१ हेमवत, ऐरण्यवत[3] २ हरिवास रम्यक तणा ३ देवकुरु उत्तर कुरु ४ एकेकि पाहिइ अनुक्रमिइ, अनत गुण बल, रूव, सुख ते आठ सय धनुष १ एक गाऊ १ बि गाऊ ३ तिन्नि गाऊ ४ ऊँचा । एक १ एक रत्रि ३ त्रिन्नि ४ दिन अतरि भोजन इगुणासी इगुणासी[2] चउसठि ३ अगुण पचास ४ दिन अत्य कालि अपत्य लालना । चउसठि १ चउसठि २ अट्ठावीस सउ त्रि सय छप्पन ४ पृष्ठ करडा । त्रीजा १ वीजा २ त्रोजा ३ पहिला ४ आरानी सुखिया । पल्योपम आठमउ भाग १ एक पल्य २ बि पल्य ३ त्रिन्नि पल्य ४ आयुः ।

ते सवे जुगलीया दिव्य रूप, चउसठि लक्षण लक्षित देह स्वरूप, सम

चतुरस्र संस्थान, वज्र, ऋषभ, नाराच, ४ प्रधान परम सौभाग्य सहित वलिपलित विवर्जित, अशिक्षित सर्व कला तणा जाण। केवलउ पुण्य नउ प्रमाण। जन्म माहि रोग, शोक, दु ख, जरा, मरण छीक, बगाई, ऊपमरण, अल्प कषाई, ऊपजइ देव माहि। तेह माहि कुण हूँ न स्वामी, न दास, न मूक, न ऊमलूक, न बधिर, न विधुर, न कूबडा, न वामणा, न हुँटा, न छोटा, न पागुला, न आधुला, तिहा डास मुमा माकुण जू प्रमुख न उपजइ। साकर पाहिइ धूलि ना सुस्वाद अनत गुणा पूजाइ। ए इस्या सुख सत्पात्र दानिइ युगलिया लहइ। कुपात्र दान लगिइ पट्ट हस्ती, पट्ट तुरगम थाइ। अधिकी सद्गति न जायइ [3]। अनइ अभय कुमार जिम च्यारि बुद्धि धर्म प्रभावइ लाभइ, अनइ धर्म नइ प्रसादिइ लक्ष्मी वृद्धि, कुटुब वृद्धि, स्वजन परिजन वृद्धि, गज तुरगम, वृषभ, रथ धण, ढोर, वृद्धि हुई। देखउ तुम्हे अशोक माली नव पुष्पनी पूजा लगइ नव भवे क्रमिइ नव द्राम लक्ष, नव द्राम कोडि, नव स्वर्ण लक्ष, नव स्वर्ण कोडि, ४ नवरत्न, लाख ५ नव रत्न कोडि ६ नव ग्राम लाख ७, नव ग्राम कोडि ८ तणउ स्वामी हूयउ। श्री पार्श्व कन्हइ दीक्षा लेई, अनुत्तर विमानि गउ, तेउ मोक्षि पुण जाइ सिइ। इम धर्म नइ प्रसादि धर्म-वृद्धि सप इ। अनइ धर्मe समृद्धि ऊपजइ, अत्रुट अक्षय लक्ष्मी चितामणि, दक्षिणावर्त्त शख, सौवर्ण पुरिसा नी सिद्धि, अभीष्ट मत्र सिद्धि, अचिंतित देवता वर, अद्भुत निधान, लाभ, राज सन्मान, उचित दान, एहसि अनेक समृद्धि होइ, अनइ ज ज वाछिइ इष्टार्थदुस्साध, सर्व कार्य रूप सौभाग्य अद्भुत भोग महा सुख, ते ते सहू धर्म महात्म्य लगइ, नीपनउ हीज दीसइ, अनइ विघ्न क्षुद्र उपद्रव, रोग, हानि दारिद्र्य दुःख, शोक, चिन्ता अरति प्रभृति अनिष्ट कोई धर्म लगइ न सम्भवइ। घणु किस्यु कहीयइ एह धर्म लगइ, अनत सौख्य, मोक्ष पुण्य लहियइ। एह भणी तुम्हें पूजा प्रभावना दान शील, तप, भावना, अमारि प्रवर्त्तना, तीर्थयात्रा, सामायिक, पौषध, सवेग, वैराग्य, परोपकार प्रमुख पुण्य कार्य नइ विषइ तिम उद्यम करवउ जिम उत्तरोत्तर सकल मगलीक माला पामउ। यत —पुसा शिरोमणियते धर्मार्जन परा नरा· ॥ इत्युपदेश छः ॥ (१६५०) जो।

(४०) पुण्य माहात्म्य।

पुण्य लगइ पृथ्वी पीठि प्रसिद्ध पुण्य लगे मन वछित सिद्धि।
पुण्य लगे निर्मल बुद्धि, पुण्य लगे घरि २ वृद्धि[1]।

---

१ ऋद्धि वृद्धि पुण्य-सुपरिवार तणा योग (अधिक पाठ)

पुण्य लगे नवे निद्धि, पुण्य लगे घरि थिर रिद्धि ।
पुण्य लगे शरीर निरोग, पुण्य लगे अभगुर भोग ।
पुण्य लगे नव नव[1] रग, पुण्य लगे चढीयइ[2] तुरग ।
पुण्य लगे सुकलत्र सयोग, पुण्य लगे टलइ सहु सोग ।
पुण्य लगे सिगला थोक, पुण्य लगे वसि सहु लोक ।
पुण्य लगे घरि गज घटा, पुण्य लगे सउदा सटा ।
पुण्य लगे उलटा पटा, पुण्य लगे रहइ विकटा ।
पुण्य लगे लहइ चउहटा, पुण्य लगे[3] चदन छटा ।
पुण्य लगे सूर सुभटा, पुण्य लगे सेवक थटा ।
पुण्य लगे निरुपम रूप, पुण्य लगे मानइ भूप ।
पुण्य लगे अलख सरूप, पुण्य लगे पुत्र अनूप ।
पुण्य लगे सुभ[4] आवास, पुण्य लगे पूजइ[5] आस ।
पुण्य लगे रहइ उलास, पुण्य लगे तेज प्रकास ।
पुण्य लगे नेक[6] शृगार, पुण्य लगे मानइ कार ।
पुण्य लगे शुद्ध[7] आहार, पुण्य लगे रहइ आचार ।
पुण्य लगे जस सोभाग, पुण्य लगे द्रव्य अथाग ।
पुण्य लगे बाधइ भीर, पुण्य लगे बाधव सीर ।
पुण्य लगे चतुर सुजाण, पुण्य लगे अविरल वाण ।
पुण्य लगे तान नइ मान, पुण्य लगे फोफल पान ।
पुण्य लगे मुहडइ वान, पुण्य लगे अमृत पान ।
पुण्य लगे 'धीर[8]' सुभ ध्यान, पुण्यइ पामीयइ केवल ज्ञान ।

इति पुण्य फल । (कु०)

(४१) पुण्य प्रभाव (२)

सर्वोपार्जित पुण्य प्रभावि, जे सौख्य लहइ ते सम्भावि ।
जिस्यउ निर्मल शशाकु, तेह पाहिइं कुल निकलकु ।
तिहा जन्म लहइ, नीरोग थ्यउ रहइ ।

१ नवा २ पल्हाणीयइ ३ चालता दीजइ । ४ वसिवा प्रधान ५ पुण्यइ पूजइ मन चीतवी । ६ अनेक ७ भला । ८ सर्वत्र बहुमान ।

+ दूसरी प्रति मे पाठ बहुत कम हैं उसी का यह विस्तार किया गया है । निम्नोक्त पाठ उसमे अधिक है ।

"पुण्यइ आनददायिनी मूर्त्ति, पुण्यइ अद्भुत स्फूर्ति।

अगो पाग करी प्रौढ, हुई यौवनाधिरूढ।
सर्व शास्त्र करी परिकलितु, विज्ञान न इ विषय अश्वलितु।
सर्व लक्षणे पेतु, कुल हइ केतु।
विविध भोग तणी प्राप्ति, अनि भोगविवानी जाणइ युक्ति।
शालिभद्र नी परि, विविध स्त्री घरि।
आलन सूभव्या गजेन्द्र मद भिरइ, तुरगम हेखारव करइ।
विबुध जन बइठा शास्त्र वाचइ, आगलि त्रिवेली पात्र नाचइ।
ती—ता गुण करी प्रबल, नागवल्ली दल।
ते अश्रान्त बीडा ममाणीइ, ऊग्या आथम्या अतरु न जाणीइ।
स्वजन तिडइव्या, रहइ निष्पृहा। सप्त भूमिक धवल गृह,
ऊपरी स्वर्णमय कलश झलहलइ, बारि बदिजन कलकलइ,
देवदूष्य व पहिरीइ। चदन काष्ट विहरीइ।
दुर्जन ना नासइ पक्ष, नीपजई चतुर्मुख गवाक्ष,
सारि पासे रमीइ। इम दिन नीगमीइ,
सूआ सालही हस मयूर लही तिहनइ विनोद लागीइ। जइ माग्यउ लाभइ,
तउ वीतराग कन्हलि इ ए सौख्य मागीइ॥ ३०॥ जै०

(४२) पुण्य प्रकार (३)

नाणु, भाणु, खाणु, पीणु, कयाणु, वसाणु, दोभाणु, वीयाणु, इत्यादिक पुन्यना प्रकार छे। वि०

(४३) पूर्वभव के पुण्य से प्राप्ति

बेटा, बेटी, बइयर, बल, बुद्धि, सोना, रुपा, मणी, माणिक, मोती, मुगीया, मान, मही, मयगल, मोटाई, मर्यादा, हर्ष, कुटब, परिवार, स्वजन, सम्बन्धी, सपदा, मोहणबेल, चित्रावेल, कामकुभ, कल्पवृक्ष, कामधेनु, दक्षिणावर्त शख, पारसपाषाण, एतला वाना पूर्वला भवनि पुन्याई होई तिवारे पामीइ॥

(४४) पुण्य बिना नहीं मिले

माता, पिता आइ, काका, बाबा, मामा, मामी, भाई, भत्रीजा, भोजाई, भाडरु, मित्र, कलत्र, पुत्र, पुत्री, पौत्र, प्रपौत्र, भाणेज, पीत्राई, पडपीतराई, सगा सणीजा, सम्बन्धि, कुटब, परिवार, नफर, चाकर।

काम कुम्भ, कामधेनु, कल्पद्रुम, चितामणी, चित्रावेल, मोहणावेलि, रुद्रवती, तेजमतूरि, स्पर्शोपल, सुवर्णफरसो, रत्न कंबल स्यालश्रणी, व्रणसरोहिणी, पद्मिनी स्त्री, भद्र जातिनाइस्त्री, ए योगवाई पुन्य विना न पामें । वि०

(४५) बिना पुण्य नहीं मिले—(२)

सुठाम, सुगाम । सुदान, सुमान । सुजात, सुभ्रात । सुतात, सुमात, । सुकुल, सुबल । सुस्त्री, सुपुत्र । सुपात्र, सुखेत्र । सुरुप, सुविद्या । सुदेव, सुधर्म, सुगुरु । सुदेश । सुवेश । ए योगवाई पुन्य विना न पामीइ ।।

(४६) अथ पाप फल ।।

पाप लगइ मध्यम जाति, पाप लगे भमइ दिन राति ।
पापथी पामियइ प्रियवियोग, पापथी पामिये रोग ।।
पापथी पामियइ सोग, पापथी पामिये कुनारि नउ सयोग ।
पापथी पामिये क्षय, पापथी पामिये भय ।।
पापथी पामियइ परवस, पापथी पामियइ अजस ।।
पापथी पामिये धनहाणि पापथी पामिये दुख खाणि ।।
मुनि धीर मुखिनी वाणी, ए पापना फल जाणि
इति पापवर्णक ।। कु

(४७) धर्म मे प्रमाद

जे कोई जिन धर्म तणे प्रमाद करे
ते जाणे ठीकरी कारण अमृत कुम्भ फोड़े [1] ।।
निष्कारण आजन्म तणो स्नेह त्रोडे ।
कामधेनु अलीठी मेल्हीइ
चिंतामणी रत्न आवतो पाय फेडइ ।।
कल्पद्रुम आ णा घरथी उन्मूलैं ।

"ईश्रा, आई, बहिन, भाई भूश्रा, फूफा, फूफी, देवर, जैठ, स्त्री, पुत्र, नानो, मोटो, गरबो, बूढो, खावो, पिवो, पहखु, बइसवु, जावु, ऑवु ख्याल विनोद ए पुण्याइयै पामवा पाठ अधिक मिलता है ।

प्रवहण आपणा समुद्र माहि बोले ।।
सोनातणे कारणे पीतल ल्यावे ।
अमृत नीजाइगा विस घोले ।।
इत्यादिक जिन धर्म जाणवो ।। पू०

(४८) प्रमाद (२)

अजइ व्याघ्रि ससाईउ दीजइ, सर्पि सउ क्रीडा कीजइ ।
अनइ हालाहलु पीजइ, महाविष तणउ कवलु लीजइ ।
अग्नि मध्य पवसियइ, शत्रु सउ वसियइ ।
पुण प्रमादु न कीजइ ।।

(४९) जिन धर्म छोड़ मिथ्यात्व ग्रहण स्थिति

यो जिन धर्म मुत्तवा मिथ्यात्व प्रतिपद्यते, स स्वर्णस्थालेन रज॰ पुज मुद्धरति ।

,,	,,	,	कल्पतरुणा छाया लाभ वाछति ।
,,	,,	,,	चदन वन ज्वालनेन भस्म लाभ ।
,,	,,	,,	अगरु काष्ठेन लागूलं ।
,,	,,	,,	सुवर्ण पिडेन कुशी सभी ।
,,	,	,,	चिन्तामणिना काको डुायन विधत्ते।
,,	,,		अमृत धारया पाद शौच चितयति।
,,	,,	,,	मत्त करीन्द्रेण काष्ट भार॰ ।
,,	,,	,,	कस्तूरीका वीणा[1] केन सिली ।
,,	,,	,,	कदली स्तभेन गृह भार मुद्धर्तुं मिच्छति ।
,,	,,	,,	कमल तंतुभिः मत्त वारण बध्नाति।।

(१९ जो०)

(५०) असाध्य शुद्ध धर्म

शुद्ध सर्वज्ञोक्त धर्म करी न सकीयइ ।
जिम मेरु पर्वत्त तुलाग्रि धरी न सकीयइ[2] ।
जिम समुद्र भुजा दडि तरी[3] न सकीयइ ।
जिम लोह मय[4] चिणा चर्बण करी न सकी यइ ।

---

१ त्रीणा कन मषी–त्रीणाकेन मषी । २ सकीइ । ३ तरिउ । ४ चावी ।

अभिषणीय हइ अभिषणीय, अनुगमनीयहइ अनुगमनीय ।
मान्य हइ माननीय, गरुयाहइ गरुयउ ।
(पु० अ०)

(५३) तपोधन

अनुवरतु ग्रामानु ग्रामि विहार क्रम करहि, अढार सहस सीलाग धरइहि ।
अनुवरतु परमेश्वर तणी आज्ञा अनुसरहि, अनुवगतु गुरूपदेसु स्मरहिं ।
अनुवरतु पुण्य भडार भरहि, अनुवरतु मोक्ष लक्ष्मी स्मरहि ।
अनुवरतु तपु तपहि, अनुवरतु कर्म क्षपहि,
खड्गधारा चक्रमण कल्पु, निर्विकल्पु ।
व्रतु परिपालहि, इसा महासत जगम तीर्थ तपोधन भणियहि ॥ (पु अ)

(५४) तपोधन वर्णन

पॉच भरत पॉच ऐरावत पॉच महाविदेह, सत्तरि सउ आर्य क्षेत्र ॥
पइतालीस लाख मनुष्य क्षेत्र माँहि जे साधु ॥
साधु रत्नत्रय सावइ, जिनाज्ञा आराधइ ॥
च्यारकषाय परिहरइ, नवकल्पी विहार करइ ॥
अढार सहस सीलाग धरइ, दस विधि यती धर्म आचरइ ॥
बाईस परीसह ऊपनइ न डरइ, चवदह उपगरण धरइ ॥
पचमहाव्रत पालइ, छाठउ रात्री भोजनचार[1] ऊचालइ ॥
तेत्रीस आसातना टालइ, आठे मद गालइ ॥ वर्त्तमान कालइ,
इग्यार अग सूत्र प्रकासइ जिणइ करी मिथ्यात्व पडल नासइ ।
तेरह क्रिया ठाण वरूपइ, सत्रे विध सजम धुराअइ जूपइ ।
सत्तावीस गुणे सयुक्त माया मिथ्यात्व नीयाणादि साल विप्रमुक्त ॥
बइतालीस दूषण रहित आहार ल्याइ पाच दोष माडलना लागवा न द्यइ ।
पच सुमतइ सुमता, त्रिहु गुपतइ गुपता ।
सयम रमणी सुरमता, दुक्कर पचेंद्री दमता ।

१—टारइ ।

अक्रोध, अविरोध, विबुद्ध, विशुद्ध ।
आदेयोदार स्फार तर वचन, दतात्यत सशीति निर्वचन। एव. गुरु ॥४। जो.

(५६) तपोधना महासती साध्वी

पुण्यवति तपोधना, करइ देहनी साधना ।
सदैव भणिवा गुणिवा नउ आक्षेपु, नथी लागतउ विलेपु ।
श्राविका हुइ भणावइ, धर्म्म भाव भावइँ ।
अत्युत्तम नारि, महासती चदनबाला नइ अवतारि ।
गच्छ चिन्ता चतुरि, विज्ञान विद्या विदुरि ।
जीइ कन्हलि प्रति बोधनी शक्ति एवडी, रह्यु हुतउ मान गजेन्द्र चडी ।
बचन छलि प्रतिबोधउ बाहुबलि ।
श्री युगादि देव नइ समवशरणि आणउ,
केवल श्री अलकरतउ देखी जगदीसि वखाणउ ।
ते ब्राह्मी सुन्दरि, जेइ आचार करी ऊजरी ।
एव विध महासती ॥ २८ ॥ जै

(६०) साधु (१)

उत्तम नगर, गुरु क्रियानुष्ठान पर,
जिन वचन धुरधर, सरस्वति लब्ध प्रसाद वर,
त्रिण तत्व पालन तत्पर ।
सकल गुण भडार, विज्ञ आगम विचार,
सकल सघ आधार, शास्त्र ना अलकार ।
जीवादि तत्व विचार, विद्वज्जन सभा शृगार हार,
त्रिण गुप्ती कारक, पच सुमति पतिपालक ।
बैतालीस सदोष टालक, अढार सहस्र स्त्री सीलाग रथ धारक ।
तेर काठीया जीपक, अष्ट कर्म छीपक ।
त्रिगुण गुप्ति प्रवर्तक ॥ (पू०)

(६१) श्रावक (१)

द्वादस व्रत धारक, शुभ ध्यान मन चालक ।
श्री जिन पाद आराधक, अगणित पुण्यकारक ।
षड्दर्शन पोषक, दान शील तप भावना भावक ।

एकवीस गुण सयुक्त उत्तमोत्तम कार्य प्रसक्त । पितृ मातृ भक्त ।
दक्ष विवेक विधि, दक्षिण उदधि ।
भली भावना भावक, सर्व जीव आवर्जक ।
गुरु वचन आराधक, जिन शासन प्रभावक ।
धन धान्य समृद्धि, अत्यत समृद्धि ।
दानेक वीर, अति ही गभीर ।
देव गुरु चरण मधुकर, सर्व कार्य धुरधर । एहवा श्रावक ।

(६२) सु श्रावक वर्णन (२)

पाप नइ विषइ विरक्त चित्त, शत्रु मित्र सम युक्त ।
शुद्ध व्यवहार नउ करण हारु, सन्मार्ग नु सचार हारु ।
धर्म धुरन्धर, सेवक जन सुखकार ।
उचित उलखइ ।
दया दान पूरउ, सुकृत साचिवा तरउ ।
आचार वतु, हाटि बइसइ तउ कृतान्तु ।
कुणइ प्रतिकूटउ न चवइ, त्रिकाल देव पूजा साचवइ ।
सुश्रावकु, बारह व्रतु प्रति पालक ।
सद्गुरु नी आज्ञा वहइ, पुण्यवत माहि लीह लहइ ॥ २६ ॥ जै

(६३) श्रावक वर्णनम् (३)

श्रावक धुरा सूधउ समकित धरइ, विकथा च्यारे परिहरिइ ॥
परभव थकी डरइ, सदगुरु ना पाय अणुसरइ ॥
जीवनी जयणा करइ, सकृत भडार भरइ ॥
विसेष ना जाण, गुरु मुख सुणइ वखाण ॥
राखइ सहूना प्राण, जिन वचन करइ प्रमाण ॥
बारह व्रत राखइ, पर मर्म न भाखइ ॥
आपना अवगुण दाखइ, सहूनी साखइ ॥
उपगार कइ अवसर लही, साहमी सु धरणइ बइसइ नही ॥
कुणही नु आलि न द्यइ, नव तत्वादिक नउ अर्थ ल्यइ ॥
देवाधि देवनी करइ अरचा, न करइ कुणही री चरचा ॥
उत्तरासण घाली, लाबाक्षमाश्रमण द्यइ मन वाली ॥
आपण पर नी विगत जाणइ, तउ सद्गुरु श्रावकनइ वखाणइ ॥

व्यवहार शुद्ध पालइ, चउवीसासउ अतीचार टालइ ।।
खडावयस्क साचवइ, सूत्र अर्थ सूधउ लवइ ।।
कुणही सु न बोलइ कूर, कपटथी रहइ दूर ।।
एवडी अग माहे लाज, आप त्रोटउ षमी सारइ परना काज ।।
रिद्धमत आचारवत, वचनार हित, चितवइ सहूनइ हित ।।
कर्यउ उपगार गिणइ हरसी, दीरघ दरसो ।।
धरम साम्री धुरधर, सेवक जन वधुर ।।
उत्तम सगति रहइ, साहमीवछल विरुद वहइ।।
साधुना छल छिद्र न जोवइ, पर्व दिवस भूमिका सोवइ ।
कुणहीनु न विगोवइ, अम्मा पिउ मीसाषाण होवइ ।
आ. साखा, भाषइ भगवन भाष ।।
दीठउ अदीठउ करी, एकातइ लेई सीख द्यइषरी ।
वस्त्र पात्र वहिरावइ भरपूर, तउ गुण दाखी. . ।
पुण्यवत नु नावइ कईयइ तोटु ।।
पहिलु वहिरावी नइ जमइ, घणु बोल्यु न गमइ ।।
साधुनी न करइ दुगछा, चारित्र लेवा धरइ गछा ।।
पालइ निर्मल सील, लहीयइ भवातरइ अधिकी लील ।।
साध छइ बीजइ खडइ, एहवो सका छडइ ।।
तरतम योग परखइ, उचित उलखइ ।।
गुरुनी आण वहइ, पुन्यगत सोभ लहइ ।
एकवीस गुण श्रावकना 'कुशल ।।
वीर'ए कह्या, आगमथकी लह्या । को कहसी इमहींज बोलियउ ।।
ना आगे सगवतइ सराह्यउ आणद नइ कड को लियउ ।।

इति श्राद्ध वर्णनम् । कु०

(६४) श्रावक (४)

जैन प्रासाद करण, प्रतिमा प्रतिस्थापन, आचार्य पद स्थापन,
जीर्ण प्रासादोद्धरण, पौषध शाला निष्पादन, पच परमेष्टि महामत्र स्मरण,
तीर्थ यात्रा करण, अष्टमगलीक ढोकन, सघ जन पूजन
पुस्तक ज्ञान लेखन, पठन वाचन धर्म कथन, महापूजाकरण
महा ध्वजारोपण, चैत्य परिपाटी उद्यापन, धूप धूपन,

श्रीखड लेपन, पुष्पमालारोपण, नाना धान्य मेरू भरण[1],
नाटक प्रेक्षणक करण, आरात्रिक मगल प्रदीप दीपन,
खड खाद्य भक्ष्य भोज्य ढौकन, त्रिकाल देव पूजन,
उभय काल प्रतिक्रमण, गुरू चरण नमस्करण,
पूजा प्रभावना तत्पर, विचार सार कृतादर,
दान ददन, शील पालन[3], तपस्तपन, भावना भावन,
साधार्मिक जनावष्टभ प्रवण[4], सीदमान सदनुष्ठान,
जन भरणादि कार्य रत, सु श्रावक जाणिवउ ।

(७२ जो)

(६५) श्रावक (५)

श्रावक सम्यक्त्व मूल द्वादस व्रत प्रतिपालिक, पूर्वोभवोपार्जित पाप मलक्षालक ।
श्री जिनेद्र पद पकजाराधक, अगण्य पुण्य कार्य प्रसाधक ।
अवसरि षट् दर्शन भक्तिवतु, दान शील तपो भावनालकृतु ।
सप्त व्यसन परा मुक्त, एकविशति गुण सयुक्त ।
उत्तमोत्तम कार्य प्रसक्त, पितृ मातृ परिवार भक्त ।
दाक्षिण्य महोदधि, प्रधान विवेकावधि ।
परोपकार कारक, मिथ्यात्व व्यापार निवारक ।
भव्य भावाना भावक, सर्व लोक आवर्जक ।
गुरु वचनाराधक, जिन शासन प्रभावक ।
धन धान्य समृद्ध, अत्यत प्रसिद्ध ।
दानैक वीर, अत्यत गभीर ।
बुद्धि मयरहरू, साक्षात कल्पतरु ।
देव गुरू चरण मधुकर, सर्व कार्य धुरधर । एव विध श्रावक । ६ जो०

(६६) दस श्रावक नाम (६)

१ आनद । २ कामदेव । ३ चुलणी पिता । ४ सुरादेव । ५ चूल सत्तक । ६ कुड कोलिउ । ७ सद्दाले पुत्र । ८ महा सत्तक । ६ नदिणी पिता । १० लेइणी पिता, इत्यादि । वि०

१—भण २—भार ३—डीलन ४—प्रकोप

(६७) श्राविका वर्णन (२)

सुश्राविका, पुण्य प्रभाविका, आचारवत, विवेकवत ।
सुशील, सहजइ [1]सलील । तप उपधान रहा विषय न करइ ढील,
दीदारु दीसइ डील सुविचार, अवसरनी उलखणहार ।
समस्त कुटुंब सौख्य करिवा बुद्धि, त्रिपत्त शुद्ध, स्वभावि मुग्ध । +
भर्तार नउ मन राखीइ, न रह सकइ अध घडी घर पाखइ ।
सहू जिमाडी जीमइ, घणु बोल्यु न गमइ ।
कण रा विकण करइ, देव गुरूना पग अणुसरइ ।
चालइ पूर्वज रीति, न करइ किणहनी [2]कफीति ।
करइ सासू ससुरानी सार, सरिखी मोटा घर नइ भारि ।
पछइ सूयइ, पहिलेउ जागइ, आपणइ मुखि काई न मागइ ।
इस्यो काई सरज्यौ माणस पूरऊ, किणही नउन बोलइ अपूरू [3] ।
एवडी अग माहि लाज, आपणऊ अर्थ बिनासी सारइ कुटुम्ब ना काज ।
गोरूनी [4] पीडि लीजई, पुण्यवन्त नइ पतीजै ।
आपण परनी विगति जाणइ, सद्गुरू न्यायि श्राविका बखाणइ ।
को कहिसइ गुरू [5] चाटूया बोल बोलई इस्या ।
पणि परमेश्वरे वखाणी, रेवती नइ सुलसा । (गू० और जै०)

(६८) सात क्षेत्र

इस्यइ दुःषमाकालि, पसरइ पाप नइ जालि ।
सुकृत ना आचार साचवइ, सप्त क्षेत्रीय वित्त बावइ ।
अतिहि पवित्र, वहिलउ क्षेत्रु ।
करावइ श्री वीतराग ना प्रासादु, लिय जगत्रय जयवादु ।
बीजउ क्षेत्र बिंब भरावइं,
जइ मनि वार एक प्रथम श्रावकु भरतेश्वर वेह न्हइ हरावइ ।
त्रीजउ क्षेत्र तपोधनु, किसी परि रजवइ तीह ना मनु ।

---

१ तदन्तर अधिक—अतर्हिं, लक्ष्मीनइ अवतारी चित्तनीउदार, अवसर नी ओलखलहार। मुखपद्म दलकार, करइसा,—वडइघरिमहा—

द्वादशव्रतधार । अवसरइ उपकार नी डूडी, ए वातनथी कूडी । सर्व स्त्री रोपरहित, शीलादि गुणेसहित । १ सील+वाणी बोलइ मीणी जाणइ मिश्रीनइ दुग्ध । २ अफीति ३ अपुरू ४ पीडा ५ स्त्री ६ कुशलवीर ।

चउमासि रहावइ, धर्मकथा कहावइ ।
पोसाल करावइ, ओखध वेखद, वस्त्र, पात्र । अनी उपगरावइ छात्र,
सयनासननी चिता आजु लगइ दीसइ दीसइ देववा
चउथउ क्षेत्र तपोधना
कहीयए, तेहना भारण हजि पुण्यगते वहीयइ ।
पाचमउ क्षेत्रु श्रावकु जाणउ,
तेहनी सार पर्युपास्ति करता देखी विस्मउ करइ ।
छट्ठउ त्रिनेत्र नउ
सातमउ क्षेत्र, पुस्तक भरावइ, प्रशस्ति लिखावइ ।
ए सात क्षेत्र वावइ प्रशस्य, नीपजइ पुण्य रूपिया शस्य ।
भली तीर्थ यात्रा करइ, कलिकाल गर्व हरइ ।
भला तीर्थोद्धार, करावइ सुविचार ।
विबुध जन इसु जि कहइ, जिन शासन नउ भारु एहेजि निर्वहइ ।
इसा, तुम्हा जिसा ।
सुश्रावक, पुण्य प्रभायकु ।
देव गुरु नइ आशीर्वाद जयवता वर्त्तउ ॥ २६ ॥ जै०

(६६) गच्छ

तपागछा १, ओसवालगछ २, जीराउल ३, वडगछ ४, गागेसराय (?) ५, कैरटीआ ६, भरुचा ७, आनपूरा ८, ओडविया ६, गूदवीआ १०, दिकाऊआ ११, भिन्नमाला १२, मोडासीया, १३, दासरुआ १४, गछपाल १५, घोषवाल १६, भगडीया १७, ब्रह्माणीआ १८ जालोरा १६, वोकडीया २०, मढाका २१, चित्रोडा २२, साचोरा २३, कुचडीया २४, सिद्धातीया २५, रामसेणीया २६, मलधारा २७, आगमीआ २८, नवराजीआ २६, पल्लवीया ३०, कोरडावाल ३१, नागेन्द्राक ३२, धर्मधोषा ३३, नागोरा ३४, उछितवाल ३५, नाणावाल ३६, साडेरा ३७, मडोरा ३८, सूराणा ३६, खभायता ४०, वडोदरा ४१, सोपारा ४२, माडलीआ ४३, कोटिपुरा ४४, जागडा ४५, छापरीया ४६, वोरमका ४७, दोवदनीक ४८, चित्तावाल ४६, वेगडीआ ५०, चाअडगव गछ ५१, विज्जाहारेगछ ५२, कतबपुरा गछ ५३, काबेलागछ ५४, सदोलिया गछ ५५, महुकरा गछ ५६, कन्नरसा ५७, मुणतेला ५८, रेवईआ ५६, धूधूखा ६०, छाभाणीया ६१, पचनलीआ ६२, पालणपुरा ६३, गधारा ६४, गूदेलीया ६५,

सार्द्धपूनमिया ६६, नगरकोटीया ६७, हसकोटिश्रा ६८, भट्टनेरा ६९, जालोरा साठिया ७०, भीमसेणिया ७१, तागडीया ७३, कवोजा ७४, सेगत्रीया ७५, बछेरा ७६, बहेडा ७७, सिंघपुरा ७८, घोघरा ७९, सजाती ८०, बारेजा ८१, मोरडवाल ८२, नाडोलीया ८३, चोलीया ८४, इति चौरासी गछ नाम। (वि०)

(७०) तपागच्छ शाखानाम

विजय १, विमल २, कुशल ३, रुचि ४, हस ५, सुदर ६, सौभाग ७, सागर ८, श्राणद ९, हर्ष १०, राज ११, सार १२, रत्न १३, पुत्र १४, धर्म १५, उदय १६, चद १७, सोम, वर्द्धन १८, एव १८ शाखानाम्। (वि०)

(७१) जैनमत

दिगम्बर, आगमीया, पूनमीया साढपूनमीया, लूका, पासचदीया, अध्यात्म-मती, वीजामती, ब्रह्मामती, कोथलामती, कडूआमती, सागरमती, काजामती, ढूढ्यामती, इत्यादि मत जाणवा। (वि०)

(७२) ११ अंग सूत्र

अथ एकादशागा—

आचाराग, सुगडाग, ठाणाग, समवायाग, भगवती, ज्ञाता धर्मकथाग, उपासा-गदशाग, अतगडदशाग, अणुत्तरोववाई, प्रश्न व्याकरण, क्रियाकसूत्र इत्यादि—एकादशागा।

(७३) १२ उपांग

उववाई, रायपसेणी, जीवाभिगम, पन्नवणा, जम्बूदीव पन्नत्ति, चदपन्नत्ति, सूर पन्नति, कप्पिया, कप्पविडसया, पुप्फिया, पुप्फचूलीया, वण्हीदशा, इत्यादि बार उपाग।

(७४) १० पयन्ना

देवदथश्रो, तदुलवेयालियं, चदाविज्जय, गणिविज्जा, श्राउपच्चक्खाण, महापच्चक्खाण, मरण समाधि, चउसरण, मरण विभत्ति, गछाचार, इत्यादि दश पयन्ना।

(७५) छः छेद

निशीथ, महानिशीथ, वृहत्कल्प, व्यवहार, पचकल्प, दशाश्रुतस्कध, इत्यादि छःछेद ग्रथ।

(७६) मूल आगम

आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, पिंडनियुक्ति इत्यादि मूल सूत्र च्यार। नदी सूत्र, अनुयोगद्वार, इत्यादि पैंतालीस ४५ आगम जाणवा। वि०

(७७) नवतत्व

(१) जीव, (२) अजीव, (३) पुण्य, (४) पाप, (५) आश्रव, (६) सवर, (७) निर्जरा, (८) बध, (९) मोक्ष।

धर्म-अधर्म। हेयज्ञेय, उपादेय। निश्चय, व्यवहार। उत्सर्ग अपवाद। आश्रव, परिश्रव। अतिचार, उपचार। अतिक्रम, व्यतिक्रम। इत्यादिक साभल्या विना शास्त्र ना भेद न जाणिइ। (सभश्याङ्गार की द्वितीय प्रतिका प्रथम पत्र)

(७८) विगय

तेल, गुल, घृत, दूध, दही, कडाविगय, आमिष, माखण, मधु ६ विगयनाम।

(७९) संमूर्च्छिति उत्पत्ति १४ स्थान

(१) लघुनीति, (२) बडीनीति, (३) श्लेष्म, (४) वमन, (५) पित्त, (६) राधि, (७) थूक, (८) लोही, (९) वीर्य, (१०) वीर्य खरडीया वस्त्र, (११) मृतक, (१२) स्त्री नर संग मे, (१३) नगर ने खाल, (१४) अने अशुचि, इत्यादि में संमूर्च्छिम पचेद्री ऊपजे।

(तीर्थंकर माता देखे) चतुर्दश महास्वप्न वर्णन क्रमेण।

(८०) गज वर्णन—(१)

सप्तग प्रतिष्ठितु। शुण्डा दण्डि परि कलितु
मत्तु, मदोन्मत्तु।
प्रचण्ड, उदण्ड।
विन्ध्याचल समानु, उज्ज्वलवानु।
कोपारुण, जिसउ हुई ऐरावण।
उज्ज्वल, प्रधान दन्तूसल।
छूटउ हूँतउ पर्वत प्राकार पाडइ, कुण तिहस्यउ पइसइ अखाडइ।
कुम्भस्थलि सिन्दूर नू पूर, ऊपरि कपूर।
सुवर्णमय शृखले करी अलकरउ, गज वस्त्रां परिवरिउ।
रूप्यमय घटा निनादु, जेहनउ जगत्र जयवादु।

पगि थोरु, श्रम करतउ दीसइ जाणे तउ लक्ष्मी नउ मोरु
सारसी करतउ, जय श्री वरतउ
इस्यउ गजेन्द्र मरुदेव्या स्वामिनी कुक्षि अवतरिउ श्री ऋषभु ॥ ४३ ॥ जै०

(८१) वृषभु (२)

बीजउ स्वप्न देखइ वृषभु ।
उद्दाल धवल, प्राणि करी प्रबल ।
रोम राइ करी सुकुमालु, पूठिइ सुविशालु ।
पृथ्वी नउ भार वहउ समर्थ, परमेश्वरि सिरिज्यउ एणि अर्थ ।
काधि मोटउ, पूठि घोटउ ।
नथी दीणु, इस्यउ धुरीणु ॥ ४४ ॥ (जै)

(८२) सिंह (३)

अकलु अबीहु, त्रीजउ स्वप्न देखइ सीहु ।
जीणे करि सघणीइ वनु, परिपूर्ण पचाननु ।
तीखी दाढ, सविहु जीव माहि ऊगाढु ।
अतिहिइं सूरउ, सर्वांगि पूरउ ।
उल्लालित पुच्छच्छटा छोपु, सकोपु ।
मुख सुविकासु, अनइ देखता सप्रकास ।
छइ बीहामणउ अनइ नहरालउ, सौर्य वृत्ति नउ आलउ ।
आवे नलि घाती बइठउ, राणीइ स्वप्न माहि दीठउ ॥ ४५ ॥ जै०

(८३) लक्ष्मी देवी (४)

त्रिभुवन स्वामिनी, चउथउं स्वप्न देखइ अनी ।
रगरेलि, मूर्त्तिमती कल्पवेलि ।
विभूषण ने सहस्ती करी अलकरी, हाथिए परवरी ।
सुवस्त्र सुवेष, जेहनी अत्युत्तम रूपनी रेख ।
जगत्त्रय जीवनु, सुइणइ दीठइ अने सउ थाइ मन ।
सर्व दुःख निर्नाशिनी, पद्मद्रहनिवासिनी ।
सकल सौख्य कारिणी, महा मनोहारिणी ।
परम दैवत्तु, इह लोकि परम तत्वु ।
परमेश्वरी, इसी स्वप्न माहि राज्ञी अनुसरी ॥ ४६ ॥ जै०

(८४) पुष्पमाला (५)

पाचमउ पच पुष्प माला, पाचमउ स्वप्न देखइ बाला ।
भरीइ परिमल ना केउल, एहवा बउल ।
गधिकरी गाढा लापा, इस्या चापा ।
सेवत्रा, सौरम्य गुण भरया ।
लोचने नाशिका पुट अनुहरा, बेल विकस्वर ।
पहिरिवा दरिद्रीइ, थाइ वाही उर ईश्वर ।
अनेरा पुष्प प्रति कटक, इसा पुष्प कोरटक ।
पाखलि फिरइ भ्रमरना वृद, इसा कुद मुचकुद ।
अति हिइ बहु मूल, जाइ ना फूल ।
मस्तकि पहिरता करणी, बिवणी शोभा थाइ करणी ।
सोनडी हइ कइ जासूना, जूजउ फूलीजा सूना ।
अति सुविशाल, राणी देखइ प्रधान पुष्पमाल ।। ४७ ।। जै

(८५) चंद्र (६)

जेह नइ नथी कलकु, इसउ शशाकु ।
छठउ स्वप्न देखइ, अमृत नइ उवेखइ ।
नक्षत्र माहि नाथु, शीतत्व गुणि करि ऊभ्यउ हाथ ।
जगत्रय न्हइ आणदकरु, भालस्थल थ्यु न मेल्हइ अध घडीइ ईश्वरु ।
रोहिणी नउ भर्त्तार, ज्योत्स्ना करी अपार ।
अमृत नउ कुण्ड, महिणारभु ।
मथी देवे मेल्हउ हुइ, जिसउ मारवण नउ पिडु ।
सूर्य ने किरणे गलिवा बीहइ, तउता अधिक न दीसइ ते दीहइ ।
जल निवि रुपीया ज भमतु, थ्यउ बडवाग्नि बीहतउ ।
जाणे भडयउ पारउ, लोचन नइ पियारउ ।
आकाशि महिषी ना मुख फेणु, वाहणि पणु ।
इस्यउ चन्द्रमा दीठउ ।। ४८ ।। जै.

(८६) सूर्य (७)

अति हिया घणउ, सुयणु सातमउं ।
तेज नउ भरु, देखइ दिनकरु ।

जिसउ केसू प्रधान, अथवा गुन्जार्ध राग समानु ।
अति हिंगुलो नउ रगु, ऊगतउ एहतउ सुरगु ।
अघकार हरु, जगत प्रकाश करु ।
आकाश विभूतिइं ओटहयउ, प्रलयाग्नि जिसउ हुइ रह्यउ ।
सत्कर्म साक्षात्कु, दिग्वधू ना नाक नउ जिसउ मौक्तिकु ।
लोचन विसमउ, सुहणउ सातमउ ।। ४६ ।। जै

(८७) ध्वज (८)

पच वर्ण पानड़े करी गहगह्यउ ।
साथीए करी सनाथु, जिस्यउ हुई साचउ सुकृत नउ हाथु ।
वली पुष्प वृक्ष नउ अकूरउ, दानव वश दलिवा सूरउ ।
वाइ करि फरहरइ, जय श्री वरइ ।
विज्ञान करी विचित्तु, स्वप्न माहि पवित्तु ।
देवीइ इसउ ध्वज दीठउ ।। ५० ।। जै

(८८) कुम्भ (६)

स्वप्न माहि निदँभु, सुवर्ण मइ कुम्भु ।
गूहली उपरि माडउ, अलक्ष्मी छाडउ ।
महामानि, अलकरयउ आबा ने पानि ।
चिहुँ वाटि करि पट्ट वडी, ऊपरि प्रधान दीवडी ।
मागलिक माहि पहिलउ, आवउ वहिलउ ।
तडि आठ मागलिक अविद्ध मोतीना, किम न उल्हसइ स्त्री जोतीना ।
स्वामिनि मरुदेव्या, पूर्णकलश सु नव स्वप्न अनुभव्या ।। ५१ ।। जै

(८६) सरोवर (१०)

महा मनोहर, दशमउ देखइ सरोवर ।
पाणी भरिउ, राजहस ने युग्मे अलकरिउ ।
चकोर चक्रवाक नासइ, महा मत्स्य हसइ ।
आडिनी उलि एक लग, बहु विध ढीक बक ।
सार कुटलइ, पर्वत प्राय मगर गल लइ ।
माहे कमल उन्निद्र, जाणेच्छइ समुद्र ।
चन्द्रमा मिलवा नइ करइ कल्लोल ।
हिम वर्ण दीस्यइ पालि वली, जिहा छइ सच्छाइ वृक्षावली ।

तिहा बइठा बल करण लागइ, साथ कहइ ईहा रही स्यकइ आगइं।
पृथ्वी माहि पामीइ, मार्ग श्रमु गमीइ।
इस्यउ सरोवर दीठउ ॥५२॥ जै०

(९०) रत्नाकर (११)

महारत्न नु आगरु, इग्यारमउ स्वप्न देखइ सागरु।
मच्छ, कच्छ, पाठीन पीठ जलचर जीव अनीठ।
महा निरवधि, क्षीरोदधि।
अतिहि उद्दण्डु, डिंडीर पिण्ड।
तेहे विराजमान, मर्यादा करी प्रधानु।
गभीरिमा गुणि करि गाजइ, आपणी मर्यादा रह्यउ कहइन्ह न विराजइ।
महालक्ष्मी धरु, इसउ स्वप्न देखइ स्वामिनी प्रवरु ॥५३॥ जै०

(९१) देवविमान (१२)

रहित शोकु, जिसउ बारमउ हुइ देव लोकु।
इसउ विमानु, सुरागणा ससेव्य मानु।
स्वर्णमय कु भ सहस्रि परिकलितु, दिसि एकइ नही जिहा तोरण टलतु।
जिहा बार सूर्य ना उदय, रत्नजटित इसा चद्रोदय।
दीठो हरइ अलच्छि, इसी चिंहु पखे परीयच्छि।
परिमल करी विशाल, माहि लबायमान फूल नी माल।
अगर गधि उच्छलइ, जबाधि ना परिमल मिलइं
कपूर महकइ, कस्तूरी महकइ, जय पताका लहकइ।
अमर गुणगान करइ, बारमु स्वप्न देखइ॥ (जै०)

(९२) रत्न राशि (१३)

चन्द्रकान्त, पद्मकान्त।
पद्मराग, पुष्प राग।
हीरिताद्व, लोहिताद्व।
कर्केतन मणि, वैडूर्य मणि।
गुरडोद्गार, पुलकोद्गार।
हीरा मणिकला, अविद्ध मौक्तिक भला।
त्रास रहित, तेज सहित।

रत्न तणी राशि, प्रवेश करती आवासि।
जिसउ सूर्य होइ अनभ्र, तिसा हस गर्भ।
जिसा लोक चितरजन, तिसा अजन।
सविहुँ रत्न प्रति मल्ल, इसा मसार गल्ल।
तेज ता चुलक, इसा पुलक।
इसम तेरमउ स्वप्न दीठउ ॥५५॥ जै०

(९३) निर्धूम अग्नि शिखा (१४)

तेज प्रखरु, चउदमम स्वप्न वेश्वानरु।
सप्त ज्वाला करासु, देखता सोख्यकारु।
उर्द्ध मुखु, धूप नइ विषइ विमुखु।
धग-धगाय मानु, स्वप्न माहि प्रधानु।
होतव्य द्रव्य नउ प्रसणहारु, तेहतु वर्त्तइ लोक व्यवहारु।
घृति करि सीच्यउ, हसतिका रच्यउ।
मर्यादा ज्वलतु, निद्राना बलइतउ।
राणीइं इस्या स्वप्न दीठा, मनन्हइ लाग्या मीठा।
श्री कल्प मध्ये चतुर्दशस्वप्न वर्णनानि ॥ १ ४ ॥ ५६ ॥ जै०

(९४) वैमानिक देववर्णन

अति सुकुमाल, रसाल।
दिव्य देह, अति सस्नेह।
निरामय शरीर, अतिधीर।
महामानी, भागी,.. ... .   ।
अमृता हारी, सोख्य व्यापारी।
अति प्रोढा, विमानाधिरूढा ॥ ७ ॥ जै०

(९५) सौधर्म देवलोक स्थिति

साभलउ सौधर्मेन्दू तणी स्थिति। सौधर्म।

रत्नमय भूमि, शक्र सिहासन, सूर्य जिम झलकतउ, तिहा बइसइ शक्र इसिइ नामिइ सौधर्मेन्द्र। दक्षिण लोकार्द्ध स्वामी, एरावण वाहण, बत्रीस लाख विमान तणउ अधिपत्य पालइ, लीला लगइ वैरि दु:सह स्फुलिंग (सह) सहस्र वरस तउ ज्वाला ना सहस्र झरतउ, देदीप्यमान दक्षणहस्ति वज्र ऊलालइ। चउरासी सहस्र अति स्वच्छ निर्मल वस्त्र मस्ति, चद्र मडल सम त्रिन्हि छत्र कनक दड चमर दिव्य आभरण डबरन इन्द्र सामाजिक देव सपरिवार तेत्रीस त्रायस्त्रिश इसिइ

नामइ दुगु दुग देव, ४ लोकपाल । पद्मा, शिवा, अजू श्यामा सुलसा, अचला कालिंदी भाणू ए अठ अग्र महिषी, सोल सोल सहस्र देवी परिवृत्त, १२ सहस्र अभ्यतर सभा तणा देव, १४ सहस्र मध्यम सभा तणा देव, १६ सहस्र बाह्य सभा तणा देव, ७ कटक नास्य, गधर्व हय, गज, वृषभ, रथ, पदाति रूप ७ कटकतणा स्वामी । नीलंजणारि जसहरि एरावण मातलि टामिहौ हरिणेगमेषी ७ सर्वा गि सन्नाह पहिरि, दृढकशा बधि बावी धनुषि गुण चडावी रहया, ग्रीवा भरण विभूष्य मस्तकि । नेत्रादि वस्त्र मंय अथवा सुवर्णमय टोप घरता सज्जी कृत चेप्यास्त्र, गृहित अन्येप्यास्त्र मध्यि बिहु पासि एव त्रिहु स्थानकि नम्या । त्रिहु स्थानकि साध्या इस्या वज्र मय कोटि धनुष मुष्टि स्थानकि सारहिया, नील वर्ण, पूष पीत वर्ण, रक्त वर्ण, पुख इस्या बाण हाथि घरता, केतलाइ अनारोपित चाप हाथि लेइ रहिया, केइ खेडा हाथि, केइ खाडा हाथि, केइ दड हाथि, केई पाश हाथि, केतलाइ नील वर्ण, पीत वर्ण, केतलाइ रक्त वर्ण, केतलाइ त्रिवर्ण चाप प्रमुख शस्त्र घरइ छइ ।

सर्वे स्वामी शरीर रक्षा सावधान, अनेथि मन अणकरता, मडली नो स्थिति आलोपता[1] परस्पइ आतरु पडतु टालता, परस्पर सबद्ध, सदा विनयवत्त, अत्यन्त भक्त, इस्या त्रिन्नि लाख छत्तीस सहस्र अगरक्षक देव सम श्रेणी निरतरि इन्द्र पाखती रहिया छइं । इम सौधर्मेन्द्र धर्म तणइ प्रमादि[2] महासुख अनुभवइ, इम अनेराई देवेन्द्र ना सुख जाणिवा ।छ०।। (१६४ जो)

(६६) देवलोक सुख

देवलोकणी, केवडी ऋद्धि, केवडउ सुक्ख,
जहि मनोवाछित विमान सपजइ,
मनोवाछित आहार, मनोवाछित सिगार, मनोवाछित अगभोग,
मनोवाछित, आभरण, मनोवाछित रत्न, मनोवाछित नायका,
मनोवाछित प्रेक्षणक मनोवाछित नाटक,
अनै अनेक परि क्रीडावन, सरोवर, पुष्करिणी,
वैक्रिय लब्धि सपन्न हूता विचित्र क्रीडा करइ,
शरीरि प्रस्वेद नही, फूला कुर्माइ नही, वस्तु मइलियइ नही,
फूटरा पहिरणा चागण चोटा थका देव सुक्ख अनुभवइ,

१—अलोपता २—प्रभावि।

(६७) देववर्णक (१)

अति सुकमाल, विसाल भाल ।।
करता झाकझमाल, अतिरसाल ।।
दिव्य देह, रूप रेह ।।
मयण गेह, अति सस्नेह ।।
निरामय शरीर, धीर वीर ।।
महामानी, दीसता जेहवा जानी ।।
विराजमान कुडल, टप्पं जिसा गल्लस्थल ।।
महा भोगी, साक्षात देखइ जोगी ।।
अमृताहारी, स्वेच्छाचारी ।।
मटय सनूरा, ऋद्धइ करी पूरा ।।
मलमूत्र रहित अवितशक्ति सहित ।
विमाने बइठा वहइ, भूमिथी च्यार अगुला ऊचा रहइ ।।
मुनि 'कुशल धीर कहइ', टेव, ।।
इति देव वर्णक ।। कु०

(६८) मोक्ष इन बातों में नहीं

मोटी छोटी कछोटी मोक्ष नही, काषाय धोती मोक्ष नही ।
विकट जटा मुकुटि मोक्ष नही, निष्कारणि[1] शिखा मोक्ष नही ।
कठि जनोई मोक्षि नही, हाथि अनति मोक्ष नही ।
अखड त्रिदडि मोक्ष नहीं, कन्हइ कमडलि मोक्ष नही ।
मस्तकि मुडिइ मोक्ष नही, वन वासि मोक्ष नही ।
किन्तु रागद्वेष परिहारि शुद्धिइ मनि मोक्ष हुइ ।
रागी बध्नाति कर्माणि वीतरागो विमुच्यते ।
जना जिनोपदेशोय सक्षेपाद्बध मोक्षयो ।।८७। जो०

(६९) मोक्ष इन बातों में नहीं

नच्छोटी कछो मोक्ष, न विकटि जटा मोक्ष ।
न कण्ठ कदर स्थित यज्ञापवी मोक्ष न अखण्डि त्रिदण्डी मोक्ष ।
न विशालि कपालि मोक्ष, न स्वदर्शन मुण्डनि सिरे खुडनि मोक्ष।
न नियत्रित सर्व करणि विकृष्ट तपश्चरणि मोक्ष ।
किन्तु राग द्वेष परिहारि सुद्धइ निर्मल मनि पावीइ ।

---

१. शिखा

(१००) लक्ष्मी देवी वर्णन

पुण्य लक्ष्मी पवित्र, एइ भरत क्षेत्र। परइ हिमवत पर्वत सुवर्णमय छइ। एक सहिस्र बावन जोअण अनइ बार कला जे पिहुलउ। सउ जोअण ऊंचउ। तेह उपरि पद्म द्रह छइ। जे किसउ? निर्मल जल परिपूर्ण। दस जोअण ऊचउ। पाँच सउ जोअण पिहुलउ। सहिस्र जोअण लाबउ। वज्रमय पासा। तेह पद्मद्रह माहि श्री देवता वसिवा योग्य कमलइ। ते किसिउ? एक योण पिहुलउ, एक जोअण लावउ। जोअण माहि विकासे पाणी ऊपरि। त्रिणि जोअण सविसेष तेहनी परिधि। वज्रमय तेहनू मूल। रिष्ट रत्नमय कद। वैडूर्य नामइ जे निल रत्न। तेह मय नाल। रक्त सुवर्णमय तेहना बाह्य पत्र। किंचि रत्तमय जाबूनइ नाम सुवर्णा तेह मय अभ्यतर पत्र। तेह कमल माहि बीज कोस रूप। सुवर्ण मय कर्णिका छइ। ते किसी? रक्त सुवर्णमय तेहना केसर। बिकोस तेलाबी अनइ पिहुली। एक कोस ऊंचो। त्रिणि कोस सविशेष तेहनी परिधि। तेह कर्णिका नइ मध्य भागि श्री देवता योग्य भुवन छइ। ते किसउ? एक कोस लाबू, एक कोस पिहुलु, माहेरउ कोस ऊचउ। त्रिणि द्वार तेह भुवन तणा— एक पूर्व दिशि–एक उत्तर दिशि–एक दक्षिण दिशि। ते बारणा पाचसइ धनुष ऊचा, अठीसइ धनुष पिहुला। तेह माहि अढीसइ धनुष प्रमाण मणि मय बेरका। जे ऊपरि श्रीदेवता योग्य सयन छइ। हिवइ जे मूलिगउ कमल कहिउ? तेह कमल अनेरे अहोत्तर सउ कमले वलयाकार पणइ वीटउ छइ। ते सघलाइ कमल मूलगा कमल तउ–अई प्रमाण जाणवा तेहे सविहु कमले श्रीदेवता तणा आभरण रहइ। तेइ वलय पारवतोइ बीजउ कमल नउ वलय छइ। विणइ वलय श्री देवी तणा च्यारि सहस्रि जे छइ। सामान्य देव नेहणा वायव्य ईशान उत्तर दिशि च्यारि सहस्रि कमल छइ। ते मुख्य कमल नउ अर्द्ध प्रमाण जाणवा। तथा श्री तणइ महा मन्त्रि कल्प छइ। जे च्यारि महत्तरादेवी तेहना च्यारि कमल पूर्व दिशि जाणिवा। श्री देवी तणइ अभ्यंतर पर्षद तणा आठ सहस्र छइ जे मुख्य स्थानीय देव। तेहणा दश सहिस्र कमल आग्नेय कूणिवा। श्रीदेवी तणइ मध्य पर्षद तणी दश सहिस छइ ते मित्र स्थानीय देव। तेहणा दश सहिस कमल दक्षिण दिशि जाणिवा। श्री देवी तणा बाह्य परिषद बार सहिस्र छइ जे किंकर स्थानीय देव तेह तणा बार सहिस्र नैऋत्य कूणि कमल जाणिवा। श्रीदेवी तणइ हस्ति अश्व रथ पायक। महिष नाम गधर्ब रूप जे सात कटक तेह तणा जे सात स्वामी तहे तणा सात कमल पश्चिम दिशि जाणिवा। तेह बोजा कमल नइ वलय पाखतीइ त्रीजउ वलय छइ, विहा श्रीदेवी तणा जे सोल सहिस्र अग

रक्षक देव तेह तणा सोल सहिस्र कमल जाणिवा। तिवार पूठइ त्रिणि वलय वलि कमल ना जाणिवा। तिहा अभ्यतर वलय श्रीदेवी तणा—छत्तीस लाख जे आभियोगिक देव तेह तणा छत्तीस लाख कमला जाणिवा। मध्य वलय श्रीदेवी तणा—४०००००० आभियोगिक देव तहे तणा ४० लाख कमल जाणिवा। वाह्य वलय श्रीदेवी तणा—४८ लाख आभियोगिक देव, तहे तणा ४८ लाख कमल जाणिवा।

एव एक कोडि बीस लाख पचास सहिस्र एक सउ वीसोत्तर कमल जाणिवा। एवडा कमलवासी देव अनै देवी ए८ सगलउ श्री देवी तणउ परिवार जाणिवउ।

देह प्रभामर विभासुर देव देवी, ससेव्यमान वलमान् छिनाभ हस्ता। रत्नौ-ज्वला भण मडल मडिताङ्ग। श्री तीर्थराज पटपक सग भृगा दारियभू "१" इति श्री लक्ष्मी देवता ऋद्धि वर्णान। प० हर्ष रत्नमुनि पठनार्थं।

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ९

सामान्य नीति वर्णन

(१) कौन किसके लिए सुखकारक नहीं (१)

इदु' स्वैरिणीना न सुखायते, उद्योतचौराणा न सुखायते ।
दीपः पतगाना न सुखायते, सूर्य कौशिकाना न सुखायते ।
वृष्टिर्जवासकाना न सुखायते, चद्रोदयश्चक्रवाकान ना सुखायते ।
गर्जित सरभाना न सुखायते, वर्षा प्रावहणिकाना न सुखायते ।
मृदग शब्दो अद्व रोगिणा न सुखायते, घृत प्रमेह रोगिणा न सुखायते ।
मूर्खाना विज्ञाः न सुखायते, असत्या सती न सुखायते ॥ १–२ ॥

(सु० १)

(२) सुख रूप नहीं (२)

इन्दु' स्वैरिणीना न सुखायते ।
उद्योत चौराणा न सुखायते ।
दीपः पतगाना न सुखायते ।
सूर्य' कौशिकाना न सुखायते ।
सत्कवीना विषयादि वसन न सुखायते ।
वृष्टि पर्वासिकाना न सुखायते ।
चन्द्रोदयश्चक्रवाकाना न सुखायते ।
सुभिक्ष धान्य सग्रहिकाना न सुखायते ।
मेघ गर्जित सरभाणा न सुखायते ।
चदन विरहिणा न सुखायते ।
वर्षाकालः प्रवासिकाना न सुखायते ।
मृदग शब्दोऽक्षि रोगिणा न सुखायते ॥ ८१ ॥

(मु०)

(३) सुख रूप नहीं (३)

इदु. स्वैरिणीना न सुखायते । उद्योतश्चौराणा । दीप. पतगाना ।
सूर्यः कौशिकाना । दिवसोनक्तचराणा । चद्रोदयश्चक्रावकाना ।
सुभिक्ष्य धान्य सग्रहिणा । गर्जितं शरभाना । चदनं विरहिणीना ।
वर्षाकालः प्रवहणिकाना । मृदग शब्दः शोकाकुलाना ।
गुरु वच. कु शिष्याणा । श्रृगार वार्ता महात्मना । मयूर नादो वियोगिना ।
दुर्ज्जन गोष्ठी सज्जनाना । तीव्रा तपः सुकुमाराणा ।
दान वार्ता कृपणाना । शूर वृत्ति. कापुरुषाणा । पर स्तुति खलाना ॥

असुख वर्णन ॥ स० २ ॥

(४) इनमें ये दोष

चद्रस्य कलको दूषण, सूर्यस्य प्रताप
समुद्रस्य क्षारत्व, शरीरस्य रोग. ।
तपस. क्रोध, जलधरस्य श्यामत्व, ससारस्य दुख भडारत्व ।
धनवता कृपणत्व, दानिना निर्धनत्व ।
पुण्यवता अब्रह्मित्व, स्त्रीणा यहस्था ।
मेघस्य चपलत्व, कमलेतु कटकित्व । एव विधातुदापा ।

|| १० || जो०

(५) कोई न कोई कसर सब में (१)

विष्णु दशावतारण रुउडि भागऊ, ईश्वर नागऊ, ब्रह्मा पंचमा मस्तक नो चूको, चद्रकोरो, शुक्र काणो, शनैश्चर कूबडो, आदित्य सतापकर सूर्यसारथि पागुलो, मगल-बिक्रीओ, रावण परस्त्री कारणे विगूतो, राम सोतापति वनवास हुओ, पाडव कौरव विरोधवाविओ, कर्णराजाइ आनणे[1] जिह्वा[2] घोडो बाध्यो, विक्रमादीत्य काग मास खावो ताही अजरामर न हूओ, नल राजा परघरि सूयारपणो करे, हरचन्द चडाल ने घरि पाणी भरे, परसराम आपणी माय तणो शिर कमल छेदे, माघ जेवडो विद्वास पगसूभि भूखि मूऊ, गागेय जेहवो सुभट पुत्र ने वश मे पडे, सगर चक्रवर्ति साठसहस्र बेटा तणो दुख देखे, वासुदेव बलदेव द्वारिकानो दाघ उदेखे, भरतेश्वर बाहुबलि सग्राम (न) आप माहि करे, मृत्यु पग हेठल वसि ससार माहि सहुयइ हद्रयाल दीसे, तेह कारण शास्वती कीर्ति उपजाववी, जगत माहि प्रसिद्ध लेवी, इत्यादि जाणवी । (पू०)

(६) दोष सब में (२)

ससारे नैव कर्त्तव्य केनाप्यत्र महोदय. ।
येनो विधिर्न कस्यापि सहते शास्वत सुख ।।
विष्णु दशावतारि तणइ रुउडि भागउ, ऐश्वर नागउ ।
ब्रह्मा पाचमा मस्तक तउ चूकउ ।
चद्र कोचरउ, शुक्र काणउ ।
शनैश्चर कूवडउ, आदित्य सतापक ।

१–आवर्णे २–जिह्वा

सूर्य सारथि पागुलउइ, मगल विकउ, समुद्र खारउ ।
रावण परस्त्री कारणिय विगूतउ ।
राम सीता प्रति वनवास हूउ ।
पाडव कौरव विरोघ वाधिउ ।
करणि राइ आपणी जिह्वा घोडउ बाधउ ।
विक्रमादित्य काग मास खाधउ, तुही अजरामर न हूयउ ।
नल राजा परायइ घरि सूआर पणउ करइ ।
हरिश्चद्र चाडालनइ घरि पाणि भरइ ।
फरूसराम आपणी माइ तणु शिरः कमलच्छेदइ ।
माघ जेवडउ विद्वास पग सूझी भूख मूयउ ।
नागार्जुन रस सिद्धि पूठि घाठउ ।
गागेय जेवडइ सुभट पुत्र नइ वरासइ पडइ ।
सगर चक्रवर्ति जेवडउ साठि सहस्र बेटा तणउं दुख देखइ ।
भरतेश्वर बाहुबलि आप माहि सग्राम करइ ।
वासुदेव बलदेव द्वारिका तणउ दाघ ऊवेखइ ।
मृत्यु पग हेठि बसइ, ससार माहि सहूयइ इद्रजाल दीसइ ।
तीह कारणी शाश्वती कीर्ति ऊपार्जवी, जगत्रय माहि प्रसिद्धि लेवी ॥

(७) अनुसार (१)

सतोष सारु सुख, सत्य सारु वचनु
प्रत्यय सारु लेख, आज्ञा सारु राजु
विनय सारु शिष्य, पुत्र सारु कलत्रु
दान सारु विभवु, दया सारु धर्म । (पु अ)

(८) अन्योन्याश्रित (२)

जेहवो राजा तहवी नीत, भीत सारूचीत ॥
रोग तेहवी नीत, कुल सारु रीत, मन केडे प्रीत ॥
वाप तेहवो बेटो, बड तेहवो टेटो ॥
घडो तेहवी ठीकरी, मा तेहवी दीकरी ॥
[1]जाल जेहवा मछ, व्याधि तेहवा पथ्य ॥

---

१ जल जेहवो ठाम ।

घन तेहवा व्यय, सैन्य तेहवो जय, चोर तेहवो भय ।।
कठ तेहवो राग, कर्मानुसारु भाग ।।
व्यापार तेहवो लाग, बालण तेहवी आग ।।
सग तेहवो रग, अकल सारु ढग ।।
डेरा सारू तग, सरीर सारु[1] ढग ।।
आहार तेहवो डकार[2], अन्याय तेहवो मार ।।
विनय तेहवो कार, कर्म प्रमाणे आचार ।।
इत्यादि । ५

(९) परिमाणानुसार (३)

जाति मान समाचार,[3] विवेक मानि विचार ।
घर मानि प्राहुणउ, कयाणा मानि आधनु ।[4]
खाडा मानि पडियार, धनुष मानि पणच ।
सयर[5] मानि छाया, पग मानि पाणही ।
आँखि मानि भरणु, जाख मानि बलि ।
भिराडी मानि पूडा, गुण मानि तिम माणुस पूजा ।। रज जे.

(१०) परिमाणानुसार (४)

खाडा मानि पडियारु, धनुष मानि पडच ।
सयर मानि छाया, पग मानि पाणही ।
आख मानि भरणु, रूख मानि फलु ।
जाख मानि बलि, भराडि मानि दीवेलु ।
घर सारइ प्राहुणउ, जाति मानु समाचारु ।। (पु अ.)

(११) परिमाणानुसार (५)

सकल कल्याण वल्लि पुष्करावर्त्त मेघ जिन धर्म ।
जीणइ मानि दया, तीणइ मानिइ धर्म ।
जीणइ मानि कर्म, तीणइ मानि फलियइ[6] ।
उपक्रमा जिसिया कुल, तीणइ मानि वचन ।
जिसी भीति, तिसीउ चित्राम ।

---

१ प्रमाणें । २ उद्गार । ३–आचार । ४–ग्राम सारु सिहिणो । ५–सरीर । ६ फलिइ ।

जिसी आकृति तिसिया गुण
जीणइ मानिइ वय, तीणइ मानिइ बुद्धि ।
जिसिउ भाव, तिसी सिद्धि ।
जिसीया[1] जल, तिसिया[2] कमल ।
जिसीउ आहार, तिसियां बल ।
जिसिया वृक्ष, ससालियइ[3] तिसिया फल[4] ।
जिसी अतकालि मति, तिसी गति ।
जीणइ मानि दान, तीणइ मानि कीर्त्ति । ६१ । जो०

(१२) अन्योन्याश्रय (६)

जिसोवास,	तिसो अभ्यास ॥
जिसी सीख,	तिसी मति ॥
जिसो आहार,	तिसी डकार ॥
जिसो वावीइ ,	तिसो लुणीइ ॥
जिसो कमावीइ	तिसो पामीइ ॥
जिसो दीजे	तिसो फल लीज ॥
जेहवी करनी	तेहवी पार उतरणी

इत्यादिक जाणवी । (पू.)

(१३) अन्योन्याश्रय (७)

जिसिउ वास, तिसिउ अभ्यास ।
जिसी दीख, तिसी सीख ।
जिसिउ आहार, तिसिउ उद्गार ।
जिसिउ वावीयइ तिसिउ लूणीयइ ।
जिसिउ कमाईइ तिसिउ प्रामीयइ फलु ।
जिसिउ दीजइ, तिसिउ लीजइ ॥ २६ ॥ जो०

(१४) अन्योन्याश्रय (८)

जिसउ वासु, तिसउ अभ्यासु ।
जिसी दीख, तिसी सीख ।
जिसउ आहारु, तिसउ उद्गारु ।
जिसउ वावियइ, तिसउ लूणियइ ।

---

१ जिमा २ तिसा ३ सेसालिइ ४ फजल

जिस थवियइ, तिस खणियइ ।
जिसउ दीजइ, तिसु लाभइ
जिस कमाईय, तिस अमाई ॥ (पु अ)

(१५) ये इनको जानते हैं (१)

मनु जाणइ पाप, माता जाणइ बाप ।
गारुडी जाणइ साप, वाणिउ जाणइ माप ।
आसदउ[1] जाणई घोडा, कडीउ जाणइ रोडा ।
सोनार जागइ सोना कडा, कदोइ जाणइ बडा ।
हस जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर ।
मुख जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा ॥ २७ ॥ जो+

(१६) ये इनको जानते हैं (२)

मन जाणइ पाप, मा जाणइ बाप ॥
हस जाणइखीर, मच्छ जाणइ नीर ॥
मुँह जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा ॥
पग जाणइ पागी, राग जाणइ रागी ॥
दाव जाणइ दासी, कायर जाणइ नासी ॥
नारद जाणइ हासी, डोकरउ जाणइ खासी ॥
गारुडी जाणइ मत्र, कापडी जाणइ जत्र ॥
जाचक जाणइ लीयउ, दाता जाणे दीयउ ॥
बडउ जाणइ कीयउ, छोरू जाणइ हीयउ ॥
चोर जाणे घात्र, ओझा जाणइ छात्र ॥
जगम जाणे जात्र, पुण्यवत जाणे पात्र ॥
करसण जाणइ जाट, सोनार जाणइ घाट ॥
कवित्त जाणइ भाट, खरादी जाणइ ख़ाट ॥
तबोली जाणइ पाननी चोली, स्त्री जाणइ पोलो ॥
कूड जाणे कोली, मथेण जाणइ बोली ॥
माया जाणे गोली, बाइर जाणे रोली ॥
बाणियउ जाणइ जोखी, दूषण जाणइ दोषी ॥
मोची जाणे जूती, कपट जाणइ दूती ॥

---

(१) असवार + पेट जोणे उणु ।

सकुन जाणइ सिद्धि, पुण्य जाणइ रिद्धि ।।
सराफ जाणे परखी, वस्तु जाणे निरखी ।।
दलाल जाणे साट, तिम 'धीर' गुरु जाणइ धर्म नी वाट ।
इति जाति वाक्यानि । कु०

(१७) ये इनको जानते हैं (३)

हंस जाणइ खीरु, मच्छु जाणइ नीरु ।
आसदउ जाणइ घोडा, महिरालु जाणइ मट्टु मोडा ।
कदोई जाणइ बडा, सोनारु जाणइ कडा ।
गारुडिउ जाणइ सापु, मनु जाणइ आपु, मा जाणइ बापु ।
मट्टु जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा । (पु० अ०)

(१८) इनसे यह नहीं हो सकता

(१)

पंगुर्यथा बहु योजनाटवीं लंघयितुं (न शक्नोति) ।
वामनः स्ताल फलानि लातुं न शक्नोति ।
यथा कुब्जः प्राध्वरी[1] भवितुं[2] न शक्नोति ।
वात भग्न शरीरश्च विषम किरणानि दातुं न शक्नोति ।
विद्यारहितश्चाकाशे गंतुं न श० अंधः पुस्तकं वाचयितुं न श० ।
बधिरः पर्यालोचं कर्त्तुं न शक्नोति ।
तथानिर्भाग्यापि धर्मं कर्त्तुं न शक्नोति ।
(१५४ जो०)

(१९) अशक्यता

(२)

जडोप्यहं गुरु प्रसादाद्वक्तुं शक्नोमि,
वामनः आम्र फलानि गृहीतुं कथं शक्नोति ।

---

१. साध्वरी । २ भावितुं ।

अधश्चित्रशालि चित्रयितु कथ शक्नोति ।
बधिरो वाणी निनाद श्रे.तु कथ शक्नोति ।
पगुस्तीर्थाणि अवगाहयितु कथ शक्नोति ।
पाषाण. सौकुमार्ये स्थातु कथ शक्नोति ।
निम्बो माधुर्ये स्थातु कथ शक्नोति ।
काको हस ससदि स्थातु कथ शक्नोति ।
क्रमेलक करि वरेषु स्थातु कथ शक्नोति ।
एव मुर्खोपि पडितत्त्वे स्थातु कथ॰शक्नोति ।

(३१ जो०)

(२०) स्वाभाविक

सत्पुरुष परोपकार किसिउ सीखवीयइ ।
सालि किसिउ खाडीयइ, रूपि किसिउ माडीयइ ।
हीर किसीउ जडीयइ, मोती किसिउ छडीयइ ।.
अमृत किसीउ कढीयइ, सारश्वत किसीउ पढ़ीयइ ।
शख किसीउ धवलीयइ, दूध किसीउ गलीयइ ।

(३० जो०)

(२१) ऐसा प्रयत्न व्यर्थ है

सरस्वती किम पाढियइ, अमृतु किम कढियइ ।
माणिकु किम घडियइ, मोती किम छडियइ ।
निर्गुण किम बदियइ, सुगुण किम निदियइ, वाउ किम बाधियइ ।
हरिण तणा नेत्र किम आजियइ, कुर्कट तणा चरण किम रंजियइ ।
कल्पद्रुम किम रोपियइ, साखु किम धवलियइ ।
सूयरु किम वालियइ, ऐरावणु किम दामियइ ।
चिन्तामणि किम पामियइ, कामधेनु किम वाहियइ ।
हिंग किम वघारियइ, वेदु किम सस्कारियइ ।
रूपिणि किम माडियइ, सालि किम छडियइ ।

हारु किम शृंगारियइ, लक्ष्मी किम निवारियइ ।
स्वर्ण किम उजालियइ, हीरउ किम पखालियइ । पु० अ०

(२२) असभव प्रायः

वामणो आबे पोंहचे, मूर्ख काइ सोचे, अधक भींति चित्रे, धूर्त्त कोइ न छित्रे । वहिरो वीण सांभले, जूआरी वचन पाले । अधलो अख्यर वाचे, आडि जलमा छूडे[1] पागुलो, पाघरो हींडे, तो कृपण दान आले । इत्यादिक जाणवो ॥ ५

(२३) असभव

यदि मेघ धाराणा सख्या भवति ।
यदि भूतले रेणुका सख्या भवति ।
यदि सुमुद्र मत्स्य सख्या भवति ।
यदि मेरुगिरि सुवर्ण सख्या भवति ।
ततः अमुक सख्या भवति ।। ८२ ।। जै

प्रतिज्ञा वर्णक (२४) प्रतिज्ञा अन्यथा नहीं होती

कदाचित् समुद्र मर्यादा चलइ । कदाचित् वाचस्पति वचन खलइ ।
कदाचित् शिला तलि कमल विकसइ ।
कदाचित् महीमडल पाताल जाई ।
अथवा प्रतिपन्न अन्यथा न थाइ ।। ६ ।। पु

(२५) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (१)

यदि समुद्रस्य तृष्णस्याचदा ता कः स्फोटयति ?
यदि भूमि·[1] कम्पते तदा क स्तंभयति ?
यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा क· उपचार ?
यदि नभ स्फुटति तदा की दश रेहण ?
चौरेण राजा गृह्यते तदा कस्यापि को रक्षक ?
यदि हिमाचल शीतेन कम्पते तदा किमावरण ?
यदि सरस्वती सन्देह न भंजयति तदा को अन्य. ?

---

[1] बूड ।

यदि बृहस्पतिर्मतिहीनो भवति तदा को मति[1] दास्यति ?
यदि चन्द्रादगार वृष्टि र्भवति तदा को रक्षकः ?
यदि वाटिका चिर्भटाना भक्षति तदा को रक्षकः ?। ८४ जै.

(२६) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (२)

जो राजा चोरी करे तो बाजौ कुण राखे
जो सत्यवत खोटु भाखे तो बीजो कुण न भाखे ।
जो चन्द्रमा शीतल न होइ तो बीजो कुण शीतल होइ ।
जो सूर्य अधकार न निवारे तो बीजो कुण निवारे
यदि सारदा सदेह न भाजै तौ बीजो कुण भाजै
जो बृहस्पति मतिहीन तो बीजो कुण मति देस्ये
जो शेषनाग धरती मूकइ तो बीजो कु ण धारस्ये
जो समुद्र मर्यादा मेले तो बीजो कुण राखे
जो आकाश पडे तो बाजो कुण थमे ।।
जो सजन उपकार रहित तो बीजो कुण उपकार करें ।।
जो लक्ष्मी भडार तोडस्ये तो बीजो कुण भरस्यै
इत्यादिक जाणवौ ।। पु० ।।

(२७) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (३)

यदि राजा चोरी करोति तदा को रक्षक. ।
समुद्रस्य तृष्णा क· स्फोटयति ।
यदि हिमाचल शीतेन म्रियते तदा कि हग प्रवरण ।
यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा कि हगुपचार. ।
यदि सरस्वती सदेह न भजति तदा को भजति ।
यदि लक्ष्मी भाडागार द्रव्य सात्रोट तदा क. पूरयिष्यति ।

१–पृथ्वी २–दक्ष 'पु०' प्रति मे यह पाठ अधिक है—

यदि लक्ष्मी भडागारे द्रव्य सत्रुट तदा क पूरयिष्यति । यदि सत्पुरुष उचित रहित· तदा क· शिक्षा दास्यति ।।

यदि बृहस्पतिर्मतिहीनस्तदा को मति दास्यति।
यदि पृथ्वी कपते तदा क स्तभ· ।
यदि नभः स्फुटति तदा की इग् रेहण।
यदि पुत्रो भक्ति न विधास्यति तदा को विधास्यति।
यदि शिष्यो विनय न करिष्यति तदा क. कर्त्ता ।
यदि सत्पुरुष उपकार रहितस्तदा क. शिष्या (क्षा) दास्यति ।।३४।। जो

(२८) इनकी त्रुटि इनसे पूरी नहीं हो सकती

द्राक्षा तणी[1] आकाक्षा, किसिउ महूडे फीटइ ।
शर्करानी श्रद्धा कि गुलि पूजइ ।
अमृत काजि कि काजी पीजइ ।
आबा तणउ डोहलउ कि आलीए पूजइ ।
कस्तूरी वान[2] कि काजलि कीजइ ।
इद्र नीलमणि काजि[3] कि काचु लीजइ ।
वल्लभ माणुस तणो उमाइउ किसिइ अनेरइ पूजइ ।
(११६ जो०)

(२९) अंत (सीमा)

कलशात प्रासाद, गजान्त लक्ष्मी, ध्वजात धर्म ।
नरकात राज्य, गोरसात भोज्य ।
बधनात व्यापार, हारात[1] शृङ्गार ।
व्यलीकात, स्नेह, कलहात गेह ।
क्षय रोगान्त देह, शरत्कालात मेह ।।२३।। जो०

---

(१) नी २ नू काज ३ नइ

(पु० प्रति) १—हीरात
"वियोगात छेह" इत्यादि जाणना ।
प्रत्यतइ मे पाठ अधिक मिलता हे ।

अंत सीम (३०) अंत (२)

कल शान्त प्रासादु, राज सभान्त वादु।
प्रवासान्त स्नेह, नामान्त केवली।
स्वर्णान्तु शृङ्गार आन्त गुणितु,
नर्कान्त पठितु पदान्त दुर्जन स्नेह,
गजान्त लक्ष्मी, नायकान्त युद्ध,
हट्टान्त व्यवहार कसवटात स्वर्ण ॥१०१॥ जै०

(३१) गुण प्रधानता

समुद्रश्चद्र इव कृमिकुला दुकूल मिव।
उपलात्सुवर्णमिव, गो रोम तो दुर्वावित्[1]।
पकात्ताम रसमिव, गोमया दिदीवरमिव।
काष्ठ कोटरात् बह्हिरिव, नाग फणादिव मणिः।
गो पित्ततो रोचनावत्, चद्रकातादमृतवत्।
मृगात्कसतूरी केव, द्राक्षाया इव माधुर्य ।
शर्करात इव पित्तोपशम , चदनादिव शैत्य ।
मजिष्ठाया इव रागः, मेघादिव विद्युत्।
तथा सर्वोपि जनो गुणैरेव ख्यातिमान भवति ननतु कुले।
शील प्रधान न कुल प्रधान,
कुलेन किं शील विवर्जितेन,
बहवो नरा[2] नीच कुलेषु जाता,
स्वर्ग गती शीलमुपास्य धीरा ॥ १ ॥
गौरव लभते लोके नीच जातोपि सद्गुणै.।
सौरभ्यात्कस्य नाभीष्टा कस्तूरो मृग नाभिजा ॥ ६३ ॥ जो०

(३२) संग से वृद्धि (१)

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते। इदु दर्शनने समुद्र। शृगारेण रागः। विनयेनगुणाः। दानेनकीर्तिः। उद्यमेन श्री॰। सत्येन धर्म.। पालनेन उद्यान। अभ्यासेन विद्या।

---

१ दुर्वा, दूर्वा २ बहुवोन स+चदनादि वाशैत्य।

न्यायेन राज्य । उचितेन महत्व । औदार्येण प्रभुत्व । क्षमया तपः । पूर्ववायुनाः जलदः । वृष्टिभिर्धान्यानि । घृताहुत्या वह्नि. । भोजनेन शरीर । वर्षाकालेन नदी । लोभेन लोभः । ताडनेन कर्णौ । पुत्रदर्शनेन हर्ष । मित्रदर्शनेनाह्लाद । जिन दर्शनेन पुण्यवर्द्धते । सर्वत्र सबध. ।

दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते । तृणै वैश्वानर. । नीचसगेन दु शीलता । उपेक्षया रिपु' । कडूयनेन कडूः । असतोषेण तृष्णा । व्यसनेन विषया. । निदया पाप । प्रवासेन राजा । विरहेण रात्रि । शोकेन दुख । ज्वरो घृतेन । सर्वत्र सबध ।

(३३) संग से वृद्धि (२)

सुवचने प्रीति वाधे, दुर्वचने कलहो वाधे ।
नीच दर्शने कुशीलता वाधे, वेरी करी दुष्टता वाधे ।
अपथ्ये रोग वाधे, व्यसने विषय वाधे ।
न्याइ राज्य वाधे, विनये गुण वाधे ।
दाने करी कीर्ति वाधे, उदार्ये प्रभुत्व वाधे ।
क्षमाइ तप वाधे, निर्दये पाप वाधे ।
घृते ताव वाधे, तिम सत्यकरी विश्वास वाधे ।
इत्यादिक सगथी वाधवु जाणवु ।

उद्यमें लक्ष्मी, सत्येकरीधर्म, वनमालाइकरी वन, शृगारे राग वाधे, भोजने करी शरीर, व्यापारे धन वाधे, जल पूरे नदी वाधे, लाभे लोभ वाधे, घृते वह्नि वाधे इत्यादि जाणवो ।

(३४) सग से वृद्धि (३)

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते, दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते ।
नीच दर्शनेन कुशीलता, उपेक्षया अरि कुटुब ।
अपथ्येन रोगोवर्द्धते, कडूयनेन कडूवर्द्धते ।
असतोषेन तृष्णा, व्यसनैर्विषयाः, निदया पाप ।
घृतेन ज्वरोवर्द्धते, सत्समाचारेण विश्वासो वर्द्धते ।
अभ्यासेन विद्या, न्यायेन राज्य ।
विनयेन गुणाः, दानेन कीर्त्ति ।

औचित्येन महत्व, औदार्येण प्रभुत्व ।
क्षमया तपो वर्द्धते, उद्यमेन श्री वर्द्धते ।
सत्येन धर्मो वर्द्धते, पालनेनोद्यान वर्द्धते ।
चद्र दर्शनेन समुद्रो वर्द्धते, शृगारेण रागो वर्द्धते ।
पूर्व वायुना जलदो वर्द्धते, वृष्टि भिर्धान्यानि ।
घृताहुत्या वह्नि वर्द्धते, भोजनेन शरीर ।
जल पूरेण नदी, लाभेन लोभो वर्द्धते । (३६ जो०)

(३५) विनाश (१)

तप क्रोधे विणसे, सनेह विरहे विणसे ।
व्यवहार अविश्वासे विणसे, गर्वइ गुण नासे ।
धान्य अनरसणे नासे, रूप दूर्भाग्ये नासे ।
भोजन तेले नासे, सरीर अयत्ने नासे ।
तिम धर्म प्रमादे नासे, इत्यादिक जाणवा ॥ पू० ॥

(३६) विनाश (२)

तप क्रोधेन विनश्यति, स्नेहो विरहेण विनश्यति ।
व्यवहारो अविश्वासेन विनश्यति, गुणा गर्वेण विनश्यति ।
कुल स्त्री अरक्षणेन विनश्यति, धान्य अवर्षणेन विनश्यति ।
रूप दुर्भाग्येन विनश्यति, भोजन तैलेन विनश्यति ।
शरीर अयत्नेन विनश्यति, धर्मस्तथा प्रमादेन विनश्यति । ३७। जो०

(३७) किससे किसका विनाश—३ इणां विना इणांरो विनाश

अनभ्यासेन विद्या नश्यति, प्रमादेन द्रव्य नश्यति ।
दुर्वचनेन मैत्री नश्यति, लोभेन विवेको नश्यति ।
अनौचित्येन महत्व नश्यति, अन्यायेन कीर्त्तिर्नश्यति ।
कुसगेन धर्मो नश्यति, आलायेन कुलस्त्रीत्व नश्यति ।
अनायकेन सैन्य नश्यति । ३२ जो०

(३८) विनाश—४

जिमि विलबइ विणसइ काज, कुप्रधानइ विणसइ राज ।
अणबोल्या विणसइव्याज, कसतूरी विणसइ प्याज ।
पडषि विणसइ दान कट विण विणसर गान ।
लूअइ विणसइ पान, लूण विण विणसइ धान ।
कुमग्गइ विणसइ अवमानु, ब्यावइ विणसइ मुखान ।
पिसुनइ विणसइ राज सनमान, कूसगत विणसइ सतान
दवानल विणसई उद्यान, आर्त्तइ विणसइ ध्यान ।
कुपडितइ विणसइ छात्र, व्ययनि विणसइ गात्र ।
वृद्धइ विणसइ प्रसाद, सिदूरइ विणसइ साद ।
बेगइ विणसइ नेत्र, तीडइ विणसइ खेत्र ।
विषप्रयोगि विणसइ रसवती, पाक चभडोये विणसइ कणक वाक ।
कुब्यसनइ विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसाअइ विणसइ सद्धर्म ।
इति विनाम वाक्यानि । कु०

(३९) इनके बिना ये नहीं (१)

गुरु बिना वाट नहीं, द्रव्य विना हाट नहीं ॥
सूतार विना खाट नहीं, सण विना त्राट नहीं ॥
काष्ठ विना पाट नहीं, धात विना काट नहीं ॥
कुभार बिना माट नहीं, सोनार विना घाट नहीं ॥
माथा बिना ठाट नहीं, बाजा बिना नाट नहीं ॥
जव बिना वाट नहीं, सोग बिना उचाट नहीं ॥
स्त्री बिना पुत्र नहीं, रू विना सूत्र नहीं ॥
ग्राम बिना सीम नहीं, मन विना नीम नहीं ॥
धन बिना नर नहीं, मा विना पीहर नहीं ॥
दान बिना जस नहीं इक्षु बिना रस नहीं ॥
आकश बिना मेह नहीं, बाधव बिना स्नेह नहीं ॥
दरसन बिना सिद्धि नहीं, पुण्य बिना रिद्धि नहीं ॥
झाड विना साखा नहीं, रोग बिना राखा नहीं ॥
सील बिना धर्म नहीं, पाप बिना कर्म नहीं ।

सूर्य बिना तेज नही, परीणि बिना हेज नही ।।
भणया बिना मर्म नहीं, कुल बिना सर्म[2] नही ।।
तिम दया विना धर्म नही ।

(४०) इनके बिना ये नहीं (२)

पुण्य बिना सुख नहि, अग्नि बिना धूमो नही ।
वीज बिना अकूरोद्गमो न, सूर्य विना दिवसो न ।
सुपुत्र बिना कुल न, गुरुपदेश बिना विद्या न ।
भाव सिद्धि बिना धर्मो न, धन बिना प्रभुत्व न ।
दान विना कीर्त्ति न, भोजन बिना तृप्ति न ।
वीतराग बिना मुक्ति न, साहस बिना सिद्धि न ।
जल विना पावित्र्य न, उद्यम बिना धन न ।
कुलागना बिना गृह न, वृष्टिर्विना सुभिक्ष नही ।
धर्म्मेण विणा जइ चितियाइ, ।। (६५ जो०)

(४१) थोड़े के लिए अधिक विनाश मत कर

काच खड कारणि म नीगमि चितामणि
बाटी कारणि अरहट्ट म वीकणि
अकार[3] कारिणि कल्पवृक्ष म धारि
कागिणी कारणि कोटि म हारि
कीलिका[4] कारणि देवकुल म चालि
विषय सुख कारिणि मानुषउ[5] जन्म म हारि+ ।। पु. अ.

(४२) अल्प के लिए बहुत का नाश (२)

अल्प के लिये बहुत का नाश
जुको जिन धर्म लही प्रमाद करइ ।
ते जाणे ठीकरी कारणि अमृत कुभ फोडइ,
निष्कारण आजन्म तणउ स्नेह त्रोडइ ।

---

१ सर्म २ गर्व । ३ अ कार वदि ४ खीली ५ मानखट
+"कोचिकूवदि ऋद्धि च इउ दासत्तण अहिलसइ
मुत्तु चितारयण, कायमणिं कोवगि एहेर ।।
उक्त पाठ एक अन्य प्रति मे अधिक मिलता है ।

तेम० कामधेनु अलीढी[1] मेल्हइ,
चिंतामणि रत्न आवतउ पाय पेलइ ।
कल्पद्रुम आपणा घर तउ उन्मूलइ,
प्रवहण मेल्ही आपण पउ समुद्र माहि बोळइ ।
ते सतु० सोना तणइ कारणि पित्तल तोलइ,
अमृत तणी आस लगइ विस घोलइ । ७ । जो

(४३) थोड़े के लिए अधिक विनाश (३)

ठीकिरि कारणु कोइ काम कुभु फोडइ, निष्कारण[2] कोइ आत्म स्नेह तोडइ
कामधेनु कोइ ढीली मेल्हइ, चिन्तामणि कोइ हाथो पेल्हइ
कल्पद्रुम कोइ उन्मूलि नाखइ[3] लक्ष्मी आवती न कोइ राखइ
जिन धर्म लही कोइ प्रमाद सेवइ[4] । पु अ

(४४) अति (१)

निरमलन ते नीठवानइ, अतिघणु मार ते धीठवानइ ॥
अतिघणु नेह ते त्रुटिवानइ, अतिछणु विलोइवु ते फूटिवानइ ॥
अति घणु खाइवु टिवानइ, अतिघणु ढील ते छूटिवानइ ॥ (खू)
अतिघणु तानिवु त्रुटिवानइ, खड भडइ चोर ते फाटिवानइ ॥
अतिघणु गरथ ते खाटिवानइ, अति बुरी बातते दाटिवानइ ॥
इति वचनानि ॥ कु

(४५) अति (२)

अति ताणिउ त्रुटइ, अति भरिउ फूटइ ।
अति लइउ वाडि फडइ, अति माथिउ काल कूट हुइ ।
अति चाविउ कूचा थाइ ।

(४६) करने में असमर्थ

छीतरि छासि[5] केतलउ पाणिउ खमइ[6]
पातलि छाया केतलउ आतप[7] गमइ ।
कातरु केतलु रणागणि जूझइ ।
निरुक्खरु केतलु कहिउ बूझइ ।

१—अलाढी २ निक्कारणि, ३ लाखइ ४ राचइ ५. छिद्रीच्छासी, छीदरी ६ सहइ ७ नीगमइ ।

(५०) अधिकस्य सार्थकत्वम्

यदि शत्रवो बहव स्ततः किं समुद्रे प्रक्षेपणीया ।
यदि तैल बहु तत. किं पर्वता लेपणीया ।
यदि बीज घन[१] ततः किं ऊषरे वपनीय[२] ।
यदि सुवर्ण बहु ततः किं गवा शृंखला कार्या ।
यदि चन्दन बहु तत· कपाट कार्य[३] ।
यदि दुग्ध बहु तत. किं सर्पाय देय[४] ।
यदि घनानि रत्नानि ततः किं कउड्डापनीया[५] । उ०

(५१) अधिक होने पर भी व्यर्थ खोने को नहीं होता

सत्पुरुष घणी हुई लक्ष्मी ।
सुपात्र इ हीज माहि बावरइ, किंतु न जिहा तिहा सर्वथापि न नाखइ ।
जउ किमइ घणा सातू, तउ किसउ समुद्र माहि घातिवा ।
जउ घणउ तेल, तउ किसउ पर्वत चोपडवा ।
जउ घणउ बीज, तउ किसउ ऊखरि वाविवउ ।
जइ घणइ सुवर्ण, तउ किसउ साकल कराववी ।
जउ घणउ दुग्ध, तउ किसउ सर्प पाइवउ ।
जउ घणा गजेन्द्र, तउ किसउ भार वाहविवउ ॥११ जो०

(५२) विनाश करके विचार करना

प्रथम शिरच्छित्वा पश्चादग चुबनं ।
प्रथम गृह प्रज्वाल्य तस्यैव गृहस्य कुशल वार्ता पृछन ।
पर प्राण हरण पश्चादनुशोचन ।
पदभ्या मीनान्मारयति मुखे वेद वचन ब्रूते । सू०
यथा स्वय समुद्रे जलानि स्वय मेरकल्पद्रुमोद्गम. ।
जले पावित्र्य लक्ष्म्याः सौभाग्य[६] तथा स्वयं पुण्यवंता सर्वांगे सदयः ।
१०३ जो०

---

१ बहु । २ क्षेप्य । ३ युग्म । ४ स्पेक्षेपणीय । ५ काकोडायेनेन ।

+यदि गजा बहवस्तदा किं इंधनाहरेण प्रयोज्या ॥छ॥ एह दान समस्त प्रधान ॥पु०॥ पु० प्रति मे उक्त पाठ अधिक मिलता है ।

६ इसके बाद । स्वगाक कुमेरणा स्वय कर्पूरे सौभाग्य ।

(५३) अंतर

मिथ्यात्व सम्यक्त्व जिम अतर
सज्जन दुर्जन जिम अतर
सुख दुख ने जिम अतर
पुण्य पापने तिम अतर,
छासि दूध ने जिम अतर,
कपूर लवण ने जिम अतर
करतूरी कज्जल जिम अतर
कुकु केसर जिम अतर
सुवर्ण पीतल जिम अतर
गज उटने अतर
आब नीब ने जिम अतर,
कइर कल्पद्रुम ने जिम अन्तर,
समुद्र कूप ने जिम अतर,
खीर काजिने जिम अतर
कथिर रुपाने जिम अतर
तिम परस्पर अतर जाणवो ॥ पू॰

(५४) महदन्तर (२)

मिथ्यात्व सम्यक्त्वयोर्महदतर, सुजम दुर्जनयोर्मह॰ ।
सुखदु खयोर्महदन्तर, पुण्य पापयोर्महदतर ।
छाया तपयोर्मह॰, कर्पूर लवणयोर्मह॰ ।
कस्तूरिका अजनयोर्मह॰, कुकम केसरयोर्मह॰ ।
सुवर्ण पित्तलयोर्मह॰, गजोष्ट्रयोर्मह॰ ।
आम्र निबयोर्मह॰, करीर कल्पद्रुमयोर्मह॰ ।
सूर्य खद्योतयोर्मह॰, समुद्र कूप्योर्मह॰ ।
क्षीर काजिकयोर्मह॰, रूपक टकक सुवर्णयोर्मह॰ । २० । जो॰

(५५) अंतर (३)

जेवउ अतरु मोक्ष नइ ससारु, कृपण नइ उदारु, ।
शोकु नइ उच्छव, शालि नइ कोद्रव ।
सम्मान नइ परिभव, मेरु नइ सरिसब ।

साचउ नइ कूडउ, समुद्र नइ कूयउ ।
लाख नइ रूपउ, राम नइ रावण ।
राणी नइ दासि, आछण नइ छासि ।
स्वर्ण नइ पीतलु, स्वर्ग नइ भूतलु ।
आदित्य नइ खजूयउ, राय नइ राकु ।
नक्षत्र नइ शशाकु, आतप नइ छाया ।
तेवडउ अतरु स्वभाव नइ माया ॥ ८७ ॥ जै०

आंतरा वर्णक

किहा मेरु, किहा सर्षप । किहा राम, किहा रावण ।
किहा नूपुर, किहा दामण । किहा सीह, किहा सिआल ।
किहा सुवर्ण, किहा इगाल । किहा कर्पूर, किहा कर्पास ।
किहा सामी, किहा दास । किहा द्राम, किहा रुउ । किहा सागर, किहा कुउ ।
किहा सामो, किहा सालि । किहा मुगदालि, किहा वल्लदालि ।
किहा सुपात्रदान, किहा मन. प्रधान ॥ छ ॥ पु०
जेवडउ अतर द्राम नइ रुआ, जेवडउ अतर समुद्र नइ कुआ ।
जेवडउ अतर राम रावण, जेवडा अतर लाडू लवण ।
जेवडा अतर साकर खाड, जेवडा अतर खडी खाड ।
जेवडा अतर सीआल नइ सीह, जेवडा अतर गुल खल ।
जेवडा अतर पर्वत स्थल, जेवडा अतर सुवर्ण लोह ।
जेवडा अतर तरुण वृद्ध, जेवडा अतर अकिन्चन समृद्ध ।
जेवडा अतर पडित मूर्ख, जेवडा अतर प्रसाद पीडहर ।
जेवडा अतर पागड पाव, जेवडउ अतर हरिण नइ वाघ ॥ छ ॥
किहा मेरु लक्ष योजन प्रमाण, किहा परमाणु ।
किहा क्षीर सागर, किहा लवण सागर । किहा काला गुरु किहा हीरा गुरु ।
किहा कल्पतरु, किहा अब तरु । किहा ताम्रपर्णी नदी प्रदेश,
किहा मरु देश । किहा उच्चैश्रवा तुरगम सार, किहा टार ।
किहा मुक्ताफल, किहा शुक्तिका शकल ॥ छ ॥ पु०

(५७) अंतर (५)

जेवडो अतर मेरु अने सरसिव ।
जेवडो मानने अपमान । जे० लोह अने कचन ॥
जे० रामने रावण । जे० गर्दभने ऐरावण ।
जे० हाथिने ऊट । जे० सीहने सीयाल ।

जे० गाइने नोलीयो ।
जे० आम्र[1] ने नींबोलियो ।
जे० राणीने दासी, जे० दूधने छासि,
जे० [2]गोल ने खल, जे० गरुड ने घूअउ [3]
जे० सुसील ने फूअउ, जे० गाय ने छाली
जे० बहिन ने साली
जे० दीवाली नें होली, जे० बहू अने गोली ।
जे० हस ने काग, जे अलसीया ने नाग ।
जे० वृद्ध ने बाल, जे० मल्लाखाडा ने पोसाल ।
जेहवो असर जीवनें काया, जे० मारि ने ।
जे० रत्न नै काकरैं, जे० भिखारी नै राजा
जे० धर्म नइ अधर्म, जे० शिव नै जैन ।
दयातेहवोअतरजाणवो पू०.

(५८) अंतर (६)

जेवडउ अतर मेरु अनइ सरसव ।
जेवडउ अतर मान अनइ परिभव ।
जेवडउ अतर लोह अनइ कचन, जेवडउ अतर राम अनइ रावण ।
जेवडउ अतर भइसा अनइ एरावण ।
जेवडउ अतर हाथि अनइ ऊट,
जेवडउ अतर पाधरसी अनइ खूट ।
जेवडउ अतर सींह अनइ सीआल,
जेवडउ अतर गोल अनइ विआल ।
जेवडउ अतर राणी अनइ दासी, जेवडउ अतर दुध नइ छासि ।
जेवडउ अतर लूण अनइ कपूर, जेवडउ अतर खजुआ नइ सूर ।
जेवडउ अतर पर्वत्त नइ स्थल, जेवडउ अतर गुल नइ खल ।
जेवडउ अतर गरूड अनइ घूअड, जेवडउ अतर फूटरसी नइ फूहडि ।
जेवडउ अतर गाअ अने छाली, जेवडउ अतर बहिन नइ साली ।
जेवडउ अतर दीवासा नइ दीवाली, जेवडउ अतर पुण्यवत नइ हाली ।
जेवडउ अंतर हस नइ काग, जेवडउ अतर अलसिया[4] नइ नाग ।
जेवडउ अतर वृद्ध नइ बाल, जेवडउ अतर मल्लाखाडा नइ पोसाल ।
जेवडउ अतर जीव नइ काया, जेवडउ अतर मारि नइ दया ।

(१६७ जो०

१ नोकलि घेंलीवाट २ लोकनइ ३ आबे नीब । ४ अलम्ला ।

(५८) अन्तरा (७)

जेवड अतर मोक्षनइ ससार, कृपणनइ उदार ॥
शोक नइ उच्छव, शालिनइ कोद्रव ॥
सन्सानिनइ परभव, मेरुनइ सरसव ॥
साचिनइ कूड, तेजन तुरी ने धूड ॥
रामनइ रावण सुमत्रनइ कामण ॥
रावणनइ दासि, दूधनइ छासि ॥
स्वर्णनइ पीतल, स्वर्ग नइ भूतल ॥
रायनइ राक, मसकनइ वाक ॥
नक्षत्रनइ शशाक, तोलउनइ टाक ॥
आतपनइ छाया, लुभावीनइ माया ॥
आदित्यनइ षजूअउ, वइरागीनउ जूअउ ॥
लाषनइ रूअउ, समुद्रनइ कूअउ ॥
एवडउ अतर हूअउ ॥

इति अतगवर्णन ॥ कु०

(६०) परीक्षा

दान दुर्भिक्षे परीक्षते, सुवर्ण कषपट्टे परीक्षते ।
पौरुष रणे, वृषभ धौरेयत्व पके ।
वाग्मिता पर सभाया, परीष साहस दुर्दशायां परीक्षते ।
कुमित्र आपदि प०, सन्मित्र व्यसनावस्थाया प० ।
पुत्रत्व वृद्धत्वे प०, भार्या सपत्नी समागमे निर्द्धनत्वे च परीक्षते ।
विनयोच्चये शिष्य परी०, बाधवत्व पृथक् भावे परी० ।
तपस्वित्व क्रोधे परी०, ज्ञान निरहकार त्वे परी०
तथा धर्मोवि निर्दंभत्वे प० ।
यतः—तद्भोजन यन्मुनिदत्त शेष सा प्राज्ञता या न करोति पाप ।
तत्सौहृद यत्क्रियते परोक्षेदम्भैर्विनाय. क्रियते सधर्मः ॥ १८ । जो०

(६१) सहज वैर (१)

सहज वैर, जल वैश्वानरयो. ।
देव दैत्ययो, आलु[1] माजरियोः ।

---

१ सारमेय

सिंह गजयोः, गो व्याघ्रयो॰
काक घूकयोः पँडित मुर्खयोः ।
सुजन दुर्जनयो॰, विप्र वाचयमयोः ।
सर्प नकुलयोः, महिष तुरगयोः ॥ ३३ । जो॰ +

(६२) सहज वैर (२)

जलने अगनि प्रीति, देव दैत्य नें प्रीति ।
मुषक मार्जार ने प्रीति, सिंह गजने प्रीति, गो व्याघ्रने प्रीति
पडित मूर्खनें प्रीति. सजन दुर्जनने प्रीति ॥
सर्प नोलने प्रीति, सौक सौकनें प्रीति ।
महिष तुरगने प्रीति ॥
इत्यादिक अमेल जाणवो । पू॰

(६३) ॥ गुण के साथ दोष भी रहता है ॥

जिहा गुरुआ[1] तिहा गाजणउ ।
जिंहा कुलीन तिहा खापणउ ।
जिहा भाणउ[2] तिहा भउ[3] ।
जिहा भूभ तिहा खउ ।
जिहा चोरी तिहा दोरी ।
जिहा चडण, तिहा पडण ।
जिहा जन्म तिहा मरणु
जिहा रूलण तिहा भरण ।
जिहा रग तिहा विरग ।
जिहा सयोग, तिहा वियोग ।
जिहा लाहउ तिहा छेहउ ।
जिहा रूसणउ, तिहा तूसणउ ॥ २८ । जो॰ +

+ 'पातव्रता स्वेरणयो ' पाठ पु॰ प्रति मे अधिक है

१ गुरुत्तण । २ भाणौति । ३ भय ।

+ जिसू वास तिम्यु अभ्यास । जिसी दीख तिसो सीख । जिस्यु आहार तिस्यू डकार । जिस्यु वावीइ तिस्यु लूणीइ । जिस्यु पुरुष पाप कीजइ तिस्यू भोगवीइ । यह पाठ पु॰ प्रति मे अधिक हे ।

जब तब ता खोजानइ खान, जा जीमइजासक जान ता० भट्टारक भगवान ।
जा जी० ता गीत नइ गान, जा जी० ता तान नइ मान ।
जा जी० ता विवाहनइ जान, जा जी० तो फोफल नइ पान ।
जा जी० ता । धर्म्म नइ ध्यान, जा जी० ता तपनइ उपधान ।
जा जी० ता, दरनइ मान ।
जा जी० ता लगिसखाकान, जा जी० ता लगि मुहडइ वान ।
जा पेट न पडइ रोटिया, ता सबे गल्ला खोटिया । तत ।

(६५) काम कोई करे फल अन्य को मिले

दताश्चर्बति उपकारो रसनाया ।
क्रमेलको भार बहति उपकार· पुण्यवता ।
खरश्चदन बहति भोगश्च भोगिनामेव ।
लिखन लेखकस्य फलमागम वेदिना ।
मृदगो घन घातान् सहते फल तु श्रोतृणा ।
युद्धयते सेवकाः पर जय· स्वामिन एव ।
वृक्षा फलति उपकारस्तु पाथाना ।
वर्षति वारिदाः फल तु कर्षकाणा ।
कदर्यो पात्र वित्ताना भोगो भाग्यवताभवेत ।
दता दलति कष्ठेन[१] जिह्वा गिलती लीलाया ॥ ६६ जौ०

(६६) संसार

इस ससारि कवण एक आपदि नही आवी
बलि जेवडउ दानवु बाधउ
नलि जेवडउ राजा विहलिउ
पाडव जेवडा वनवासु हूयउ
बलदेव जेवडउ भाई विछोहु
रावण जेवडउ मृत्यु
माघ जेवडउ पडित भूख पाय सूआ
हनुमत एक कछोटडी
अनइ ससारि कोई सुखियउ नत्थि
शुक्र काणउ, सनीछरउ पागलउ

---

१ कष्टेन

चद्रमा क्षयउ, समुद्र वडवानलि दहयउ
रोहिणी गिरितणा कद खणिया
कस कीजइ कहा जाइयइ
आकास निरालबु, पातालि प्रवेश नही
मृत्युलोक असोच, वन सभय
समुद्र खारउ, इसउ जाणिउ धर्म कीजइ (पु आ०)

(६७) संसार के दो छोर

एगमा धवल मगल, वीजागमा कलह कढल ।
एक गमा शोक, वीजी गमा विव्वोक ।
एक गमा आनद, बीजा गमा आक्रद ।
एक गमा कुतहलना[1] आरभ, बीजा गमा भूझना[2] सरभ ।
एक गमा सस्नेह कोमलालाप वीजा गमा वियोग विप्रलाप ।
एक गमा अद्भुत शृगार, वी० सर्वस्वायहार ।
एक गमा मादल ना धोकार, वी० शोकना हाहाकार ।
एक० शकना[3] आकार, बीजा० रोग तणा विकार ।
एक० विद्वास नी गोष्ठी, वी० मद्यपना कल कल ।
एक० वीणा तणा निनाद, बी० दुःख तनु विषाद ।
एक० अद्वितीय रूप, बी० विभत्स कदर्य विरूप[4] ।
एव विध ससार, दुःख तणउ भंडार ।
सर्वथापि असार जाणिवउ ।। १४ । जो०

(६८) ससार स्वरूप (२)

एक गामि धवलमगल, बीजे गामे कलह कदल ।
एक गामे आनन्द, बीजे गामे आक्रन्द ।
एक गामे विचित्र क्रीडारभ, बीजेगामे समरसरभ ।
एक गामे आलाप सलाप, वीजे गामे खावाना कलाप ।
एक गामे मोटाहार, वीजे गामे रहिवाना उत्पाट ।
एक गामे नवनवा शृगार, बीजे गामे शोकना भडार ।
एक गामे मादलना धोकार, वीजे गामे रोवाना हाहाकार ।
एक गामे शखना ऊकार, वीजे गामे रोवाना रोंकार ।

---

१ विचित्र क्रियारभ । २ समर । ३ सखना । ४ कुरूप ।

एक गामे भलो आहार, बीजे गामे पाणीना विकार ।
एक गामे भला स्वरूप, वीजे गामे दीसे माहाकुरूप ।
एक गामे विविधना सुख, बीजे गामे अनतना दुख ।
एक गामे उत्तमनी शोभा, वीजे गामे नीचनी कुशोभा ।
एक गामे भलो बाजार, वीजे गामे दुःखना भडार ।
एक गामि दीसे झलामल वीजे गामे महा हलाहल ।
एक गामे मोटा महल, वीजे गामे झुपडा माहि (पणि) खलभल ।
इति[1] ससार असार, महादुखदातार इत्यादिक जाणवा । पू०

(६६) शरीर

शरीरु बाहिरि कुकुम कस्तूरिका वासियइ,
अभ्यतरि अशुचि रसि विणासीचइ ।
सरीरु बाहिरि[2] पहिरइ सुवरण[3] घडिउ,
अभ्यतरि अस्थि खडे जडिउ ।
सरोरु बाहिरु श्रीखडि गोलामि अभ्यगियइ,
अभ्यतरि रुधिर रसि रगियउ ।
सरीरु वाहिरि पाटु वस्त्र पहिराविइ,
आभ्यतरु मासि पिण्डि भावियइ ।
मुख लीजइ सर्व सारु आहारु,
महानीसइ खाटउ उद्गारु ।
नासिका सुगध गध प्रतिसरइ,
महापुण सूगावणउ श्लेष्म नीसरइ ।
गानि साभलियइ मधुर गीत पटलु,
महा नीसरइ तउ पकु समानु मलु ।
लोचनि लगाडिय स्निध कजलु,
महा नीसरइ पीहे सहितु जलु ।
कुडि खडहडेवा मणी[4], आयुंष्क तूटण मएं[5] ।

पाठान्तर—१ इम २ वाह्य ३ मोनउ ४ हामणी ५ त्रूटण

हस तउ ऊडण मणउ, इसउ असारु,
सरीर सयोग ईय ऊपरि ईमहि लोक व्यामोह करइ । † पु० अ०

(७०) अर्थ

सविहु परि समर्थ, अर्थ लगी महत्त्व । अर्थ नउ प्रभुत्व ।
जेह हुइ द्रव्य, तउ सविहु हुइ ससेव्य ।
द्रव्य लगी अणहू ता गुण, द्रव्य तउ सगलाइ जाइ अवगुण ।
द्रव्य लगी पूजइ आस, सहु कोई द्रव्य नु दासु ।
द्रव्याभावना विता करइ लोकु, द्रव्याद्य तउ वसइ वेगलउ शोकु ।
द्रव्य तउ उपरोधीइ वाका, द्रव्य नउ धणी बोलइ फाका ।
सहू को सासहइ, अदत्तु हूतउ प्रतिष्ठा लहइ ।
इस्युद्रव्य ॥ ३२ ॥ जै०

(७१) द्रव्य की अशाश्वता

द्रव्य ऊपाजिउ कुणहि नणउ शाश्वतउ न हुई ।
कुणहि नउ द्रव्य उपार्जिउ चोर हरइ [१] ।
कुणहि नउ द्रव्य राउलि उपगरइ[२] ।
कुण० द्रव्य अग्नि उपद्रवइ ।
कुण० समुद्रमाहि द्रवइ ।
कुणहिनउ नष्ट विट फेडइ ।
कुणहि० खूट खरड झगडइ त्रोडइ ।
कुण० द्रव्यि वाट पडइ कुण० भुहिं सडइ ।
कुणहइनउ रोलि जाइ, कुण ० वाणउत्र खाइ ।
कुणहइनउ साझइ[३] त्रूटइ, कुण० द्रव्य गुणि[४] फूटइ ।
इसी परिंद्रव्य ऊपार्जिउ शाश्वततउ कुणहिनउ न हुइ ॥ ८२ ॥ जो०

(७२) धनोपार्जन रक्षण

बड कष्टि धनुऊपार्जियइ
कवणु हल खेडि, सयर तणउ ठाउ फेडी धनु ऊपार्जइ

---

† इद शरीर कस्तूरी कर्पूर प्रभृतीन्यपि
दूष यत्येच पाथोद पयास्यूषट भूरि च ॥
१ उपगरइ २ उपहरिहि ३ साझह ४ गुणे, गूणि

कवणु हाट तणउ पासउ माडी आपणपउ धर्महूतउ[1] खाडिउ धन ऊपार्जइ
कवणु सीय[2] तापु वाउ सहिउ देसातर रहिउ[3] धनु ऊपार्जइ
कवणु समुद्र माहि थाइ ऊपरि तिरीइउ धनु ऊपार्जइ
कवणु पर घरि काम करिउ छाण पू जउ ऊधरी धनु ऊपार्जइ
कवणु आठु पाउ सचिउ आपणउ पेटुवचिउ धनु ऊपार्जइ
आपुखि जइ सुपात्रि न वेचइ तउ अप्रमाणु
नाथ धन शास्वतु, कवणहइ उपार्जियउत चोर हरइ
कवणहइ राखे उपगरइ
कवणहइ अग्नि उपद्रव करइ
कवणहइ विटु० नाटु०विद्रवइ
कवणहइ झगडइ जाइ
कवणहइ वाणत्रु खाइ

(७३) अथ लक्ष्मी चचलत्वं

जिसउ पिप्पलु तणउ पत्रु[4], जिसउ हाथीया[5] तणउ कणु[6] ।
जिसी बिहु प्रहर तणी छाया, जिसी रावण तणी माया ।
जिसउ सध्या तणउ रागु, जिसउ दुर्जन तणु विरागु ।
जिसउ तरुणी तणउ कटाक्ष विक्षेपु, जिसउ सग्रामि[7] कातर तणउ आक्षेपु[8]
जिसउ वीज तणउ झलकार[9],
जिसु इद्रियाली तणउ इद्रियालु, तिसउ विभवु आलमालु ।।

(७४) राजा के चंचलत्व की उपमा (२)

"अथ राजाने धर्म चचल" सारिषा
जेहवो पीपलनोंपान, जिम कुजरनो कान ।
जिम असतीनु मान, जिम अदातानु दान ।
जेहवो अकठीयानो कान ।

---

१. सयर २ शीतवात ३ भमी
‡ अधिकपाठ—कुणहू परायइ घरि दास कर्म करी छाण पू जेउ महतरि वरी द्रव्य ऊ०
कुणहू भूख त्रस सही मार्ग माहि रही द्रव्य ऊ०
कु० कूड कपट करी पापि आपणउ पिंट भरी द्रव्य ऊ०
कुणहू परायउं रण भाजी आपणउ पुण्य गाजी द्रव्य ऊ०
कुणहू भीखी भमाडी आपणउ सपरू विनडी द्रव्य ऊ०
४ पात, पर्ण ५ हस्ती ६. कान कर्ण ७ रण ८. विक्षेप ९ अलकलउ ।

जिसो सन्ध्यानो राग, जिसो भ्रमरीनो पाग ।
जिसो माकडनो वइराग ।
जिसो बिजलीनो स्यात्कार, जिसो पाइणिनोपान ।
जिसो पाणीनो ठबको[1] जिसो लबा लीनी जीभनो लटको ।
जिसो खावानो गलको, जिसो पाणीनो खलको,
जिसो कागनो डोलो, जिसो समुद्रनो कल्लोल
तिसो राजा चचल जाणवो ।। पू०

(७५) थोडे समय के लिये—(३)

जिसिउ सध्या तणउ राग, पाणी तणउ माग ।
जि० इद्रधनुष, जि० वातोद्धूत तूल पटल ।
जि० वाताह ताभ्र पटल ।
जि० का पुरुष ना बोल, जि० पोला जागी ढोल ।
जि० नदी तणउ वेगु, रात्रि पक्षीया नउ सयोगु ।
जि० हाथिया तणउ कान, ठाकुर नउ (राज) मान ।
जि० छोरडानउ दान जि० कठहीन गान ।
जि० काला नी सान ।
जि० रानि रोइउ, दृष्टि बधनउ जोइउ ।
जि० सउणानउ राज, अण बाधिउ छाज ।
जि० पानी पाज, जिसिउ निरभाग्यनउ काज ।
जि० सुईनी धाडि, जवासानी वाडि ।
एणइ परि कुमाणसनी लक्ष्मी ।
अश्व तरीणा गर्भो दुर्जन मैत्री नियोगिना लक्ष्मी ।
स्थूलत्व स्वयथुभवविना विकारेण न भवति ।। १०० जो०

अस्थायी व चंचल (७६)

नायका कटाक्ष विक्षेपवत् । विद्युल्लता विलासवत् ।
सध्या आडबरवत् । वाता दोलित् कूलवत् । पवन प्रेखोलित ध्वजाग्रवत् ।
सज्जन कोपवत् । दुर्जन मैत्रीवत् । वेश्या स्नेहवत् ।
गिरि नदी वेगवत् । गजकर्णवत् । शरत्काल मेघवत् । इद्रचापवत ।
कादिशिक नयन मेखोन्मेखवत । हरिदा रागवत् । इद्रजालवत्, ।

---

१. ठछको

स्त्रीजन मानसवत् । वायु वेगवत् । मर्कट चेष्टितवत् ।
प्राणी गण जीवितवत्, कुशाग्र जल बिंदुवत् ।।छ। पु०

(७७) क्षणिक चंचल

आभातणी छाइ, कुपुरुष तणी बाह । आसाठ तणउ तूर, नदीतणउ पूर ।
राय तणउ प्रासाद, मर्कट तणउ विषाद ।
इद्रजालनउ पेखणउ सूप तणउ उठीगणउ ।
हरिद्रा तणउ रग, दासी तणउ सग ।
आत्रातणउ मउर, सीयाला तणउ प्रहर ।
गोदडा तणी वाट, पोरणा तणीसाट ।
पीपल नउ पान, राधउ धान ।
वडपण तणउ जायुं, ढाकूया तणउ पायउ, निगथ तणउ साटउ[1] ।
दीवानउ[2] तेज, मित्रनउ[3] हेज ।
कारटानउ भाग जमाई नउ लाग ।
मूर्खनउ पढिउ, जल कोसनउ मढिउ ।
उभा खरउ मोर, खासणउ चोर ।
ऊखरली खाट चद्रूउ, एजाणे पूरउ विगोउ ।
सध्यातणउ मेह, स्त्री तणउ नेह, तिसइ[4] लाभइ छेह ।

यतः

अग्नि[1] रायः[2] स्त्रियो[3] मूर्खाः[4] सर्पराज[5] कुलानि च[6] ।
नित्य यत्नेन सेव्यानि सद्य' प्राणि हाणि षट् । ९८ जो०

(७८) चंचल (२)

अभ्रच्छाया वच्चचल, दुर्जन प्रीति वच्चचल, तृणाग्नि वच्चचल,
स्थलजल वच्चचल, वेश्या राग वच्चचल ।
कामिनी नयन विभ्रमवत् , विद्युल्लतावत् ।
सध्यासमय रागवत् , वाता दोलित पताका वत् ।
समुद्र कल्लोलवत् , सज्जन कोपवत् ।
गिरि नदी वेगवत् , करि कर्ण वेगवत् ।
शरत्काल मेघ इव, अभाग्यवता विभव इव ।
द्यूतकारालकार वत् , पतंग रंगवत् ।

---

१ साट २ दीवाली नें ३ मात्रेई ४ तिमइ

चचल वित्त अतएव सुपोत्रे नियोज्य । यतः--

उत्तम पत्त साहू मज्झिम पत्त च सावया भणिया ।
अविरय सम्म दिठी जहन्न पत्त मुरोयव्व ॥ १ ॥
व्याजेस्या द्विगुण वित्त व्यवसाये चतुर्गुण ।
क्षेत्रे शत गुण प्रोक्त, पात्रेनत गुण पुनः ॥ २ ॥ ६२ जो० ।

(७६) चचल वाक्य

जेहवउ चचल कुजर नउ कान, पीपल नउ पान ।
सध्यानउ वान, दुहागणनउ मान ॥
बिपहर नी छाया, रावणनी माया ॥
गोदतीनी वाट माटीनउ घाट ॥
रावनउ अउ, राकनउ भउ ॥
बादलनी छाह, कापुरुपनी बाह ॥
आढनउ तूर, पर्वताश्रिनदीनउ पूर ॥
वैद्यनउ पडीगणउ, सूपडा नउ ठीगणउ ॥
इन्द्रजाल नउ पेपणउ, स्वाननउ धीवणउ ॥
छालीनउ ऊझ, स्त्रीनउ गूझ ॥
दासीनउ स्नेह, ऊन्हालू मेह ॥
ठारनउ त्रेह, धूलिनी बेह वेक्रीय देह, ॥
जेहवउ चचल बीजलीनउ झबकउ ॥ मधुबिंदुआ नउ टबकउ,
मत्रेईनउ हेज, जेहवौ खजूआ नउ तेज
पाणीतणौ तरग, पतगनउ रग ॥
माकडनउ विषाद, रायनउ प्रसाद ॥
जिसी चचल स्त्रीनीजाति, उन्हालू राति ॥
त्रिणानी आगि, दुर्जननउ राग ॥
जिसउ चचल मन जिसउ चचल परेवन ।
जेहवउ चंचल तुरगम, तेहवउ चचल घोर संसारनउ सगम ।

इति चचल वाक्यानि ।

(८०) मन

मन[१] चपल चचल, देवताए पुण धरी न सकीयइं ।
क्षणि हि जायइ सागरि, क्ष०[२] आगरि ।
क्षणहि नदी-परि-सरि[३] क्ष० सरोवरि ।
क्षणहि नगरि, क्षणहिभ्रूगरि[४] ।
क्षणहि अबरि, क्ष० भूधरि ।
क्षणहि पातालि[५], क्ष० कुद्दालि ।
क्षणहि भूतलि[६], क्ष० कुतूहलि[७] कुभकार चक्रवत् [८] ।
मन एव मनुष्याणा कारण बध मोक्षयोः ।
बंधस्तु विषया सगे मुक्तिर्निर्विषय मन ॥ ८६ ॥ जो

(८१) ससुराल की स्थिति

वच्छे सासुरा तणी इसी स्थिति जाणिवी ।
सुसरउ ऊवेषइ, जेठ नीचउ देखइ[९] ।
वर[१०] पुण लडइ[११], देवर नडइ ।
जेठानी कुसइ, देअरानी हसइ ।
नणद नर नरावइ, सासु काम करावइ । +

(८२) विशिष्ट पदार्थ

(१)

लीला तउ महेश्वर तणी, सृष्टि तउ ब्रह्मा तणी ।
प्रज्ञा तउ बृहस्पति तणी, प्रतिज्ञा तउ राम तणी ।
त्याग तउ पाधि पति तणउ, पवनवेग तउ हनुमत तणउ ।
मान तउ दुर्योधन तणउ , तेज तउ सूर्य तणउ ।
परिमल तउ पारिजात तणउ , निर्मलता तउ गगा तणी ।
विवेकना तु नारायण तणी, बल तउ मुद्रिका वीर तणउ ।
सम्यक्त्व तउ श्रेणिक तणउ, ऋद्धि परिहारू तउ श्री शातिनाथ तणउ ।
अभय दानु तउ श्री शातिनाथ तणउ, शील तउ श्री स्थूलिभद्र तणउ ।

---

१ मनु दइवि २. क्षणिजाइ ३. द्वीपान्तरि ४ भ्रूगटि ५. कुहिली ६. पातालोदरि ७ भूतलाभ्य तरि ८. तणा चक्र तणी परिफिरतउ अछइ ९. अवढेठइ १०. वरदतु ११ भिडइ + सुख कहाछइ (अधिक पाठ)

अलोभता वेर स्वामि तणी, प्रति बोधता जबू स्वामि तणी ।
तपु तउ दृढ प्रहारि तणउ ।
अल्प देशना प्रतिबोधु तउचिलाती पुत्र तणउ, क्षमा गयसुकुमाल तणी।
अति भोगता शालिभद्र तणी, अभिग्रह प्रतिपालना बकचूल तणी ।
महा अर्धु तउ उध पत तणउ, चउवीस जिणालय तउ अष्टापद तणउ ।
सिद्धि क्षेत्र तउ विमल गिरि तणउ, शास्त्र विचारणा हरिभद्र तणी ।
देव भक्ति प्रभावती तणी, द्यूत व्यसन नल तणउ ।
मद्य व्यसन यादव तणउ, सत्य वचन कालिकाचार्य तणउ ।
अनुमोदना मृग तणी भावना इलाती पुत्र तणी ।
जैन प्रभावना विष्णु लती तणी, नदी वर्णना गगा तणी ।
स्नेह तउ लक्ष्मण तणउ, निस्नेहता नेमिनाथ तणी ।
जैन भक्ति राय कुमारपाल तणी, नगरी वर्णना लका तणी ।
राज वर्णना मलती तणी, श्री पुरुष वर्णना श्रीविष्णु तणी ।
राज वर्णना श्री राम तणी, काव्य वर्णना माघ पडित तणी ।
बिंब निर्मलता कुमार विहार तणी, शीलु राजिमती तणउ ।
लब्धि श्री गौतम स्वामी तणी, दानु धन सार्थवाह तणउ ।
स्थिति ऋषभदेव तणी, शीलु सुदर्शन तणउ ।
शीलु सुनदा तणउ, पुण्य चदन बाला तणउ ।
धर्म दया तणउ, गणधरता पु डरीक तणी ।
बलु बाहुबलि तणउ, चक्रवर्त्ती पदवी भरतेश्वर तणी ।
बुद्धि अभय कुमार तणी, एव विध नामा निसीम ॥९८॥ मु०

(८३) विशिष्ट पदार्थ (२)

(२)

साठीधान, पाटणी पान ।
आहेडीउ सणाहु, हथियार धनुहु ।
अगरिउ लाकड़, ...।
सोरठी गाय, मलउसी जाइ ।
कस्मीरउ केसर, मरहट्ठूं वेसर ।
पूर्व दिसिउ भाट, शवन तणउ पाट ।
मेघाडबर छत्र, सिंघलउरउं पत्र ।

आबू तणउ देवडो, पाटण तणो सेवडो।
उजेणी तणु ढोर, अजयमेरु तणो मोर।
वाणारसीउ धूर्त्त, काश्यप गोत्र।
चडाउलउ ठिगु, मालवीउ बगु।
नान्हा बोलो लाड उत्तरापथउ चाड।
छत्रीस नाणा, त्रिणिसइ साठि क्रियाणा।

(स० २)

(३)

माणिक दडउ हस्ती, खुरसाणिउ घोडउ।
मरुस्थली नउ ऊँट, दडाहि नउ बलद।
भीमसेन नउ कर्पूर, जागडउ कुंकुम।
काकतुडउ अगरु, दस[1] बधउ धूप।
सिहलउ दीवउ हार, बावर कुलनी गजवडि।
गाजणी गोजी, वाणारसी काची।
खेडावहा चाउल[2], मालविउ माडउ।
पाडवसिंड खाडउ, गूजरउ लोटउ।
आबूउ रोटउ , अबूउ[3] दही।
एउ वस्तुना आकरु। १५८। (स. १) (१५८ जो०)

(८५) विशेषताएँ (४)

प्रथम पिण्ड पाणी रौ, रूपौ तौ जावर रो, दरसण तौ परमेसर रो, ताड[4] मानसरोवर रो, हस्ती तो कजली वनरों, पदमनी सिंहलद्वीप री, चतुराई गुजरात[5] री, वासौ तौ हिन्दुस्थान रौ, स्वाद तो जीभ रो, मतो तो पचो रो, खेती तो बाड री, घीणो तो भैंसरो+, देणो तो माथा रो, गालतो माता री, चूडौ दाँत रौ, विसवास गरो हथियार डाग रो, आदर माया रो, गढ लकारो, वाणी व्याकरण रीx, तिलक केसर रो, भगतवच्छल रो, वाजो नीसान रो, हटवाडो कटक रो, चोहटा भीड दिल्ली री, युद्ध जरासघ रो, वाण अरजुन रो, गदा तो भीम री*,

---

१ दम। २ चउल। ३ आबूउ।

४ थाट। ५ ग्वालेर + हाट कोड को (विशेष) x कवित्त पिंगल को।

मरणो महा पुरुष को, सभा इद्र की, ग्वालनद को, निद्रा कुभकरण की, भेष बद्री को, सेव भगवत की (विशेष)।

* गाहड छत्री को, कूख कुता की, योवन भानुमता को। मूग म डोवर को, ऊट' जालोर को।

ककण केदार रो, घोडी पाणी पथरी, पुरष पजाब रो, माडा मालवारा, मेहतो मेवाड रा, राजा तो भोज, राणी तो देमती, ढाल तो गैडारी, बरछी ऊमट री, कटारी सिकरोदावाद री, रूप तो कामदेव रो, तेज सूरज रो, अमृत चद्रमा रो, ऋद्धि सिद्धि गणेश री, बड पिराग रो, चावल[1] कचरी बागड री, लूण[2] सैंधवरो, दया मारु खडरी, सहिर तो लाहौर, दरवाजा अहमदाबाद रा, छाली परबत राजरी, भैस बडाणा री, बलद हडबी जात रो[3], बेटो तो कलबी[4] रो, घात तो कचन री, पुण्य परब रो, सत सीता रो, हूकडाइ जाट री, झगडो गूजर रो, चोरी थोरी वागरी मीणा री, बुद्धि तो मुगल महाजन री सदासुबुद्धि जतीरी, कुबुद्धि ब्राह्मण री, साचो हीया धोबी गाडरी रो, भाजणो कायर रो, चोट गोली री, देवल आबु रो, पान मघीया रो, वाव सोलीर रा, वाग नवलखो, तमाखू सूरत री, दिन तौ पुण्याइ रो, वार तो राजा रामचदरो। कौ०

(८६) अपने वर्ग में विशिष्ट पदार्थ

देव मध्यि इन्द्रः, तार मध्यि चन्द्रः।
पाखिया माहि हस, जाति माहि चौलुक्य वश.।
देश मध्यि मगध देशः, दर्शन मध्यि जैन वेसु।
तिर्यंच माहि सिंधु, धान्य माहि व्रीहि।
रागु माहि पचम रागु, वाणी माहि तर्क वागु।
तेजस्वी माहि सहस किरणु, समुद्र माहि सयभू रमणु।
राय मध्यि श्री रामु, हाथिया माहि ऐरावणु।
वस्त्र माहि नेत्रु, काब माहि वेत्रु।

---

१. चोखा। २ वडाग। ३ काकरेची। ४ उलबी को।

पुन विशेष—

भेष बद्री को। सेव भगवत की। गूदबडा वडाणारा। मसीत शकर की। माडणी राणपुर की। पीठ दिल्ली की। ऊचाइ मेरू पर्वत की। व्रत सील को। पर्व पजूसण को। पुहप चपा को। लिखियो विधना को। फल नालेर को। फूल कमल को। न्याय रामचद्र को। रूप कदर्प को। तेज सूरज को। दान कर्ण को। पर दुख कातर राजा विक्रम। नीर गगा को। जटा शकर की। सीत उत्तर खड को। राब झुगली की। राग केदारो। मेह भाद्रवा को। धर्म माहे धर्म दया। सेना चक्रवर्ती री। तीरथ सेत्रू जो। बल तीर्थंकर रो। सुख तो सतोष रो। बुद्धि अभय कुमाररी। रिद्ध शालि भद्र की। लबधि गोतम स्वामी री। केवन्नारो सौभाग्य। शास्त्र माहि सिद्धान्त। वाजित्र माहि भभान्त। (स ४)

कला माहि गीतु, धातु माहि पीतु ।
सुगध माहि कस्तूरी, मृतिका माहि तूरी ।
नगरी माहि काती, पुष्प माहि जाती ।
रितु माहि हेमन्तु, तीर्थ माहि शत्रुजय ।
पर्वत माहि मेरु, वृक्ष माहि कल्पवृक्ष ।
रत्न माहि चिन्तामणि, नदी माहि गगा ।
तिम धर्म माहि जिन धर्म्म ॥ ८५ ॥ पु०

(८७) श्रेष्ठतर

जिम पर्वत मध्य वर्णियइ मेरु,
तुरगम मध्य पच वल्लहउ किसोरु ।
हाथिया मध्य ऐरावणु, दाणव मध्य रावणु ।
पुष्प मध्य कमलु, पाषाण मध्य स्फटिकोपलु ।
तिम अमुक मध्य अमुक । (पु० अ०)

(८७) गुण में विशिष्ट पदार्थ

न्याये राम॰
सधाया चाणिक्यः
माने रावणः सुयोधने
सौर्य्ये राम सिंहौ ।
साहसे विक्रमादित्य जीमूत वाहनो ।
महसि मार्त्तण्डः
धीरत्वे रामः
शक्तौ कार्तिकेयः ।
विद्याया भारती,
वाचालुताया वृहस्पतिः
दाने कर्णः
मगलदाने कल्पद्रुम कामधेनु ।
चिन्तामणि घटाद
॰राव बज्रकुमारः जीमूतवाहन॰
वाग्या वाल्मीकिः
कलासु चन्द्रः

सत्ये हरिश्चन्द्रः युधिष्ठिरः
भक्तौ लक्ष्मणः
स्थैर्ये मेरुः
विवेके बृहस्पति·
कीर्त्तौ······
·· या इन्द्रः
सौहार्दे सुग्रीवः।
गाभीर्येब्धि.
सौभाग्ये कामः
दयाया युधिष्ठिरः
आज्ञाया लकेश्वरः
लावण्ये समुद्रः
उद्यमे रामः
गतौ राजहसः वृषभश्च
स्वरे पिक वीणा।
केके वश मधुकराः।
रूपे जयन्त.
अनल कूबरा
विनेय पुरुष नकुलाश्च ॥ १०२ ॥ (मु०)

(८८) अनुपमेय पदार्थ

(१)

गगा समउं जल नहीं,
बाधव समउ हेज नही।
रवि समउ तेज नहीं।
अथवा—
मेघ समउ जल नहीं,
बाह समउ बल नही।
अन्न समान हेज नही,
अग्नि समान तेज नही। ॥ ३५ ॥ स० १

(८९) अनुपमेय पदार्थ (२)

(२)

क्षमा समान धर्म नही[1], साचा समी पावडी नहीं।
ओकार[2] समउ मत्राक्षर नही[3], मदन समउ धनुर्द्धर नही।
लवण[4] समउ रस नही, सोना[5] समउ रूप नही।
शील समउ शृगार[6] नही।   ॥ ल ८४ ॥ स० १

(९०) दुर्दशा-ग्रस्त होने पर भी विशिष्ट

जउ सूकी तोइ वउलसिरि।
जइ वींधी तोइ मोतीसरी।
जइ भागउ तोइ वाराहउ।
जइ थकाउ तोइ सेराहउ अ.।
जइ खाडउ तोइ चदु।
जइ बालउ तोइ इदु।
जइ ताव्यउ तोइ काचनु।
जइ घसियउ तोइ चदनु।
जइ कालो तोइ कस्तूरि।
जइ एकइ कला तोइ पूरी।
जइ वादलउ तोइ दीहु।
जइ लहुडउ तोइ सीहु।
जइ कुरमाणउ[7] तो नागरखडु पानु।
जइ थोडइउ तोइ सपात्रि[8] दानु ॥ ३ ॥ (पु० अ०)

---

१ पु० अ० मे यहा तक का नहा। २ ऊ ३. मत्रु ४ इसके पहले यह पाठ अधिक है—वाराणसी समउ विद्या ठाउ नहा ५ नासिका ६ अलकारु
७ कुमलाणउ ८ पात्रि (मु०)
थोडी तौ ही तेजन तुरी ॥ निगुणो तोही नाह, तूटो तोही साह ॥
जइ चूरो तोही साकर, निबलो तोही ठाकर ॥
जइ नान्ही तोही नागिण, निरसी तोही सुहागिण ॥
अ थाकउ तोही राह। (कु० स०)

(६१) भला क्या ?

सरसती समरु सामणी, वाणी देह विगत्त ।
समरु गणपति सुमति, वा समरु सिव सगत्ति ।
सक्ति गुरु की भली, भगती मेरी भली ।
आण फेरी भली, अन्न केरी भली ।
लूब लागी भली, रग रागी भली ।
भ्रत भागी भली, जोति जागी भली ।
उक्त उठी भली, आई तूठी भली ।
मोहर बूठी भली, भरी मूठो भली ।
आस पूगी भली, भग ऊगी भली ।
लाल लूगी भली, रात चदरणी भली ।
पाग खागी भली, केसर रगी भली ।
अग अगी भली, चतुर चगी भली ।
लाडी जाडी भली, भैंस पाडी भली ।
खेत वाडी भली, पथ गाडी भली ।
घरा मेडी भली, तोरण तोडी भली ।
चचल चेडी भली, गग नदी भली ।
मोत मोडी भली, ममता थोडी भली ।
जोवन जोडी भली, कछा घोडी भली ।
लोह लाठी भली, जरा नाठी भली ।
कर्म काठी भली, भ्रम भाठो भली ।
वीज चमकी भली, सीत चमकी भली ।
घट रणकी भली, तत भणकी भली ।
लूया वाजी भली, वहु लाजी भली ।
ऊनी भाजी भली, प्रीसी माजी भली ।
नोबत बाजी भली, जीत बाजी भली ।
राणी राजी भली, देह साजो भली ।
क्रीया कीधी भली, नींद लीधी भली ।
रिद्ध सिद्ध लाधी भली, दबट दीधी भली ।
प्रीत बाधी भली, भोम साधी भली ।
रसवती ताजो भली, खीर खाधी भली ।

नदी आई भली, रेल वोही भली ।
लच्छ पाई भली, हार नाई भली ।
काठल काली भली, सेभ चित्रसाली भली ।
स्त्री चिरताली भली, नाक वाली भली ।
हर हाथै ताली भली भोजन थाली भली ।
वेस्या मतवाली भली, मदर जाली भली ।
जीव दया पाली भली, भुइ उजवाली भली ।
पतिभ्रता नारी भली, त्रस्त्रा मारी भली ।
भ्रू की तारी भली, दृढ धारी भली ।
मोख बारी भली, क्रम कारी भली ।
चोरी साहरी भली, जारी विजारी भली ।
पदमण प्यारी भली, केसर क्यारी भली ।
आसका आइ भली, तेच्छा त्यारी भली ।
गाइ दूभी भली, गवर पूजी भली ।
छास गूजी भली, पोथी वाची भली ।
हर कथा साची भली, पात्र नाची भली ।
केरी काची भली, धरा नीली भली ।
नारी भीली भली, मेलि खीली भली ।
सूथण ढीली भली, अग आगी भली ।
आगी आती भली, चाक फरती भली ।
सधर छाती भली, देही माती भली ।
आख राती भली, भग घूटी भली, लंक लूटी भली ।
रोटी मोटी भली, भारी लोटी भली ।
काठी दोवटी भली, अमल गोटी भली ।
गुडी ऊडाई भली, समसेर वाही भली ।
धात ताई भली, भैंस व्याई भली ।
कुल वहतो भली, लाज रहती भली ।
जुहार जेती भली, हतो देती भली ।
कोरणी कोरी भली, नाव तरती भली, खिमा धरती भली ।
सखी रमती भली कसी कूटी भली
वास फूटी भली अवल ओरी भली
माइ गोरी भली स्याम दोरी भली

ऊची ताणी भली जुगत जाणी भली
मोंज माणो भली ब्रह्मवाणी भली
अतो तारहणी भली कीरत कैहणी भली
भोजन चासणी भली भरी वासणी भली
साख पाकी भली घात ताकी भली
बोल वाकी भली किरण भिलकी भली
सुड ललकी भली छाह ललकी भलो
चूड खलकी भली जलेबी फीकी भली
धार घी की भली निरमल कीकी भली
चदण टीकी भली कोयल बोली भली
गाठ खोली भली नली वसत तोली भली
जनस मोली भली दलि दीठी भली
गोठ मीठी भली मर्दन पीठी भली
नफर चीठो भली भाख फाटी भली
पहिल परणी भली घरे घरणी भली
धर्म करणी भली पुन्य तरणी भली
देव गुरु मान्या भला गुष्ट छानी भली
जोध जुवानी भली पाय पानी भलो
ब्रह्म जनोई भली धोती धोई भली
जोति जोई भली सहरि सीरोही भली
चोरी राते भली झूठी वाते भली
पात न्याते भली नाची नोते भउ हाडी डोई हाथे भली
पाघ माथे भली वैर बाथे भली
माला मनकी भलो सेव सिव की भली
धाख धन की भली सूरत अनकी भली
गरढा बडाई भली चदन आडाई भली
कडाही चढ़ाई भली वापड़े लडाई भली
भवानी भेटी भली फिकर मेटी भली
कमर पेटी भली बाल बेरी भली
बहू मोटी भली तरवार सातरी भलो
बरछी मोटी भलो छूरी वहणी भली,
धेणु दूझतो भली । (पुण्यविजयजी द्वारा प्रेषित २ पत्रों से)

(६२) भला क्या (२)

अमल खारा भला, खडग धारा भला।
हेत मा रा भला, धात पारा भला।
हाथ वहिता भला, माल खरचता भला।
दान मान सू भला, काथा पान सू भला।
खेत नीचा भला, घर ऊँचा भला।
राणी पाणी पातला भला, अमल जोर का भला।
नीसाण घोर का भला, बुध ज्ञान सू भला।
चित्र मोर का भला, हीया चोर का भला।
बोल बाप का भला, बैसणा खाट का भला।
मरद पतग का भला, तीर तीखा भला।
पहिरण पटकूल का भला, युद्ध वीर का भला।
घोडा कुमेद भला, कपडा सफेद भला।
रग राता भला, दुरजन जाता भला।
हस्ती माता भला, पुत्र पोता का भला।
त्रिया ताजणा भला, ज्ञान प्रकाशता भला।
चेला विनयवंत भला। (कौ०)

(६३) द्विगुणित विशिष्ट

(१)

एक हरि अनै पाखरयो[1], एक सर्प अनै पखालो।
एक इष्ट अनै वैद्योपदिष्ट, एक औषध अनै मिष्ट।
एक सोनू अनै सुगध[2], एक गुण अनै गोविंद।
एक खीर अनै साकर कपूर, एक घेवर अनै प्रीस्या भरपूर।
एक चपक माला अनै माथे चडी एक मुद्रिका अनै हीरे जडी।
एक सालि नै प्रोसी सुवर्ण थाल ॥

(स० ३)

(६४) द्विगुणित विशिष्ट

एकु हरि, आयउ घरि।
एकु इष्ट, द्वितियो वैद्योपदिष्टु।

---

२ आविउ घरि २ सुरहउ। एक सीह अनै पाखरिउ (विशेष) (स० १)

एकु सीहु, पाखर लीहु ।
एकु आगइ धरा माकणी, पगि बाधी काकणी ।
एकु ऊमाही, अनइ मोर हीलव्यउ ।
एकु खीरान्नु, अनइ सर्करा सपर्कु ।
एकु मधु अनइद्राक्षा खेपु, एकु प्रेयसी अनइ गुणव ती ।
एकु विद्वासु अनइ विनीतु, ए वस्तु किंहा लाभइ ॥ ६७ ॥ (मु०)

(६५) द्विगुणित शोभा (३)

हरि, अनइ आवो घरि । एक इष्ट अनइ वैद्योपदिष्ट ।
एक सुवर्ण अनइ सुगध । अेक सीह अनइ पाखरिउ ।
अेक घृत परिपूर्ण अनइ निक्षिप्त शर्करा चूर्ण ।
एक शालि दालि परिसी सुवर्ण थालि ।
अेक रूपवत अनइ कामदेव सदृश लहकत ।
अेक ऋद्धि कलित अनइ दान करी अस्खलित ।
अेक योद्धार अनइ शस्त्रे अजित ।
अेक वसत नइ घरि आविउ कत ।
अेक यौवन भर अनइ चच्चरि घर ।

(स० २)

(९६) निकृष्ट पदार्थ (१)

वृषभ मारीकणउ, ठाकरु चूकणउ, हाथिउ नासणउ ।
तुरगम काढणउ, मृत्यु रूसणउ, स्त्रीजनु बोलणउ ।
दूरि बर्जेवउ । (पू० अ०)

(९७) निकृष्ट पदार्थ (२)

आछी छासि केतलउएकु पाणी खमइ, पातली छाया केतुएकु आतप गमइ ।
कातर केतउ एकु रणागण जूझइ, निरक्षर केतुएकु कहिउ बूझइ ।
कृपणि केतउं दानु दीजइ, अपराधि केतउएकु तपु कीजइ ।
आदि केतउएकु तरु वाजइ, कारिमउ नेहु केतलउ एकु छाजइ ।

(९८) सार्थक पदार्थ

ते द्रव्य साचउ जे सुपात्रि वेचियइ[1], ते काव्य जे सभा पढियइ।
ते आभरण जे हीरे जडियइ, ते सोनउ जे कसवटइ नीवडइ।
ते वैद्य जे व्याधि फेडइA ते आमात्य जे बुद्धिबलि लक्ष्मी जोडइ।
तेउ धर्म जिहां पर न सतावियइ, ते सयर[2] जे रोगि न व्यापियइ।
ते शास्त्र जे जीवदया वर्तावइ, ते राज्य जे अन्याय निवर्त्तावइ।
ते कापड जे धोइउ सूझइ[3], ते कार्य जे बुद्धि सारु[4]।
ते बुद्धि जे पहिलउ ऊपजइ, ते तुरगम जे वेगि पूजइ।
ते सुभट जे समभूमि झूझइ, ते धेनु जे सर्वदा दूझइ।
ते उत्तम जे धर्म बूझइ। ८१।(स० १)

(९९) ऐ किण काम रा

गोटता नी वाट, माटी नउ घाट।
मद्य नउ पडिवउ, आहेडी ना उद्यम धर्म नउ।
राब नउ अउ, मान नु भउ। ऊफाणउ
आभा नी छाह, कुपुरुष नी बाह।
आढनउ तूरउ, पर्वताश्रित नदी नू पूर।
वैद्य नउ पडीगणउ, सूपडानउ ओठीगणउ।
छाली नउ झूझ स्त्री स्यउ गूझ।
दासि नु स्नेह, उन्हालु मेहु।
तृणानि आगि, एतला स्यु लागि ॥ २२ ॥ मु०

(१००) एता किसी काम का नहीं (२)

उन्हाला नौ मेह, दासी नौ नेह
रोगी नो देह, स्त्री विण गेह
पर[5] घरनी छासि, कठ विहूणो रास[6]
अवसर बिना भास; कुकुल नो दास
फूसनी आग, जमाई नो भाग

---

१ वावि २ शरीर ३ सूकइ ४ मीठे।
A सुवैद्य जे अष्टोत्तर शत व्याधि फेडइ
सुराजा जु प्रजा पालइ (विशेष) (पु० अ०)
५ पिराया, ६ बिना,

काचो ताग, पाणी नो साग
दीवा[3] नो तेज, दुर्जन नो हेज
उधारा नो व्यापार, राड नो सिणगार
परबैया नो प्यार, एता किसी काम का नही। (कौ०) +

(१०१) द्विगुणित निकृष्ट (१)

वरसइ मेघ नइ राति अधारी। कउही रात्र अनइ माहि कसारी।
यवनी रोटी अनइ कागइ बोटी। ....
आगइ काली अनइ मसी लाई। डाकिणी नइ राउल बाई।
उखरडी खाट नइ डाभि वणी। सासू जूठी नइ नणद घणी।
पालि चीखल नइ कडि कीकली। . ।
वडपण नइ फोफल घूट। अतिसार नइ आसणि ऊट।
दुख अनइ डाकिणी खाधउ। वानर नइ वीछी खाधउ।
आगणइ कुउ नइ कुटुब आधलू। . . ..।
साप नइ पखालउ, कादवँ नइ कटालउ।
काणी नइ रीसाली, बाडी नइ विरुआ बोली।
सरडी नइ श्लेष्मली। ....।

(स० २)

(१०२) द्विगुणित निकृष्ट

एक विदेश गमनं, अन्यत्तत्रापि दारिद्र्य ।
एकं सेवा वृत्ति दुष्करा अन्य तत्रापि पिशुन समागमः।

---

३ दिवाली।
+ एक अन्य प्रति में निम्नाकित पाठ और अधिक मिलता है।
दहीनो पडगनो, सुपडानो ऊटिगणो
ढीकुआनो पायो, पडपणनो जायो
पागलानो धायो, गहिलानो गायो
कागल नो कटायो,
कारटानो भाग, वैश्यानो राग
पर त्रियाप्यार, खड्डी नो सिंणगार
एहवा अधूरानो सगत कीजै, धर्म विना एतलावाना सोभै नहीं॥ (स० ३)

एक दूरारण्ये गतव्य तत्रापि शबल नहि ।
एक पान पात्र भगे द्वितीयोमकारणमुपद्रवः ।
एक कुभोजन अन्यतु प्रथम कवले मक्षिकापात ।
एक कुथितारब्धा, अतर्गता च कसारिका ।
एक यवानो रोटिका अन्यत्काक भक्षिता च ।
एक पकुला रथ्या, द्वि कद्या कु सुता ।
एक भोजनस्य असपति, द्वितीय प्राघूर्णक बाहुल्य ।
एक दु:ख अन्यत् शाकिनी ग्रस्त ।
एक कुग्रामवासोऽन्यल्लाभोपिन ।
एक कन्या बहुत्व दुर्मुखी च भार्या ।
एकं उच्छिष्ट अन्यद्भूक्त दुग्धस्योपरिस्फोटक ।
तथा एक मिथ्यात्व, अन्यन्मौर्ख्यं ॥ ६४ ॥ (स० १)

(१०३) अच्छा दिखने पर भी बुरा

मृष्टमपि यथा क्षार, विष मधुरमपि प्राणहर ।
यथा कल्याण्यपि अकल्याणकारिणी ।
भद्राप्यभद्रा, यथा मगलोप्य मगलयो वारः ।
यथा केतुरपि कल्याण सेतूः । यथा अमृतवाल्यपि गुडूची ।७५। जो०

(१०४) निरर्थक (१)

कुपुरुषे उपकारो निरर्थकः ।
शुष्क नदी तरणमिव, वालुका चर्बणमिव ।
मृत खडनमिव, भस्मनिहुतमिव ।
आकाश कुट्टनमिव, तुष खडनमिव ।
जल विलोडनमिव, उर्षर वर्षणमिव ।
शुष्क काष्ठ सेचनमिव, यम निमत्रणमिव ।
द्यूत कटकोपार्जनमिव ॥ २२ ॥ (स० १)

(१०५) निरर्थक (२)

कुपात्रस्य विद्या वृथा, कुशिष्याय व्रतं वृथा ।
धनाढ्ये दानं वृथा, भुक्तस्य भोजन वृथा ।
चर्वितस्य चर्वण वृथा, पिष्टस्य पेषण वृथा ।

मथितस्य मथन वृथा, अचिंतित श्रुत वृथा ।
ऊखरे वापित वृथा, समुद्रे वृष्टिर्वृथा ।
मुनीनामाभरण वृथा, बधिरस्याग्ने वीणा वादन वृथा ।
अंधस्याग्रे प्रेक्षणक वृथा, अभव्याया जैन धर्मो वृथा ॥ ३६ ॥ (स० १)

(१०६) निरर्थक (३)

कुपुरुष ने उपकार कर्यो निरर्थक जाणवो
सुकी नदी नायाजनी परिं, वेलु चावनानी परिं ।
मृतकना शृंगारनीपरि, अगनिहोमवानोपरि ।
भस्ममि नाखवानीपरि, भस्म आकाश कुहन परि ॥
तुस खाडवानी परिं, पाणी विलोवानी परि ॥
[1]ऊखरना वरसवानीपरिं, शुक काठ नासीवानी परि ।
जूअटानाधननी परिं, कुपात्रनी विद्यानोपरि । इत्यादिक जाणवो ॥ (सू० ३)

(१०७) विहीन

किसो आरति विहूणो काम ?
किसो प्रेम विहूणो मान, किसी जाचक विहूणी जान ।
किसी हूँकार विण वात, किसो छयल विहूणो साथ ।
किसो बल बिहूणो बाण, किसो तरवर विण पान ।
किसी बादल विण वीज, किसी पोहच बिण खीज ।
किसो विगर दीठा कहणो, किसो कागद विहूणो लहणो ।
किसी त्रीया परतीत, किसो कंठ विहूणो गीत ।
किसी निर्लज्ज नारी, किसो अवसाण चूको हथियार ।
किसी लूगडा विण चूप, किसो वागा विण खूप ।
किसो उन्मान विण आघो, किसो सघण विण वागो ।
किसी चंद विहूणी राति, किसी अमल विहूणी आथ ।
किसो छडारो घर वासो, किसो नुखता विण हासो ।
किसो अतीत विण चोरो, किसो गर्त विण पोहरो ।
किसी पूजी विण लाभ, किसो समभया पखे जाब ।
किसो पूत पखे घर, किसो संपत्ति पखे नर ।
किसो तोय पखे जन, किसो भाव पखे भोजन ।
सत्य शब्द भविजन कहे, कहा जीव्यो जिन नाम विण । (स० ४)

[1] उपरना ।

(१०८) चूका (१)

एहवो षष्ट पड्यो दीसै ।
उचपेटा आहणीऊ माकड[1], जिम डाल चूको वानर
जिम घाव चूको सुभट, जिम दाव चूको जूआरी ।
जिम विद्या चूको विद्याधर, जिम फाल चूको दादरि ।
जिम ठाम[2] चूको भडारी ।
यूथभ्रष्ट चूको हरिण, चार जिम अरुण अशरण ।
राज्य चूको राजवी, पद[3] चूको पढवो
लाज चूकी नारि, भीख चूको भीखारि ।।
इत्यादिक षष्ठ[4] पड्यो जाणवो । (स ३)

(१०६) चूका (२)

जिसउ घाय चूकउ भड्ड हुइ, जिसु डाल चूकओ वानरु हुइ,
जिसउ विद्या चूकउ विद्याधरु हुइ, जिसउ ठाम चूकउ भडारिउ ।
जिसउ दाइ चूकउ जूआरी, जिसउ जूथ परिभृष्ट हरिणु ।
तिसउ विच्छाइ वदनु ।

(११०) कौन किससे शोभा पाता है ? (१)

रजनी[5] चद्रेण शोभते । नभ. सूर्येण ।
प्रसादो देवेन । पुष्प भ्रमरेण । युवती यौवनेन । वल्ली कुसुमेन ।
कुल पुरुषेण[6] । मुख ताबूलेन । नेत्र कज्जलेन । कुल-वधु. शीलेन ।
प्रेक्षणीक गीतेन । मुख नासिकया । मयूर. केकया । राजा छत्रेण ।
नगर दुर्गेण । कानन कल्पवृक्षेण । योगी ध्यानेन ।
धनी दानेन । यती निर्ममत्वेन । सूर. सत्वेन । गजो मदेन ।
तुरगमो जवेन । सरो राजहसेन । मस्तक मवतसेनेति ।।छ।।

सिहेन वन, वनेन सिह । मुख नासिकया, नासिका मुखेन ।
कमल जलाशयेन, जलाशयो कमलेन । सुवर्ण रत्नेन, सुवर्णेन रत्न ।
अमात्येन राज्य । राज्येनामात्याः । नदनेन मेरुः, मेरुणां नदन ।
सुपुत्रेण कुल, कुलेन सुपुत्र. । दिनेन भानु, भानुना दिन ।

---

१. ऊमाकड २. वाम ३ पदस्थ, ४ कष्ट । ५ निशा ६ मतपुत्रेण

शशाकेन निशा, निशाया शशाकः । नयेन राजाः, राज्ञा नयः ।
व्यसनेन मूर्खता, मूर्खतया व्यसन । मदेन नारी, नार्या मदः ।
नदी जलेन, नद्या जल । परिमलेन पुष्प, पुष्पेन परिमलः ।
नादेन वीणा, वीणया नाद. । दतैर्मुख, मुखेन दता ।
विद्युता मेघः, मेघेन विद्युत । तोरणेन मडप, मडपेन तोरण ।
हारेण हृदय, हृदयेन हारः ॥ (स २)

निर्दन्त करटी हयो गत जवश्चद्र विना शर्वरी
निर्गंध कुसुम सरोवर गत छाया विहीनस्तरु
रूप निर्लवण सुतो गत गणश्चारित्रहीनो यतिः
निर्देव भुवन न राजति तथा धर्म विना पौरुष ॥१॥
(पाठ पु० प्रति मे अधिक मिलता है ।) (पु०)

(१११) कौन किससे शोभा पाता है ? (२)

कुलबहु ते सीले शोभे, रजनी चद्रमाइ शोभे ।
आकाश सूर्यइ करी शोभे, वन चदने शोभे ॥
कुल सुपुत्रे शोभे, कटक राजाइ शोभे ॥
प्रधान राजाइ शोभे, राजा प्रधाने शोभे ॥
ध्वजा देवेले शोभे, देवल ध्वजाइ सोभे ॥
स्त्री भर्त्तारइ शोभे, भर्त्तार स्त्रीइ करी शोभे ॥
तिम परस्पर शोभा जाणवी ॥ (स ३)

वेल फूले सोभै, मुख तबोलै सोभै ।
मोह कम बोले सोभे, सीह वनै सोभै ।
मुख नासिकाइ सोभै, तिम मनुष्य धर्मइ शोभे ॥
कमल जले शोभे, जल कमले शोभे,
सुवर्ण रत्ने शोभे, रत्न सुवर्ण शोभै ।

(११२) किससे कौन शोभा पाता है ? (३)

जिम प्रासाद सोभे ध्वजधारी, जिम हृदय सोभे हारी ।
जिम गृह सोभे उत्तम नारी, जिम मस्तक सोहे केस प्राग्भारी[1] ।

---

१ प्राग्भारि

जिम कर्ण[1] सोहै स्वर्णालकारी, जिम सरीर सोहे शील शृगारी ।
जिम सरोवर सोहै कमलि, जिम पुष्प सोहै परिमलि ।
जिम नेत्र सोहै युगलि, जिम रात्रि सोहै चद्रमडलि ।
जिम विवाह सोहै कूरे, जिम उत्सव सोहै तूरे ।
नदी सोभै पूरि, तिम सम्यक्त्व सोहै भावना भूरि ।
इति भावना वर्णनम् । (स ५)

(११३) कौन किससे शोभित होता है ? (४)

घर ओपइ घरणि, गगन ओपइ तरणि ।
वृक्ष ओपइ पल्लवि, ताम्बूल ओपइ चूर्णलवि ।
वस्त्र ओपइ रगि, मउड ओपइ मस्तक सगि ।
माणुस ओपइ शृगारि, व्यजन ओपइ वघारि ।
राजा ओपइ भडारि, हाथिउ ओपइ मदवारि । ३१ (स १)

(११४) कौन शोभा नहीं पाते (१)

शस्त्रहीनो यथा सूरो न शोभते ।
मत्र हीनो मत्री । धुरा हीना गत्री ।
प्राकार हीन नगर । स्वामी हीन बल ।
दत हीनो गज । कलाहीन पुमान् ।
तपो हीनः मुनिः । तेजो हीनो मणिः ।
बाण हीन धनु. । धारा हीन कृपाण।
वेद हीनो विप्रः । कपिशीर्ष हीनो वप्रः ।
गध हीन कुसुम । नयन हीन वदन ।
लवण हीनी रसवती । चैतन्य हीन वपुः । (स. २)

(११५) कौन शोभा नहीं पाते (२)

बुद्धि हीन मुख्य नायकु, अति निष्ठुर वणिकु ।
स्वासणउ चोरु, कलापु हीन मोरु ।
आलसउ कुमारउ, अध अनइ भरालउ ।
दुर्विनीत शिष्यकुलु, ध्वज रहितु देवकुलु ।
घृतु रहितु भोजनु, स्नेह हीन स्वजन ।
तेज रहित आरीसउ, गृहस्थ बोडउ ।

---

१ कान सोभै ।

महिला कानि छूटी, ध्वज अतरालि तूटी ।
भाग्य हीन मुक्ति, क्षमा रहित मुक्ति ।
एतली वस्तु शोभा न पामई ।।६६।। (मु)

(११६) कौन शोभा नहीं पाते (३)

मदः हीनो हस्ती न शोभते, कुल स्त्री निर्लज्जा न शोभते ।
नीति विकलो राजा न शोभते, कृपण धनाढ्यो न शोभते ।
रूप रहितः स्त्रीजनो न शोभते, आकृति रहिता सरस्वती न शोभते ।
लवण रहिता रसवती न शोभते क्षमा रहितो मुनि न शोभते ।
शर्करा रहितो मोदको न शोभते, कण्ठ रहित गान न शोभते ।
छदो रहितो भट्ट. न शोभते. विवेक रहित मन न शोभते ।
निर्विप्र पुर न शोभते, निर्विद्या विप्र न शोभते ।
निर्नायक सैन्य न शोभते, निफलो वृक्ष न शोभते ।
निर्वृष्टिर्मेघः न शोभते, तपो रहितो मुनि न शोभते ।
प्रेम रहितः सगम न शोभते, निर्नाशिक मुख न शोभते ।
निर्वस्त्र शृगार. न शोभते, निः स्वर्णोऽलकार न शोभते ।
ताम्बूल रहितो भोगः न शोभते, रूप सिद्धि. प्रयोग न शोभते ।
नि.ककणो बाहुदण्ड. न शोभते, प्रत्यचा रहित कोदण्ड न शोभते ।

(११७) कौन शोभा नहीं पाते (४)

मद रहित हाथी, चोख रहित साथी ।
लज्जा रहित कुलवधू, जल रहित सिधू ।।
बुद्धि रहित नायक, चूकणउ पायक ।।
खासणउ चोर, कला रहित मोर ।।
आलसूक मारउ, पाणी रहित गारउ ।।
खान (स्थान) भ्रष्ट गमार, तेज रहित टार ।।
आकृति रहित सरसती, लवण रहित रसवती ।।
रूप रहित छबि, छद रहित कवि ।।
गभीरता रहित धुनि, क्षमा रहित मुनि ।।

जल रहित बूटी, ध्वज विचाला त्रूटी ॥
घृत रहित भोजन, सज्ञा रहित मन ॥
तेल रहित मज्जन, स्नेह रहित सज्जन ॥
मनुष्य रहित घर, विज्ञान रहित वर ॥
चतुराई रहित कला, पुरुष रहित महिला ॥
कण्ठ रहित गान, सोहाग विण मान ॥
आभरण रहित कान, वर विना जान ॥
वृक्ष विना पान, जलवर्षा रहित धान ॥
वला रहित छान, कलावत रहित तान ॥
भाग रहित भागवान, पात्र रहित दान ॥
वेग रहित घोडउ, गृहस्थ माथइ मोंडउ ॥
पाठरउ छेलउ, दुर्विनीत चेलउ ।
तेज रहित आरीसउ, नेह जिसउ दागीमउ ॥
प्रसाद रहित छाजा, नीसाण रहित वाजा ॥
घृत रहित खाजा, प्रताप रहित राजा ॥
पासा रहित सारी, पुत्र रहित नारी ॥
क्रिया रहित जती, सत्व रहित सती ॥
धन रहित गेही, तिम श्रीजिन धर्म रहित देही ॥

॥ इति रहित वर्णनम् ॥ कु०

(११८) अनावश्यक (१)

मुनिराभरणेन किं करोति, मर्कटो नालिकेरेण कि करोति ।
काको रत्नमालया[1] कि करोति, मत्स्याढको जलच्छादन केन कि करोति ।
वानरी हारवल्या[2] कि करोति, विधवा स्त्री कंकणेन कि करोति ।
वणिग खड्गेन कि करोति, दिगंबर पट्टकूलेन[3] कि करोति ।
असती शीलेन किं करोति, व्याधा जीवदयया कि करोति ।
तथा निर्भाग्य जीव. सदुपदेशेन कि करोति ॥ १७ स १

(११९) अनावश्यक (२)

शुद्ध ऋषीश्वर आभरण ने स्यु करे, मर्कट नालेर ने स्यु करें ।

---

१ रत्नेन २ मुक्ताफलेन ३ दुकूलेन

काक रतन ने स्यु करे, वानरो हार ने स्यु करे ।
असती शील ने स्यु करे, वणिकाकूराज्य ने स्यु करे ।
नपुसक स्त्री ने स्यु करे, दिगम्बर पटकूल नै स्यू करै ।
जीव आजीव नै स्यू करै, अधर्मी धर्म ने स्यू करै ।
साजन दुर्जन ने स्यू करै(दुर्जन सज्जन नइ स्यू करइ)+

+ "मूर्ख. पुस्तकेन । पापी सुकृतेन । अधा अजनेन । पढोदयितया । दुर्जन उपकारेण । वको मानस सरसा । सालूरः कमलेन । ग्रामीण पडित गोष्ठया । रजकः क्षपनक ग्रामेण, मक्षिका यक्ष कर्दमेन । कापुरुष. सग्रामेण । पणागना निर्धनेन । पतित कुचा हारेण । गतवयाः श्रृगारेणेति (पु०)
उक्त पाठ पु० प्रति मे अधिक मिलता है ।

सभा शृंगार

विभाग १०

भोजनादि वर्णन

(मंगल, वर्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्रालंकारादि)

(१) मांगलिक

दधि, दूर्वा, कुसम, अक्षत, चदन, नदितूरु[1], सिद्धार्थ,
गोरोचना, कुकुम, पूर्णकलस, गूहलिय, तोरण, चमर, जवारा ।
अहिव तणउ मगलुचारु, घट्ट[2] प्रदीप मणिमाला, प्रवाल,
वदरवाल ए द्रव्य मगलीक ।
देवपूजन गुरुवदन प्रमुख भाव मगलीक ।

(पु०)

(२) वर्द्धापनकं

नगर तणा प्रधान नर तेडावइ, महोत्सव करावइ ।
स्वर्णमय दीप ज्वाल्या, घर तणा कूट अजूआल्या ।
स्वर्णमय मूसल ऊभ्या, सुवर्ण कलश स्थाप्या ।
घर धवल्या, भित्ति भाग कउल्या, तिलिया तोरण बाध्या ।
प्रसादि वैजयन्ती झलकावी, गोति मेल्हावी, अमारि करावी ।
सर्वत्र मगलाचारु दीजइ, तूर वाजइ ।
अक्षत पात्र साचरइ, तबोल वापरइ ।
अर्थ व्ययना साभल नहीं, इसउ वधामणउ हूसही ॥ ७७ ॥ (जै०)

(३) महोत्सव देखने की उत्कंठा

तेण महोत्सवि समय बालिका—
हार त्रूटते, वेणीदड छूटते ।
नेऊरि फूटते, पटउल फाटते ।
घट जुअल विणसते, अनेकि आभरणि खिसते ।
मुक्तालकारि पडते, स्वेद बिंदु चडते ।
जोवा तणइ कारणि चालिउ । (८९ जो०)

४ पुत्र जन्म महोत्सव

राउ करावइ, दण्डपाक निरोक हूउ ।
सर्वत्र मार्ग वोर वालिया, गोमय पाणी सोचिया ।
मन्चोन्मच बाधा, वानरवालि बाधी ।
हट्ट शोभा सर्वत्र रची, सिद्धार्थ स्वस्तिक भरिया, पूर्ण कलश स्थाप्या ।

---

१ बीजपूर २ जुअल दीप । १३८ जो० मे नदितूरु और घट्ट के बाद ये अधिक है ।

जमली चूर्ण रंगावलि दीजइ, सुवर्णमय हल मूसल ऊभवीजइ ।
घट जूअल बांधीयइ, समग्र मार्ग सोधियइ ।
रत्नमय प्रदीप बालियइ, गोतिह रातउ बदि तणा वृंद टालियइ ।
कर्पूर कुकुमि चदन रसि मार्ग सीचियइ, अर्थी लोक सर्वथापि न वंचियइ ।
जिन भवनि पूजा प्रभावना करावियइ, नव नवा पुस्तक भरावियइ ।
लोक अकर कीजइ, आखे भरिया स्थाल लीजइ ।
लोक तणा वृंद मिलइ ।
वाजित्र तणा सहस्र वाजइ, कलकलि करी आकाश मडल गाजइ ॥

६४ (जो)

५ धात्री

१ क्षीर धात्री, २ मज्जन धात्री, ३ मडन धात्री
४ क्रीडा धात्री, ५ उत्सग धात्री, ॥पच धात्री॥छ॥

१२८ जो)

६ पुत्र पालन

जिम हेडाऊ तुरगम सभालइ[1] ।
जिम वणिक-पुत्र[2] हथेली नउ फोडउ सु सालइ ।
जिम तबोली पान चालइ[3] ।
जिम रथी रथ नइ चालइ ।
जिम मुक्ताफल रहइ थालइ ।
जिम साधु प्राणी ने हालइ ।
जिम पखिया रहइ मालइ ।
तिम माता पुत्र नइ पालइ ॥ (कु)

७ बालक्रीड़ा

हिवइ ते रह्या (?) महादुख थया ॥
घरनै विपै एहवा चयन करवा लागौ ॥
किवारइ पाणीना घडा ढोलै, किवारे धइसे मानै बोलै ॥
दहीनी गोलि घोलै, किवारइ तरितो माखण छासि माहि बोलै ॥
माता साकडानै झालि आणै, किवारे स्त्रियोनो कांचुयो ताणइ ॥
किवारइ जातो साप साहइ, किवारइ आगीनइ हाथि वाहै ।

---

१. पालइ २ वणिउ ३ सभालइ ४ सभालइ (जै)
जै प्रति मे प्रथम की तीन पक्तिओ के बाद की चार पंक्तिया नही है।

किवारइ हसिनइ मा सामो जोवइ, किवारइ रूसणो माडिनइ रोवइं ॥
किवारइ सूतो उठाणता आलस मोडइ, किवारइ रीसाणै उत्तेवड फोडें ॥(मो०)
इत्यादि बालक्रीडा वर्णनम् ॥

८ विवाह समय

लग्न ऊपरि विहउ पखा हर मारि कूटि साम हियइ
मूडसए आखे उडद केलवीयइ
मूडसए गोहू केलवीयइ
मूडसए चोखा केलवीयइ
मूडसए मूग केलवीयइ
घड सइ घृत विसाहियइ
कोडिया सइ कापडा
चोला भरा पान, झउला भरिया फोफल,
गोरस तणा द्रह, वडा तणा उकरुड
खाजा तणा खला, गडि बहत्तरि वहिल
चउरासी सुखासण, विसुत्तरुसउ भडार गाडा
सातसइ सेजवाली, चउदसइ वाहण, पाचसइ सादि,
तेजी, वेसर, नीलडा, हरियडा, पायल लोक सख्या नही, सरसी
कोठी । जगऊपणि माल्हणि सर्व गिलि प्रमुख अनेक सरसी कडाही
वाहण तणी धोरणि- सेजवाली तणइ सेतु बधि सीकिरि तणइ अडमड
घोडा तणइ थाटि, पायक तणइ पहट्टि, चक्रवर्त्ति जिंव चालियउ ।
नेउर तणइ ऊकारि, घाघर वालि तणइ घर्घरारवि
पच-शब्द तणइ निर्घोषि, लोक तणइ हलबोलि
कानि पडिय कोईं न साभलियइ ॥ (पु. अ)

९ भोजन

अनेक जाति तणी फलहलि ।
जिम मोटा छाजा, तिम खाजा ।
जिम मटक्कूत गाडू, तिम लाडू ।
विविध वार्णी तणउ पक्वान्न, बि आगुली कलम शालि ।
मुगनी दालि, परीसी सुवर्णमय स्थालि ।

पाखलि सालणा तणी पालि, माहि सुगध घृत तणी नालि ।
बिहु पहुर तणइ कालि, परीसइ आखडिआलि नारि । (६६ जो)

१० श्रेष्ठ भोजन

जेहि दूलेसरा चोखा तणउ पीठु
सीघरउली खाड तणउ दलु
पारिहेटि महिसि तणउ दूधु
एल तज तमालपत्र करिउ चमचमा
काचइ कपूरि करि मगमगाय मान इसा वरसोला
जहि आस्वाद खास तणउ उद्वेद नही
श्लेष्म तणउ प्रकोप नही
रस तणउ विकारु नही
आसा नीरोग निर्दोष
अमृत घटित, देव निर्मित । (पु. अ)

११ रसवती वर्णन

ऊपलइ मालि, प्रसन्नइ कालि ।
भला मडप नीपाया, पोइणि ने पाने छाया ।
केसर कु कुम ना छडा दीधा, मोती ना चुक पूर्या,
ऊपरि पच वर्णा चद्रआ बाधा, अनेक रूपि आछी परीयछि ना रग साध्या।
फूल ना पगर भरया, अगर ना गध सचरया ।
प्रधान गादी चाउरि चा कलाणा, बइसणहारा बइठा पातला ।
सारूआ घाट, मेल्हाव्या आगलि पाट ।
ऊची आँडणी, झलकती कुडली
ऊपरि मेल्हाव्या सुविशाल थाल ।
वाटा वाटली सुवर्णमइ कचोली ।
रूपा नी सीप ढूकी, इसी घाति मूकी ।

जीमणहार किसा—

छत्रीस लक्षणोपेत
अलिकुल कज्जल श्यामल केश पाश
चन्द्रार्ध भाल-स्थल ।
कामदेव कोदण्डाकृति भ्रूभग ।
विकसित कमल दल समान लोचन

मरल तरल नाशा वश
हिडोला समान कान ।
प्रवाल सम कान्ति अधरोष्ठ ।
दाडिम नी कुली जिसा दात
पूर्णिमा चद्र सदृश बदन कमल
शख नी परि त्रिरेखाकित कण्ठ कदल
समामल स्कध प्रदेश
प्रथुल वक्षस्थल ।
कूप समान नाभि
आनाभि कृद्ध पाताल कटि यत्र
कदली स्तभापमान जघा युगल
सुकुमाल कर कमल
कूर्मोन्नत चरण
लाडता लोडता लडसडता रूपवत ,
प्रवीण जाण, सोभाग्यवत ।
गुणवत, विनयवत ।
लीला विलास, पुण्योल्लास ।
इन्द्रसमान दीठा, इसा पुरुष आरोगिवा बइठा ।

प्रधान स्त्री परीसणहार आवी—

हस जिम चालती, मयगल जिम माल्हती ।
वाकू जोयती, जन आल्हादती ।
आखडी आली, अति सुविशाली ।
सुवर्णमय कुरूउ हाथि धरती, चिन्ता हरती ।
सुगध वासित पाणी, ढाक्या आणी ।।हाथि धोयण दीधा—
शृगाल नइड मालि, परीसिवा लागी उजमालि ।

फलहुलि किसी परीसिइ छइ ?

अखड अखोड
मनोज्ञ वायम
विविध देश ना बदाम

चारु चारउली
खारकि ना खड ।
कसमिसि द्राख
आदनी खजूर
बीबाला वरसोला
हीरालग साकर
नालेयर तणी चीरी बुरहडी
सरस सकोमल सेलडी तणा बुटका
तेह तणी कातली, दाडिम नी कुली
करणा, जबीर, बीजुरा, चुरडी
नारिंग तणी फाडि, सहकार तणी कातली

किस्युं ते सढकारु—

वनस्पति राउ, कन्दर्प देवतानु भाउ ।
रस तणी ऋद्धि, मीडिम तणी अवधि
साकर दूधि नीपायउ, काइलि ने समूहि छायु ।
घुडि घोरू, पथिक जनवधू चित्त चोरू ।
तेह आबा तणी कातली निवृत्ति परायण, नीकोल्या रायण
खाडिस्यउ ओल्या, घी स्यु मिल्या ।
कूकणा केला, गात्रि वाका, भेला पाका

इसा वेला नी कातली—

स्वास स्यू जाइ, घणाइ उदरि समाइ ।
एव विध फुलहली परीसी, परीसणहारि सजगीसी ।
अतिहीं असमान,

हिव पकवान आणइ ते केहवा ?

मालपुडा, खाजा, तुरत कीधा ताजा ।
सदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रसाद ना छाजा ।
पछइ प्रीस्या लाड्डू, जाणे नान्हा गाड्डू ।
कुण कुण ते नाम, जीमता मन रहइ काम (न ठाम) ।
मोतिया लाड्डू, दालीया लाड्डू ।
सेविया लाड्डू, कीटी रा लाड्डू ।

नादउलिया लाड्डू, तिल ना लाड्डू ।
त्रिगइ ना लाड्डू, मगरीआ लाड्डू, झगरिआ लाड्डू, सिंह केसरिया लाड्डू ।
वली बीजा आण्या पकवान, जीमता वाधइ मुख नउ वान ।
(आ) ण्या पकवान
सतपुडा खाजा
सुकोमल सुहाली
फगफगती फीणी
दूधवना
देहींथरा
घृत मय धारी
पडसूधी नी साकुली
मुरकी माडी
मनोहर मोदक
सु तलया सेवत्रा
साकर सहित घेउर
तिली तिलवटि
चासद्र चूरिया
पचधार लपनश्री
पछइ आवी पडसूधी नी पोली, खाड घृत झबोली ।
रत्नु मालि, महा सालि ।
कमल सालि सुगंध सालि ।
सुद्ध सालि, कोमोदकी सालि ।
कूकणी सालि, तिलवासी सालि ।
जीराउलि सालि, सुवर्ण सालि ।
राय भोग सालि, गुरडा सालि ।

एवं विधि सालि ना कुरुड—

अणीआलउ, सरहरउ, फरफरउ ।
सरसु, सुकोमलु, ऊजलउ, बि आगुलउ ।
दूबलउ, पेटि बइसइ, फूटी नीसरइ ।
इस्यइ पीरस्यइउ
तुष रहित मुडोरा मूग नी पहिति,

तत्काल तापितु घृतु
सुगध सुवर्ण्य
परिघल मनि परीस्यू, जिमणहार नू मन ऊलस्यू

किस्याएकु शाक—

कोरा वडा । राईता वडा, हलद्दआ वडा ।
घारी, घारडी, वडी, पापडी । ईडरी, पटीडरी ।
पूरण पलेव खाटा, भरया वाटा ।
बालहुलि, तिङ्रा, काचरी, कोकला ।
डोडी, रामडाडी, कयर, सागरी, भली भाजी, मरीनी माजरी ।
प्रधान पीपरि, वेणकडा बाउलिया, निपुण नीलूआ ।

एव विध सालणा परीस्या—

पहिलु फलिहलि प्रीसइ, सगला रा मन हीसइ ।
पाका आबा नी कातली, ते बूरा खाड सु भरी अनइ वली पातली ।
पाका केला, ते वली खाड सू कीधा भेला ।
सखरा करणा, ते वली पीला वरणा ।
नीलइ नारगी, रगइ दीसइती सुरगी ।
नीकोली रायणी, प्रीसी भाइणी ।
दाडिम नी कली, खाता पूजइ रली ।
'जानइ'   , खाता पूजइ कोड ।
द्राख नइ विदाम, कोइ कागदी स्याम ।
सलेमी खारक नइ खजूर, ते प्रीस्या भरपूर ।
नालेर नी गरी, मालवी गुल सू भरी ।
नीबू घाटा नइ प्रीसीया, एहवा तो केथे न दीठीया ।
चारोली नइ पिसता, लोक जीमइ हसता ।
वली सेल्हडी नइ सदाफल, ते पिण प्रीस्या परिघल । (११-१२ जै०)

१२ रसवती वर्णन (२)

ऊपले मालि, सुवर्णमइ स्थालि, प्रसन्नइ कालि ।
वारू मडप नीपाउ । पोणिने पाने छाइउ ॥
कूकूना छावडा (छडा), मोती ना चउक ।
तेह माहि सारूयार घाट, मेल्हाव्या पाट ।

नदीया समान नीझरण ।

गगा समान नीर । सीता सभी (मई) न भार्या, लक्ष्मण सुमु न वीर ॥१॥

बील १ बाहेडा २ आमला ३ चउथा (साचा) गुरु वयण ।

पहिला हुइ कसाइला पछइ हुइ गुलीया ॥ २ ॥

चाउरि चातुला । चूडिया प्रमुख नाना विध आसन्न ढूका ।

चउरस चउकी वट । ऊची आडणी । जाल कोशीसा कुडला ना प्रयोग पूरा हुआ ।

तदतर त्राट । वाटा । वाटी । कचोला कचोल वटी । सींप । सूनवटी । ढूकी ।

तदनतर । लडहीय लडसडतीय लीलावतीय सुवर्णमई करवइ । बरखीय । खलकतइ, चूडइ । झलकतइ ककणि । ढलकतइ हाथि । सीतलि गधोदकि । हस्तोदकि दीवा ।

तदनतर । ऊपलेइ मालि । प्रसन्नइ कालि । सुवर्णनइ स्थालि । मोटइ झमालि । आवी ऊजमालि । परीसइ फलहुलि-अखोल खड । मनोन्यवायम । चारुली । साकरलिंगा । वेकस्या वरसोला । हीरालग साकरना चूरि । कोलबी नालिकेरुनी पुडहडी । छोहारी खारिक । जालिकी । पिछानी खारिना कुटकडा । किसमिस द्राख । कचोले मधु फडद खजूर । हरमजो मधुरु । माकड उटी पासख समान । सरस फणस सेलडी ना कुटकडा । दाडिम नी कुली तरुणा । करणा । जबीर । बीजपूरक । नीघणी । चडउडी फरग नारगी फालि । अति गुलि भावि । सूरीइ रगि मधुकलश अबानी कातली । परीसइ पातली । किसउजु आबउ । बनस्पती राउ । कदर्प देव सहाउ । इसा मधुकलस अबानी फालि । नीकोल्या रायणा, निवृत्ति परायण । खाडइ लुल्या । बीय भिल्या । अनइ कूकणा केला । सोनेला । राजेला । मूछेला । नारि सिंनेला । तीह कदली फल बीट थका गल्या । लीला लीलावती नाहाथत् उटल्या । इसी कूकणा तणी कातली । आटि शोभइ तीहनी परीसणहारि । शामागि नारि, सपन्न श्रृगारि । कठाभरण हारि । जिसी रभा नइ वश । देव कन्या नइ असि । इसी फलहुलि । परस्त्री परस्त्री परीसइ । जइ जइ लीला विलसइ । तदनतर सस पडा खाजा, खाडीं किमा ति पाजा । जिसा प्रासाद तणा छाजा । तदनतर । भल भला लाडू जिसा रसवती लक्ष्मी अमीना गाडू । घृतमइ पाकि तल्या । साकर सिउ मिल्या । मरिचना चमत्कारि । अत्यन्त सुकुमार । कपूर परिमल सार । स्थल बहुलाकार । महोज्वल । इस । सेवईया लाडू । मोती लाडू । दल लाडू । वाजण लाडू । अमृत हल । खड भल खड । प्रभृति मोदक मूक्या । जे से मुहि मिलइ ।

घणउ किसउ एव विध अमृत घट मोदक शोभइ । अनत मुसमसती मुरकी । शिव शिवती सुहाली । फगफगा फीणा-दुग्ध वर्ण दहीथरा । घृत वर्ण धारी । सुकुमाल साकली । अखड माडी । सतल्या सेवेञ्या प्रभृति पकवान्न परीस्या, खाड माडा । पूरण माडा । मोकला माडा । कुरकुरा माडा । पत्र वेलीया माडा । खादउ चूरिमू । सुदलित सुललित लापसी । वरनारि परीसइ पातली । तदनतरु शालि । महाशालि । कलम श्यालि । तिलवासी शालि । राजन्यक शालि । साटिया प्रमुख मेन ईप्सित । अखड शालिना चोखा । दूबलीइ खाड्या । बलिष्टइ छड्या । नखूतीइ वीणया । अलवेसरि आणया । समर्तीइ सोह्या भगवतीइ समारिउ । ऊन्हउ तीन्हु । सरसरउ । भरहरउ । अणीआलउ । सकोमला । ऊजलउ । जिसिउ केवडउ । ऊडेली जेवडउ । दूबलइ पेटि पिसइ । फूटी नीसरइ । घृतमइ पहति नइ सयोगि । मन नइ ऊलटी । मडोआरा मूगनी दालि । बभुक्षा नी कालि । फोतिरे छाडि । हत्थीहत्थीइ खाडि । त्रिछट् कीधी । घण पाणी इसीनी । वानि पीअली । परसामि सीयली । जिमता स्वादिष्ट । परीसणहारि अभीष्ट । सद्य ताविउ घीय नामिउ । मजिष्ठा वर्ण । अवधारइ कर्ण । सरहरी धार । प्रीणइ जीमणहार । सोभागीउ । नाशा पट्ठ पेउ । साख्यातु अमृतु । एव विध घृत । अनतर वडा । घणइ तेलि सीना । हाथि तउ वलइ । मुहिं पड्या गलइ । स्वर्गथ्या देवता टलवलइ । इसा अनेक परि वड्या । आदा वडा । मोतीया वडा । काजीया वडा । सुतल्या वडा । सालीया वडा । दालीया वडा । खाड वडा । कुहाडिया वडा प्रभृति । परीस्या । तदनतर मुग नी वडी । उडद वडी । छमकावी वडा । पलेह वडी । सउतली वडी । राब वडी । माहि आदानु वीरु । छमकावी डोडी । टलटलता टीडूरा । चम चमता चीभडा । भली वालुहलि । कलकलता कोसभा । सुडहडती सागरी । सडसडता डोडिका । छमछमती भाजी । रूडा राइत्ता । चिहुवानी पलेह । कडूआ । कसाइला । तीखा । मुधरा । जिसी पाडोसणि तणी जीभ । इस्या कडुआ । जिसु दगर तणउ उपदेश इस्या कसाइला । जिसी सुकि नी जीभ इस्या तीखा । जिसउ माता नु चित्त इस्या मधुरा । कउठ कउठ वडी कइरवदा । अबाहुलि । सूरण । पूरण । माडमी । ईढडा । प्रभृति शाक मूक्या । तदनतर वारू साल्योदन तणा करबा । कपूर तणउ वास । एलची नउ उल्हास । भोज्य लक्ष्मी नउ निवास । माहि दही तणउ प्रयोग । जीणइ हुइ जीमणहारि रइ अभयोग । इसु करबउ । अमृत मय घोल । क्षीर समुद्र कल्लोल । प्रीणइ मुखकमल । तदनतर-अथाणा । महमहती मिरी मजरी आग्रे अक आदउ प्रधान पीपलि आखी आबी । तदनतर पाणी । तदनतर पान

नागर खडा, कपूरा वेलीया । आधी गामा चेयउला मागुरा बीटि साकडा । अल्पनसा जाल मनोहर पान वारूरा जागर खाडी व पूरवट्टरि वटिका प्रमुख मुख वास दीधा । अनेक वृध वारू पट्टकूल तेह दिवराणा इति भला । वस्त्र दीधा । एव विध स्वजन परजन सतोख्या ॥ रसवती सपूर्णा ॥

(पत्राक १२ वॉ, सग्रह मे १७ वी लिखित)

१३ रसवती वर्णनम् (३)

गगोदक शीतल, थाल नइ धोवण दीधा जल ।
पछइ नीली फलहलि परीसी, ते किसी किसी ।
आवा, राइण, केला, खरबूजा, फूट मतीरा,
दाडिम, दाख, वीजोरा मीठा खाटा, खाटा मीठा नीबुया ।
सेलडी जबीरा, डागरा, फणस, अन्ननास, सेव,
मधुरा कालोगडा, नारिगी, नीला नालेर, खारिक,
खजूर, खरसूया, अखोड, वाइम, विदाम, वेदाणा,
पिस्ता, किष्टा, कमल काकडी, सीघोडा, चारोली, चारवी,
जूना करणा, मीठा कमरक, साख पका आबा,
के छोली, के मउली, के घोली, के कातली करी
खाड घृत सयुक्त, बूरा तणा पूर ।
कर्पूर वासित वरसोला, वेकरीया वरसोला ।
खाडइ भेल्या, घीयइ मिल्या, कूकणीया केला ।
सोनेला, राजेला, हाथेला, तेहनी पातली कातली ।
तेहनी परीसणहारि, श्यामाग नारि ।
सपूर्ण श्रृगारि, कठाभरण हारि ।
जाणइ रभा नइ वशि, देव कन्या रइ असि । इसी नारि परीसइ ।
पकवान तणी जाति—
सतपुडा खाजा, सर्व साजा ।
जिसा प्रसाद ना छाजा, ते जिमता लागइ ताजा ।
तदनतरि लाडू आवइ—
मोती लाडू, दाल लाडू, सेवइया लाडू, चारोलिया लाडू,
भगरीया लाडू, सिह केसरिया लाडू ।
नादहल, इ द्ररसा, दहिवडा दहिवडी, फीनी, सोट, सु हाली, सेव, मुगदी,

प्रमोदक, सोधक, मोदक, गलगलता घेउर, उन्हउ कसारु, तल्या गूंद, दधिवर्ण दहीथरा ।
पडसूधीनी साकुली, दीठइ जीभ थाइ आकुली ।
परीसणहारी नहीं वाउली।
माडी, मुरकी, जलेबी, मगद बरनारि, श्यामा, मृगमद धारि, मुख पद्म दलाकारि, ऐहवी जे चतुर नारि, ते नाना विध पकवान परीसइ ।
हिवइ माडा आवइ—खाड माडा, मोकला माडा, गूद माडा, आछा माडा, आकासिया माडा, कपूरिया माडा ।
चरिमउ, गलिउ चरिमउ, साकारिउ चरिमउ
पाखलि मूकिउ, आबिल वाणी,
द्राखवाणी, साकर वार्णा, खाडवाणी । तदनतरि सालि

(१) सुगध सालि	(२) सुवर्ण सालि,	(३) कुयारी सालि
(४) चद्रणि सालि	(५) श्वेत शालि	(६ रक्त शालि
(७) नील शालि	(८) पीत शालि	(९) महाशालि
(१०) शुद्ध शालि	(११) कौमुदी शालि	(१२) कलम शालि
(१३) कुकणी शालि	(१४) तिलवासी शालि	(१५) जीरा शालि
(१६) कुद शालि	(१७) रामभोग शालि	(१८) मरूडा शालि
(१९) देवजीर शालि	(२०) धूममोगर शालि	(२१) केतकी शालि
(२२) नीलोत्री शालि	(२३) साठी चोखा	(२४) मूजी चोखा
(२५) अखड चोखा ।		

इसी सालि नउ कूर—

अणियालउ, सुहुयालउ, सुरहउ, सुगन्ध, फरहरउ, दूबलियइ खाडियउ, सबलियइ छडिउ, हलवइ हाथइ सोइयउ, नखवती वीणिउ, फूटर सणि स्त्रीयइ धोयउ, हितुई स्त्रीयइ ओराव्यउ, चतुर स्त्रीयइ ओसाव्यु, सरस, सुकोमल, उजलउ, बि अगुल उस्यउ कूर परीस्यउ ।
मडोवरा मूग तणी, त्रिछडी दालि, माधुर्य्य तणी पालि, वानि पीयली, परिणाम सीयली । इयी दालि परोसी।
सद्य सतवित, परमामृत, मजिष्ठा वर्ण, वघारइ कर्ण, सरहरी धार, बडी वार, प्रीणीयन्द्र जीमणहार, सौभाग्य अजेय, नासापुट पेय, साक्षात् अमृत समान । एहयउ घी परीस्यउ । पट सुधीनी आछी पोली, खाड घृत स्यु बोली । त्रिहु पोलीए एक कवल थाइ, फूकनी मारी फलसा लगि जाई ।

हिवइ सालणा आवइ । ते किसा ?
डोडी, टींडूरा, टींडरा, चीभडा, वच्चीडा, कोहला, कारेला, कर्म्मदा, कर्पटा, कालीगडा, करणा, केला, ककोडा, गिलका, गोल्टा, खेखरा, सेलरा, सरघूनी फली, आमला, आयरिया, आबिली, धीसोडा, मतीरा, तोरीया, त्रुसडी, डागरा, खरबूजा, वृताक, मोगरी, नीबूया, जीञ्या, वालहालि, कउठ, कोठीमडा, चउलाहली, मरिच नीली, पीपरि नीली, नीलूया चिणा, चदलेवउ, बथूउ, सोया, सरिसव, अजमउ, मेथी, कयरफूल, चीलिगी भाजी, सागरी, काचरी, आमलेठी, आबहलि, कयर, भोरडा, पेठा, दूधीया, पटीडरी, चोली, काचरी, वलिनी, फोग, फोगडी, बाउलीया ।
वड़ा आवइ, घणइ तेलि सीना, घणइ-घोलि भीना, मरिचना चमत्कार, अत्यन्त सुकुमार, हस्तिपद प्रमाण, हाथ तइ उछलइ, मुँह पञ्या गलइ, स्वर्ग थी देव देवी टलवलइ । आदा बडा, डोडीया बडा, काजी वडा, घोलवडा, मिरिपाली बडी, छमकाली बडी, तली वडी, कूर वडी, पेठावडी, रूडा राईता ।
हिवइ पलेव—सूठिया पलेव, हलदिया पलेव, मरचिया पलेव, पीपलीया पलेव ।
वारू खाड पीस पीपलिया तीमण, समरिचीया तीमण, सलवणा तीमण, सचोपडा खाटा बघार बहुल, तदनतरि परिसीयइ घणा । वारू वघारिया, दही तणा घोल, तिणि भर्या कचोल । सघरा दही, शाल्योदन तणा कदब । कपूर तणउ वास, भोज्य लक्ष्मी तणउ निवास । सींधव जीरा तणउ प्रतिवास । एहवा करबा परीस्या । अमृतमय घोल, खीर समुद्र तणा कल्लोल । अत्यत धवल, प्रीणियइ मुख कमल । एव विध रसवती ।
उपरात चलू नइ काजि--केवडीया काथ वाणी, पाडल वासित पाणी, कपूर वासित पाणी, चदन वासित पाणी, सुगन्ध पाणी, एलची पाणी, चपक वास्या पाणी । हिम जिम सीतल जइ करी मुख हस्त पवित्र कीधा ।
तदनतरि, सुरभि अबीर, गुलाल, केसर छाटणा कीधा ।
हिवइ पान जाति—नागर खडा, अडागरा, मागल उरा, चेउली, कपूरीया, आधीगमा, टोडारा, ग्वालेरा, तेह तणा बीडा ।
कपूर, लवगी, एलची, मृगमद, सोपारी, जाइफल, जावत्री, खड्खडी, सखचूर्ण, मोतीरउ चूर्ण, केवडीउ काथ, तेह सहित बीडा मुख वासि दोधा, जाची जबाधी महमहइ, अगर तेल सहित गधराज गहगहइ । शीतल बाय नइ काजि वारू वीजणा ।

तदनतरि । सुगन्ध पच वर्ण पुष्प पगर फूल । जाइ, जूही, कुद, मुचकुद, केतकी, केवडा, चपक, मोगर, मालती, जासूल । कमलादिक बहुविध फूल दीपइ ।

तदनतरि बहु विध वस्त्रे करी पहिरावणी, अत्र वस्त्र नामानि अष्टम पदे पचम कथाया लिखितानि वाच्यानि ।

१४ भोजन वर्णन (रसवती) (४)

माड्यउ उत्तग तोरण माडउ, तुरत नउ कस्यउ नवउ ।
ते कहवउ ? ऊचउ दल वादल तबू जेहवउ ।
तेहनइ तलइ आगणउ, तेतउ नील रत्न तणउ ।
तिहॉ सखरा माड्या आसण, तउ बइसवा नी सी विमासण ?
आगइ मू की सोना नी आडणी, ते कहउ किम जाइ छाडणी ?
ऊपरि धरया स्वर्णमय थाल, अत्यन्त वणु विसाल ।
विचिमइ चउसट्ठि वाटकी, नव-नव घाटकी ।
थालइ गगोदक धोवण टीवा, तिणसु कर पवित्र कीधा ।

परीसणहारी

सिगली पाति बइठी, तितलइ परीसणहारी परीसिवा पइठी ।
ते केहवी ? रूपइ रभा जेहवी ।
सोल शृगार सज्या, बीजा सर्व काम तज्या ।
रूप नी रूडी, हाथे खलकइ सोना नी चूडी।
लघु. ला, मन कीधा मोकला ।
चित्त नी उदार, अतिहि दातार ।
पहिरया गलि नवसर हार, मुख पद्म दलाकार ।
अपछरा नइ अणुहार, ।
सर दिहइ मिलइ तेहने उसास, . ।
सर्व दूपण रहित, सीलादिक गुण सहित ।
वसमसती आवी, सहु नइ अति भावी ।
पहिली फलहलि परीसइ, सिगला ना हीया हीसइ ।
पाका आबारी कातली, निपुण पणइ कीधी पातली ।
के छोली के मोर्ली, के बूरा घृत सू घोली ॥
अलबेली. . परीसइ सहेली, नेह गहेली ॥

भोज्य पदार्थ

वली पाका केला, घृत सु खड सु कीया भेला ॥
वर सोला, वेकिरीया वरसोला ॥
कूकणीया केला, सोमेला वेला ॥
जूना करणा, पीला वरणा ॥
नीला नारगी, रगई दीसता सुरगी ॥
रूडी राइणि, परीसइ भाइणि ॥
दाडिम नी कली, खाता पूजइ मनरली ॥
. जिमता .द्राख नइ विदाम के कागदी के स्याम ।
सलेमी नइ खजूर, ते परीसइ भरपूर ।
चावउली नइ पिस्ता, लोक जिमइ हस्ता ॥
गलवी गुलसु भरी, आगे लइ धरी ॥
सखरा सदा फल परिस्या परवल ॥
काबिली खरबूजा अउर देसाई दूजा ।
मीठा उ छू खाग नइ मीठा, ते पुरीसता दीठा ॥
हिव परिसइ पकवान नी जाति, भरि२ आणीये पराति ॥
तेहनी परीसणहार, स्यामावतार ॥
कठाभरणहार, देवकन्या नइ असि ॥
इसी नारि परीसइ पकवान, जिमता वाधइ सुखवान ॥
सतपुडा खाजा, चतुर नारि कीया ताजा ।
सदलानइ साजा, जेह ॥
जिमता लागइ ताजा, मोहीयइ राउन राजा ॥

लाडू वर्णन

पछइ परीस्या लाडू, जाणे नान्हा गाडू ॥
जिण दीठा न रहइ मन ठाम, हिव सुणउ तेहना नाम,
केसरिया वेसरिया, . ॥
सेविया, सु ठिया, मोतिया, मगदिया ।
मूगिया, कीटिया, कमेलेया, मेथिया ॥
किसमिसीया, तेलिया ॥
त्रिगडूआ, झगरिया ।
हल, परीसी परिघल ॥

वली पकवान आणइ, तेहना नाम वखाणइ ॥
सुहाली नइ सेव, परीसी रूडो टेव ॥
वलि परीस्या फीणा, अत्यत भीणा ॥
सद्धर ", नही का खोट ॥
ठमकते नेउर, परीसइ घेउर ।
तलिया गृद, जाणे अमृत ना बृद ॥
भरि २ आणइ तबाक, सखरा गूदपाक ॥
पडसूधी नइ साकली, जिंमता नह थायइ आकुलि,
वली गुलगुला, स्वादइ भला ॥
दही वडा, गूद वडा ॥
माडा नइ सुरकी, ऊपरा ल्यइ भस्मार्कनी भुरकी ॥
ऊन्हा कसार, ॥

सूखडी

परीसइ मोहन भोग, वृद्धा नइ जोग ॥
परीसइ चूरिमा, जिमता वाधइ ऊरिमा ।
दधिवर्ण दहीथरा, जिमता ।
खुरमा नइ खीर, जिमता वाधी भीर ।
पेठा नइ पेडा, गुदवडे कीया निवेडा ॥
मइगल ज्यु मालहती, चिहु दिसइ चालती ।
हसगति हालती, मानीना गर्व गालती ॥
स्यामा मृगमदधार, मुखपद्म दलाकार ॥
सकल सहेली परिवार, एहवी चतुर नार ॥
अगिताकार, पकवान परीसइ सुविचार ॥
हिव माडा आणइ, भलइ टाणइ ॥
कवीसर वखाणइ, जेहवा एक जाणइ ॥

माडा वर्णन

खाड माडा, मोकला माडा,
गुल माडा, गूड माडा,
आसिया माडा, कपूरीया माडा ॥

पाणी वर्णन

विचइ पावइ पाणी, भारी भरि २ आणी ॥
आबिल वाणी, द्राख वाणी ।

खाड वाणी, साकर वाणी ।
एलची वाणी, कपूरवासित पाणी ॥
करती झाकझमाल, हिवइ परीसइ साल ॥
नवनवी भाति, पिण कहु कितरीक तेहनी जाति॥

शालि वर्णन

सुगध शालि, कुकु शालि ।
कलमली शालि, तिलचासी शालि ॥
जीरा शालि, कुद शालि ।
राय भोग शालि, गुरुडा शालि ॥
देवजीर शालि, धूम मोगरा शालि ।
केतकी सालि, नीलउत्री सालि ॥
चद्र शालि, रुयत शालि ॥
पीत शालि, सद शालि ॥
नील शालि, भद्दा शालि ॥
शुद्ध शालि, कौमुदी शालि ॥
साठी चोखा, मुजी चोखा, अखड चोखा ॥

शालिकूर

इसी शालि कुर, आणीयइ भरपूर ॥
अणीयालउ, सूआलउ, सुरहउ, फरहउ ।
सुगध, परीसइ मुध ॥
दूबली स्त्री खडयउ, सबलीये छडयउ ॥
हलवे हाथे सोहयउ, जा लगे मन मोह्युउ ॥
नखवती वीणीया, सुघड स्त्रीये चीणीया ।
फूटरी सी स्त्री धोया, हितूई स्त्रीयइ जोया ॥
भली भाँति ऊराया, राधता जब कस आया ।
तब चतुर स्त्री उतारी, भलइ वस्त्र सु झारी ॥
सरस सुकोमल उज्जलउ, बि उगलउ ॥
एहवउ कूर, परीसइ भरपूर ॥

हिव परीसइ दाल, सोहइ स्वर्णनइ थाल ॥
मडोवरा मूगतणी त्रिछुडी दालि, माधुर्य तणी पालि ॥
नानि पीली, परिणाम सीली ॥

दाल नाम

सुणज्यो सहू ते दालिनी जाति, बहू काबिली चणानी दालि ॥
तूअरनी दालि, मसूर नी दालि, उडद नी दालि॥
झालर नी दालि, मटर नी दालि ॥
भली बिफाड दली, एहवी दालि परीसी वली ॥
हिव ऊपरा परीसइ घी, सहू कहइ जी जी ।
साझ ना जमाव्या, परभातिना ताव्या ॥
सद्य तपित, परमामृत ॥
मजिष्ठा वर्ण, वधारइ कर्ण ॥
सरहरी धार, वडी वार ॥
अ यत सुखकार, आणीयइ जीमणगार ॥
सौभाग्य अजेय, नासापुट पेय ॥
साक्षात अमृत समान, जिम्या वावइ देह नउ वान ॥
सुरहउ प्रतिवास, तावीयउ खास ॥
हिव परीसी आछी पोली, झाझा घृत सु झकोली,—
त्रिहु पोलीए एक कवल थाइ, फ़करी मारी फलसा लगिजाइ ॥

सालणा

हिव सालणा परीसइ, सहूना हीया हीसइ ॥
कवण २ सालणा, हिव तेहनी चालणा ॥
नीली छमकाई डोडी, जिमइ होडाहोडी,
पटीरडी वडी, सेलरा खेलग ।
सरगूनी फली, मूगफली, चउलफली, ग्वारफली
केला, करेला, कोहला, आमला ॥
नारगी, बगा, टीडसा, पर्पटा, कर्पटा ॥
करणा, वरणा, नीलवणा,—
खाटा सालणा, मीठा सालणा
तलया, गल्या, चीमडा, कालिगडा ॥
मुरडा, तूसडा, पटीरडा, कोठीबडा ॥
मतीरा, खीरा ॥ खरबूजा, तरबूजा, करमदा, घरमदा ॥
सिघोडा, ककोडा । मोगरी, सागरी ॥
वृताक, नीलाशाक । निबू, जबू ॥

तुरी, सखहारी, सनूरी ॥
चाउलिया, श्रायरिया ॥
दूधिया, सभोलिया ॥ श्रावहल, वालहल ॥

अथाणा

नवनवा श्रथाणा, जिणइ जिमता रीझइ राउ राणा,
सालणा ॥ कदमूल, श्रनइ कपर फूल ॥
नीला कयर, परीसइ बयर ॥
चणा काबिली, श्रनइ श्राबिली ॥
मागइ घेठा, तिवारइ परीसइ पेठा ॥
रूडा राईता, मन भाईता ॥
पीपरि पीली, मरिच नीली ॥
काकडी, वली धावडी ॥
कउठ, छमक्या मउठ ॥
काचर, मुठकाचर ॥ कोचला ।
काचरी, ऊभ काचरी ॥
परीसिवा जोग, केवल्यउ फोग ॥
बघारया, धू पधारया ॥
श्रनेक छमकाया, मालणा ल्याया ॥

भाजी

भाभा घी सु साजी, स्यु करइ भाजी,
जिणा जिमता म थायइ राजी ॥
सरसवनी, सोवानी, पूलानी वथुवानी ॥
चणानी, मेथीनी, तेजारानी, चडलेवानी ॥

वडी

हिव श्रावइ वडी, एवडी पेठा वडी, श्रादा वडी ॥
मरिच वडी, छमका वडी, घोला वडी, पापड वडी ॥
काट वडी, दवि वडी, सिरावडी ।

वड़ा (दालिया)

हिव ल्यावइ, दालिया, वस्या हीया ।
ते एहवा, घणु वखाणीये जेहवा ॥
घणइ तेलइ सीना, घणइ घोलइ भीना ।

मरिच ना चमत्कार, अत्यत सुकमार ।
, • तल्या सुजाण ॥
• दही दही, मउला दही ।
हाथ लीधी ऊछलइ, मुहडइ घाल्या गलइ ॥
सर्गना देव देवी टलवलइ, देखता डाढ गलइ ॥
आदा वडा, काजी वडा, घोलवडा,
मूगिदाल वडा, मउठि दालि वडा ॥
उडद दालि वडा, डोडीया वडा ॥

पलेव

हिवइ आवइ पलेव, जिमता देव ॥
चोखानी पलेव, पीपलिया पलेव ।
हलदीया पलेव, सूठिया पलेव,
मिरचीया पलेव ॥
वारू वघारया घोल, परीसियइ भरि कचोल ॥
सीधा जीरा तणउ प्रतिवास, भोज्य लक्ष्मी •॥
प्रीणियइ मुखकमल,
जाणे क्षीरसमुद्र ना कल्लोल, एहवा अमृतमय घोल ॥

दही

हिव परीसइ दही, तउ जिम्या सही ॥
गाइ ना दही, भइस ना दही, लिगार मइला नही ॥
कर्पूर तणउ वास, एहवा परीसइ दही खास ॥
वीजणे वाउ घालइ, गरमी सहूनी टालइ ॥
इम भोजनरीति अप ।

पाणी

चलू काजि पाणी अणावइ, झारी भरि २ ल्यावइ ॥
हिम जिम सीतल, अतिहि निर्मल ॥
कर्पूर वासित पाणी, पाडल वासित पाणी ॥
केवडीया पाणी, चँदन वासित पाणी ॥
एलची वासित पाणी, सुगध पाणी ॥
एहवा जल दीधा, तिणसु मुख हस्त पवित्र कीधा ॥

तंबोल

तदनतर दीजई तबोल, सुरभनइ बहु मोल ॥
टोडेरा, ग्वालेरा, अजमेरा, नागर खडा, मागल,
कपूरिया, मागही, इत्यादि पान नी जाति कही ॥
वाकडी सोपारी फाल, पिवल सोपारी फाल ॥
कर्पूर वासित, केसरादि सोभित ॥
मृगमद गटिगल, जावत्री नइ जाइफल ॥
खडचूर्ण, मोती चूर्ण ॥
केवडा काथ, इत्यादिक तबोल ग्रइ सहू नइ हाथ ॥
कास्मीरी केसर ना छाटणा कीधा, इम लाछि ना लाहा लीधा ॥
अगर तेल सहित गध राज गहगइ, जा चीज वाधि गहमहइ ॥
ऊछाल्या अबीर नइ गुलाल, भला तिलक कीधा भाल ॥
हरख्या बाल नइ गोपाल , ह्वि सुणउ ˉ ।
मुख आभा उली, मिहर कुली, कलमली, सिणली ।
अर्कतूल, पट्टकूल, बहुमूल, कपूरधूल ॥
रत्न कबल, मारु कवल, गगाजल . ॥
धूनउ जूनउ ठटाई जोडी, किणही न विखोडी ॥
सिधू दोटी, महीन नइ मोटी ॥
गउडीयउ, चउडीयउ ।
गगोदक, सोधक, खीरोदक ।
दुरगी, सुरगी ।
सो नार गामी, धरण गामी,
थानेसरी, अधउतरी वडवरी अउधी ।
अमृती, बुलबुल चुस्मा बहुभती ॥
कपूर वाटी, मोछण खसखासी ।
कोरी, बोरी, साडउ, ठेपाडउ ।
खासउ नइ खेस, पूरवी सुविसेस ॥
नवनवी पाथडी, पचवर्ण कास्मीरी पामडी, ट्रकडी,
चरणा नइ चूनडी ॥
पलिग पोस, सतोस, सूफ सकलात, विलाइती विख्यात ॥
भइरु खान जाई, नीलक नइ दरीआई ॥

देश परदेस ना सालू, बधरा नइ रगालू ॥
मालदही, मावा पिरा सही ॥
मजीठी दोटी, पलाली मोटी ॥
करता भकभमाला, लाहोरी वाला ॥
मुलतान सलहटी, पटगी पटी ॥
हज्जारी नरमा, काविली दुरमा
सूसी नइ सेला, गर्म सूत्र वीगी भेला ॥
कसबी चीरा, भलकइ जागे हीरा ।
छीट अनेक भाति धरी, रगइ खरी ॥
श्रीसाफ, श्रीवाफ, कथीया जरवाफ ॥
वास्ता, तास्ता ।
कुरता, रग मइ नही का खता ॥
दुगजा, तिगजा । अदूष्य, देवदूष्य ॥
चीनाशुक, पट्टाशुक । सिरबध, तनुबध,
कमरबध ॥ इकतारा, दुतारा ।
हीरागर, वइरागर फूलफगर, टसर, खसर ॥
चादर, वादर । अबर, पीताबर ॥
नारीकुजर, मसजर । सारभार, रउकार, दाडिमसार,
चउतार । वस्त्र पहिरावरगी इत्यादिक सुविचार ॥
लइ मानुष अउतार, इम करइ भोजनाधिकार,
ते धार लहइ सुजस अपार ॥
इति भोजन विधि वर्गानम् ॥(कु)

१५ घृत

सद्य तायिउ, धारइ नामिउ ।
मजिष्ठा वर्ग, वधारइ कर्ग ।
सरहरी धार, प्रीगइ जीमगहार ।
सौरभ्य अमेयु, नासा पुट पेउ ।
साक्षात अमृत, इस्यु घृत ॥

१६ धान्य (१)

साल, माल, गोहूँ, जव, ज्वारि, तूर, चगा, चवला, वटला, मूग, मोठ,

माष, मसूर, मासो, मणचो, बरटी, बाठडो, समलाईया, कागणी, कोदरी, कूरी, कुलथ, वेकरियो इत्यादि धान । (वि)

१७ धान्य (२)

जव, गेहूँ, साल, व्रिही, कोदरी, मूग, मोठ, चिणा, चौला, उडद, कागडी तिल, मसूर, तूर, अलस, कुलथ, तूअर, क्कार, (ग्वार) मक्की, माल, वरटी, बाजरी, मणची, सही, रायमख, वटला, काछाण, राल धान्य नामा ॥ इति सभाश्टृगार सपूर्ण । स १७६२ वर्षे फाल्गुन सुद सप्तम्या तिथौ भृगुवारे गणिमहिमाविजयेन लिपि कृताद श्रीरस्तु ॥
श्लोक ग्रथाग्रथ ७५६ एभि ग्रथ सख्या जायते ॥

(मोतीचदजी सग्रह प्रति)

१८ लाडू (१)

कसार ना लाडू, कसमसिया लाडू, कसेला ना लाडू,
मोतीआ[1] लाडू, कीटीना[2] लाडू, केना[3] लाडू,
मगदीआ लाडू, मोतीआ लाडू, मेथी ना लाडू,
मूग ना लाडू, मेदा ना लाडू, चोखा नू लाडू,
सिह केसरिया लाडू, ओषधीया[4] लाडू, अडदीया लाडू,
आसध[5] ना लाडू, तिलना लाडू, त्रिगडू ना लाडू,
लाखण साही लाडू, धाणी ना लाडू, कुली ना लाडू,
कूलरिया लाडू—एहवी विविध प्रकार ना लाडू ।

१९ मोदक (२)

॥ तदनतर ॥ शुद्ध खानइ दलवाडइ केलव्या । घृत वर्ण पाकि तल्या । शर्करा पाकि बाध्या । मरी एलची ना चमत्कार ।
काचा कपूर ने वासे वास्या । स्थूल वाटला महोज्वल ।
इसा सेवईआ लाडू । दल लाडू । बीबा लाडू । मोतिआ लाडू
बाजण लाडू । नाद हल । अमृत हल । खल खड । भल खड ।
प्रमुख मोदक मुक्या ।
जाणिइ किरि भोज्य लक्ष्मी तणा क्रीडा-कदुक हुइ जिस्या ।
अथवा सुकृत द्रुम तणा परिणाम मनोहर फल हुइ जिस्या ।

---

१ मोतीचूर ना लाडू । २ कीटिया लाडू । ३ कणक ना लाडू ।
४ उखदीया लाडू । ५. आसविया लाडू ।

परीसणहारि तणा पयोहर सपूर्ण हुइ जिस्या ।
अमृत घट हुइ इस्या मोदक शोभइ ॥

२० सुंखडी (१)

पुडी, पैडा, पापडी, पात, पापड, खाजा, खाडकनेली, खाडखुरमा, दहीथरा, दमीदो, दोठा, गूदगणी, गाठिया, सकरपारा, सुहाली, गूदवडा, गूदगणा, गूजा, गुलपापडी, गलेफी, मुरका, मोतीचूर, सोठ, साकली, सेव, सेवगाठिया, साबूणी, सीरो, साकरिया चणा, हेसमी, घेवर, फीणी, जलेबी, पतासा, कल्याणसाई, बादरसाई, तल्या, ताया, कुल्या, करकरा, मोला, मीठा, गल्या, गलेफ्या, चीगटा, चूचूता, भरया, भरभराया, एहवी सुखडी ।

२१ सूंखडी नाम (२)

पूडी, पेडा, पापड, पापडी, खाजा, खाड, खुरमा, दहीथरा, दमीदो, दोठा, गुपचप, गुदगणी, गाठिया, गुद वडा, गुजा, गुल, गलेफी, मुरकी, मोतीचूर, सोठ,साकली, सेव, सकरपारा, सुहाली, सीरो, साकरीया चणा, हेसमी, घेवर, फीणी, जलेबी, पतासी, कल्याणसाही, तल्या, तावा, कुला, करकरा, मोला, मीठा, गल्या, गलेक्या, चूचूता, भर्या, भरभर्या एहवो स्वाद ।

२२ सूंखडी (३)

॥ सूखडी वक ॥ उपलिइ मालि । सुवर्णमय स्थालि । प्रशस्ति कालि । छोहारि, खारिक । वेकटा । वरसोला । हीरागल । साकर । किसमिसि दाख, दीपशाखा । खजूर । सरग । नारग । तरुण करणा । सरस पनरु । सारस हकार । अमृत निर्यास । अजास । सूनेला । राजेला । नारसखेला । केला तणी कातली । बीजोरा तणी चडउटी । नालीयर नी खडहडी । दाडिम नी कुली । वारू चारुली । घड्या सीघोडा । मनगमी वायमी । इक्षु दड । अखोड खड । निउजा । जबीर । मुखा स्वादन प्रभृति स्वादइ नी पन्न फलहुलि ॥ (पु०)

२३ सालिजाति (१)

सुगध साल, सुवर्ण साल, कुकणी साल, देवराजी साल,
रायभोग साल, सुद्ध साल, कमोद साल, कमल साल ।
रामुकी साल, धोली साल, राती साल, पीली साल,
जीरा साल, राम केलि साल, पुनासी चोखा, अखड चोखा ।
राजोरा चोखा, साठी चोखा, दूढणिया चोखा, रायपाल चोखा ।
सुखदासी चोखा, सोनल साल, गरडी चोखा, एहवा चोखा ।

२४ सालि नाम (२)

सुगध, सुवर्ण, कुकणी, देवजीरी, राजोरा, जीरा, रायभोग, पाथरिया, साठी, कमोद, कमोल, धोली, पीली, राती, काली, इत्यादि सालि ।

(कौ०)

२५ शालि (३)

॥ तदनतर ॥ रक्त शालि । महाशालि । सुवर्ण शालि । सुगध शालि । तिलवासी शाली । राजान्न शालि । साठिआ प्रभृति । सुमनीप्सित ।

अखड शालितणा चोखा । दूबली खाडिआ । बाली छडसा । निपूती वीणिउ । अलवेसरि आणीउ । सुमनि सोहिउ । फूटरीइ धोयउ । वीहती चालिउ । तरुणी हईइ घग देई उसायउ । भक्ति समारिउ ॥

२६ तंदुल (४)

कापिउ दातु जिम ऊमिलता,
वयरागरउ हीरउ जिम झलकता ।
वडी खाडिया, बाली छडिया
त्राटि पाटि वीणिया, सख कुदावदात
सुगध, अगुलप्रमाण, सुरभि, कलमसालितणा अखड तदुल (पु. अ)

२७ कूर (५)

उन्हउ । तीन्हउ । सरहरउ । भरहरउ । अणीआलु । सुहालउ । सरस सोहामणउ । ऊजलो जिस्यो केवडउ । ऊडेरी जेवडउ । बूबलइ पेटिं पइसतु फूटी नीसरइ इस्यु कूर । घृत पहित तणइ सयोगइ । मन तणी रगि ।

२८ दालनाम (१)

मूग नी, मसूर नी, चवलानी, बटलानी, ऊडद नी, मोठ नी, तूअर नी, इत्यादि ।
फीकी मडोरा मग तणी दालि ।
फोतरे छाडि, हलूइ हाथि ऊखलइ खाडी ।
त्रिछडकी, घखइ पाणी सीधी ।
वानइ पीली, नेत्र सीली ।
जीमता स्वादिष्ट, परीसणहारि अभीष्ट ।
परीसि दालि ॥ (पु)

२९—व्यंजन (१)

बडा, सालेबडा, सागरि, मिरि, माजरी ।
वालहलि, अबहलि, पूरण, सूरण, इडरी वडी
पापड, ककोडा, घीसोडा, कारेला, चीभडा, कोठीभडा,
आदा, करमदा । प्रमुख व्यजन ।

(१४२ जे०)

३०—व्यंजन (२)

पुष्पागरु, नीलागरु
गजवडि, तुरगवडि
हसवडि, राजवडि
सोवन, पारेवा
मेघवना, पटहीर
सभारावा सोनछला, प्रमुख चीभडी
कोटीमडी घूसेडा
आदा करमंदा, प्रमुख व्यजन ॥

पु अ

३१—साक नाम (३)

सागरी, मोगरी, चोराली, चोला, खेलरा, काकडी, मतीरा, टींडसा, कोहला कालिगडा, काचरी, कोचला, सरघूवो, आरीया, तोरीया आवली, आंबोल, आल, आमला, करमदा, कैर, ककोडा, करेला, फोग, चीलडी, पातोड, सीरावडी, वडी, भुजिया, चीव, परवल, किदूरी प्रमुख ॥ (कौ)

३२—साक सालणा (४)

सागरी, मोगरी, चोलेरी, चोला,[१] चिणा, छोला[२], सेलरा, सरथूउ[३], सिरजणो, आरीआ, तुरीआ, आबिली, आला, आबोल, आमला, उलिया, टिडूरा, टिडसा, कोहला, कालिगडा, काचरी, कोचला, काकडी, काजी, केला, करमदा, कइर[४], ककोडा, कारेला, रायवडी, वडी, वटला, वैगण, पातोडी, परवल, वालोळ, फोगफली, मूग[५], मतीरां, मेथी, गलका[६], भुजिआ, प्रमुख, अनेक जाति—

१ चवला । २ छोता । ३ सरगुउ, सरधूओ । ४ केर । ५ मूगी । ६गलीया ।

खारा, खाटा, मोथळा, मीठा, कडुआ, कसायला, तीखा, तमतमा, मधुरा, मिरचीला, फोलालां, रायता[1], धुगारया, वधारया, तलरा, अथाणो आबिलीयाला काचा, पाका, सूका, नीला, ऊन्हा, टाढा, बोहल्या, छूद्या, सेक्या, कास्या, कलकलता, सलसलता, चूचूता, छोल्या—एहवा सर्व साक नी जाति।

३३—बड़ा (५)

॥ एव विध वडा ॥ मेथीआ वडा। काजिआ वडा। हस्तिपद वडा। मालीआ। दालिआ। सु तल्या पापडी। मुगवडी। उडद बडी। छमकावी वडी। पलेह वडी। सूंतली वडी। आखामिरी। फूलवघार नइ। वासि वास्या पूरण। वघारीइ धरी। मिरी मरी खाडमी।

३४—शाक (६)

अनेक वानी पलेव। छमकावी डोडी। टल टलतां टीडूरां। कलअलता कोसूभा। सुड-सुडती सींग। डुसडुसतां डोडिका। छमछमती भाजी। रूडा रायता। चमचमा चीभडा।

पत्रमय। पुष्प मय। फल मय। मूल मय। त्वचा मय।

वात हर। पित्तहर। श्लेष्म हर। रोचक। दीपक। आप्यायको। कामुक। तिक्त। कटु। कषाय। आम्ला। मधुर। जारक। अनेक गुण मय शाक परीस्या।

३५—अथाणा

आला, काचा, पाका, सूका, नील्हा, उन्हा, सेक्या, वास्या, कलकलता, सलसलता, बलबलता, चूचूता इत्यादि

३६—भाजी

तांदळजा नी भाजी, पोचीआ नी भाजी,
चील नी भाजी, चिणानी भाजी,
पुआडीयां[2] नी भाजी, वाथला[3] नी भाजी,
राईनी भाजी, सरसव नी भाजी,
अफीम नी भाजी, मेथी नी भाजी,
सूआ नी भाजी, रजायण[4] नी भाजी।
मूळा नी भाजी, चदलेई नी भाजी,
लालरी नी भाजी, एहवी भाजी।

---

१. राईता २ पु आण नी भाजी ३ बथुआ नी भाजी ४ रायणी नी भाज*

३७—घोल

॥ अनंतरु ॥ प्रवणोल्वणी रसाल नाना वाटला । पाणीना ।
कचोला मूक्या ॥

तदनतर ॥ प्रधान । वारूगल्या घोल । सुदधि निष्पन्न । सुवासिवासित । इस्या घोल परीस्या ॥

ते किस्या ? दही सू कढिकढ्या । सु जाढि जाम्या । सुहत्थि हत्थ सपन । लबथव थब कपडिग्र । तदहि अकह न सभरइ ।

कडुआ । कसायला । तीखा । मधुरा ।

जिसी पडोसणि नी जीभ तिस्या कडुआ । जिस्यू गुरु तणो उपदेश, तिस्या कसाइला । जिसी सोकिनी जीभ, तिस्या तीखा । जिस्यु मान उचित, तिस्या मधुरा ।

त्रिहु वानी नी छासि-धणदे । जगदे । पचधर ।

लापसी । खाड माडा । पूरण माडा । दाडिमीआ माडा । कुरु कुरु माडा । पत्र महा प्रधान । एलची पाटला । सीकरी वास वासित । सुगध सीतल । महा मनोहर । एहवा पांणी ॥

३८—पक्वान्न (१)

केला, बरसोला
खर्जूर, बीजपूर
आबिली, दाडिमकुली, चारउली
इक्षुदड, द्राक्षाखड
मोदक, गुडमोदक
इसा पक्वान्न ॥

३९—पक्वान्न (२)

पापडी, चुडहडी, काकरिया, सलवलिया, कसार, घृतपूर, सुहाली, सेब, साकुची सातपुडी, खडमोदक, गुडमोदक, दोहठा, दही वडी, माडी मरकी, सिंह केसर, पच धार लपनश्री । एव विध पक्वान ॥ छ ॥

९४४ जो

४०—पक्वान्न (३)

खडोतली, सुहाली, सेव, गखा, मोदक, माडी, मुरकी, फीणी, पापडी, साकुची, साकुली, खीरि, खाडु, घृतु, लचलची लापसी, सालिदालि । घृत नालि, व्यजन पालि ।

१ बोर

घलेह, पानक । माधुर, चुरासी सालण । चउसठि खाट । बीस तेल ना छमकाविया । दाधी, भूगी । इडरी बडक । पापड शालि पापड । कुर । दधि, दुग्ध । घोलडाहि ॥ ६२ ॥ जै

४१—पक्वान्न (४)

॥ तदनतर ॥ सतपुट जिस्या हुइ छाजा, इस्यां हुइ खाजा ।
मसमसी मरकी । शशि विशद सुहाली । फगफगां फीणा ।
दुग्धवण दही वडा । घृत वर्ण घारी । सुकुमाल । सुंहाली ।
अखड माडी । शर्करा निचित साकुचीस्यउ तल्या सेवत्ता ।
वारु दही वडी । मागलकीआ । प्रमुख पक्वान्न परीस्या ॥

४२—पाक

चारोली पाक, चाखी पाक, अखोडपाक, बदामपाक, केसरपाक,
करमदा पाक, निमजापाक, पिस्तापाक, केलापाक, कोहलापाक,
केरी पाक, किसमिसपाक, कोचपाक, गूदपाक, गोखरूपाक,
गुलाबपाक, अफीमपाक, आबापाक, आमलीपाक, आसबपाक,
एलचीपाक, सुठपाक, सेलडीपाक, विजयापाक, सीधोडापाक,
सोपारीपाक, दूधपाक, दहीपाक, दहीथडापाक, द्राखपाक,
विरहालीपाक, पिपरीपाक, तनमनीपाक, त्रिगडूपाक,
भिलामापाक, लसणपाक, हरडेपाक, मुसलीपाक,
नालेरपाक, विजोरापाक, जावत्रीपाक, जायफलपाक,
बडबोरपाक, खारिकपाक, खलखलापाक, खुरमापाक,
हींगलूपाक, लविंगपाक, लींबूपाक, महुडापाक, मिरीपाक,
चणापाक, फूलपाक, फीणीपाक, शतपाक, सहसपाक,
लक्षपाक, कोटिका पाक, कनकबीजपाक इत्यादि जातना पाक ॥

४३—पांणी (१)

सुगध केवडाना, काथाना, कपूरना, पाडलना, चदनना, एलचीना, बालाना गुलाबना, पालर पानी, गगोदक, शुद्धपाणी इत्यादि (कौ.)

४४—पांणी (२)

सुगध पाणी, केवडा पाणी, काथा पाणी,
कपूर पाणी, पाडलना पाणी,

चदनना पाणी, एलचीना पाणी,
वालाना पाणी, गुलाबना पाणी,
पालर पाणी, वाकल पाणी, गगोदक पाणी,
एहवा पाणीनी अनेक जाति ॥

४५—मेवा (१)

नालिकेर, सहकार । जाबू, बीजपुर ।
नारिंग, करणा, कपित्थ, द्राखा, खर्जूर ।
खारिक, अखोड ।
वायम, दाडिम ।
राजादन, वारुकलिका ।
कदलीफल, पूगीफल ।
प्रभृति फलुहलि ॥ ६१ ॥ जै०

४६—मेवा (२)

केलां वरसोलां, खर्ज्जूर, बीजपूर, आम्बिली, दाडिमकुली, चारउली, इक्षु-टड, द्राखाखंड, आंबा, रायण अखोड, वाइम, निमज्या जरगोजा ॥छ॥ इसा भक्ष्य ॥१४३॥ (जै०)

४७—मेवा (३)

अखोड, अगूर, किसमिस, छुकेला, केला, कमरख, अनार, अखरोट, आलु, अजीर, बदाम, बिही, बिजोरा, बरसोला, खजूर, खलहला, खारिक, खरबुजा, खिरणी, फालसा, नारगी, निमजा, पीस्ता, सेव, सहतूत, सफलजल, सदाफल, श्रीफल, सोपारी, सिंघोडा, सरदा, चारोली, चारुबी, तूत, तरबूज, द्राख, फणस, फाल, जरदालु एहवो मेवो ॥

४८—मेवा नाम (४)

खारक, खोपरा, किसमिस द्राख, विदाम, पिसता, निवजा, केला, कमरख, अगूर, अनार, अखरोट, आलू, अजीर, वीहि, विजोरा, वरसोला, खजूर, खलहल, खरबूजा, खिरणी, नारगी, सेब, सहतूत, श्रीफल, सोपारी, सिंघोडा, सरटा, चारोली, फणस, जरदारू एहवा मेवा (कौ०)

४९—मुखवास (१)

विचित्र पत्र । अतिस्थूल पूगीफल । परत्र प्रतिकूल सौगधिक । ताबूल, कपूर वास वासित मिति भद्रम् ॥ (पु०)

५०—मुखवास (२)

पान, काथो, चूनो, सोपारी, लवग, डोडा, एलची, जायफल, जायपत्री, तज, तमालपत्र, खेखडी, खइरसार, कपूर, केसर, चिणकबाब, कस्तूरी इत्यादि मुखवास ।

५१—भोग्य

तेल, तबोल, चूआचदन, कपूर, केसर, कस्तूरी, कसबोही, मर्दन, उद्वर्त्तन, न्हावा, धोवो, सोहवा, सिणगारवा, पालवा-पोसवा, पहिरवा, ओढवा, खावा, पीवा, इत्यादि भोग्य ।

५२—सुगंध वस्तु

केसर, सूकड, चूऊ, चदन, अबीर, जवाट, गुलाल, मोगरेल, चापेल, जाचेल, केवडेल, करणेल, कपूर, कस्तूरी, अतर इत्यादि सुगध वस्तु ।

५३—सुगंध तेल

केवडिओ तेल, कल्पकरण तेल, कुष्टकालानल तेल, कनकबीज तेल, करज तेल, सरसीओ तेल, ओषधीउ तेल, अर्धांग तेल, निगुडीओ तेल, निबोली-तेल, धूपेल तेल, विषगर्भ तेल, वाघेल तेल, भीडीनु तेल, भीलामा तेल, पातालयत्र तेल, मालकागणी तेल, डोलीओ तेल, तिलनु तेल, टोपरेल तेल, करड तेल, सतावरी तेल, चानली तेल, चापेल तेल, दाणेल तेल, अलसिउ तेल, एरडीओ तेल, इत्यादिक तेल ।

५४—वस्त्र (१)

चीनाशुक, पटाशुक ।
गोजीनर्म, नीलनेत्र ।
सचोप, पाटणीपट, पटहीर, विलचलिया ।
मुगवन, माडलिया ।
वइराग, रहीराग ।
जादर, मेवाडबर ।
नेत्रपट्ट, धौतपट्ट, राजपट्ट ।
गजवड, हसवड ।
बोरियावडि, सुवर्णवडि ।
कपूरिया, चउकडिया ।

पोविया, वक्रकोटा ।
राजवटा, महिवडा, नागवटा । प्रमुखाणि ॥ ६३ ॥ जै०

५५—वस्त्र (२)

वस्त्र—एहवा भला वस्त्र पहिर्यां ते केहवा छै ?—सालू, सेला, सीरीसाप, सिणीया, सुर्सी, सलहेती, (सण), सूप सकलात, चौरसा, चीर, चुनडी, चीणी, मीठा, मलमल, छींट, सिदूरी, मखमल, महिमुदी, पामडी, पटका, पछेडी, पाढ, पीताबर, पटोला, पाचपदा, पट्ट, अटाण, अतलस, अधोत्तर, एलाचा, खासा, खेस, खारा, भैरव, बाहदरी, विदामी, दरिआई, दो तारा, घरमा प्रमुख अनेक वस्त्र सोभइ छइ ।

५६—वस्त्र (३)

देव दूष्य । देवाग । चीनाशुक । पट्टाशुक । पट्ट दुकूल । नील नेत्र । पाटूअ । पट्ट हीर । पट्ट साउली । पचराईआ । नर्म खर्व फूल पगर । जादर । नेत्र पट्ट । धौत पट्ट । राजपट्ट । गजवडि । सुवर्ण वडि । हंस वडि । काल पडि । सूहचिआ । कपूरिआ । इत्यादि वस्त्राणि ॥ छ ॥ पु०

५७—वस्त्र (४)

वस्त्रनाम :—

सालू, सेला, सिरीसाप, सणीया, सूसी, सलेती, सूप, सिकलात, चोरसा, चीर चूनडी, चीणी, सिन्दूरी, छींट, मीठा, मलमल, मुखमल, मिसरु महमुदी, पामडी, पटका, पछेडी, पाट पीतबर, पटोला, पट्ट, अटाण, अतलस, अधोतर, इलायचा, खासा, घिलू, बाफता, अदरस, भैरव, डोरिया, खेस, खाखा, वहादरी, बिदामी, दरीयाई, दोतारा, चोतारा, कथीपा, मसजर, झिलमिल, अवरगजेबी, कीमखाप, चकला, सीरसकर, थिरमा, काला, पीला, योला, नीला, राता, पचवर्णा अनेक वस्त्र पहिर्या छइ ॥ ४ ॥ कौ

५८—परिधापनिकोपयोगी वस्त्र वर्णन (५)

अदूष्य	देवदूष्य	रत्नकम्बल	खीरोदक
तनुबध	शिरबध	कमरबध	कठ
पीठ	पइठाणी	अटाण	नर्म्म
खर्म्म	यज	प्रताप	जादर
साउला	चउरसा	उलवेला	मेघाडबर

दाडिमसार हीरागर वइरागर फूलवगर
चीर कथीवा सानबाफ जरबाफ
कमखाब अधोतरी तनसुख मनसुख
गगाजल खानजाई अमृती चीनाशुक
पट्टाशुक गजवेडि सुवर्णवेडी हसवेढि
नीलवडि कालवेडि नीलनेत्र मूगवन्ना
सचोप पाटखी पटा पाट्ट
पटबर पट्टकूल पीताबर नारीकुजर
वालाचूनडी घाट कमखा दरीयाखानी
चूलिया सदली नाटी अतलस
दरीयाई लाहि नाटवटा धौतवटा
चक्रवटा चारसा हसलीया पोपटिया
पोपतिया भइरविया चापानेरिया खाडकी
आसाउली कोची सालू भइरव
बास्ता सिरीसाप श्रीबाप टूकडी
खइरावाटी सम्माणा थानेसरी धरणगामी
सोनारगामी खासा, भूना दहीकोड दुगजउ
दु तारउ चउ तार चुपदा गउडीया
टसरिया पूरिया सिखीया मिणीया
एरडी, चाप चारोलिया चलवलिया प्रवालिया
गजिउ कपूरधूलि अर्कतूल पाम्हडी
खेस रोकार धटी मुहमूटी
कसबी चीरा मुकमल नीलक
तास्ता दुरगा मसज्जर चीनी
सूसी ढोटी साडी सेलउ
खासर खरवास सूप सकलात
लोवडी कबल लोलिवा भोटकबल
नेपाली काश्मीरी मावा कोरी
बोरी सैत्रुंजी गिलम त्रापड
खरडी पाटी बोरीया कमलवन्ना (१३०) (सू०)

५६—स्त्री वस्त्र

चोलीवरणा, कसबी, कसीदा, कमखा, कुसूबल, पटोली पटोला, पीताम्बर, घाट, साडी, सखली, अमरी, बाइल, जूई, राता, पीला, घोला, काला इत्यादि स्त्री ना वस्त्र।

६०—आभरणानि (१)

हार, अर्द्धहार।
त्रिसर, चतुःसर।
षटसर, अष्टसर।
नवसर, अढारसर।
एकावलि, कनकावलि।
मुक्तावलि, विज्ञावलि।
प्रवरावलि, सूर्यावलि, नक्षत्रावलि।
कटीसूत्र, रसनासूत्र। मुकट।
पट्ट, शिखर चूडामणि कुडल कटक।
ककण, अगद।
मुद्रानदक, दशमुद्रक।
अगुलीयक, हस्तागुल कटब।
कर्णापलिका, सकलिका।
पादका, ग्रैवेयका।
प्रभृति आभरण ॥६४॥ (जै०)

६१—आभरण (२)

हार, अर्द्ध हार, प्रालब, प्रलव, मुकुट, कटक, कंकण।
केयूर, वाहूरां, पीडला, टोडरा, नूपुर, कुडल।

एकावली, कणकावली, मुक्तावली, सूर्यावलि, चन्द्रावली, नक्षत्रावली, सौभाग्यावली, श्रोणिसूत्र, काची कलाप, चूडामणि, अगुष्टक, अगुलीयक, मुद्रिका, नवग्रहा। बहुरखा, वलय, वालला, नगोदर, नागुला, खीटला, छवीटिया, घडि, मोतीसरी ॥ ६८। (जो.)

६२—आभरण (३)

आभरण

हार, अर्द्ध हार, प्रलब, प्रालब, एकावलि, मुक्तावलि कनकावलि, रत्नावलि, सूर्यावलि, चन्द्रावलि, झलक, तिलक प्रमुख आभरण ॥ (पु० अ०)

६३—आभरण (४)

अणवट, अगूठी, वीछीया, पोलरी, कडी, कांबी, कांकण, कटिमेखला, झाझर, बाजूबध, बहिरखा, पूची, छाप, वींटी, हार, अर्द्धहार, दुलडी, चौकी, माला, मोरडी, धडी, चीरु, साकली, तेहड, जिहडा, पाइल, मोतसिरी, सीसफूल, तलो, नवरग, नवग्रही, बोर, अकोटा, झाल, खवगाली, खीटली, पानडी, नकफूली, नकवेसर, सिधो, घूघरी, राखडी, सहेली।

टीकी, काजल, कूकू, हीगलू इत्यादि ॥ (कौ)

६४—पुरुष अलंकार, स्त्री आभरण (५)

तदनतरि **पुरुष अलकार** पहिरावइ तन्नामानि। १ हार २ अर्द्धहार ३ त्रिसर ४ चतु सर ५ अष्टसर ६ नवसर ७ आरसर ८ एकावलि ९ मुक्तावलि १० ब्रजावलि ११ नक्षत्रावलि १२ टकावलि १३ प्रावलि १४ झूबणा १५ पदकडी १६ माला १७ कुतरी १८ वाली १९ वेढला २० तुगल २१ मोरला २२ कडी २३ गठोडा २४ कर्णपूर २५ कुडल २६ पट्ट २७ मुकुट २८ चूडामणि २९ छोर ३० बाजूबन्द ३१ वहिरखा ३२ पेसदस्नी ३३ गिजाई ३४ नवग्रहु ३५ हथसाकला ३६ दसागुलिक ३७ मुद्रा ३८ अगुलिमुद्रा ३९ वेढ ४० वींटी ४१ वेलिउ ४२ नवघरी ४३ छाप ४४ कडली ४५ कटिमेखला ४६ कन्दोरा ४७ कडी इत्यादि।

स्त्री आभरण—१ राखडी २ वेणी ३ सहेलडी ४ झाबउ ५ सइथउ ६ टीलउ ७ चादलऊ ८ चाक ९ शीशफूल १० फूली ११ मोरिला १२ पनडी १३ अरहट्ट १४ नकवेसर १५ काटउ १६ नकफूली १७ कुडल १८ घडि १९ बींटला २० अकउटा २१ नागला २२ तांडक २३ बाली २४ हारादिक २५ नींब्रोली २६ मादलीया २७ हास २८ चीड २९ दुलडी ३० सांकली ३१ वालिया वालमी ३२ चूडो ३३ काकण ३४ कांकणी ३५ बहिरखा ३६ प्रहुचीया ३७ हथवालडा ३८ काचूवा ३९ कटिमेखला ४० झाझर ४१ नेउर ४२ कडला ४३ नेवडि ४४ घूघरी ४५ घूघरा ४६ पाउलि ४७ कावी ४८ वींछीया ४९ मुद्रा इत्यादि स्त्रीजनाभरणा नामानि। (सू.)

६५—धातु नाम—

मृगाक, धातबर्द्धन, बग, बगेश्वर, पारद, अभ्रख, ताम्र, ताबेश्वर, तेजानो, रूप रसरम, रमाग, अमलगोली, बिजया, पुडी, लोहचूरण, लोहसार।

पचर, पचरन्तिरस, छमाखिक्य, रसपाचक, रसरूप औषध, वेषव, इत्यादि धातु नाम, (वि०)

६६—चाँदी का कटोरा

उघसिय नीघसिय पोतासिय चोख चसखं
ऊजल नीमल जस पूनिम तणउ चन्द्र मडलु
तिसउ रूपा नउ कचोलउ । (पु० अ०)

६७ रत्न (१)

पद्मराग	पुष्पराग	मकरतमणि	कर्केतन
वज्र	वैडूर्य	चन्द्रकात	सूर्यकांत
जलकात	नील	महानील	इद्रनील
रागकर	विमबकर	ज्वरहर	रोगहर
शूलहर	विषहर	हरिन्मणी	चूनी
लोहिताक्ष	ममारी	नल	हसगर्भ
विद्रुम	अक	अजनरिष्ट	मुक्ताफल
अहिमणि	चिंतामणि ।		

इति रत्न जाति नामानि ॥ (१२४ जो०)

६८ रत्न [२]

इंद्रनील । महानील । पद्मराग । पुष्प राग । लोहिताक्ष । कर्केतन । मरासगल्ल । पुलक । कौस्तुभ । सश्रीक । रत्नाकर । श्रीपति । देवानद । पुष्टिकर । ज्योतिकर । गुणमालि । सोगधिक । कर्कोटक । हस-गर्भ । अक । वरिष्ट । शिवप्रिय । सौभाग्य कर । विषहर । अजन । पुलक । अरिष्ट । अमालि । तिकर । सूरल । शत्रुहर । जल निलय । पदक । सुभग । चद्रकाति । सूर्यकाति । वैडूर्य । सूर्यमणि । चद्रप्रभ । सागर प्रभ । भद्रकर । प्रभकर । मद्रकर । अशोक । प्रभा नाथ । इत्यादि रत्न ॥ छ ॥ (पु०)

६९ रत्न [३]

नील, महानील, चन्द्रकाति, सूर्यकान्ति, बज्र, वैडूर्य, कर्केतन, ज्योतीरस, सौगधिक, प्रमुख अशेष, रत्न विशेष । (पु० अ०)

७० रत्न [४]

चितामणी, वैडूर्य, सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, जलकात, कर्केतन, नील सासग, लोहिताक्ष, मसारगल, हसगर्भ, पुलक, प्रवाला, सौगधिक, सुभग, स्फटिक

ज्योतिर्मय, तरुप, अजण, अजण पुलक, अकमणी, मणिरिष्ट, मरकत इत्यादि जाति ना रत्न। (वि०)

७१--रत्न (५)

अश्वरत्न, गजरत्न, पुरुषरत्न, स्त्री रत्न।

पद्मराग, पुष्पराग, माणिक, गुरुडोद्धवोद्गार, मरकतरत्न, कर्केतन, वज्र, वैडूर्य, चद्रकात, सूर्यकांत, शिवकात, चद्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाथ, अशोक, वीत अशोक, अपराजित, गगोदक, मसारगल्ल, हसगर्भ, पुलग, सौगधिक, सुभग, सौभाग्यकर, विषहर, धृतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अजन, ज्योतिरस, शुन्नरुचि, स्थूलमणि, गोमूत्र, गोमेद, लसणिया, नीला, तृणचर, वज्रधर, षटकोण, कणी, चापडी, पीरोजा, प्रवाल, मौक्तिक प्रमुख रत्ने करी हाट भर्या दीसै छइ॥ (पू०)

७२ रतनमाला

आद श्रीनारायणजी।

देवां वडो तो देव	१	राजारिख तो विश्वामित्र	१६
वडा वडी तो प्रथमी	२	काल तो महाकाल	२०
ब (बहु) रतना तो विसधुरा	३	गुणवत तो गुणेस	२१
देवता तो विश्वनाथ	४	जखराव तो कुमेर (कुबेर)	२२
देवी तो पार्वती	५	गधर बीना तो तुबर	२३
त्रबध कामनी तो गगा	६	पखराव तो गुरड	२४
टईत टलण तो कृष्ण जी	७	नगरी तो अमरावती	२५
खेत तो आदखेत	८	पुहप तो पारजातग	२६
महाखेत तो वाणारसी	६	ब्रख (वृक्ष) तो कल्पवृक्ष	२७
पछम खेत तो प्रभात	१०	हस्ती तो ऐरापति	२८
मुकत खेत तो गया जी	११	तुरगम तो उचास	२६
सिध खेत तो श्रीधान	१२	मडारी तो धनाढि	३०
आद खेत तो पोहकर	१३	पुरष तो पुरुषोतम	३१
तीर्थराव (तीर्थराज) तो प्राग (प्रयाग)	१४	आरभ तो राम	३२
व्याकरण तो पु न्पान	१५	परतग्या पुरण बो परसराम	३३
वेद वत तो ब्रह्माजी	१६	अप्रोहित तो सूक्र	३४
ब्रह्मारिख तो दुरवासा	१७	अहकारी तो रणो रावण	३५
कलहप्रिय तो नारद	१८	माण तो दुर्जोधन	३६

धनखधारी तो अरजन	३७	महाधनख तो वाणसुर	६८
अदष्टात तो भीवसेन	३८	कृष्णभक्त तो पैह्लाद	६६
खत्री तो दशरथ	३६	सहासीक तो विक्रमादीत	७०
आरोहित तो भगदत्त	४०	सत तो हरचद	७१
निरवाहण तो कुभकरन	४१	जोगणी तो हरसधी	७२
सुधापत तो इन्द्रजी	४२	सिध तो आदनाथ	७३
स्याम भगत तो करण	४३	जती तो गोरख	७४
बध (वीधु) भगत तो लखमणजी	४४	सती तो ककमारी	७५
मत्रभगत तो सदावछ	४५	तसकर तो खापरो चोर	७६
भरतार भगती तो दामोवती	४६	भाषा तो सस्कृत	७७
जुग तो सतजुग	४७	पख तो पितर पख्य	७८
चक्रवत तो मानधाता	४८	परवत तो देवालक	७६
वास वसतो तो जीव	४६	वार तो आदीत	८०
सुरता तो मनतत	५०	तिथ तो अमावस	८१
अरथ तो जागवड	५१	वरत तो एकादशी	८२
होमदेव तो होतासण	५२	तरुण तो कसप	८३
विप्रदेवता तो ब्राह्मण	५३	जोतकी तो तोखड	८४
पुत्रवती तो सावत्री	५४	उग्रग्रह तो राह	८५
पापहरणी तो गावत्री	५५	समरथीक तो मेघमाला	८६
गिगनाधपत तो आदीत	५६	अतरत तो जीव	८७
सोम सीतल तो चद्रमा	५७	मास तो कारितक	८८
बिह्माणीक तो वेद	५८	रुत तो वसत	८६
वेदायन तो सदापत	५६	सुरत तो मगरधज	६०
बबाल तो नेत्रह	६०	प्रीत तो मद प्रीत	६१
क्रम दुलभ तो स्त्रीचिरत	६१	वसतर तो सपेत	६२
धूरत तो माल चक्रवत	६२	अत चचल तो बानरो	६३
फणदा तो सेस	६३	वेगो आवै तो मन	६४
परबत तो मेर	६४	रुपवती तो न्यासका	६५
दातार तो दधीच	६५	चख तो अतर ज्या	६६
मीच तो हणवत	६६	परमला तो कस्तूरी	६७
गोत्ररिषी तो कासिप	६७	उदगारता तो कपूर	६८

श्रृंगार तो तबोल	६६	साच तो राजा जुधिष्ठिर	१२०
चता तो राजचाता	१००	दरसणाग तो भाटराजा	१२१
वेध तो राजवेध	१०१	चतरग तो चारण	१२२
राजा तो भोजराज	१०२	माली प्रिया तो माधव	१२३
राव तो परूर राव	१०३	उडण तो नदणवण	१२४
दुख तो दलद्री	१०४	दान तो अन्नदान	१२५
आगारी तो कपा	१०५	भिख्या तो किण भीखा	१२६
विनासकारी तो पाप	१०६	सीख तो गुररी सीख	१२७
सत तो सतोष	१०७	अखई तो आकास	१२८
ग्यान तो मोख	१०८	अनत तो ऊतरपथ	१२६
सती तो सीता	१०६	खड तो भरत खड	१३०
नदी तो गगा	११०	जुली तो लका	१३१
उछह तो पुत्रवती	१११	अतरथ तो भरभज सेव	१३२
प्रभावती तो गोदवती	११२	श्रेष्ठ फल तो अन्न	१३३
रतन तो माणक	११३	ओखद तो अमृत	१३४
समद तो खार समद	११४	कूड तो कपलामोचन	१३५
पुत्र तो भागीरथ	११५	कठण तो भैरव	१३६
रथ तो नदीघोष	११६	राग तो भैरुराग	१३७
वेस्या तो कामसेना	११७	कवि तो माघो	१३८
विभोगी तो बछराज	११८	कवि तो कालदास	१३६
सतपत तो आचारज	११६	नक्षत्र तो अभीच	१४०

(अनूप संस्कृत लाइब्रेरी प्रति से)

७३—शैया

मलय चदन छटा छोटित भूमितल ।
ददह्य मान काला गुरु ।
कपूर पारी मघमघायमान ।
पुष्य शय्य निरुपमान स्वर्ग लोक विमान समान ।
उभय पार्श्वोपधान शोभित, मध्यभाग गभीर ।
गगा पुलिन समान, अत्यत सुकुमाल शयनीय । (१५७ जे०)

७४—भवन (१)

प्रधानाहार वस्त्रालंकारैः वात्सल्य वर्णन

श्री युद्धिष्ठिर राजा श्री चद्रप्रभ प्रसाद प्रतिष्ठोपरि साहम्मी वात्सल्य करइ ।

ते केहवइ कि भवनि ?
उत्तु ग तोरण मडप । रत्नमय भूमि । स्वर्ग मय आसन ।
वैडूर्य्य रत्नमय आडणी, न जाइ किणही तै छाडणी ।
माणिक्य मय स्थाल, अति विशाल ।
चउसट्ठि वाटुली, समद आवत्तइ वली ।

७५—घर नी ओपमा

मोटा घर, गया न लागइ कर । वित्त ना डोकर, घणा धानना भर । चिहु खूणे वासइ अगर, सेज फूलनी पगर । मोटा डागला, तिहा जड्या प्रवाला । मोटीसाला, सोना रूपानी टकसाला । मोटा किवाड़, तिहा केलिना झाड । जीमइ प्राहुणानी ओल, घूमइ विलोवणा झलझोल, सूहव नारी करइ रगरोल । साधु नइ दीजै दान, घणा पकवान, उन्हा धान, रूडै वान, दया पालै, दुखिया ना दुख टालइ । भिख्यारी नइ दीजइ अन्न, तोल न पाम्यो धन्न । जाता आवता आदर करइएहवा साहूकार ना घर धन सहित छइ ।

७६—साहूकार रो घर

मोटा घर, गया न लागै कर ।
बइठा न को डर, घणा धान नो भर ।
चिहू खूणै वासै अगर, सेझै फूल ना पगर ।
मोटा आला, तिहा जडित प्रवाला ।
मोटी साल, तिहा खेले बाल ।
घरें घणा सोना ना थाल, जीमे साल नै दाल ।
सुरही घी नी नाल, तोरण मोत्या री माल ।
  ..., सोना रूपा नी टकसाल ।
मोटा कमाड, तिहा केलां ना झाड ।
जीमे प्राहुणा नी ओल, घूमै विलोवणा नी झमझोल ।
सुहृद नारी करे रगरोल, .. ।
साध नै दीजै दान, घणा पकवान ।
ऊन्हा धान, रुडै वान ।
दया पाळै, दुखिया ना दुख टाळै ।
भिखारी नै दीजै अन्न, तो मलै पाम्यो धन्न ।
जाता आवता आदर करै, पुन्य तणा पोता भरै ॥
  एहवा साहूकार ना घर

परिशिष्ट

परिशिष्ट (१)

सभाश्रृंगारादि वर्णन संग्रह

रत्नकोष

सर्वशास्त्र मय रम्य, सर्वज्ञान प्रकाशक
स्वल्प ग्रन्थ सुबोधार्थं, रत्नकोश समभ्यसेत् १
तत्रै शतेन सूत्राणा द्वाराणा सग्रहो यथा—
वाक् विशेषण विज्ञान रत्नकोशे समारभेत् २
त च द्वार शत प्रोक्त, नीति शास्त्र विशारदे
तदह सप्रवक्ष्यामि, बुधाना हित काम्यया ३
रम्याणि भुवनान्याहुः विश्वेत्रीणि यथा क्रमम्
मनुजाना महाश्रेष्ठ, भुवन देव नागयोः ४
त्रिविध लोकम्स्थान, कथ्यमानं तु श्रूयते
दान च मान सस्थान, देव स्थान निगद्यते ५
त्रिविधा भूमिरित्युक्ता उच्चनीच प्रदेशगा
समास्तुभूमि विज्ञेया, मुनिभिः परिकीर्त्तिता ६
त्रिविधा पुरुषा लोके, उत्तमा मध्यमास्तथा
अधमा जग विख्याता, ससारे ससरतिते ७
यथा चिंता वयः प्रोक्ता, पदार्थाश्च त्रयस्तथा
धातु रूपाश्च जीवाश्च तृतीयो मूल सज्ञकः ८
धर्मार्थ काम मोक्षेषु पुरुषार्थो नरोत्तमः
चतुर्थपि प्रधानाय पुरुष. पुरुषोत्तमः ९

रत्नकोश

अथातो वस्तु विज्ञान रत्नकोश व्याख्यास्यामः—

सर्व शास्त्र मयं रम्य सर्वज्ञान प्रकाशकं।
स्वल्प ग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोश समभ्यसेत् ॥ १ ॥

तत्र शतेन सूत्राणा संग्रहो यथा–

१ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि
२ त्रिविध लोक सस्थान
३ त्रिविधा भूमि
४ त्रिविधा पुरुषा
५ त्रय पदार्था
६ चत्वार पुरुषाणामर्था[1]
७ षटत्रिशद्राज वशा
८ समाग राज्य
९ षण्णवतिराजगुणा
१० षट्त्रिशद्राज पात्राणि
११ षट्त्रिशद्राज विनोदा
१२ अष्टादशविध स्थान
१३ चतस्रो राजविद्या
१४ चतस्रा राजनीतय
१५ सप्तविंशति[2] शास्त्राणि
१६ षट्त्रिंशत् दण्डायुधानि
१७ द्विपचाशत् तत्त्वानि
१८ द्विसप्तति कला
१९ चतुराशीति विज्ञानानि
२० चतुराशीति देशा
२१ द्वात्रिंशल्लक्षण स्थानानि
२२ चतुर्विंशति विग्रग्रह
२३ अष्टोत्तरशत मगलानि
२४ त्रिविध दान
२५ पचविध यश
२६ सप्तविधा कीर्ति
२७ नव सा
२८ एकोनपचाशद्भाव
२९ चत्वारो अभिनया
३० चतस्रो वृत्तय
३१ चत्वारो नायका
३२ चत्वारो महानायका
३३ द्वात्रिशद्गुण नायका
३४ त्रिविधा महानायिका
३५ अष्टौ नायिका
३६ द्वात्रिशद्गुण नायिका
३७ त्रिविध[3] सौख्य
३८ चत्वारि सौख्य कारणानि
३९ नवविधा गधोपयोग[4]
४० दश[5]विध शौच
४१ द्विविध[6] काम
४२ दश कामावस्था
४३ विशति रक्तस्त्रीणा लक्षणानि
४४ एकविशति विरक्तस्त्रीणा लक्षणानि
४५ द्वात्रिशतिकामिनीना विकारेंगितानि
४६ चतुर्विंशति असतीना लक्षणानि
४७ षोडश दुष्टस्त्रीणा अपलक्षणानि
४८ अष्टास्त्रीणा अभिसारिकाणि[7]
४९ अष्टौनार्यो अगम्या
५० अष्टविधो मूर्ख
५१ चतुविशति विध नागरिक वर्त्तनम्
५२ त्रिविध[8] (त्रिविध[8]) रूप
५३ त्रिविध स्वरूप
५४ द्वादश विध प्रमोदोपचार
५५ पचविध परिचय:
५६ दशपुरुषाः स्त्रीणा अनिष्टा भवति
५७ दशभि: कारणै स्त्रियो विरज्यते
५८ त्रिभिः कामिन्य: सबध्यते

---

१ पुरुषार्था २ सप्तदश ३ द्विविध ४ पात्रोपभोग ५ द्वि ६ त्रिविध ७ अविश्वास
८ द्विविध ।

५९ सप्तविध कामुकाना क्रीडारम
६० अष्टविध विदग्धाना सुरत
६१ नवविध सुरतावमान
६२ नव शयन गुणा
६३ दशविध पार्थिवाना प्रमोद
६४ चतुर्विध॰ प्रबोध
६५ चतुर्विधा बुद्धि
६६ अष्टौ बुद्धिगुणा
६७ चतुर्विध गन्धर्वं
६८ त्रिविध गीत
६९ षट्त्रिंशद् गीतगुणा
७० चतुर्विध वाद्य
७१ षोडशधा नृत्योपचार
७२ षोडशविध वाक्यम
७३ दशविध वक्तृत्व
७४ षट्विध भाषा लक्षण
७५ पचविध पाडित्यम्
७६ चतुर्विंशतिविध वाद लक्षण
७७ षट दर्शनानि
७८ अष्टविध माहेश्वर
७९ दशविध ब्राह्म्यम्
८० चतुर्विध साख्य
८१ सप्तविध जैनम्
८२ दश[१]विध बौद्ध
८३ चतुर्विध चार्वाक
८४ चतुर्विंशति विध विचारकत्वम्
८५ दशविध गुरुत्व
८६ पच चरित
८७ पचविध पार्थिवाना पालन
८८ सप्तविध उत्तमत्व
८९ नवविधा शक्ति
९० सप्तविधा भुक्ति
९१ अष्टविध अभिमान लक्षण
९२ चतुर्विध वात्सल्य
९३ पच विधो महोत्सव
९४ सप्त विधा प्राप्ति॰
९५ चतुर्वि ाति विध शौर्यं
९६ दशविध बल
९७ दशविध संग्रह
९८ पच विध प्रभुत्व
९९ अष्ट विधो जय
१०० अष्ट विधो भोग
१०१ षोडश शृगारा
१०२ षडविध परिच्छेद
१०३ चतुर्दश विद्यानाम
१०४ चतुर्विधा गति

अन्य प्रतियो मे इस प्रकार नाम और मिले है—

१ षोडश विध नाट्यम्
२ चतुविध परिच्छेद
३ पचविध अप्रभुत्वम्
४ चतुविधा प्रीति
५ षडविधा भोज्यरसा
६ नवविधा भक्ति
७ पचविधा प्रताप:
८ द्विविध चातुर्यम्
९ त्रिविध वीरत्वम्
१० द्विविध कृपा
११ द्वात्रिशत् नायका
१२ नवविधो गात्रोपभोग
१३ दशविध प्रासाद
१४ चतुर्विंशति प्रमोद
१५ चतुर्विधं नाट्यम्

---

१ चतुर्विध ।

इति सूत्राणां संग्रहः

वस्तु-विज्ञानं रत्न-कोशे समारभेत् ।

१ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि—सुर-भुवन, मानव भवनं, नाग-भवन

२ त्रिविध सस्थानम—देवसस्थान, दानवसस्थान, मानवसस्थान

३ त्रिविधा भूमि—उच्च प्रदेश, निम्न प्रदेश, सम प्रदेश

४ त्रिविधा पुरुषाः—उत्तम, मध्यम, अधम

५ त्रय-पदार्था —धातु पदार्थ, जीव पदार्थ, मूल-पदार्थ

६ चत्वार. पुरुषाणामर्थाः—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

७ षट्त्रिंशद्र जवशा —१ ब्रह्मवश[1], २ सोमवश, ३ यादववश, ४ कदम्बवंश, ५ इक्ष्वाकुवश, ६ बाह्लीकवश, ७ चोलुक्यवश, ८ छदिकवश, ६ चाहुवान-वश, १० सैधववश, ११ डाभीवश, १२ चापोत्कटवंश, १३ पडिहार[2], १४ लडुक, १५ राष्ट्रकूट, १६ शक, १७ करटपाल[3], १८ कोटपाल, १६ चडिल्ल[4], २० गोहिल, २१ गुहिलपुत्र, २२ मौरिक, २३ मोरी, २४ मंकुया[5] २५ धान्यपाल, २६ राजपाल, २७ अनग[6], २८ निकुभ, २६ दाडिभ[7], ३० कलिछुर, ३१ दधिमुख[8], ३२ हूण, ३३ हरितट[9], ३४ डोड़, ३५ पमार, ३६ शिव, (सिल्लार, लुलु, पौलिक, कलरव)

८ सप्तागं राज्य—१ स्वामी, २ अमात्य, ३ जनपद[10], ४ भाण्डागार, ५ दुर्ग[11], ६ बल, ७ मित्र[12]

---

१. सूर्यवश २ प्रतिहार, ३ करट ४ लदेल ५ मंकियाण ६. अनक ७. दाभिक ८ दधीचि ६. हरिमोरभ १० देश ११ सेन्या १२ मन्त्र

९ षण्णवति राजगुणा.—१ विद्या, २ विनय, ३ विवेक, ४ विस्तार, ५ सदाचार, ६ सत्य, ७ शौच, ८ सम्मान, ९ सस्थान, १० समाधान ११ सौख्य १२ सौजन्य, १३ सौभाग्य, १४ रूप, १५ स्वरूप, १६ सयोग[13], १७ वियोग, १८ विभाग, १९ सागत्य, २० सपूर्णश्च, २१ सोमत्व[14], २२ सकलत्व, २३ सजलत्व, २४ प्रसन्नत्व, २५ प्रभुत्व, २६ प्राजलित्व, २७ पालकत्व, २८ पाडित्य, २९ प्रणयित्व, ३० प्रमाण, ३१ शरण, ३२ प्रमोद, ३३ प्रसाद, ३४ प्रताप, ३५ प्रारम्भ, ३६ प्रभाव, ३७ परिच्छेद, ३८ संग्रह, ३९ सदाग्रह, ४० निग्रह, ४१ विग्रह, ४२ अनुग्रह, ४३ तुष्टि, ४४ पुष्टि, ४५ प्रीति, ४६ प्राप्ति, ४७ प्रशमा, ४८ प्रतिष्ठा, ४९ प्रतिज्ञा, ५० स्थैर्य, ५१ धैर्य, ५२ शौर्य, ५३ चातुर्य, ५४ गाम्भीर्य, ५५ बुद्धि, ५६ बल, ५७ अधीक्ष[15], ५८ विरोध, ५९ विषय, ६० विशेष, ६१ विनोद, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ काति, ६५, कीर्ति, ६६ विस्फूर्ति[16], ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ महोत्सव, ७० मत्र, ७१ रसिकत्व, ७२ भावकत्व, ७३ गुरुत्व, ७४ स्मृति, ७५ मुक्ति, ७६ युक्ति[17], ७७ आसक्ति, ७८ अनुक्रम, ७९ अनुराग, ८० अभिमान, ८१ दान, ८२ कारुण्य, ८३ दर्शन, ८४ स्पर्शन, ८५ रसन, ८६ श्रवण, ८७ घ्राण, ८८ मर्याद, ८९ मण्डन, ९० उदात्त, ९१ उदय, ९२ उत्साह, ९३ उत्तम गुणा, ९४ दाक्षिण्य, ९५ सत्व, ९६ वश ॥१॥

१० षट्त्रिंशद्राज पात्राणि—धर्मपात्र, अर्थपात्र, कामपात्र, विनोदपात्र, १ विलास पात्र, २, विद्यापात्र, ३ विज्ञानपात्र, ४ क्रीडापात्र, ५ हास्यपात्र, ६ शृङ्गार-पात्र, ७ वीरपात्र, ८ देवपात्र, ९ दानवपात्र, १० कर्मपात्र, ११ मन्त्रिपात्र १२ सचिपात्र, १३ महत्तम पात्र, १४ अमात्य पात्र, १५ अध्यक्ष पात्र, १६ सेना पात्र, १७ सेनापाल पात्र, १८ प्रधान पूजा पात्र, १९ मान्यपात्र, २० राजमान्य, २१ पदस्थ पात्र, २२ देवीपात्र, २३ कुलपुत्रिका पात्री, २४ पुनर्भूपात्र, २५ वेश्यापात्र, २६ प्रतिसारका पात्र, २७ दासीपात्र, २८ देशपात्र, २९ गुणपात्राणि, ३० दर्शन, ३१ सत्य, ३२ राजमत्री, ३३ आधान, ३४ नगर, ३५ पुण्य, ३६, कुलपति ।

११ षट्त्रिंशद्राज विनोदा—१ दर्शन विनोद, २, गीत विनोद, ३ नृत्यविनोद, ४ वाजित्र विनोद, ५ वृत्त, ६ पात्र, ७ लेख्य, ८ वक्तृत्व, ९ कवित्त्व, १० वाद विनोद, ११ युद्ध विनोद, १२ नियुद्ध, १३ गज, १४ तुरंग,

---

१३ स्वयोग १४ सौम्यत्व १५ अध्यक्ष १६ स्फूर्ति १७ मुक्ति ।

१५ पत्रि, १६ खेटक, १७ द्यूत, १८ जल १६ यत्र, २० महोत्सव, २१ पत्र, २२ फल, २३ पुष्प, २४ कला, २५ कथा, २६ प्रहेलिका, २७ पदार्थ-करण २८ तत्व ६ बल, ३० चित्र, ३१ सूत्र विनोद ३२ श्रवण विनोद, ३३ कृत्रिम विनोद, ३४ पठित, ३५ प्रकृति, ३६ खलित्व, ३७ शास्त्र, ३८ बुद्धि, अक्षर, गणन, मत्र, कमल, काया, पाठित, केश क्रीडा।

१२ अष्टादशविध स्थान—१ मल्लस्थान, २ आप्त स्थान, ३ हितस्थान, ४ स्निग्ध-स्थान, ५ मत्रि, ६ महत्वत्तम, ७ अमात्य, ८ बुद्धि सुख, ६ अभय सुख, १० आगमिक, ११ आम्नायिक, १२ देशी पुरुष, १३ धर्म पुरुष, १४ धन पुरुष, १५ काम पुरुष, १६ राजपुरुष, १७ विज्ञान, १८ विनोद पात्राणि च, शावोदत्त, शासनक, सग्रामिक, ज्ञान पुरुष।

१३ चतस्रो राजविद्या—१ आन्वीक्षिकी, २ त्रयी, ३ वार्ता, ४ दण्ड-नीति।

१४ चतस्रो राजनीतय १ साम २ दान ३ भेद ४ दड।

१५ सप्तविंशति शास्त्राणि—१ शब्द शास्त्र, २ छन्द शास्त्र, ३ अलकार शास्त्र, ४ काव्य शास्त्र, ५ कथा शास्त्र, ६ नाट्य शास्त्र, ७ नाटक शास्त्र, ८ निघण्टु शास्त्र, ६ धर्म १० अर्थ ११ काम १२ मोक्ष १३ तर्क १४ गणित १५ गान्धर्व १६ मत्र १७ वैद्यक १८ वास्तु १६ विज्ञान २० विनोद २१ कृत्य २२ कला २३ कल्प शिक्षा २४ लक्षण, २५ बुद्धिशास्त्र, २६ वाद-विद्या, २७ मत्र, पुराण सिद्धान्त शास्त्राणि॥

१६ षट्त्रिंशत् दण्डायुधानि—१ चक्र, २ धनुष, ३ खड्ग, ४ तोमर, ५ कुत, ६ त्रिशूल, ७ शक्ति, ८ पाश, ६ अकुश, १० मुग्दर, ११ मक्षिका, १२ भल्ल, १३ भिंडिमाल, १४ मुषढि, १५ लुष्टि, १६ तुरिका[1], १७ पट्ट, १८ गुरज, १९ गदा, २० परशु, २१ पट्टिसु, २२ कृष्टिकरण २३, कपन, २४ हल, २५ मूशल, २६ हुलिका, २७ पत्र, २८ कर्त्तरि, २६ कोठाल, ३० तरवारि, ३१ दुष्फोट, ३२ गोफणि, ३३ डाह, ३४ डबूस[2], ३५ लुठि। ३६ दण्ड शास्त्राणि, वज्र, छुरिका, श्रृष्टि, शकु, मुष्टि, यष्टि, करपात्र, कुद्दाल, असनि, सारग।

१७ द्विपचाशत् तत्वानि—१ पृथ्वी तत्व, २ अपतत्व, ३ तेजतत्व, ४ वायु-तत्व, ५ आकाश तत्व, ६ शब्द, ७ स्पर्श, ८ रस, ६ रूप, १० गन्ध, ११ रसन, १२, स्पर्शन, १३ घ्राण, १४ चक्षु, १५ श्रोत्र, १६ त्वक् १७, पाणि,

---

१, तीरिका २, बुब्बुस

१८ पाद १९ गुद, २० उपस्थ, २१ मन, २२ बुद्धि, २३ अहङ्कार प्रकृति, २५ पुरुष, २६ बिन्दु, २७ रक्त, २८ मास, २९ मद, ३० अस्थि, ३१ मज्जा, ३२ शुक्र, ३३ वात, ३४ पित्त, ३५ कफ, ३६ मल, ३७ काम, ३८ क्रोध, ३९ लाभ, ४० मोह, ४१ भय, ४२ मात्सर्य, ४३ राग[3], ४४ नयक[4], ४५ विद्या, ४६ शुद्ध विद्या, ४७ माया, ४८ ज्योति, ४ नाद, ५० शक्ति, ५१ ईश्वर ५२ भक्ति, काल, दान, कला, परमयुक्ति ॥

१८ द्विसप्तति कला—१ गीत कला, २ नृत्यकला, ३ वाद्य, ४ बुद्धि ५ शौच, ६ मन्त्र, ७ विचार, ८ वाद, ९ वास्तु, १० नैपथ्य, ११ विनोद, १२ विलास १३ नीति, १४ शकुन, १५ चित्र सयाग १६ हस्त लाघव, १७ कुसुम, १८ इन्द्रजाल, १९ सूचीकर्म, २० स्नेह पात्र, २१ आहार, २२ सोभाग्य, २३ प्रयाग, २४ गन्ध, २५ वस्तु पात्र, २६ रत्न, २७ वैद्य, २८ देश भाषित, २९ विजय, ३० वाणिज्य, ३१ आयुध, ३२ युद्ध, ३३ नियुद्ध, ३४ समयवर्त्तन, ३५ हस्ति, ३६ तुरग, ३७ पक्षि, ३८ पुरुष, ३९ नारी भूमिलेप, ४० काष्ठ शिल्प, ४१ वृक्ष, ४२ छद्म, ४३ उत्तर, ४४ शस्त्र, शास्त्र, ४५ गणित, ४६ पठित, ४७ लिखित, ४८ वक्तृत्व, ४९ कथा, ५० च्यवन, ५१ व्याकरण, ५२ नाटक, ५३ अलकार, ५४ दर्शन, ५५ अध्यात्म, ५६ धातु, ५७ धर्म, ५८ अर्थ, ५९ काम, ६० द्यूत, ६१ शरीर कलाश्चेति, ६२ कवित्व, ६३ वचन, ६४ छन्द, ६५ ध्यान, ६५ दान, ६६ सौख्य, ६७ क्रीडा, ६८ सूत्र ६९ विनय, ७० पान, ७१ वर्ण, ७२ सैन्य, भिक्षा, प्रत्युत्तर, सत्व ।

१९ चतुराशीति विज्ञानानि—१ हेतु विज्ञान, २ तत्त्व विज्ञान, ३ मोहन, ४ कर्म, ५ धर्म, ६ मर्म, ७ शख, ८ दत, ९ काच, १० गुटिका, ११ योग, १२ रसायन, १३ वचन, १३ कवित्व, १५ नैपथ्य, १६ मन्त्र, १७ मर्द्दन, १८ पत्रक, १९ वृटिक, २० लेप कर्म, २१ सूत्र, २२ चित्र, २२ रग, २४ सूची कर्म, २५ शकुन, २६ छद्म, २७ नैर्मल्य, २८ गध, २९ युक्ति, ३० आसन, ३१ शील, ३२ काष्ठ, ३३ कर्म्म, ३४ कुभ, ३५ लोह, ३६ यन्त्र, ३७ वश, ३८ नख, ३९ तृण, ४० प्रासाद, ४१ धातु, ४२ विभूषण, ४३ स्वरोदय, ४४ द्यूत, ४५ अध्यात्म, ४६, अग्नि जल विद्वेषण, ४७ उच्चाटन, ४८ स्तभन, ४९ वशीकरण, ५० हस्ति शिक्षा, ५१ अश्व, ५२ पक्षि ४३ स्त्री काम ५४ रत्न, ५५ वस्त्राकार, ५६ पाशुपाल्य, ५७

३ रोग ४ नियति

कृषि, ५८ वाणिज्य, ५९ लक्षण, ६० काल, ६१ शास्त्र, ६२ शस्त्रबंध, ६३ आयुधकार, ६४ नियुधकार, ६५ आक्षेटक, ६६ कुतूहल, ६७ केश, ६८ पुष्प, ६९ इन्द्रजाल, ७० पान विधि, ७१ अशन, ७२ विनोद, ७३ सौजन्य, ७४ सौभाग्य, ७५ शौच, ७६ विनय, ७७ नीति, ७८ आयुर्वेद, ७९ व्यापार, ८० धारणा ८१ लक्ष्मी, देव, दान, मुष्टि, इति विज्ञानानि, ज्योतिष, वैद्यक, मद्य, दर्शन, मस्तक, इष्टिका, लाभ, विचित्र, नारग, वैशिक, काव्य, वाद्य, काकरुत, सामुद्रिक। इति विज्ञानानि ॥

२० चतुरशीतिदेशा—१ पूर्व देश, २ अगदेश, ३ बग देश, ४ गौड देश, ५ कान्यकुब्ज, ६ कलिग, ७ गोष्ट, ८ बगाल, ९ कुरग, १० गठवारद्री, ११ यामुन, १२ सरयूपार, १३ अतर्वेद, १४ मगध, १५ मध्य, १६ कुरु, १७ डाहल, १८ कामरू, १९ उड़, २० पचाल, २१ सोरसेन २२ जालधर, २३ लोह-पाद, २४ पश्चिम, २५ स्थल, २६ बालंभ, २७ सौराष्ट्र, २८ कूकण, २९ लाट ३० श्रीमाल, ३० अर्बुद, ३१ मेदपाट, ३२ मरु, ३३ कच्छ, ३४ मालव, ३५ अवती, ३६ पारियात्र, ३७ कबोज, ३८ तामलिप्त, ३९ किरात, ४० सेरटक, ४१ सौवीर, ४२ वीणक्काण, ४३ उत्तरापथ, ४४ गुर्जर, ४५ सिन्धु, ४६ केकाण, ४७ नेपाल, ४८ (भोट) रथ, ४९ ताजिक, ५० वर्बर, ५१ खस, ५२ कीर, ५३ काश्मीर, ५४ वज्रल, ५५ हिमालय, ५६ लोहपुर, ५६ श्रीराच्च, ५७ दक्षिणापथ, ५८ मलय, ५९ शीघल, ६० पाड, ६१ कौशल, ६२ अन्ध्रु, ६३ विन्ध्य, ६४ द्रविड, ६५ श्रीपर्वत, ६६ वैदर्भी, ६७ विराट, ६८ ओर-लाजी, ६९ तापीतट, ७० महाराष्ट्र, ७१ आभीर, ७२ नार्मद, ७३ कामाक्ष, ७४ कड्डु, ७५ पापाणक, ७६ चौड, ७७ आराध्य, ७८ वरेन्द्र, ७९ गगा-पार, ८० सौसख, ८१ काता, ८२ तिलग, ८३ मलबार, ८४ पारकर, द्वीपदेशाश्चेति ॥

२१ द्वात्रिंशल्लक्षण स्थानानि—१ स्वर्ग लक्षण, २ मृत्यु, ३ पाताल, ४ तत्त्व, ५ विद्या, ६ विज्ञान, ७ ज्ञान, ८ वास्तु, ९ विनोद, १०, वाद, ११ कला, १२ कल्प, १३ गीत, १४ वाद्य, १५ धर्म, १६ अर्थ, १७ काम, १८ मोक्ष, १९ देश, २० काल, २१ पात्र २२ पुरुष, २३ स्त्री २४ गज, २५ तुरग, २६ पक्षि, २७ रत्न, २८ सदव्यापार, २९ सत्व, ३० वस्तु, लक्षणानि।

२२ चतुर्विंशति विध गृह—१ प्रासाद, २ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृहकोश, ६ कोष्ठागार, ७ पानीय स्थान, ८ शौच गृह, ९ मालयगृह, १० मठस्थान, ११ सत्रागार, १२ शृगार, १३ गृह, १३ धर्मस्थान, १४ विनोद स्थान, १५

मदिर, १६ हस्तिशाला, १७ वासभवन, १८ मडप, १६ महानस, २० भोजन-
शाला, २१ अग्रासन, २२ अर्थस्थान, २३ राजागणच ॥

२३ अष्टोत्तरशत मगलानि—१ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ महेश्वर, ४ स्कद, ५ आदित्य, ६ लोकपाल, ५ अग्नि, ६ अमरसागर, ७ नदी, ८ पर्वत, ६ गगन, १० ग्रह, ११ गण, १२ गधर्व्व, १३ चद्र, १४ विनायक, १५ ज्योतिष, १६ धर्म शास्त्र, १७ द्विज, १८ वर, १६ वेद, २० पद्म, १२ प्रदीप, २२ कौस्तुभ, २३ काचन, २४ रूप्य, २५ ताम्र, २६ घृत, २७ मधु, २८ मद्य, २६ सिद्धान्न, ३० चन्दन, ३१ सितवस्त्र, ३२ वेश्या, ३३ गोरोचन, ३४ मृतिका, ३५ गोमय, ३६ शास्त्र, ३७ अजन, ३८ औषध, ३६ अक्षत, ४० रत्नमणि, ४१ मोदक, ४२ शंख, ४३ प्रियगु, ४४ जव, ४५ श्वेत पुष्प, ४६ सर्षप, ४७ दधि, ४८ आम्र, ४६ उदबर, ५० छत्र, ५१ हस्ति, ५२ बीजपूरक, ५३ मुक्ताफल, ५४ दूर्वा, ५५ खजरीट, ५६ वृषभ, ५७ ध्वज, ५८ हस, ५६ कन्या, ६० दर्पण, ६१ मत्स्य, ६२ तुरगम, ६३ गीत, ६४ वीणा, ६५ ध्वनि, ६६ सिंध, ६७ मेघ, ६८ स्वस्ति, ६६ तोरण, ७० कुम्भ, ७१ चामर, ७२ गौ, ७३ सवत्सा, ७४ आर्द्र मास, ७५ स्त्री, ७६ सपुत्र, ७७ वाहन, ७८ प्रदान, ७६ विद्या, ८० पानीय, ८१ पुष्टि, ८२ तुष्टि, ८३ प्रसाद, ८४ उल्लोच, ८५ पूर्णपात्र, ८६ आर्द्रशाखा, ८७ प्रियवाक्य, ८८ श्रीवृक्ष, ८६ तालवृत, ६० पूजानिधि, ६१ नर, ६२ सहस्र ६३ गौरी, ६४ गगा, ६५ सरस्वती, ६६ नर्मदा, ६७ यमुना, ६८ कमला, ६६ सिद्ध पीठ, १०० कीर्त्ति । इति मगलानि ।

२४—त्रिविधदान—१ अभयदान, २, उपकारदान, ३ द्रव्यदान ।

२५—पचविधयश—१ ज्ञानयश, २ प्रतापयश, ३ सदाचार यश, ४ पराक्रमयश, ५ वर्णनयश ।

२६—सप्तविधा कीर्त्ति—१ दान, २ शौर्य ३ पुण्य, ४ वर्तन, ५ विज्ञान, ६ काव्य ७ वक्तृत्व ।

२७—नव रसा.—१ शृगार, २ हास्य, ३ करुण, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत, ६ शातरस ।

२८—एकोनपचाशद्भाव—रति, हास्य, उत्साह, विस्मय, क्रोध, शोक, जुगुप्सा, भय, स्तभ, स्वेद, भग, व्रीडा, चपलता, हर्षता, जडता, मतिमूढी, आवेग, विषाद, औत्सुक्य, गर्व, अपस्मार, निद्रा, सुप्त, विबोध, अमर्ष, उन्माद, उग्रता, व्याधि, वितर्क, त्रास, स्वरभेद, रोमाच, वेपथु, वैवर्ण्य,

अश्रु, प्रलाप, निर्वेद, ग्लानि, शका, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, अवहित्थ, विदाव, मरणात । इति भाव ।

२६—चत्वारो अभिनया—वाचिक १ आंगिक २ आहार्य ३सात्विक ४

३०—चतस्रो वृत्तय:—सात्वती, भारती, कैशकी. आरभटी २८

३१—चत्वारो नायका—अनुकूल, दक्षिण, शठ, धृष्ट

३२—चत्वारो महानायका—धीरशात धीरउद्धत, धीरोदात्त, धीरललित

३३—द्वात्रिंशद्गुण नायका—कुलीन, शीलवान, वयस्थ, शौचवान्, स्वतत्र, सावयव, प्रीतिमान्, प्रियव", सुभग, सत्यवान्, कीर्तिमान्, त्यागी, विवेकी, शृंगारी, अभिमानी, श्लाघ्यवान्, सुमुज्वल वेष, शयाज, सकल कला कुशल, सत्यावमट, सुगध सुवृत मत्र, क्लेश सह, भाषा पडित, उत्तम, सत्यधर्मिष्ट, महोत्साही, गुणग्राही, क्षमी, परि भावुक ।

३४—त्रिविधा महानायिका—स्वकीया, परकीया, पण्यागना ।

३५—अष्टौ नायिका—विरहोत्कठिता, खडिता, कलहातरिता, विप्रलब्धा, प्रोषित-भर्तृका, अभिसारिका, स्वाधीन पतिका ।

३६—द्वात्रिंशत् गुण नायिका—सुरूपा, सुवेषा, सुभगा, सुरतप्रवीणा, सुसत्त्वा, वेषश्रिता, विनीता, भोगिनी, विचक्षणा, प्रिय भाषिणी, प्रसन्नमुखी, पीनस्तनी, चारुलोचना, रसिका, लज्जान्विता, लक्षणयुक्ता, वाक्यज्ञा, गीतज्ञा, नृत्यज्ञा, वाद्यज्ञा, सुप्रनाणशरीरा, सुगधप्रिया, नीतिमानिनी, चतुरा, मधुरा, स्नेहवती, विमर्षवती, सवृत्तमत्रा, सत्यवती, प्रज्ञावती, चैतन्या शीलवती, गुणान्विता ।

३७—त्रिविध सौख्य - शारीरिक, वाचिक, मानसिक ।

३८—चत्वारि सौख्य कारणानि—योगाभ्यास कारण, अभिमान कारण, सप्रत्यय-कारण, विषय कारण ।

३९—नव विधो गधोपयोग—तैलाधिवास, जलाधिवास, वस्त्राधिवास, मुखाधि-वास, उद्वर्त्तन धिवासः, विलेपनाधिवास, स्नानाधिवास, धूपनाधिवास, भोजनाधिवासः ।

४०—दश विध शोच—जलशौच, मृतिकाशौच, गध, स्मश्रु, सस्कार, पवित्र वाक्य, प्राखिदयाशोच, अर्थशौच, आचार शोच, स्नान शौच ।

४१—द्विविधः कामः—स्वाभाविक, कृत्रिम ।

४२—दश कामावस्था—अभिलाष, चिंता, स्मृति, गुणकीर्त्तन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मरण ।

४३—विंशति रक्त-स्त्रीणा लक्षणानि—पूर्वं भाषन, दर्शनात् प्रसन्ना भवति समागमे तुष्यति, सभाषिना हृष्यति, गुणान् सखीजने कथयति, दोषान् छादयति, सन्मुखीशेते, पश्चात् स्वपिति, पूर्वमुतिष्ठति, मित्राणि पूजयति, अमित्राणि द्वेष्टि, प्रोषिते दुर्मनाभवति, स्वधन ददाति, प्रथममालिगयति, पूर्वं चुम्बन करोति, सम दुख सुखावलोकिनी, सदा विनीता, स्नेहवती, सभोगार्थिनी, हितार्थिनी ।

४४—एकविंशति विरक्त स्त्राणा लक्षणानि—चुम्बिता विमुख करोति, मुख परिमार्जयति, निष्ठीवति, प्रथम शेते, पश्चादुत्तिष्ठति, परान्मुखी शेते, वाक्य नावमन्यते, मित्राणि द्वेष्टि, अमित्राणि पूजयति, सदा गर्विता भवति, उक्ता कुप्यति, गमने तुष्यति, दु कृत स्मरते, सुकृत विस्मरयति, दत्त न मन्यते, दोषान् प्रकटी करोति, गुणान् छादयति सन्मुख न पश्यति, दुखिते सुखिता भवति, विप्रिय वदति, सभागे सुख न वाछति ।

४५—द्वाविंशति कामिनीना विकारेगितानि-सानुराग निरीक्षण, श्रवण सयमन, अगुलीस्फोटन, मुद्रिका कर्षण, नूपरोत्कर्षण, गुतागं दर्शन, सख्यासह हसन, भूषणोद्घाटन, कर्णमोटन, कर्ण कडूयन, केश प्रक्षरण, पुष्प सयमन, नख विलेपन, वामसजन, प रधान स्यमन, निश्वासोद्वसन मुख विजृम्भिण, बाल चुम्बन, प्रिय भाषण, अतिक्रान्त प्रेक्षण, पराङ्गनाम ग्रहण, गुणव्यावर्णनम् ।

४६—चतुर्विंशति असतीना लक्षणानि—द्वार देशे शायिनी, पश्चादवलोकिनी, पुश्चली सखी, भोगिनी, गोष्ठिप्रिया, राजमार्गाश्रिता, पति द्वेषिणी, पति रहिता, हीनाग भार्या, बन्ध्या, मृतापत्या, बहु देवगालिपिनी, बहु देवतार्चना, विनोदकारिणी, भोगार्थिनी, अति मानिनी, कृत्रिम लज्जान्विता, परप्रीतिरता, वृद्ध भार्या, सतत हास्या, प्रोषित भर्तृका, लोभान्विता, . बहुभाषिणी, क्रीडानष्टचर्या ।

४७—षोडश दुष्ट-स्त्रीणा अपलक्षणानि-पिगाक्षी, कूप गल्ला, लबोष्टी खरालापी, ऊर्द्ध केशी, दार्घ ललाटी, सहितभ्रू, पुष्पितनखी, प्रविरल दशना, अतिदीर्घा, अतीव वामनी, अतीव स्थूला, अतीव गौरा, अतीव कृष्णा, अतीव कृशा, प्रलम्बोदरी ।

४८—अष्टौ स्त्रीणा अभिसारिकाणि—भर्तु स्वैरिता, पुरुषार्थिनी, प्रणतगोष्ठी निरकुशा, विदेशवासी, पुश्चली, पतिरीर्ष्यादोष ।

४९—अष्टौ नार्यो अगम्या—स्वगोत्रजा, राजपत्नी, मित्रपत्नी, वर्णाधिका, अस्पृशा, पूजिता, कुमारी, गुरुपत्नी ।

५०—अष्टविधो मूर्ख—निर्लज्ज, शठ, क्लीव, निघृण, व्यसनी, अतिलोभी, गर्वित, निष्ठुर ।

५१—चतुर्विंशति-विध नागरिक वर्त्तनम्—नगरे सस्थान, असन्नोदक भवन, प्रच्छन्न महानस, गुप्तकार्य चिकित्सा स्थान, निकटे नेपथ्यमडप, विभक्त वास भवन, नेपथ्योपकार प्राचुर्य, गृहोपकरण बाहुल्य, शय्यासन रम्यत्व, वाछित परिजन, पार्श्वे प्रविशान स्थान, मध्ये स्थान पीठ, प्रभाते व्यायाम विधान, मध्यान्हे भोजन विधान, नित्यमेव विद्याभ्यासन ' कुलोचित विधिना वर्त्तन । प्रदोषे गीतादि विनोद विधान, निशाया स्वदारा सुरत, कदाचित् गोष्टी रम्यत्व, कदाचित् पात्र प्रेक्षण, कदाचित् विद्या नवनव गमनम्, सदैव ऋतु समुचितो भोग ।

५२—त्रिविध रूप—सम्पूर्ण लक्षणावयव, असपूर्ण लक्षणावयव, निर्लक्षण ।

५३—त्रिविध स्वरूप—मुग्ध स्वभाव, मुखर, चतुर ।

५४—द्वादश विध प्रमोदोपचार—रूपस्विनीना रम्योपचारेण, भीरूणामास्वासनेन, चपलाना गाभीर्येण, पडिताना सत्येन, प्रज्ञावता कलाभि', शृङ्गारिणा सुवेषतया, विनोदशीलाना क्रीडनेन, हीन सत्वाना कारुण्येन, शठ स्वभावाना शाठ्येन, निर्विकल्पाना सुकुमार प्रयोगेन, बालाना भक्ष प्रदानेन, धूर्ताना शाठ्येन ।

५५—पचविध. परिचय—प्रसिद्धि ख्यापन, दर्शनेनावर्जनम्, सभाष माधुर्य, वाछितोपचार प्रयुजन, विकारसूचन ।

५६—दश पुरुषाः स्त्रीणा अनिष्टा भवति—कुरूप, निर्लज्ज, अभिमानी, असबद्ध प्रलापी, सकुचितशायी, निष्ठुर, कृपण, शौचहीन, मूर्ख, क्रोधी ।

५७—दशभि. कारणैस्त्रियो विरज्यते—अज्ञानता, अभिमान विलेपता, निष्ठुरता, दरिद्रता, अति प्रसवता, क्रूर व्यसनता, भोगहीनता, अति प्रसगता, सौभाग्यहीनता, अनौचित्यता ।

५८—त्रिभि कामिन्य सबध्यते—अर्थत', कामत., सुकुमारोपचारत ।

५९—सप्तविध कामुकाना क्रीडारभ—क्रीडा पात्राणि, भोजनाद्युपचार, विलेपनानि, धूपनानि, ताबूलादिना, पुष्पादिमाल्यानि, हास्यादि मर्माणि ।

६० अष्टविध विदग्धाना सुरत—आलिगन, चुम्बन, धावन, केश धारण, रग सवेशन, शरीरादि कूजन, नख स्पर्शन, कुट्टनं ॥

६१—नवविध सुरतावसान—वस्त्रादि सयमन, पार्श्वे आचमन, ताबूलादि

ग्रहण, फलादि भक्षण, पान भोज्यादि विधान, क्रीडा पात्र प्रवेश,
सुभाषित जल्प, सानुराग प्रेक्षण, मनोवाञ्छित विनोदः ।

६२—नव शयन गुणा –अनग्नशायी, मृदु गात्रशायी, प्रसारित गात्रशायी,
सोम्यावयव, अनुशयन, नात्यर्थान प्रात, अशब्द सन्मुखः ।

६३—दशविध पार्थिवाना प्रमोद–

ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैर निग्रहे ।
शौर्य्ये धर्मे सुखे शौचे, प्रमोदो दशधा मतः ॥

६४—चतुर्विध प्रबोध –शास्त्र प्रबोध, प्रज्ञा प्रबोध, तत्त्वनिश्चय प्रबोध,
स्वभाव प्रबोध. ।

६५—चतुर्विधा बुद्धि –स्वभावजाता, श्रुतोत्पादिता, कर्मजाता, पारिणामिकी ।

६६—अष्टौ बुद्धिगुणा–

शुश्रुषा श्रवण चैव, ग्रहण धारण तथा ।
ऊहापोहो च विज्ञान, तत्वज्ञानच धी गुणा. ॥

६७—चतुर्विध गधर्व-अवधान गत, स्वरगत, पद गत, तालगत ।

६८—त्रिविध गीत–महागीत, अनुगीत, अपगीत ।

६९—षट्त्रिंशद् गीत गुणा :–सुस्वर, सुताल, सुपद, शुद्ध ललित, सुबध,
सुप्रमेय, सुराग, सुरस, सम सदार्थं, सुग्रह, श्लिष्ट, क्रमस्थ, सुमयक सुवर्णं,
सुरक्त, सपूर्णं, सालकार, सुभाषाढ्या, सुगधस्थ, व्युत्पन्न मधुरं, स्फुटं,
सुप्रभ प्रसन्न, अग्राम्यं, कवित्कपित, समजात रौद्र गीत, ओजः सगत,
दशन स्थित, सुखस्थापक, इतसविलषित, मध्य प्रमाण ।

७०—चतुर्विध वाद्यं–तत, वितत, घन, शुषिरं ।

७१—षोडशधा नृत्योपचार कारस्मानि–कपित १ समं २, आयत ३ रौद्रं ४
सगतं ५, प्रसन्नं ६. हसुतृप्ति ७, द्रुत ८, मध्य ९, विलम्बितं १०, गुरुत्व
११, प्राजलित्वं १२, सुप्रमाण १३, कर शुद्धं १४, निर्दोषं १५ चेति ॥
सुखस्थापन १६ ।

७२—षोडशविध वाक्य—समय, प्रतिभा, अभ्यास, विद्या, जाति, गीति, रीति,
वृत्ति वात्सल्य, पाचक, छद, अलंकार, गुण, दोष, रसभाक, अभिनय ।

७३—दशविध वक्तृत्वं—परिभावितं, सत्यं, मधुरं, सार्थक, परिस्फुटं, परिमित,
मनोहरं, विचित्रं, प्रसन्न, भावानुगतं ।

७४—षटविध भाषा लक्षणं—संस्कृतं, प्राकृतं, अपभ्रंशं, पैशाचिक, मागधं,
सौरसेन ।

७५—पचविध पाण्डित्य—वक्तृत्व, कवित्व, वादित्व, आगमिकत्व, मारस्वत प्रमाण।

७६—चतुर्विंशति विध वादलक्षण—उत्पत्ति, सभापति, सत्यवादि, प्रतिवादि, पक्ष, प्रतिपक्ष, प्रमाण, प्रमेय, प्रश्न, प्रत्युत्तर, दूषण, भूषण, अर्थान्तर, उपन्यास, अनुवाद, आदेश, निर्वाह, निर्णय, निश्चय, स्थान, ममता, निग्रह, जय, अजय।

७७—षट दर्शनानि—माहेश्वर, ब्राह्म्य, साख्य, बौद्ध, जैन, चार्वाकम्।

७८—अष्टविध माहेश्वर—नैयायिक, वैशेषिक, शिवधर्म, शैव, कलामुख पाशुपत, महाव्रतिक, मुक्ति पर्यंत।

७९—दशविध ब्राह्म्य—लक्षण, प्रमाण, मस्कार, कर्म, वर्त्तन, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, यति, ब्रह्म पर्यन्त।

८०—चतुर्विध साख्य—तत्व, प्रमाण, प्रकार, प्रभेद, प्रमोदपर्यन्त, सर्वात्मपर्यन्त।

८१—सप्त विध जैन—सर्वज्ञ धर्म, तत्वार्थ, प्रमाण, प्रतिमा, प्रभेद, सिद्धिपर्यन्त।

८२—दश विध बौद्ध—आयासिकम, पर्वद, पारिगत, विहार, प्रमाण, सूत्रातिक, त्रैभाविक, योगाचार, माध्यमिक, मोक्षपर्यन्त।

८३—चतुर्विध चार्वाक—तत्वार्थ, प्रमाण, प्रभेद, प्रमोद पर्यन्त।

८४—चतुर्विंशति विध विचारकत्व—विद्या, विनोद, विज्ञान, कला, कवित्व वक्तृत्व, गीत, वाद्य, नृत्य, देश, काल, पात्र, प्रमेय, पर्याय, जय, रस, भाव अभिनय, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकवाद, विचार पर्यन्त।

८५—दशविधं गुरुत्व—

वशे ज्ञाने पक्षे सत्वे शौर्ये दाने बले जये।
सताने सगुणे चेति गुरुत्व दशधा मत ॥

८६—पच चरित—ज्ञान चरित, मान चरित, दान चरित, वीरविलास चरितं, धर्मारम्भ चरित।

८७—पचविध पार्थिवाना पालन—राज्यपालन, प्रजापालन, भूमिपालन, धर्म-पालन, शरीर पालन।

८८—सप्तविध उत्तमत्व—वय, कुल, रूप, शील, पद, ज्ञान, प्रयाग पर्यंतचेति।

८९—नवविधाशक्ति—धर्मशक्ति, दानशक्ति, मन्त्रशक्ति, ज्ञानशक्ति, अर्थशक्ति कामशक्ति, युद्धशक्ति, व्यायामशक्ति, भोजनशक्ति।

९०—सप्तविधा भुक्ति—शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, अभिमान, देश।

९१—अष्टविध अभिमान लक्षण—ज्ञाने, धर्मे, अर्थे, कामे, बले।
शत्रुघाते, समारभे स्थित च।

९२—चतुर्विध वात्सल्य—देवाना सद्‌गुरूणा च, मत्राणा वल्लभे जने ।
स्नेहेन मानमयच, तद्वात्सल्यचतुर्विध ॥

९३—पचविधा महोत्सव—१ ज्ञान महोत्सव, २ अर्थ महोत्सव, ३ काम महोत्सव, ४ धर्म महोत्सव, ५ मोक्षमहोत्सव ।

९४—सप्तविधा प्राप्ति—ज्ञाने धर्मे बले कामे विज्ञाने पात्र सग्रहे ।
महार्थ भूभुजा नित्य, प्राप्ति स्सप्तविधा मता ॥

९५—चतुर्विंशति विध शौर्य—शब्द शौर्य, प्रतापशौर्य, दान, स्थान, उदय, तेज, सग्राम, प्रतिज्ञा, जय, मान, ज्ञान, साहस, शरणागत, परिबोध, प्रमोद, उद्यम, अर्थ, आचार, बल, कीर्त्ति, लक्षण, गुण, ज्ञान मान ।

९६—दशविध बल—वाक्काय बुद्धि मत्रैश्च, स्थान सैन्य सुहृज्जनै ।
निद्राहारैर्, दयाश्चेति, राज्ञा दशविधो जय ॥

९७—दशविध सग्रह—ज्ञाने पात्रे गुणे मार्गे पत्नीयोगे बाल धर्मे जये गुणेषु श्रुत सग्रह ॥

९८—पचविध प्रभुत्व—कुल प्रभुत्व, दान ज्ञान प्रभुत्व, प्रभुत्व, स्थान प्रभुत्व, अभय प्रभुत्व । इति श्रीरत्नकोश सूत्रशत व्याख्यान समाप्त ॥ पं० सुखनिधानमुनिनालेखि

९९—अष्टविधोजय—१ शत्रुजय, २ मानजय, ३ वादजय, ४ आहारजय, कर्मजय, ६ क्रोधजय ७ भूमिजय, ८ यानजय ।

बृहत्ज्ञान भडार की प्रति म अधिक—

१००—अष्टविधोभोग—सुगध वनिता वस्त्र गीत ताबूल भोजन ।
आभरण मदिरं चैव अष्टौ भोगा प्रकीर्त्तिता ॥

१०१—षोडश शृगारा—आदौ मज्जन चारुचीर तिलक नेत्राजन कुडल ।
नासामौक्तिक पुष्पमाल कुडल, शृगार कनूपुर ।
अगे चदनलेप कचुकमणी क्षुद्रावली घटिका ।
ताबूलं करककण चतुरता शृगारका षोडश ॥

१०२—षडविधपरिच्छेद—आकार्य परिच्छेद, पाप, दुख, कर्म्म, भुक्ति, लोभ ।

१०३—चतुर्दश विद्या नाम—नाद, वेद, पवित, गणित, गुणित, व्याख्यान ग्यान, ध्यान, शस्त्र, शास्त्र, कामिनिना चरित्र, भेषज, चडीस, सर्व चरित्र, सर्व विद्याना ।

१०४ चतुर्विधा गति—नरग गति, तिर्यंच गति, देव गति, मनुष्य गति ।

पाठ भेद की टिप्पणियाँ १

अतिरिक्त नाम तथा पाठान्तर—पृ० ७-(चुतुर्विंशति देशा) (२०)

काशी, कर्णाट, गोला, साड्वल, लाम, पु ड्, उड्ड, विहार, उड्डीस लोहित, जालधर, मरुस्थल, मारू, सपादलक्ष, टक, महाभोज, चीण, महाचीण, तुरुष्क, नायक, वरदेव, सख, सहज, चित्रकूट, दक्षिण, बोड्ड, तिलंग, द्रविट।

पृ ८ (२१) द्वात्रिंश लक्षणानि—अतिरिक्त नाम तथा पाठान्तर

तनु, वैद्य, नृत्य, रूप, जोतिर् , सर्प, वृष।

पृ ८, चतुर्विंशति विध गृह- (२२)

सौध, क्रीडास्थान।

पृ, ६ अष्टोतर शत मगलानि— (२३)

जिन, रुद्र, बुध, तीर्थ, देवपुराण, ताबूल, शौचन, पठस्थान, तिलक, वेद, अश्वत्थ, उन्मत्तफल, वेणु, स्वस्तिक, तोमर, चापा, स्तुति, गोष्टान बुद्धि, सिद्धि, विद्रुम, कुसुम, किंकिणी, आभरण, अलकतक, कुकुम सिन्धु, रिद्धि, सिद्धि, प्रीति।

पृ. ६ स २४—

२. उचित दान, भक्तिदान

पृ. ६. स. २५—

१. जन रजन

पृ. ६ स. २६—

१ वृद्धजनकीर्त्ति, वर्णकीर्ति, शौर्यकीर्त्ति,

पृ. ६ स. २७—

कपा, दौर्म्मन, स्यंक्तिा, धृति, विलक्षणता, वि[illegible]क्त, अनुरक्ति त्रास, प्रवासिक।

पृ १०. स ३०—

(१) सात्वती।

पृ. १० स. ३३—

सतुष्ट, क्रीडावान, सत्यप्रिय, सुजन, सुगधर्व, महोत्तम, सुपात्र, संग्राही।

पृ १० स ३५—

१ वासक सय्या, विवाहोत्कंठिता

पृ १० स ३६—

सुनेत्रा, स्वच्छाशया, सुखाशया, भोगिनी, विचक्षणा, पठितज्ञा, कृतज्ञा, सुगधस्वासा, शोभावती, विनयवती, गूढार्थमंत्रा।

पृ १० स ३७—

द्विविधं सौख्य-आंगिक, मानसिकं।

पृ १० स ३८

विषयकारण, मुक्तिकारणं।

पृ ११ स ३९

नव विधोगात्रोपभोग—

सुगध, अधिवास, सुखासन, सुवस्त्र, अलकार।

पृ १० स० ४०—

अथ द्विविधिम् शौचम्—

स्मश्रु शौचम्, मृतिका शौचम्।

पृ १० स० ४२—

उत्कठा, ऊर्ध्वप्रलाप, उन्मत्त।

पृ ११ स० ४४—

४४—अर्थनिरापेक्षणी, दर्शने प्रसन्नानभवति, तिर्यकमुख कुरुते, अर्थं न भावयते।

४५—स्वकामजल्पन, अग्रावलोकन, सदाप्रसन्नता, मुद्रीकर्षण, हृदयोत्कर्षण केश-रचन, पुष्पारोपण, विलासपठन, बालालिंगनम्, विरोचेनाम कीर्तन।

४६—पति कलहकारिणी, जनसकुलस्थायिनी, त्यक्तलज्जा, वृद्धभार्या, चचला, रात्रीभ्रमणशीला, कृत्रिम तपा, पाखड लज्जाकारिणी।

४७—घर्घरालवापा, स्थूलोदरा, मिलित भ्रू।

४८—अविश्वासकारणानि—दीर्घगोष्ठी, अविवेका, विवस्त्रा अतिदुष्टा, अतिकोपना।

४९—रजस्वला। प्रव्राजिका।

पृ १२ स० ५०—

५०—अप्रस्तावज्ञ, अन्यात्पथ, कुव्यसनी, स्वार्थवशा, स्वमर्मप्रकाशक, कोक व्यवहार अनभिज्ञ, कुपठित, कुबुद्धि अकलाज्ञ।

५१—दोष प्रच्छादन, सुवेशता, परचित्तज्ञावृत्ति, परिग्रहगमन परा, उदारता, शुद्धाशय, सतोषता मित्रवर्गता, पार्श्वेवास, भवन-सस्थान, प्रभुविधापना, प्रदोषात्धर्म, गोत्राभिधान, निशायासुरतोपचार।

५१—द्विविध रूप—सुन्दूरवर्ण लक्षण, वयः संस्थाना ।

५३—सदभाव ।

५४—स्वस्वरूपेण, राज्ञामुपचारेण, भीरुणा रक्षणेन, पडिताना काव्येन, दीनानाम कारुण्येन, पडिताना वक्रोक्त्या, मानीना नम्रत्वेन, महात्माना धर्मेण ।

५५—तिथि प्रत्याख्यापन, अनुरागपोषण, संतोषोत्पादनम्, वाञ्छित विनोद ।

५६—कृतघ्न, अतिमानी, शौचहीन, सुरतानभिज्ञ ।

५७—सरोगता, अतिमानी, अविलोकता, अतिसगता, अतिरक्तता ।

५८—त्रिभिः कारणैः स्त्रियो रज्यते-छंदानुवर्तनेन, सुरतप्रगल्भेन, सौभाग्येन ।

५९—पापेन ।

६०—भगानिर्यमन, सकणिच ।

६१—इक्षुरसादि भक्षण, गोनकाभरण, मग्रहट्ट ।

६२—अत्रेकलशायी, पार्श्वशायी, निश्चलाङ्गशायी ।

६३—वैणिजये, वृद्धो ।

६४—शृङ्गाराणि काम प्रबोध, योगिना ज्ञान, बालाना शान्त, महात्मानाञ्च निर्णय प्रबोध ।

६५—उत्पातिका ।

६६—अवधारण, निरीक्षण ।

६७—स्वगीत, तालगीत । (चतुर्विधगीत)

६८—त्रिविध गांधर्व-तार, मद्र, मध्य ।

६९—

७०—आनद्ध ।

७१—षोडशधारणमुपचारम्-सुधृति ।

७२—प्रतिज्ञा, अविद्या, सुविद्या, ध्वनिलक्षण, सरस ।

७३—

७५—शास्त्रसंस्कार, प्रौढता ।

७६—प्रतिपत्ति, सभ्य, प्रभेद, उत्तर, अतीत, अत्यन्त, अनुत्पाद, अभेद, विस्मय, निग्रहस्थान, पराजय, जयपात्र ।

७८—ब्रह्मचर्य ।

७९—मोह, यज्ञ, मूल, भिक्षु ।

८०—दशविंशति तत्त्व ज्ञानानि, पात्र लिमत, शिवाराधन, प्राति पुरुष सम्बन्धनम् ।

८१—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, बंध, मोक्ष, निर्जरा ।

८२—त्रिविध बौद्ध—

८३—गोरववसतान, वक्रोलि, कौलाल, ब्रह्मज्ञानी ।

८४—गुणप्रकृति, सदभाव ।

८५—ऐश्वर्य ।

८७—पचविध पार्थिवाना पालन । परिवार पालन, अर्थपालन,

८८—प्रियालाप, अर्थभाषण, स्वपरार्थक', अविकथनम्, परदारवर्जनं, कृतज्ञता, परलोक चिंता ।

९०—आहार भुक्ति, शृगार मुक्ति, द्रव्य, काम, परिवार, प्रभुत्व ।

९१—अष्टविध अवमान लक्षण—१ शुद्ध परगुण-श्लाघा-विमुख, २ आत्म-बहुमानी, ३ असूया, ४ पर निंदा, ५ परविनय विकल ६ कठोर भाषी, आत्म प्रशसाप्रिय ।

९२—मित्राणा, मातृपितृणां, प्रतिस्नेहन, मानसशय, वात्सल्य ।

९४—दान, भोमेविज्ञाने । सर्वज्ञत्वे, नरेन्द्रत्वे ।

९५—शास्त्र, उदात्त, कुल, विवेक, उद्भट, विद्या, सौभाग्य, वास, दान, तप, वाद, बुद्धि, वाक, मान, सत्य ।

९६—धैर्य, बुद्धि, अवधारण, अभ्यास, शरीर, दैव, मत्र, साहस, दातृ, परिवार ।

९७—शास्त्र, धर्म, सत्पुरुष, वन, स्त्री, चतुष्पद, वाहन, कला, पात्र, सुभाषित, उत्तम संग्रह ।

९८—नागरिक प्रभुत्व, डिम्भ, इद्रिय, दर्शन, मानप्रभुत्व ।

परिशिष्ट (२)

सभा-शृंगारादि वर्णन-संग्रह

यावन-परिपाट्यनुकृत्या

राजरीति-निरूपण नाम शतकम्

हजूर के अहल खिदमत कारखाने परगनाती ओधादार के लक्षण

गोपीवल्लभ पादाब्ज द्वद्वमाधाय चेतसि ।
वच्मि राजविधि म्लेच्छपरिभाषानुकल्पितम् ॥ १ ॥

क्वचिद्रूढे क्वचित्कोशात्क्वचित्स्वानुभवात् पुन
नाम लक्षण सस्थेयमधिकाराधिकारिणाम् ॥ २ ॥

आज्ञा भवेद्यदायत्ता हस्तलेखश्च भूपते.
जानीहि त प्रतिनिधिं राज्य सर्वस्वधूर्वह ॥ ३ ॥

वकील मुतलक नायब मुसाहिब

आय-द्वाराधिकारा. स्युर्यदायत्ता महीभुज
अमात्य मन्त्रिण विधि प्रधान सचिवत्वत ॥ ४ ॥

वजीर प्रधान दीवान

भटानामग्रयायित्व वेतन ह्रास वृद्धय
परिवृत्तिश्च यत्तंत्रा सेनापतिममु विदु ॥ ५ ॥ =बकसी

कार्यापेक्षाणि वस्तूनि शालाकृत्यानि भूपतेः
यदायत्तानि सर्वाणि शालापतिममु विदु. ॥ ६ ॥

मीरसामान खानसामान कोठारी

सदेश कर्म यः कुर्याद्राज्ञ. प्रतिनृपेषु वै
भर्त्रिष्ट-साधनोद्युक्त तं दूत विबुधा विदु ॥ ७ ॥

एलची वकील

पत्राणि प्रति-पत्राणि लिखेद्योहि नृपाज्ञया
सुलेखक विजानीयाद्राज मन्त्र-निकेतनम् ॥ ८ ॥ =मुनशी

नृपे निवेद्य वृत्ताना निष्कारण-निवेदक·
वैत्रिवर्गस्य योध्यक्ष स विज्ञापक इष्यते ॥ ९ ॥ =अरजवेगी
यदधीनानि कर्माणि पुण्य-हेतूनि भूपते
दानाध्यक्ष विजानीयाच्छाति-कर्म पुरोधसं ॥१०॥ =सदर
योवरोधस्य कृत्यानि गुह्यादीनि विचेष्टते
महत्तर विजानीयात्त प्रतीत जितेन्द्रियम् ॥ ११ ॥ =नाजिर
अग्नि यन्त्राणि सर्वाणि तन्नियुक्ता भटादय
यदायत्ता भवेयु· सोनलाध्यक्ष प्रकीर्त्तित· ॥१२॥
=मीर आतस तोपखाने का दारोगा
नदी सरस्तडागादिष्वपारोधश्च मोचनम्
नावादीना च यत्तत्र जलाध्यक्ष प्रकीर्त्तितः ॥१३॥
दुर्ग-मन्दिर-वाप्यादि-सस्कृतौ निर्मतौ च य
नियुक्तो वास्तुक· सोय शिल्पशास्त्रविशारद· ॥१४॥ =मीर इमारत्
अनाथ वा सनाथ वा गृहाद्य यन्नियोगत
गृह्यते दीयते चापि स आयतनिक स्मृतः ॥१५॥ =नजूल का दरोगा
आराम वाटिकादीना सस्कार य प्रवर्त्तयेत्
उद्यानपालो विज्ञेय· स मालाकार-नायक ॥१६॥ =बागात का दारोगा
खड्ग-खेटासि-तूणीरश्चापि कुतादित चरा
मगलानि च सर्वाणि शस्त्राध्यक्ष-नियोगतः ॥१७॥ = कोरवेगी,
= सिलाहखाने का दारोगा
जल-स्थल-प्रचाराणा मृगया प्राणधारिणा
यत्-तत्रा तन्नियुक्ताश्च वैतसिक इति स्मृत· ॥१८॥
= करावल बेगी, शिकारखाने का दारोगा
विहगानां विचित्राणा मृगया प्राणधारिणा।
यत्तत्रा तन्नियुक्ताश्च विहगाध्यक्ष इष्यते ॥१९॥ = कोशवेगी
यदधीनानि वित्तानि श्रीगृहेषु महीभुजः
भाण्डागारिणमन तु निधिपालमवेहि वा ॥२०॥ = खजानची, भडारी
चारानीतॉ प्रवृत्तियस्तदध्यक्षो निवेदयत्
प्रवृत्ति वादुको-राशि प्रत्यनीकादि-सम्भवां ॥२१॥ = हरकारों का दरोगा
जनानां यो विवाद, प्रपन्नाना नृपान्तिक
विवेचयेत्सुनीतिज्ञो न्यायाध्यक्ष· प्रकीर्तित ॥२२॥ =अदालत का दरोगा

चौर-जारादि दुष्कृत्यकारिणा निग्रहे परः
पुररक्षा-समादिष्ट स वै नगर-गौतिकः ॥२३॥ = कोटवाल
पुरस्योपात सीमानं रक्षयेद्योहि विघ्नतः
सीमा-रक्षकमेन तु प्रवदति विपश्चित. ॥२४॥ = फौजदार
आचार व्यवहारेषु प्रायश्चित्तेषु यो जनान्
प्रवर्त्तयेन्मान्यतमो धर्माध्यक्ष प्रकीर्त्तित. ॥२५॥ = काजी
धर्माध्यक्ष वच. श्रुत्वा श्रुति-स्मृति निरूपित
देशकालोचित दडमादिशेत्स प्रवर्त्तक ॥२६॥ = मुफती
यो हि कूट तुला-मान-सुरा-द्यूत-पणागना
बहिर्दृश्या. निराकुर्यात्तीति दृश्वा स कीर्त्यते ॥२७॥ = मुहतसिब
दुर्गाणामति-दुर्गाणा भवनाना च भूपतेः
रक्षा-विधि समादिष्टो दुर्गपाल प्रकीर्त्तितः ॥२८॥ = किलादार
स्कधावार-निवेश वा पण श्रेणी निवेशन
चमूना चापि निर्याण कुर्यात्स स्कध-याचिक ॥ २६ ॥ = मीरमजिल
स्थाने याने च राजोये जनान् सीम्नि नियोजयेत्
सोय पथकराध्यक्ष. कथ्यते नीति-कौविदै· ॥३०॥ = मीरतुजक
भटादीना गणो यस्य साहचार्ये नियुज्यते
राज्ञा स्वाथवृत्तिस्त ब्रवीमो गण-नायकम् ॥३१॥ = रिसालेदार
चतुर्विध बल यस्य स्वाधीन दडनायक
इत्यादयो हि बहवो मध्य पर्षद्-गता जना ॥३२॥ = अमीरठाकुर
पीठ-मर्दा अग-रक्षा. किकराश्चेटकास्तथा
विदूषका अमी अते वासिनोभ्यतराश्रयाः ॥३३॥
वेत्र-शस्त्र भृतो ये च शाला सु परिचारका·
बाह्याधिकारिणो ये च ते बाह्यस्थाः प्रकीर्त्तिता ॥३४॥

अथ शाला-भेदाः

मचा सस्तरणाद्य च यत्र तत्परिचारकाः
शय्यागार विनिर्दिष्ट राजरीति-विशारदै ॥३५॥=सुखसेजखाना १
अभ्यंगनोद्वर्तनानि सचरोपस्कर जल
यत्र तन्मज्जन-गृह राजरीतिज्ञ भाषया ॥३६॥=गुसलखाना, हम्माम २
इष्टदेव-प्रतिकृति पूजा भाडानि मालिकाः

विष्टराद्य यत्रास्ते तद्देवायतन विदु ॥३७॥=तसबीहखाना ३
नाना ग्रन्थ सम पृष्ठैर्वेष्टनैर्बंधनैर्गुणै
पीटै फलक कर्त्तर्या ध्रियते पुस्तकालये ॥३८॥=किताबखाना ४
देव-भूपादि चित्राणि रेखा-वर्ण-कृतानि वा
ध्रियने शिल्पिनश्चैषा चित्रागार तदुच्यते ॥३९॥=तसबीरखाना ५
ओषध्यो विविधा यत्रावलेहाद्याश्च पुष्टये
भैषज्य-गृहमाख्यात सभिषक्परिचारक ॥४०॥ =दवाईखाना ६
मृद्वी दाडिम-खर्जूर-नारगाम्र-फलादय
सचीयते च यत्नेन फलागारे नियोगिभि ॥४१॥=मेवाखाना ७
खातकोष्टक पल्यादौ श्रयते धान्य-राशय
कोष्ठागार तदेवोक्त राजनीति-विशारदै ॥४२॥=अबार कोटार जखीरा ८
धान्य पण्येन्धनाद्य तु यथापेक्ष प्रगृह्यते
यतौ महौषधी शाला बहुस्थानेषु कल्पिता ॥४३॥=मोदीखाना ९
धात्वादि-मय भाडानि पाक योग्यानुयन्तवै
ध्रियते कुप्यशाला सा रक्षकैमाजिकै सह ॥४४॥=रिकाबखाना १०
निर्मायते च भाडानि सस्कृते च शिल्पिभि
कास्यागार तु तत्प्रोक्त राजरीति-विशारदै ॥४५॥ =ठठेरखाना ११
पेय लेह्य चोष्य खाद्यमन्न गोरम
व्यजन विशित त्रेधा सस्क्रियेत महानसे ॥४६॥=बबर्चीखाना, रसौडा १२
हिम जल विविध तद्भाण्ड धातु मृन्मय
कहारकै रक्षकैश्च सगृह्येत पयोगृहे ॥४७॥=आबदारखाना, पाणेरो १३
पत्र पूग लवगैला कर्पूराद्यास्य-शुद्धये
रक्ष्यते तन्नियोगामैस्ताबूल-गृहमीरित ॥४८॥ = तम्बोल खाना १४
दीन दुर्बल रुकार्त्त-भिक्षु पग्वधरोगिषु ।
दीयते कृपया भक्त स प्रतिश्रय ईरित ॥४९॥=बिलगोरखाना १५
यत्र वस्त्रादि मूल्यानि निर्णीयते नियोगिभि
मूल्यकारैश्च विक्रेता क्रयशाला प्रकीर्त्तिता ॥५०॥=इबतियाखाना १६
यत्र वस्त्राणि छिद्यते सीव्यते चापि शिल्पिभिः
सीवनागारमेतत्तु सूचीधर समन्वित ॥५१॥=किरकिराफखाना १७
रेखाकित-प्रगुणित धौत रक्त च धूपितम्
वास सुगधित सज्ज नेपथ्यागार इष्यते ॥५२॥=तोशकखाना, कपडदारा १८

पाटीरागुरु-काश्मीर कस्तूरी प्रभृतीनि वै
निस्यंदाश्च प्रसूताना सुगधागार ईरिता ॥५३॥ =खुशबोईखाना, सोवेखाना १६
वर्णा नाना विधायत्र चित्र-मुद्राश्च शिल्पिन
सस्कारार्थं च वस्त्रादेर वर्णागार तदिष्यते ॥ ५४ ॥ = रगखाना २०
हिरण्य घटना यत्र जटना रत्न निर्मिता
तत्कलाद-गृह प्रोक्त राजरीति विशारदै ॥ ५५ ॥=जरगरखाना २१
रत्नमुक्ता मणि शिला प्रवालस्फटिकादिक
भिन्न युक्त च धार्येत रत्नागार तदीरित ॥ ५६ ॥=जवाहिरखाना २२
शस्त्राण्यस्त्राणि वा यत्र कवचावरणानि वा
ध्रियते स प्रहरण कोशः सुधीभिरीरित· ॥५७॥=कोरखाना, सिलहखाना २३
तूलिकास्तरणा चैवोपधान शिविरादिक
यत्र तत्सास्तर गृह कथ्यते नीति कोविदै. ॥ ५८ ॥=फराशखाना २४
हिरण्यानि सुवर्णानि धृतानि व्यापृतानि वा
आये व्यये प्रयुक्तानि श्रीगृह तत्प्रकीर्त्तित ॥५९॥=खजाना, भडार २
सद्यो दानोपयोगीनि कर्षाणि किल भूपते
ध्रियते दान कोश स विज्ञेयो नीतिकोविदै ॥ ६० ॥ = बिह्ला २६
मदुरात्वश्वशाला स्यात् पलाणो पक्खरै. सम
शिक्षकै शालिहोत्रज्ञै पटकैर्धारकैर्युता ॥६१॥=अस्तबल, तबेला २७
गज शाला तु चतुर कुटी कुडादि शालिनी
यतृभिः पालकाग्र्यज्ञै. कशाकुतादमृद्गरौ. ॥६२॥=फीलखाना २८
सदानिन्युष्ट्र शाला च यान शाला च कीत्तिता
पालकागारमेतत्तु यत्र स्याच्छिविकादिक ॥६३॥
=गावखाना २९, शुतरखाना ३०, रथखाना ३१, पालकीखाना ३२
दारु निर्माण साध्यानि क्रियन्ते यत्र शिल्पिभि·
दारुकर्मालय विद्धि तदावेशनमुच्यते ॥६४॥=खातिमबदखाना ३३ ध
वसा-मदन तूलाना वृत्तयो दीप वृष्टयः
स्थाली-पजर पात्राद्यैरन्वित दीपकालय ॥६५॥= मै चिरागखाना ३४
एकद्वित्रि-चतु.-पच-दश-विशति-शाखिकाः
अभ्यक्तांबर-वृत्याढ्या यत्र-तज्ज्योतिरालय ॥६६॥=मसालखाना ३५
आय-व्ययादि लेखाः स्युर्मशीपात्राणि लेखिनी
लेखकाः बधका यत्र लेखशाला प्रकीर्त्तिता ॥६७॥=दफतरखाना ३६

मृगाश्चित्रकाश्चापि लुलाया मृगया कृते
भवति मृगयागार वैतसिकगणैर्युत ॥६८॥= शिकारखाना ३७

वज्र तुडा लोह-तुडाः श्येना उपरिचारिणः
धार्यंते मृगया हेतोस्तद्धि शाकुनिकालय ॥६९॥=कोशखाना
इत्यादयो ह्यनेके स्युरागाराइह भूभुजा
शालात्वावश्यकी प्रोक्ता क्रीडार्थ मुपशालिका. ॥७०॥=
उद्देशक स्थापनिको लेखकोधिकृ तास्त्रय
प्रतिशालामवश्य स्युरपरे मूल्य कृन्मुखा ॥७१॥
नृपाज्ञस दिशेत्कार्यं शाला परिजनेषु य
उद्देशक स तस्याग्रे लेखको यो लिखेत्व्ययम् ॥७२॥ =दारोगा, मुश्रिफ
सगृहीयात्स्थापनिकैः (तहबीलदार) मूल्य कुर्यात् स मूल्यकृत् (मुकीम)
तौलिको रत्नमानानि (वजन कश) सपादनपरश्चरा ॥७३॥ =सरबराहकार
शालापतेरधीना' स्यु सर्वशाला हि भूभृता
कौत्रिकापणमेतत्तु शाला नाम क्वस्मिृतम् ॥७४॥=कारखाना
श्रेणयः पुर-वास्तव्याः शालायत्ता महीभुज
नियतैक-शिल्प निरतास्ते भक्त भृति वेतनै ॥७५॥
कुर्यादनियता वृत्तिं श्रमसाध्यातु कर्मकृत्
काहारा भारवाहाश्च तृण-काष्ठ फलाहरा ॥७६॥
क्रय-विक्रय वृत्तिर्यो व्यागरी कीर्त्यते जनैः।
द्रव्यादान-निसर्गाभ्यां वृत्तिमान् व्यवहारिक ॥७७॥
क्रय विक्रय-शीलाना मध्यस्थो मूल्य-साधक
गणिम धरिम मेय पारीक्ष्य पण्यमुच्यते ॥७८॥
सख्या ग्राह्य तु गणिम नालिकेरादिक यथा।
धरिम तुलया देय कर्पूरैलादि कीर्त्यते ॥ ७९ ॥
हस्तागुलादिमानेन मेय वस्त्रादिक भवेत्।
तुरगादि पारीक्ष्य तुला मानादि तत्र न ॥ ८० ॥

अथ देश विभागस्तदधिपाश्च कथ्यन्ते

समुद्र गिरिपर्य्यन्त-चक्रीं चक्री तदीश्वरः
महास्तस्य विभागः स्याद्राष्ट्र जनपद च तत् ॥८१॥=सूबा
तुरग - चमूचचद्राजधानी - समन्वितम्
राष्ट्रस्याप्यशभूत तन्मण्डल मण्डलेशितुः ॥८२॥ =सिरकार

मडलाशस्तु प्रगण बहु-ग्रामोपवेष्टितम्
तस्याधिपः स्वल्प-बलो भवेत्सामत राडिति ॥८३॥ =परगना
कृषिक्षेत्र युत ग्राम (मौजे) माकरो लवणादि-भू (मादन)
वर्णैश्चतुर्भिः नगर शैल प्राकार वेष्टितम् ॥८४॥ =बलदै
खेट तु धूलि प्राकार पुरमुद्वासि-कर्बटम्
जल स्थल-पथावाप्य तद्द्रोणामुखमिष्यते ॥८५॥ =बदर
परितः सार्थ-गव्यूत ग्रामादि-परिवर्जितम्
मडब कीर्त्यते सुज्ञैरगम्य काननैर्घनै ॥८६॥
विचित्रि पण्यमागच्छेद्यत्र तत्पत्तन मत
अन्वन्यहेतु निर्माण सन्निवेशाख्यमुच्यते ॥८७॥
चौर्यादेर्वसति पल्ली तापसाना किलाश्रम
निगमो वणिजामेव ब्रह्मवासो द्विजन्मना ॥८८॥
क्षुद्रग्राम भवेद्वासोशिका द्वित्रिगृह हि तत्
तृणाकीर्णोपान्त-भूमि गोकुल धेनु-तृप्तिकृत् ॥८९॥
शिल्पिन कर्मकाराश्च, व्यापारी व्यवहारिण
चतुरग बलो राजा यत्र तद्द्रगमुच्यते ॥९०॥ =दयार
चक्री चक्राधिप सम्राड्राष्ट्रपाल प्रकीर्त्तितः
मण्डलेशा महाराज सामता विषयाधिप ॥९१॥
ग्रामाणिकतिविद्यस्य वशेसौ भूमिक स्मृतः
ग्रामणिर्ग्राम मुख्य स्याद् (चौधरी) रीतिज्ञो देश पण्डित ॥९२॥=कानूगो
राजवेतन दानाशान ग्रामाति दश वार्षिकीं
लिखित्वा धारयेद्यस्तु लेख-सग्राहका मत ॥९३॥ =मजमूअदार

॥ अथ प्रगणाधिकारिण· ॥

सपन्ना कृषिमालोक्य प्रजाया उचिता दशा
राज्याशस्य विनिश्चेता कथितो व्यावसायिक ॥९४॥ =अमीन
तेन व्यवसित द्रव्यमादद्याद्य प्रजा-जनात्
बलात्सौकर्य्य वापि करोदीरक इष्यते ॥९५॥ =करोडी
निरुद्ध वेतन - ग्राम - भोगमादाय भूपतौ
स साक्षिक प्रेषयेद्या निरोधक इतोष्यते ॥९६॥ =कोतल करोडी
राज द्रव्य प्रजादत्तमाददीत परीक्ष्य य
धनिके निक्षिपेद्यश्चकथितः प्रातधारक ॥९७॥ =पोतैदार

तेनोपकल्पित द्रव्य व्ययी कुर्याद्यथोचितम्
शेष नृपे प्रहिणुयाद्धनिकोसौ प्रकीर्त्तित ॥९८॥ =खजानची
धनाध्यक्षो धन रक्षेत् (=खजाने का दारोगा) तल्लिखेद्धन–लेखक
(खजाने का मुश्रिफ)

प्रवर्त्तको भटाना तु सेनानी समुदीरित ॥९९॥ =बखशी
। वृत्ति –लेखको वृत्त लिखेद् ग्रामाधिकारिणा । = बकाये निगार
छिद्रमर्माणि तेषा तु विलिखेद्गुप्त लेखक. ॥१००॥=खुफियौनवीश
शुल्काध्यक्षो (सायर का दारोगा) लेखकश्च (सायर का मुश्रिफ)
धनिको (तहबीलदार) मीत्रयो जना

शुल्काध्व-करमादद्याल्लिखेद्रक्षेत्पृथक् पृथक् ॥१०१॥
चौरादे ग्राम गुप्त्यर्थ ग्रामागौल्मिक इष्यते । =कोटवाल
कृषि गोप्ता कृषेर्भक्तृन् वारये कर्षकादिकान् ॥१०२॥ =शहनै
सीमागौल्मिक आरक्षेद्दीर्घा प्रगण-भूमिकाम् =फौजदार
धर्माध्यक्षस्तु ग्रामात्त द्रव्य लेखादि-साक्षिक ॥१०३॥ =काजी
राज्याश ग्रहणायुक्त भट लाभान् लिखेत्तु य'
आदेश-लेखकस्तेषा वेतनेषु च्छिन्नत्ति य ॥१०४॥=इतलायकनवीस
इत्यादयोधिकारा स्यु' प्रायशश्चक्रवर्त्तिनाम्
सपत्तेरनुसारेण त्वन्येषा विद्धि भूभुजाम् ॥१०५॥
एषा पद्धतिराख्याता राज-रीति बुभुत्सया
गभीराद्राज सेवाब्धेर्द्राग पाका च सिक्थवत् ॥१०६॥

इति यावन परिपाट्यनुकृत्या राजरीति-निरूपण नाम शतक समाप्तम् ॥ प० मोतीचद्रकस्य

(प्रति—जैनभवन, कलकत्ता)

(२) छत्तीस कारखांना रा नाम पातशाही मे ॥

१ तालबखानो, जठे कागद रहे। २ दफतर खानो, जठे नवसदा रहै। ३ तबोलदार खानो, जठे पान रहै। ४ अबदरखानो, जठे पाणी रहै। ५ जुद्दर खानो, जठे लाल हीरा रहै। ६ पीलखानो, जठे हाथी रहै। ७ फरासखानों, जठे तबू डेरा रहै। ८ तउसाखानो, जठे घोडा रहै। ९ सराबखानो, जठे दारू रहै। १० अवारतखानो, जठे मेहताई रहै। ११ ईलम खानो, जठे तोग झडा रहै। १२ मवेशी खानो, जठे गोरू ढोर रहै। १३ आदिदासति खानो, जठे सारी वस्तु रहै। १४ सराई महरुत खानो, जठे औरता रहै। १५ अत्राईस खानो, जहा सूधो अत्तर रहै। १६ नसटदार खानो, जहा न्हावण रा वासण रहै। १७ जमदार खानो, जठे कपडो रहै। १८ सुत्र खानो, जठे ऊठ रहै। १९ सिलह खानो, जठे टोप बगतर रहै। २० खीवात खानो, जठे दरजी रहै। २१ सीकारी खानो, जठे सिकारी रहै। २२ किसति खानो, जठे नाव डुंडा रहै। २३ तबीब खानो, जठे वेदनाइता रहै। २४ दारुलहर खानो, जठे गनी रहै। २५ सुतलब खानो, जठे रसोई रहै। २६ खजानदार खानो, जठे रुपिया रहै। २७ रकेबदार खानो, जठे जीण लगाम रहै। २८ पायगा खानो, जठे घोडा रा चरवादार रहे। २९ सरम खानो, जठे रुसनाई होवे। ३० किताब खानो, जठे पोथी पाना रहै। ३१ मेवा खानो, जठे मेवा मिठाई रहै। ३२ गोदाम खानो, जठे गाडी बैली रहै। ३३ अबारत खानो, जठे धान सारा रहै। ३४ दरी खानो, जठे कचेडी भरीजे। ३५ महबूत खानो, जठे छोटा बदीवान रहै। ३६ कारखानां रा नाम इति।

परिशिष्ट (३)

सभा शृंगारादि वर्णन संग्रहे

(१) देश नामानि

१ अग देश
२ बग देश
३ कलिंग देश
४ तिलग देश
५ राट्ट देश
६ लाट्ट देश
७ कर्णाट देश
८ मेदपाट देश
९ वैराट देश
१० गौरु देश
११ चौरु देश
१२ द्राविरु देश
१३ महाराष्ट्र देश
१४ सौराष्ट्र देश
१५ कास्मीर देश
१६ कीर देश
१७ महाकीर देश
१८ मगध देश
१९ सूरसेनु देश
२० कावेर देश
२१ कबोज देश
२२ कमल देश
३ उत्कल देश
२४ करहाट देश
२५ कुरु देश
२६ काण देश
२७ कच्छ देश
२८ कौसिक देश
२९ सक देश
३० चयानक देश
३१ कौसिक देश
३२ .. .
३३ कारूत देश
३४ कायूत देश
३५ कछ देश
३६ महाकछ देश
३७ भोट देश
३८ महात्रोत्र देश
३९ कीटिक देश
४० केकि देश
४१ कोल्लगिरि देश
४२ कामरूप देश
४३ कुक्कुण देश
४४ कुतल देश
४५ कनकूट देश
४६ करकट देश
४७ केरल देश
४८ खश देश

४६ खर्घंग देश
५० खेट देश
५१ विल्लग देश
५२ वेदि देश
५३ जालधर देश
५४ टेकण टक्क
५५ मोडियाग देश
५६ कहाल देश
५७ तुग देश
५८ लायक देश
५६ तोशक देश
६० दशार्ण देश
६१ दण्डक देश
६२ देशसभ देश
६३ नेपाल देश
६४ नर्तक देश
६५ पचाल देश
६६ पल्लक देश
६७ पूड देश
६८ पाडप देश
६६ प्रत्यग्र देश
७० अबुद देश
७१ वसु देश
७२ गभीर देश
७३ महिष्मक देश
७४ महोदय देश
७५ मुरण्ड देश
७६ मुरल देश
७७ मरुस्थल देश
७८ मुग्दर देश
७६ मगल देश
८० मल्लवर्त्त देश
८१ पवन देश
८२ आराम देश
८३ राढक देश
८४ ब्रह्मात्तर श
८५ ब्रह्मावर्त्त देश
८६ ब्रह्मण देश
८७ वाहक देश
८८ विदेह देश
८६ वत्रवास देश
६० वनापुछ देश
६१ वाल्हाक देश
६२ वल्लव देश
६३ अवन्ति देश
६४ वन्हि देश
६५ सिहल देश
६६ सुह्म देश
६७ सूपर देश
६८ सुहड देश
६६ अस्मक देश
१०० हूण देश
१०१ हूर्मक देश
१०२ हूर्मज देश
१०३ हस देश
१०४ हूहूक देश
१०५ हेरक देश
१०६ वीण देश
१०७ महावीण देश
१०८ भट्टीय देश
१०६ गोप्प देश
११० गाडक देश
१११ गुजरात देश

११२ पारसकुल देश
११३ शवालस देश
११४ कोरव देश
११५ शाकर्सगि देश
११६ कनउज देश
११७ आटन देश
११८ उचीविस देश
११६ नोलावर देश
१२० गगापार देश
१२१ सजाण देश
१२२ कनकगिरि देश
१२३ नवसागि देश
१२४ नात्रिरि देश

एव देश सख्या

(प्रति पाटोदी मदिर जयपुर गुटका न० १२५)

(२) चतुरशोतिर्देशा

गौड, कान्यकुब्ज, कोल्लाक, कलिंग, अग, वग, कुरग, आचाल्य (?) कामाख्या, आड्र, पुड्र, उडीश, मालव, लाहित, पश्चिम, काछ, वालभ, सौराष्ट्र, कु कण, लाट, श्रीमाल, अर्बुद, मेदपाट,मरु वरेन्द्र, यमुना, गगा तीर, अन्तर्वेदि, मागध, मध्य कुरु, डाहल, कामरूप, काची, अवनी, पापातक, किरात, सौवीर, औसीर, वाकाण, उत्तरापथ, गूर्जर, सिंधु, केकाण, नेपाल, टक्क, तुरक, ताइकार, बर्बर, जर्जर, कीर काश्मीर हिमालय, ल'ह पुरुष, श्रीराष्ट्र, दक्षिणापथ, सिंघल, चौड, कौशल, पाडू, अभ्र, विंध्य, कर्णाट, द्रविड, श्रीपर्वत, विदर्भ, धाराउर, लाजो, तापी, महाराष्ट्र, आभीर, नर्मदा तट । दी (द्वी) पदेशाश्चेति । प० ६१ = हीरुयाणी इत्यादि पङ्क । पत्तनादि द्वादशक । मातरादि चतुर्विंशतिः । बडू इत्यादि षट्त्रिंशत । भालिज्जादि चत्वारिंशत । हर्षपुरादि द्विपञ्चाशत । श्रीनार प्रभृति षट्पञ्चाशत् । जबूशर प्रभृति षष्टि । प (व ?) डवाण प्रभृति षट्सप्तति ।। दर्भावती प्रभृति चतुरशीति । पेटलापद्र प्रभृति चतुरुत्तर शत । ष (ख) दिरालुका प्रभृति दशोत्तरशत । भोगपुर प्रभृति षोडशोत्तर शत । धवलक्कक्क प्रभृति पचशतानि । माहड वासाद्य अधष्टिमशत । कौंकण [प्रभृति] चतुर्दशाधिकानि चतुरदशशतानि । वद्रावती प्रभृति अष्टादशशतानि । द्वाविंशति शतानि मही तट । नव सहस्राणि सुराष्ट्रासु । एक विंशति. सहस्राणि लाट देश । सतति सहस्राणि गूर्जरो देश. । परितश्च । अहूठ लक्षाणि ब्राह्मण पाटक । नव लक्षाणि डाहला । अष्टादश लक्षाणि द्वि नवत्यधिकानि मालवो देश । षट्त्रिशल्लक्षाणि कन्यकुब्ज । अनत उत्तरापथ दक्षिणापथ चेति ।

(काव्यशिक्षा—विनयचद्र कृत । पाटण ग्र ० सू० पृ ० ४८)

परिशिष्ट नं० ४

त्रिशला शोकाधिकार

यदा कालि जगन्नाथु माय तणी अनुकपाकरी थिउ सलीन तनु।
यत्कारि दुक्खि पूरीवा लागु राग्नी त्रिशला तणु मनु ॥ १
अहो ! आ किसिउ अकालि उत्पात,
हुसिइ किसिंउ वज्रपात ॥ २
अहो सखी ! माहरइ गर्भि पामिउ विलयु,
हुसिइ किसिंउ हिवडा जि विश्व प्रलय॥ ३
हिव एउ माहरइ मस्तकि जे अछइ मउड,
एउ प्रत्यक्ष झउड ॥ ४
एउ हार, साक्षात सहार ॥ ५
बाहु वल्लरी तणा जे अछइ वलय
ते दु.ख तणा दीसइ निलय ॥ ६
एउ अपूर्व पट्ट-दकूलु, ते देखता सताप तणू मूलु ॥ ७
एउ अछइ सर्वांगीण शृंगार ते देखता सपूर्ण अगार ॥ ८
दैव ! मइ किसिउ कीधउ, पाछिलइ भवि कुणइ तणा छोरू तु विछोह
कइ नीपजाविउ कुणइ सत रहइ वच द्रोह
जेह कारण विफल हुइ छइहरु मोह ॥ ६
मइ किसिउ कीधउ पापु
जेह कारण दैविइ पाडिउ एवउ सतापु ॥ १०
मइ जाणिउ हतू हसिइ सुलखयण कमारु
थासिइ विश्व रइ आधार ॥ ११
जाणिउ हतू पुत्र माडिसिइ आडउ, मेलसिइ पाडु (पत्र १ क) ॥ १२
जाणिउ हतू आविसिइ जिवारइ माहरइ घरि
तिवारइ हूँ थासि पुत्रवती नइ धुरि ॥ १३
माहरउ जायु थासिइ मोटउ राउ, देसि वयरी तणि मस्तकि पाउ ॥ १४
तउ पापी दैविइ भागी सवे आस, पडिउ सम-काल दुःख-तणाउ पास ॥ १५
भागी सघलीइ रली, सताप श्रेणी ऊछली
आस वेलि जई वली
माहरइ मनि सुख तणी वात जि टली ॥ १६
आसा तरुयर मुहुरीउ जाम फलेवा लग्ग
विहि कुजरि उम्मूलीय एय कुसविइं भग्ग ॥ १७

कय सरोवर पाली, बघ तु मई जि टाळी, किसिउ दव पनाळी ॥ १८
जीवडा कोडि बाली, कप मनि दीधी गाळी, आल दीवउ शुद्ध बाळी
कह लहीय विचालि, बाळ लीधउ ऊदाली ॥ १६
सखि ! न गमइ गायु, चिंत सोकिइ कवायु
रुचइ नहि निवायु, ताप दिइ फूल लायु
असुख मिइरि घायु, हीयडलइ डीब जायु
किसिउ मइ कमायु, दैवि ज इम नीपायु ॥ २०

[२]

इसिउ राज्ञी तराउ स्वरूप, साभलिउ सिद्धार्थ राइ विरूप ॥ २१
दासी ना वचन तु तत्काल ऊपनु मस्तकि चाटक
विसर्जिउ बित्रीस बद्ध नाटक ॥ २१
जे हूता बढूया, ते थया कढूया ॥ २२
जे गीत गान (पत्र १ ख) करता गन्धर्व
तेह तराा गरुया गर्व ॥ २३
राज भवनि जीराइ रजीइ चीत
ते एकू न साभलीइ गीत ॥ २४
जीराइ ऊपजइ मन रहइ चित्र
ते न वाजइ वाजित्र ॥ २५
जे हूता पडित, ते थिया दुख मडित ॥ २६
जे राय रहइ अवस्य कृत्य, ते न दीसइ नर्तकी नृत्य ॥ २७
जेहे विद्वासे धूणीइ मस्तक, ते न वाचइ पुस्तक ॥ २८
जे साभळना थईइ हराा, ते न वाचीइ पुराा ॥ २६
जे जाराइ काव्य नु अवसर
तेहे कवीश्वरे मूकिउ महाकाव्य नु उसार ॥ ३०
जे साभळना फीटइ व्यथा, ते एकू न साभलइ कथा ॥ ३१
श्रीहणे बोले मोतीरिया दीजइ सुवर्ण मइ त्राट
ते कलिरव न करइ भाट ॥ ३२
जे हूँता चाचरीया, ते थया लासरीया ॥ ३३
जे लोक रइ करावइ जुहार, ते हूया निसचला प्रतिहार ॥ ३४

जेहे निरतर जीभ बावरी, ते मौन करी रहिया टावरी ॥ ३५
जे करता नगर नी करणवार, ते बइसी रहिया तलार ॥ ३६
जेहे मनि ऊपजइ प्रमोद ते एकू न दीसइ विनोद ॥ ३७
जे उलगइ आव्या राय, ते सवे दीसइ विच्छाय ॥ ३८
जे सभा बइसता राणा, ते सवे मनि उल्हाणा ॥ ३९
जे राज धुरन्धर प्रधान, ते दीसइ दुःख तणा निधान ॥ ४०
ते तिहा बइठा छइ मेंठे, ते जोइवा लागा नीची द्रेठि ॥ ४१
जे भला भडारी, तेहनी मुख छाया (पत्र २ क) अवारी ॥ ४२
जे राय नइ अगरक्ल ते थिया कुमभ्ल ॥ ४३
आकाश छतई सूरि, भेदीवा लागा दुःखान्धकार तणइ पूरि ॥ ४४

[३]

तउ अनाथ तणु नाथ, जोयइ जगन्नाथ ॥ ४५
ज्ञान तणी द्रिष्टि
देखइ राज भवनि सपूर्ण दुखोदधि तणी सृष्टि ॥ ४६
अरे ! आ शाति करता ऊठिउ वेताल ॥ ३७
पडिउ माहरउ साहमू सताप तणउँ जाल
तु जगन्नाथि आगुलि तणइ स्तदि करी
माता तणी असमाधि हरी ॥ ४८
गिउ अनल्प, दुःख तणउ सकल्प ॥ ४९
फीटी मन तणी आधि, ऊपनी समाधि ॥ ५०
वाजिवा ला [गा] मागलिक तणा मृदग
राज भवन माहि सपूर्ण आणद ॥ ५१
(मुनि जिनविजयजी सग्रह, भारतीय विद्याभवन, बम्बई)